NAYA SAHITY 1973 G.K.V.

नया साहित्य

वर्ष 18
अंक 1

जनवरी, 1973
वार्षिक मूल्य 5.00

नव वर्ष मंगलमय हो

किताबों की दुनिया

'लाइफ' का प्रकाशन स्थगित

अमेरिका के दुनिया-भर में लोकप्रिय चित्र साप्ताहिक 'लाइफ' का प्रकाशन 36 वर्ष के बाद इसी जनवरी से बंद कर दिया गया है। यह घटना कई बातें सोचने को बाध्य करती है। यह पत्रिका सामान्य साप्ताहिक न होकर एक संस्था थी, एक प्रवृत्ति थी संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष थी। इसका बंद होना क्या सूचित करता है ? क्या इसके लिए संचालकों की अतिव्यावसायिकता ही जिम्मेदार है अथवा इसके बंद होने का कारण यह है कि मानव सभ्यता का कदम किसी अगली सीढ़ी पर पड़ चुका है? संभव है दोनों बातों में सत्य का अंश हो और पत्रिका को रूपान्तरित करके उसे जीवित रखा जा सकता हो। टेलीविज़न के प्रचार से मूक चित्रों की महत्ता घटी है क्योंकि टी० वी० के चित्र सजीव होते हैं और वह घर-घर में उपलब्ध भी है। इस प्रकार यह मूक चित्रों से सजीव और गतिमान चित्रों की ओर सभ्यता का विकास है। यूं व्यावसायिकता भी पहले से ज्यादा बढ़ी है, यह भी इस बात से प्रकट है कि इस संस्था ने 'मनी' नामक नई पत्रिका शुरू कर दी है जो खूब चल रही है।

'रामचरितमानस' का पंजाबी में अनुवाद करने का फैसला

पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला, ने निश्चय किया है कि तुलसी के प्रसिद्ध काव्य 'रामचरितमानस' को गुरुमुखी अक्षरों में छापा जाए तथा पंजाबी में उसका अनुवाद भी किया जाए। पर कार्य आगामी वर्ष तुलसी चतुश्शती के अवसर पर आरंभ कर दिया जाएगा। विश्वविद्यालय का इतिहास विभाग 'रामचरितमानस' में आए ऐतिहासिक स्थलों की खोज करेगा तथा उनपर पुस्तक प्रकाशित करेगा।

भारत के आंचलिक नृत्यों पर नई पुस्तक

भारत के नृत्यों से संबंधित जो भी साहित्य अब तक उपलब्ध है वह इतना बोझिल, नीरस और जनसाधारण की दृष्टि से अनुपयुक्त है कि लम्बे अरसे से नृत्य संबंधी एक संतुलित पुस्तक की कमी महसूस की जा रही थी। इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाने का श्रेय पिछले दिनों प्रकाशित 'डान्स डायलेक्ट्स आफ इण्डिया' की लेखिका श्रीमती रागिनी देवी को है। वे एक अमेरिकी महिला हैं और भारतीय नृत्यों की ओर पहले-पहल उनका झुकाव संस्कृत के दो ग्रन्थों के अध्ययन तथा अपने भारतीय पति श्री रामलाल वाजपेयी की प्रेरणा से हुआ था। पुस्तक में लेखिका ने भारत के विभिन्न अंचलों में प्रचलित नृत्यों के शास्त्रीय और सामान्य पक्षों को बड़े ही संतुलित रूप में प्रस्तुत किया है।

नया मेघदूत

—शरद जोशी

(लेखक के प्रकाशनाधीन व्यंग्य-संग्रह 'तिलस्म' से)

रामगिरि के पास से मेघ इस साल भी गुज़रा होगा। आषाढ के पहले दिन राम जाने कौन-सी तारीख थी पर यक्ष कोई ज़रूर वहां होगा जिसकी मलका किसी अलका में बैठी होगी। कुटज अभी भी उगते होंगे, जंगली फूल हैं—इन्हें कौन उगाता है, यह तो लगातार उगते चले जाते हैं। और भी काफी बातें वैसी ही होंगी जो पहले थीं। हो सकता है, एकाध कॉलोनी बन गई हो। हो सकता है, यक्ष वहां ठेकेदार हो। हो सकता है, वहां कोई खदान निकल आई हो और यक्ष अपनी आदत के अनुसार पैसा पीट रहा हो। कालिदास ने मुझे यक्ष के मामले में प्रिजुडिस कर दिया है। एक तो यही कि इस जाति के लोग बड़े जोरू के गुलाम होते हैं। जहां रहते हैं उसीकी रट लगाते रहते हैं। दूसरा यह कि ये लोग अपना केस बराबर फाइट नहीं कर पाते। कुबेर नाराज़ हो गया तो चुपचाप राज्य से बाहर हो गए। और तीसरी बात कि बड़े कंजूस होते हैं। सन्देश भेजने का समान्य खर्च बचाकर ये लोग बादल वगैरह से सन्देश भेजने की सोचते हैं। एक कविता ने उस ज़माने की सारी कम्युनिकेशन-फेसिलिटी को बदनाम कर दिया। कंजूसी है। और क्या!

विरहिणियों की भी क्या कहिए। आहें भरना मात्र जिनकी सोशल एक्टीविटीज़ हो, आंसू बहाने में जो मुहल्लेवालियों के पुराने रिकार्ड तोड़ दें और 'डायटिंग' से दुबली रहें और कहें कि मैं तो गम की मारी हूं। चील-कौवों से, हवा-बादल से जो सन्देशा पूछती फिरें। गज़ब के लोग थे उस ज़माने के। जो काम करते थे, बड़े पैमाने पर करते थे। आजकल के लोग मोहब्बत करते हैं, एक खबर नहीं बन पाती लोकल अखबार के लिए। पहले के लोग मोहब्बत करते थे, किताबें तैयार हो जाती हैं। पुरानी मोहब्बत की दास्तानें आज कोर्स में लगी हैं और आज जो प्रेम होता है उसे प्राचार्य महोदय एक्सट्रा-केरिक्यूलर एक्टीविटी घोषित कर देते हैं।

आजकल मेघदूत का कोई सिलसिला नहीं। खबर देना हो—खुद जाना चाहिए। बार-बार चिट्ठियां भेजो तो प्रेमिका पोस्टमैन के साथ चली जाए। माशूक और नामाबर का रोमान्स शेक्सपियर से चला आ रहा है। कालिदास के ज़माने में लोग शरीफ होंगे। मेघदूत भाभी की ओर बुरी नज़र नहीं डालता होगा। कविता कविता रह जाती, उपन्यास नहीं बन पाती कि जब यक्ष का सन्देश लेकर मेघदूत पहुंचा तो यक्षिणी को देख ठगा-सा रह गया। और क्यों न रहे साहब! जो उज्जयिनी की सुन्दरियों पर कुर्बान जा चुका हो, दशपुर में पगलाया हो, हर शहर और हर बस्ती में बड़ी-बड़ी आंखों वाली ने जिसे नयन छाप बालों से क्षत-विक्षत कर दिया हो, बताइए अलकापुरी में वह क्यों चूकेगा। युद्ध और प्रेम में काहे की ईमानदारी, सब जायज़ है। फिर उसे यह पता कि इसका पति कोसों दूर हैं, अभी आने का नहीं और यह अकेली है। कालिदास खत्म कर अपनी कविता [illegible] कहेगा, "अरी किस

फेर में पड़ी है तू ! मैं देखकर आया हूं, तेरा पति रामगिरि के क्षेत्र में रंगरेलियां मना रहा है। वह तुझे याद भी नहीं करता, सन्देश भी नहीं भेजता। तू अपनी यह 'चार दिन की चांदनी' क्यों वेस्ट करती है।"

यक्षिणी के तेवर चढ़ जाते हैं, "अच्छा, मुए की यह मजाल !"

बरसों बाद यक्ष आता है तो मोहल्ले वाले लम्बे हाथ कर-कर बताते हैं—"अरे हमने तो तुझे पहले ही बोला था भाई कि घरवाली को साथ ले जा, पर तू नहीं माना। ले वह किसी 'मेघ' के साथ भाग गई !"

यक्ष दुहत्थड़ मारकर रो देता है। और अपने जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा ग्रहण करता है—'कभी सन्देश किसी अन्य पुरुष के हाथ न भेजो !'

मेरा दिमाग तो शक्की है ! मैं कालिदास और उसके पात्रों-सा भोला नहीं हूं। कण्व के आश्रम में एक साहब घुस गए। कहने लगे, मैं यहां का राजा हूं ! और शकुन्तला ने बात मान ली। न जान न पहचान और शादी कर ली। ऋषि के आने तक भी सब्र न किया गया। यक्ष ने एक मेघ जाता देखा तो सन्देश भेज दिया। मैं और मेरे पात्र कभी ऐसा नहीं कर सकते। मेरा दिमाग शक्की है। मैं पूछता हूं कि यक्ष को कुबेर ने अपने राज्य से कुछ वर्षों के लिए निकाला क्यों ? क्या यह नहीं माना जाए कि बॉस कुबेर की यक्ष की पत्नी पर नज़र थी और वह किसी तरह यक्ष को अलकापुरी से 'खो' कर देना चाहता था ? जवाब देंगे कालिदास क्या इसका ? अजी, हमें तो तब पता लगा जब मेघदूत अलकापुरी पहुंचा। कहां का विरह और कैसा विरह ! यक्ष के घर में कुबेर यक्षिणी रोमान्स कर रहे हैं। उसने सिर पीट लिया। उधर बेचारा यक्ष जंगलों की खाक छान रहा है और इधर यह कुलच्छिनी !

मेघदूत ! क्या कहने ! ऐसी पुस्तकें तो कोर्स में ही चल सकती हैं। ऐसी ही किताबें पढ़कर जब छात्र निकलते हैं तो दुनिया कहती है—भाई, आजकल की पढ़ाई जीवन में काम नहीं देती। ऐसा विरह तो किसी पेशेवर अभिनेत्री को भी स्वीकार नहीं होगा कि वह मोटी से दुबली हो जाए। ऐसा हीरो कौन एक्टर बनना चाहेगा जिसमें सारी बहादुरी सिर्फ सन्देश भेज देने में है। एक लेटरपेड और एक स्याही की बोतल खरीदकर कोई भी प्रेमी बन जाएगा। पन्द्रह पैसे के टिकिट से आप सोलह साल की लड़की को बेवकूफ नहीं बना सकते भाई साहब !

खैर, हटाइए ! ज़रा कवि बनकर देखिए। प्रेम नौटंकी स्तर पर भी होता है। उसे भी आज़माइए। पर वह सब भी शादी के पहले तक। शादी के बाद अगर वह शहनाई वाला, वह घोड़ा सजाने वाला, वह ससुर अगर सड़क पर भी नज़र आ जाए तो आदमी पगला जाता है और पत्थर फेंकने लगता है। सारे नशे दूर हो जाते हैं। वे ही प्रेम के हिरन जो बैण्ड बाजा सुन शादी के वक्त आ गए थे, बच्चों का रोना-चिल्लाना सुन कुछ साल बाद भाग जाते हैं। आदमी मानता है, कि उसे इस अलकापुरी से दूर कहीं जाने को मिले ब्रह्मचर्य-आश्रम से संन्यास-आश्रम तक का यह चिल्ल-पों मय मार्ग उसे खाने को दौड़ता है। वह सोचता है, कोई ऐसी जगह हो, जहां कोई न हो (जैसे रामगिरि) और वहां वह शान्ति से रहे।

लेखन की उचित प्रतिष्ठा का प्रश्न

मैसूर सरकार द्वारा पुरस्कृत फिल्म 'वंशवृक्ष' के लेखक प्रो० वीरप्पा को शिकायत है कि इस देश में लेखक का उचित सम्मान नहीं किया जाता। मैसूर सरकार ने जहां फिल्म के निर्माता को पुरस्कारस्वरूप पचास हज़ार रुपये की राशि और एक स्वर्णपदक दिया, वहां लेखक को केवल डेढ़ हज़ार रुपये के ही योग्य समझा। प्रो० वीरप्पा ने इस राशि को अस्वीकार कर दिया।

सरकार, निर्माता तथा जनता के साथ लेखक की यह कशमकश न कोई नई बात है और न भारत के लिए ही अनोखी है। इंग्लैंड के लोकप्रिय नाटककार जान आर्डेन ने इन्हीं दिनों अपने नाटक 'दि आइलैंड आव दि माइटी' के मंचित रूप को अपना मानने से इसलिए इनकार कर दिया क्योंकि उसमें बहुत तोड़-मरोड़ की गई है। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चे के साथ नाटक का बहिष्कार किया और जनता द्वारा भी उनकी ओर कोई ध्यान न दिया जाने पर घोषित किया—'हम तुम्हारे लिए भविष्य में और कुछ नहीं लिखेंगे।'

हिन्दी के नये लेखकों की इन दिनों जो फिल्में बन रही हैं, उनमें भी निर्माताओं से लेखकों के मतभेद के कई उदाहरण सामने आए हैं। कहते हैं, स्व० मोहन राकेश का 'आषाढ का एक दिन' के निर्माता मणि कौल से फिल्म के ध्वनि-संबंधी प्रयोगों पर मतभेद था—फिल्म प्रदर्शित होने पर आलोचकों ने भी उन्हींका समर्थन किया है।

तो, लेखक के विविध व्यक्तियों और शक्तियों से मतभेद के विविध पहलू और स्तर हैं। प्रो० वीरप्पा की शिकायत न्यायसंगत है क्योंकि वह मूलतः पुरस्कार की राशि को लेकर नहीं है; उनका कहना यही है कि या तो लेखक को फिल्म-संबंधी पुरस्कारों में सम्मिलित ही न किया जाए क्योंकि वह न तो फिल्म की दृष्टि से उपन्यास लिखता है, न प्रायः उसके निर्माण में कोई विशेष योग देता है—परंतु यदि उसे सम्मिलित किया जाता है तो उसका उचित सम्मान किया ही जाना चाहिए क्योंकि फिल्म का आधार वही होता है। उसे अभिनेता-अभिनेत्री से भी नीचे दर्जे का नहीं समझा जाना चाहिए। उसका स्थान यदि निर्देशक से ऊपर नहीं तो नीचे भी कदापि नहीं है—उसके समकक्ष ही है।

लेकिन यहां यह कहना भी उचित होगा कि कहानी अपने लिखित रूप में नाटक या फिल्म नहीं है, और लेखक को भी निर्देशक के विचारों को महत्व देना चाहिए। कई लेखक ऐसे भी हो सकते हैं जो अन्य मीडिया की उचित जानकारी रखते हों और सहयोग से सारा कार्य पूर्ण किया जा सके। केवल व्यावसायिक सफलता या बाक्स आफिस की दृष्टि से कहानी में तोड़-मरोड़ करना निषिद्ध होना चाहिए।

फिल्मों की चर्चा चली है तो गत दिनों राजधानी दिल्ली में फिल्म वित्त निगम के सहयोग से बनी फिल्मों के प्रदर्शन पर कुछ कहना आवश्यक प्रतीत होता है। प्रायः सभी फिल्म आलोचकों की यह राय रही कि हिन्दी से इतर भाषाओं में बनी फिल्में ज़्यादा संतुलित और सफल रहीं और उनमें कहानी के मूल तत्व, भाव और मूड ज़्यादा अच्छे निखर कर आए। हिन्दी की फिल्में या तो आवश्यकता से अधिक धीमी रहीं, या इतनी कलात्मक कि उच्च स्तर के दर्शक के भी सिर से गुज़र जाएं। इस दृष्टि से कमलेश्वर के उपन्यास पर बनी फिल्म 'बदनाम बस्ती' उल्लेखनीय है। इसमें फोटोग्राफी तथा निर्देशन की कला के इतने ज़्यादा चमत्कार दिखाए गए हैं कि कहानी गौण हो जाती है। यह भी लेखक के साथ अन्याय है।

यह पुस्तक-वर्ष

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष समाप्त हो गया। जनता में पुस्तकों को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से सारे संसार में, और भारत में भी, अनेक आयोजन किए गए। उनका कितना परिणाम निकला, यह अभी ज्ञात नहीं है। अधिकांश कार्यक्रम सरकारी स्तर पर किए गए और जैसा स्वाभाविक है, उनमें दिखावा अधिक और वास्तविक काम कम ही हुआ। कुछ काम तो हुए ही नहीं, जिनमें पुस्तक-लेखन और प्रकाशन पर फिल्म्स डिवीज़न द्वारा बनाई गई वह फिल्म है जो वर्ष बीत जाने तक भी अभी भारत में कहीं भी प्रदर्शित नहीं हुई है। और भी अनेक ऐसे कार्य होंगे जो, जांच करने पर यही पता लगेगा कि हुए नहीं हैं।

पुस्तक वर्ष मनाने का परिणाम इस बात में दिखाई देना चाहिए कि पुस्तकों की बिक्री बढ़ी है। परंतु बिक्री बढ़ने के मार्ग में अनेक समस्याएं हैं। पहली तो यही कि लोगों तक पुस्तकें पहुंचाई कैसे जाएं? वे या तो गांव-गांव में विशेष रूप से संगठित दुकानों के द्वारा पहुंचाई जा सकती हैं अथवा डाक के द्वारा। जहां तक डाक से पुस्तकें भेजने का सवाल है, प्रचलित डाक-दरें इतनी ज़्यादा हैं कि आवश्यकता होने पर भी इतना व्यय करना कठिन होता है। सरकार पुस्तक वर्ष में डाक-दरें ही कम कर देती तो बड़ा काम हो जाता परंतु कोलाहल और प्रचार करने के अलावा उसे और सूझ भी क्या सकता है। डाक-दरों की बात बहुत बार कही जा चुकी है परंतु सरकार के कानों पर जूं भी नहीं रेंगती।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा पुस्तक वर्ष का कार्यक्रम संचालित करने के लिए नियुक्त समिति ने सुझाव दिया है कि गांवों में रेलवे स्टेशनों, डाकघरों और पेट्रोल पंपों के माध्यम से पुस्तकें वितरित की जाएं। यह सुझाव अच्छा है। गांवों में एक लाख से ज़्यादा डाकघर हैं, इतने ही रेलवे स्टेशन होंगे तथा पेट्रोल पंप भी होंगे। यदि इनके द्वारा किताबों का वितरण किया जाए और व्यवस्था स्थायी हो जाए तो साल में करोड़ों पुस्तकें बिक सकती हैं। समस्या केवल इस विक्रय-व्यवस्था को संगठित करने की है और संगठन बुद्धि बिरलों में ही होती है। सरकार यह कार्य कर सकेगी, इसमें संदेह ही है। क्या कोई प्राइवेट एजेंसी या प्रकाशकों की संस्था या संगठन इस कार्य को नहीं उठा सकती?

आटे के दीये

—जगदीशचंद्र माथुर

(लेखक की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक की एक रचना)

आज दिवाली की सुबह ही की तो बात है। मैं अपने नियमानुसार अखबार गिरने की ध्वनि के अलार्म से ही उठा। आपको नहीं मालूम कि मेरे यहां अखबारवाला सूर्य की रश्मि से अभिसार करने आता है; इससे पहले आना उसके उसूल के खिलाफ है। अखबार की 'छोटी हाज़िरी' के बाद जब मैं 'बाथरूम' की ओर बढ़ा तो मैंने देखा कि जहां प्रतिदिन की भांति तौलिया, साबुन, धोती, भरी बाल्टी और लोटा रक्खा हुआ है, वहां खज़ाने के संतरियों की तरह चार छोटे-छोटे आटे के दीपक भी टिमटिमाते, परंतु अचल, खड़े हैं। मैं यह नहीं कहूंगा कि उनकी बनावट में कोई विशेष कला दरसाई गई थी। टेढ़ी-मेढ़ी आटे की छोटी-सी कटोरी जिसका समाप्तप्राय श्वेत घी अपनी अंतिम सांस द्वारा अपने बीच में स्थित, एक विकम्पित लौ का भरण कर रहा था—ऐसे थे वे चार दीपक। उनकी स्थिति में एक विचित्र अटल विश्वास-सा था, मानो वे मुझे चुनौती दे रहे हों, हम तुम्हारी स्नानागार की दुनिया से अपरिचित हैं, यह हम भी समझते हैं और तुम भी। लेकिन हम यह बात अपनाना नहीं चाहते। इस तरह से अपनाने में हमारे व्यक्तित्व का ह्रास होता है, और व्यक्तित्व का ह्रास जीवन के ह्रास से बदतर है। हम तो यहां रक्खे गए हैं अपने को जला-जलाकर मिटा देने के लिए। हो सकता है, तुम्हारे पानी के छींटे हमारी ज्योति को शीघ्र ही विनष्ट कर दें, परन्तु उस नाश में भी तो अमर शहीद होने की सम्भावना रहेगी ?

मैं उन्हें क्या उत्तर देता ? 'सूर्य को दीपक दिखाना'—यह कहावत मैंने सुनी थी, परंतु सूर्य द्वारा दीपक का दिखाया जाना, यह अभिनय मैंने तभी देखा। मानव-हृदय की अनन्त जिज्ञासा से प्रेरित होकर मैंने अपने स्नानागार में उनकी अभूतपूर्व उपस्थिति का रहस्य जानना चाहा। मुझे बताया गया कि प्रत्येक वर्ष दिवाली की सुबह स्त्री और पुरुष आटे के दीये जलाकर नहाते हैं। लेकिन क्यों ? इस असमय प्रश्न के कारण स्त्री जन-समूह में ठीक वैसा ही नाद उद्भूत हुआ जैसा आतिशबाज़ी के दर्शक-समूह में से एक विचित्र सुर्री के छूटने पर होता है। अंतर इतना ही कि उसमें आह्लाद होता है और इसमें उपालम्भ था। मुझे उत्तर मिला कि दादी की 'अथारिटी' के अनुसार हमेशा से बड़े-बूढ़े ऐसा करते आए हैं। मैंने पूछा, "लेकिन आटे के ही दीपक क्यों ? मिट्टी के शकोरे नहीं थे ? लैम्प नहीं थे ?" मैं अब सोचता हूं कि मुझे ऐसे प्रश्न नहीं करने चाहिए थे। असल में हमारे सहस्रों प्रश्न ऐसे होते हैं जिनके उत्तर हमारे हृदय में ही विद्यमान होते हुए भी हम उन्हें पूछना पसंद करते हैं। मुझे उत्तर मिला—नाराज़गी के साथ—कि ऐसी अशुभ बातें अपने मुंह से निकालना दिवाली के त्योहार के दिन अनुचित है। और फिर जिस तरह एक बात की ... होता है, वैसे ही

जगदीशचन्द्र माथुर

मेरी उत्तरदात्रियों के आकस्मिक और सशब्द पलायन से उस विवाद का भी अन्त हो गया।

परंतु विवाद ध्वन्यात्मक शब्दों की तो वस्तु नहीं है। चंगा मन हो तो हृदय रूपी कठौती में भी विवाद और बहस की उमड़ती हुई गंगा बह सकती है। इसलिए मैंने अपनी शंका का समाधान स्वयं करने की चेष्टा की। मैंने सोचा कि हमारे पूर्वज कोई घर के धनी तो होंगे नहीं। रात को बहुत देर में पी-पाकर सोए होंगे कि तड़के ही श्रीमती जी ने जगा मारा, "उठो, अरे सोए ही रहोगे ? अजी, दिवाली के लिए कुछ सामान-वामान भी लाना है कि नहीं? चलो, नहाओ धोओ।" गुसलखाने में जो गए तो लोटे से टक्कर—डोल लुढ़कने लगा—रोशनी मांगी, "कहां से लाऊं ? घर में फूटा दीवट हो तो रक्खूं—सब तो जूए और शराब में···"और फिर लगी बोछार पड़ने। खैर, श्रीमतीजी में वह चीज़ थी जिसे आजकल 'कामन सेंस' और 'प्रेज़ेंस आफ माइंड' कहते हैं। रात के बचे हुए आटे को [illegible] में डाला और [illegible], तकिये की रुई की बत्ती बनाकर हमारे पूर्वज को अंधकार के गर्त से उबारने के लिए आ पहुंचीं। उन्हें क्या मालूम था कि इस प्रकार एक गृहस्थ-समस्या को हल करने में ही उन्होंने कला के विश्व में एक नवीन आविष्कार कर दिया था; आगे आने-वाली पीढ़ियों के लिए एक नूतन मार्ग प्रशस्त कर दिया और फिर मुझ जैसे नाचीज़ के लिए एक रहस्योद्घाटन की धरोहर छोड़ दी। दुनिया में सब काम अनजाने ही होते हैं।

हमारे जीवन में समस्याएं प्याज़ के पर्तों की तरह एक के नीचे एक लिपटी रहती हैं और हमारे प्रत्येक उत्तर में एक नवीन प्रश्न के बीज विद्यमान हैं। इसीलिए तो मुझे नई शंका हुई कि आखिर में—बीसवीं सदी का नौजवान तो कभी अंधेरे में उठने का अपराध नहीं करता—दिवाली के दिन भी नहीं; मेरे बीसवीं सदी के मकान में तो चूल्हे के अतिरिक्त अन्यत्र सभी जगह बिजली ने अग्नि का स्थान ले लिया है। दिवाली के हफ्ते में तो बिजली कंपनी 'हेवी लोड' से बचने के सभी प्रबन्ध कर लेती है। परंतु फिर भी मेरे घर का महिला-मण्डल दिन-दहाड़े ही क्यों सूर्य भगवान की आभा लूटने का प्रयत्न करता है।

आश्चर्य यह कि बरसों से मेरी जान-कारी में प्रत्येक दिवाली को यह होता आया है, और मैं उसे ऐसे ही स्वीकार करता आया हूं जैसे सेब का पेड़ से टूटकर पृथ्वी की ओर गिरना, आकाश की ओर नहीं। मुझे न्यूटन की सूझ न होने का मलाल तो नहीं है, परंतु अपनी नादानी पर ताज्जुब ज़रूर है।

प्रकाशन-व्यवसाय में स्वस्थ परम्पराएं और नये दिशा-बोध

भारत की प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं में राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, का एक बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान है। इस संस्था की स्थापना सन् 1891 में लाहौर में हुई थी। प्रकाशन-व्यवसाय में स्वस्थ परम्पराएं और नये दिशा-बोध लाने के लिए यह संस्था अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर चुकी है। प्रत्येक मास एक योजनाबद्ध रूप में हिन्दी के गण्यमान्य प्रतिष्ठित लेखकों की विविध विषयों पर नई पुस्तकें यहां से प्रकाशित होती हैं। इन नई पुस्तकों की चर्चा प्रायः सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में होती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा अब तक तीन हज़ार से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें बड़ी संख्या हिन्दी पुस्तकों की है। विभिन्न उपयोगी विषयों पर प्रकाशित ये पुस्तकें बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी तरह के पाठकों की मांग और रुचि को पूरा करती हैं।

इस संस्था द्वारा ऐसी कई नई पुस्तकमालाओं का भी प्रकाशन किया गया है जो अपनी उपयोगिता और लोकप्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं। बहुत-सी पुस्तकें तो केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय, उत्तर प्रदेश सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् एवं पंजाब भाषा-विभाग से सम्मानित एवं पुरस्कृत हैं।

राजपाल एण्ड सन्ज़ की गौरवपूर्ण परम्परा को आगे बढ़ाने में विश्वविख्यात विद्वान लेखकों ने अपना योगदान दिया है। महान् दार्शनिक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन् की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं के हिन्दी अनुवाद यहां से प्रकाशित हुए हैं। हिन्दी के लोकप्रिय कवि बच्चन की प्रायः समस्त रचनाएं तथा आचार्य चतुरसेन, डा० रांयेय राघव और गुरुदत्त के प्रायः सभी श्रेष्ठ उपन्यासों को प्रकाशित करने का श्रेय राजपाल एण्ड सन्ज़ को ही प्राप्त है। उर्दू के प्रसिद्ध लेखक कृश्न चन्दर की रचनाएं हिन्दी में सर्वप्रथम इसी संस्था द्वारा प्रकाशित होकर अत्यन्त लोकप्रिय हुईं। बंगला के ख्यातिप्राप्त उपन्यासकार ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, विमल मित्र, विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय, मनोज बसु और प्रेमेन्द्र मित्र आदि के श्रेष्ठ उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद भी इसी संस्था से प्रकाशित हुए हैं। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, अमृतलाल नागर, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, शिवानी एवं मन्मथनाथ गुप्त प्रभृति उपन्यासकारों की कई श्रेष्ठ कृतियां राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा ही प्रकाश में आई हैं। विश्व-साहित्य के महान लेखक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकारों की कुछ उल्लेखनीय कृतियां भी राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित हुई हैं—जैसे अर्नेस्ट हेमिंग्वे, विलियम फाकनर, जान स्टेनबैक, जैक लंडन, मार्क ट्वेन, नैथेलियल हाथार्न, एफ०स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड आदि की कृतियां।

इस समय उपलब्ध समस्त पुस्तकों की सूची यहां दी जा रही है (चिह्नित पुस्तकें पॉकेट बुक्स का लाइब्रेरी संस्करण हैं)—

1972 के विशिष्ट प्रकाशन

मानस का हंस	(उपन्यास)	अमृतलाल नागर	25.00
श्मशान चम्पा	,,	शिवानी	6.00
परिमल	,,	गुरुदत्त	8.00
मधु	,,	,,	10.00
कुंभीपाक	,,	नागार्जुन	5.00
बदलते रंग	,,	रजनी पनिकर	6.00
सुबह की तलाश	,,	नरेन्द्रदेव वर्मा	5.00
कालिन्दी	,,	ताराशंकर वन्द्योपाध्याय	10.00
मन्वंतर	,,	,, ,,	10.00
एक काली लड़की	,,	,, ,,	5.00
मैं सम्राट् हूं	,,	मनोज बसु	5.00
आक के पत्ते	,,	अमृता प्रीतम	4.00
अजीब आदमी	,,	इस्मत चुगताई	7.00
आधा रास्ता	,,	कृश्न चन्दर	5.00
बंद कली की मंज़िल	(कहानी-संग्रह)	कृश्न चंदर	10.00
क्वार्टर तथा अन्य कहानियां		मोहन राकेश	8.00
पहचान तथा अन्य कहानियां		,,	8.00
वारिस तथा अन्य कहानियां		,,	8.00
हंसनेवाली बात, रोनेवाली बात	,,	कर्तारसिंह दुग्गल	4.00
लिखि कागद कोरे	(निबन्ध)	अज्ञेय	6.00
भवन्ती	,,	,,	8.00
वेद सुधा	(दर्शन)	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
शिवमंगलसिंह 'सुमन'	(कविता)	सं० आनन्दप्रकाश दीक्षित	4.00
जय भारत जय	,,	सोहनलाल द्विवेदी	12.00
सावित्री	(महाकाव्य)	श्रीअरविन्द	12.00
उत्तरायण	,,	डा० रामकुमार वर्मा	8.00
यादों की बरात	(जीवनी)	अनु० हंसराज रहबर	10.00
हमारे वीर सेनानी	,,	सुदर्शन चोपड़ा	5.00
करफ्यू	(नाटक)	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	5.00
प्रेम अपवित्र नदी	(उपन्यास)	,,	12.00
हमारी संस्कृति	,,	डा० राधाकृष्णन्	8.00
अपनी-अपनी बीमारी	(हास्य-व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई	5.00
भारत-पाक निर्णायक युद्ध	(राजनीति)	डा० आर० मानकेकर	12.00

* सर्वत्र चिह्नित पुस्तकें हिन्द पॉकेट बुक्स का लाइब्रेरी संस्करण हैं।

धर्म और दर्शन

भारतीय दर्शन–1	डा० राधाकृष्णन्	30.00
भारतीय दर्शन–2	"	40.00
प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार	"	20.00
भगवद्‌गीता	"	15.00
धर्म और समाज	"	15.00
सत्य की ओर	"	8.00
पूर्व और पश्चिम : कुछ विचार	"	7.00
धर्म : तुलनात्मक दृष्टि में	"	6.00
हमारी संस्कृति	"	8.00
उपनिषदों की भूमिका	"	8.00
गौतम बुद्ध : जीवन और दर्शन	"	2.50
सावित्री	श्रीअरविन्द अनु० व्यौहार राजेन्द्रसिंह	12.00
भारत का मूर्तिशिल्प	डा० चार्ल्स फाबरी	25.00
भारत की संस्कृति और कला	डा० राधाकमल मुकर्जी	15.00
संस्कृति और जन-जीवन	युधिष्ठिर भार्गव	10.00
वेद-सुधा	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
ईशोपनिषद्	सत्यभूषण योगी	3.00

मनोविज्ञान

फ्रायड : मनोविश्लेषण	सिगमंड फ्रायड	16.00
यौन मनोविज्ञान	हैवलॉक एलिस	12.00
आधुनिक बाल-मनोविज्ञान	डी० आई० लाल	10.00

राजनीति

न्यूक्लीय विस्फोट और उनके प्रभाव	डा० डी० एस० कोठारी	
भारत-पाक निर्णायक युद्ध	डी० आर० मानकेकर	12.00
काश्मीर : समस्या और पृष्ठभूमि	गोपीनाथ श्रीवास्तव	12.00
भारतीयकरण	बलराज मधोक	6.00
*नेहरू ने कहा	डा० केवल धीर	2.00
कैनेडी के ओजस्वी विचार	वैसले पैंडर्सन	2.50
*हिन्दुस्तान की कहानी	जवाहरलाल नेहरू	4.00
भारत एक है	सीताचरण दीक्षित	1.00
सौ सवाल एक जवाब	प्रभाकर माचवे	1.00

शोध-प्रबन्ध एवं आलोचना

वैष्णव भक्ति-आन्दोलन का अध्ययन	डा० मलिक मोहम्मद	30.00
केशव का आचार्यत्व	डा० विजयपालसिंह	20.00
केशव और उनका साहित्य	,,	15.00
हिन्दी और मलयालम में कृष्णभक्ति-काव्य	डा० भास्करन नायर	15.00
हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	डा० एस० एन० गणेशन	15.00
संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद	डा० देवेन्द्रकुमार	13.00
हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	डा० दशरथ ओझा	20.00
आज का भारतीय साहित्य	संपादित	15.00
समीक्षाशास्त्र	डा० दशरथ ओझा	8.00
पाश्चात्य समीक्षा की रूपरेखा	डा० प्रतापनारायण टण्डन	12.00
बच्चन का परवर्ती काव्य	डा० श्यामसुन्दर घोष	6.00
हिन्दी और तेलुगु : एक तुलनात्मक अध्ययन	डा० जी० सुन्दर रेड्डी	4.00
काव्य में उदात्त तत्त्व	डॉ० नगेन्द्र तथा नेमिचन्द्र जैन	3.50

व्याकरण : लेखनकला

संस्कृत स्वय-शिक्षक, भाग—1	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	5.00
संस्कृत स्वयं-शिक्षक, भाग—2	,,	5.00
अभिनव हिन्दी व्याकरण	एन० नागप्पा	8.00
सुगम हिन्दी व्याकरण	जीवनाथ व धर्मपाल शास्त्री	2.50
हिन्दी छन्द:प्रकाश	रघुनन्दन शास्त्री	3.00
हिन्दी निबन्ध लेखन	विराज, एम० ए०	5.00
प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण	,,	3.00
पत्र-व्यवहार तथा अनुवाद	एस० सदाशिवम	3.00

ललित निबन्ध

भवन्ती	अज्ञेय	8.00
लिखि कागद कोरे	,,	6.00
डा० नगेन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध	सं० भारतभूषण अग्रवाल	7.00
मन की मौज	राजनाथ पांडेय	6.00
बिखरे चित्र	वाशिंगटन इविंग	6.00
झरोखे	इमर्सन एवं अन्य साहित्यकार	6.00
नये-पुराने झरोखे	डा० हरिवंशराय 'बच्चन'	5.00
कवियों में सौम्य संत	,,	5.00

ललित निबन्ध

बोलते क्षरण	जगदीशचन्द्र माथुर	
शब्द की लकीरें	डा० चन्द्रप्रकाश वर्मा	4.00
साहित्य के पथ पर	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	2.50
विचार-तरंग	प्रो० दीवानचन्द शर्मा	2.50

शिक्षा

स्वतन्त्र भारत में शिक्षा	हुमायुन कबिर	6.00
शिक्षा में नये प्रयोग	डा० सूरजभान	5.00
शिक्षा-संगठन	के० सी० मलैया	6.00
शिक्षरण सिद्धान्त	,,	4.00
शिक्षरण की समस्याएं	हैरल्ड टेलर	7.00

शब्दकोश

सुगम अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश	डा० उदयनारायण तिवारी	4.00
व्यावहारिक हिन्दी कोश	,,	4.00
भारत ज्ञान-कोश 1972-73	सं० अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार	4.00

सचित्र विश्वकोश

ILLUSTRATED ENCYCLOPÆDIA IN HINDI

(TEN VOLUMES)

इस सचित्र विश्वकोश में लगभग दो हज़ार विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में ऐसी आवश्यक जानकारी संकलित हैं जो न केवल विद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के लिए वरन् प्रत्येक परिवार के लिए उपयोगी है। लगभग ढाई हज़ार रंगीन चित्रों से वर्णित विषयों की व्याख्या की गई है। प्रत्येक खण्ड अपने-आप में पूर्ण है। प्रत्येक विषय की जानकारी अकारादि क्रमानुसार दी गई है जिससे इसमें दी हुई किसी भी विषय की जानकारी तुरन्त ढूंढ़ी जा सकती है।

1. पृथ्वी, आकाश, खनिज	10.00
2. जीव-जन्तु, पेड़-पौधे	10.00
3. मनुष्य, विकास : शरीर-रचना, स्वास्थ्य	10.00
4. राजनीति, प्रशासन, धर्म	10.00
5. कृषि, उद्योग, व्यापार-शिल्प	10.00
6. आविष्कार, खोज और खोज-यात्री, पर्यटन	10.00
7. विज्ञान, वैज्ञानिक, आविष्कारक	10.00
8. साहित्य, कला, दर्शन, पुराणकथा	10.00
9. इतिहास, व्यक्ति, घटनाएं	10.00
10. देश और निवासी, प्रमुख नगर	10.00

दस भागों के पूरे सेट का मूल्य 100.00

ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक और नवीनतम जानकारी से भरपूर हिन्दी का एक मात्र बहुरंगा विश्वकोश !

उपन्यास

ग्राचार्य चतुरसेन

वयं रक्षामः	15.00
वैशाली की नगरवधू	12.00
सोना ग्रौर खून : भाग–1	10.00
सोना ग्रौर खून : भाग–2	10.00
सोना ग्रौर खून : भाग–3	10.00
सोना ग्रौर खून : भाग–4	10.00
हरण निमंत्रण	6.00
खग्रास	8.00
बगुला के पंख	6.00
*ईदो	3.00
पत्थर-युग के दो बुत	5.00
धर्मपुत्र	5.00
हृदय की प्यास	4.00
सह्याद्रि की चट्टानें	3.50
*गोली	4.00
*बहते ग्रांसू	4.00
*ग्रात्मदाह	4.00

सं० रांगेय राघव

संसार के महान् उपन्यास	12.00

रांगेय राघव

कब तक पुकारूं	15.00
ग्राखिरी ग्रावाज़	8.00
घरौंदा	7.00
राई ग्रौर पर्वत	6.00
देवकी का बेटा	6.00
लखिमा की ग्रांखें	5.00
यशोधरा जीत गई	5.00
मेरी भव बाधा हरो	5.00
पक्षी ग्रौर ग्राकाश	7.00
राह न रुकी	5.00
रत्ना की बात	5.00
भारती का सपूत	5.00
लोई का ताना	5.00
पथ का पाप	5.00
धरती मेरा घर	4.50
बन्दूक ग्रौर बीन	4.00
पतझर	4.00
उबाल	4.00
कल्पना	4.00
पराया	3.50
प्रोफेसर	3.00

गुरुदत्त

मधु	10.00
परिमल	8.00
तबेला	8 00
गिरते महल	8.00
धूप-छांह	7.50
मृगतृष्णा	7.00
तब ग्रौर ग्रब	7.00
प्रवंचना	7.00
जग एक सपना	6.00
सागर ग्रौर सरोवर	6.00
ग्रपने-पराये	6.00
पड़ोसी	6.00
जागृति	6.00
प्रतिशोध	5.00

राहुल सांकृत्यायन

मधुर स्वप्न	7.00
कप्तान लाल	2.50

ग्रमृतलाल नागर

मानस का हंस	25.00
भूख	8.00
सात घूंघट वाला मुखड़ा	5.00

ग्रनन्त गोपाल शेवड़े

कोरा कागज़	12.00
कोरा कागज़ (छात्र-संस्करण)	5.00

उपन्यास

भगवतीप्रसाद वाजपेयी

उनसे न कहना	6.00
पुष्पगंधा	6.00
एक प्रश्न	6.00
टूटते बंधन	5.00
रात और प्रभात	6.00

विष्णु प्रभाकर

स्वप्नमयी	4.00
दर्पण का व्यक्ति	3.00

डा० देवराज

अजय की डायरी	10.00
भीतर का घाव	5.00

मन्मथनाथ गुप्त

षड्यंत्र	7.00
शहीद और शोहदे	6.00
शरीफों का कटरा	5.00
*नरक	3.00

मोहन राकेश

न आने वाला कल	6.00

राजेन्द्र यादव : मन्नू भंडारी

एक इंच मुस्कान	8.00

मोहनलाल महतो 'वियोगी'

महामंत्री	4.00

गुलशन नन्दा

कटी पतंग	6.00
झील के उस पार	6.00

रामकुमार

*वापसी	2.00

डा० लक्ष्मीनारायण लाल

प्रेम अपवित्र नदी	12.00

महेन्द्रनाथ

*रात अंधेरी है	3.00

रामकुमार भ्रमर

कांचघर	7.00

तीसरा पत्थर	5.00

नरेन्द्रदेव वर्मा

सुबह की तलाश	5.00

मोहन चोपड़ा

सुबह से पहले	4.00

शिवानी

विषकन्या	4.00
अपराधिनी	5.00
श्मशान चम्पा	6.00
कैंजा	

रजनी पनिकर

बदलते रंग	6.00

निर्मला वाजपेयी

सूखा सैलाब	2.50

प्रकाशवती

अनामा	7.00

इस्मत चुगताई

अजीब आदमी	7.00

हंसराज रहबर

किस्सा तोता पढ़ाने का	5.00
*अमिता	2.00

नानकसिंह

पुजारी	6.00
गीला बारूद	7.00
संघर्ष	4.50
कलाकार	3.50
एक म्यान, दो तलवारें	8.00

भैरवप्रसाद गुप्त

बांदी	10.00

प्रतापनारायण टंडन

पल दो पल	10.00

नरेन्द्र कोहली

आतंक	6.00

उपन्यास

गोविन्द मिश्र

उतरती हुई धूप 5.00

बालशौरि रेड्डी

स्वप्न और सत्य 7.00

ज़िन्दगी की राह 3.00

बैरिस्टर 3.50

शबरी 2.00

शान्तिनारायण

महारानी झांसी 6.00

आनन्दप्रकाश जैन

आठवीं भांवर 6.00

नागार्जुन

कुम्भीपाक 5.00

वरुण के बेटे 5.00

उग्रतारा 4.00

इमरतिया 3.00

शिवशंकर शुक्ल

मोंगरा 3.50

हरिनारायण आप्टे

चाणक्य और चन्द्रगुप्त 6.00

विमल मित्र

पटरानी 6.00

नायिका 6.00

मन क्यों उदास है 6.00

काजल 5.00

भवानी भट्टाचार्य

लद्दाख की छाया 10.00

विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय

पथेर पांचाली 6.00

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

अभियान 10.00

कालिन्दी 10.00

आरोग्य निकेतन 10.00

शताब्दी की मृत्यु

पांच पुतलियां

मन्वंतर 10.00

कालरात्रि 8.00

काला फूल 8.00

*दुनिया एक बाज़ार 3.00

बेगम 6.00

गुलबदन 5.00

एक काली लड़की 5.00

वसन्त राग 4.00

न्यायमूर्ति 5.00

रायकमल 5.00

मनोज वसु

रात का मेहमान 18.00

मैं सम्राट हूं 5.00

कैसे भूलूं 4.00

प्रेमेन्द्र मित्र

बालू के द्वीप 4.00

वनफूल

हमराही 3.00

जरासंध

महाश्वेता की डायरी 4.00

छाया 5.00

प्रो० ना० सी० फड़के

प्रवासी 4.00

स्वप्नों के सेतु 7.00

आर० के० नारायण

गाइड 6.00

मुलकराज आनन्द

वापसी 8.00

*सात समुन्दर पार 3.00

सात साल 5.00

गांव 6.50

ख्वाजा अहमद अब्बास

तीन पहिये 5.00

उपन्यास

कृश्न चन्दर	
चम्बल की चमेली	6.00
तूफान की कलियां	8.00
कार्निवाल	4.00
मेरी यादों के चिनार	5.00
आधा रास्ता	5.00
दादर पुल के बच्चे	3.50
उलटा वृक्ष	3.00
पराजय	6.00
एक गधे की आत्मकथा	5.00
एक गधे की वापसी	4.00
एक गधा नेफा में	5.00
दूसरा पुरुष दूसरी नारी	5.00
सितारों से आगे	3.00
चांदी का घाव	6.00
बोरबन क्लब	5.00
आंख की चोरी	5.00
प्यार एक खुशबू है	5.00
*जब खेत जागे	3.00
अमृता प्रीतम	
आक के पत्ते	4.00
जलावतन	6.00
जेबकतरे	4.00
एक थी अनीता	5.00
नागमणि	4.00
दिल्ली की गलियां	5.00
*पिंजर	3.00
*पांच बरस लम्बी सड़क	3.00
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय	
*काशीनाथ	3.00
*दोराहा	3.00
*शुभदा	2.00
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	
*कृष्णकान्त का वसीयतनामा	2.00

सत्यकाम विद्यालंकार	
*मुक्ता	2.00
यज्ञदत्त	
*कुमुद	2.00
ए० हमीद	
*मैं फिर आऊंगी	3.00
*पतझड़ के बाद	3.00
*तूफान की रात	3.00
*फूल उदास हैं	3.00
मार्क ट्वेन	
बहती धारा	10.00
यादों की घाटियां	15.00
जॉर्ज आर्वेल	
उन्नीस सौ चौरासी	3.00
नैथेनियल हॉथार्न	
कलंक	8.00
हवेली	10.00
अर्नेस्ट हेमिंग्वे	
पुल	15.00
फॉकनर	
भालू	2.00
उचक्के	10.00
हेनरी जेम्स	
हृदय के बंधन	15.00
एक औरत का चेहरा	15.00
विला कैथर	
प्रेमिका	8.00
जॉन स्टेनबैक	
अनाम यात्री	10.00
*एक मछुआ एक मोती	2.00
जैक लंडन	
जंगल की पुकार	10.00
सिक्लेयर लेविस	
अपराजित	15.00

उपन्यास

एफ० स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड	
लालसा	8.00
ई० कज़ाकेविच	
तारा	2.00
इवो ग्रांद्रिच, ग्रनु० 'ग्रज्ञेय'	
ग्रनीका का ज़माना	8.00
लुइसा एम० ग्रल्काट	
चार बहनें	8.00
तुर्गनेव	
*पिता ग्रौर पुत्र	3.00
चार्ल्स डिकेन्स	
*दो शहरों की दास्तान	2.00
स्टीफेन ज़्विग	
*एक ग्रनजान ग्रौरत का खत	2.00

कहानी

बाहर-भीतर	**ग्राचार्य चतुरसेन**	6.00
दुखवा मैं कासे कहूं	,,	6.00
धरती ग्रौर ग्रासमान	,,	6.00
सोया हुग्रा शहर	,,	6.00
कहानी खत्म हो गई	,,	6.00
भारतपुत्र नौरंगीलाल	**ग्रमृतलाल नागर**	6.00
ये तेरे प्रतिरूप	**ग्रज्ञेय**	4.00
किनारे से किनारे तक	**राजेन्द्र यादव**	6.00
छोटे-छोटे ताजमहल	,,	6.00
गहरे ग्रंधेरे में	**चन्द्रगुप्त विद्यालंकार**	4.00
खुले ग्रासमान के नीचे एक रात	,,	6.00
ज़िंदा मुर्दे	**कमलेश्वर**	3.00
क्वार्टर तथा ग्रन्य कहानियां	**मोहन राकेश**	8.00
पहचान तथा ग्रन्य कहानियां	,,	8.00
वारिस तथा ग्रन्य कहानियां	,,	8.00
एक ग्रौर ज़िन्दगी	,,	5.00
मोहन राकेश : श्रेष्ठ कहानियां	,,	5.00
लाजवन्ती	**द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'**	3.50
महान् प्रेमी ग्रौर उनकी प्रेमिकाएं	**इलाचन्द्र जोशी**	4.50
धरती ग्रब भी घूम रही है	**विष्णु प्रभाकर**	5.00
ललक	**कुलभूषण**	4.00
हंसने वाली बात, रोने वाली बात	**कर्त्तारसिंह दुग्गल**	4.00
ग्रपनी-ग्रपना बीमारी	**हरिशंकर परसाई**	5.00
तलाश	**राजेन्द्र ग्रवस्थी**	3.50

कहानी

कहानी-कुंज	सं० अरुणप्रभा	3.00
भारतीय प्रणय-कहानियां	सं० शरद देवड़ा	8.00
बंगला देश की कहानियां	"	6.00
सुदर्शन सुमन	सुदर्शन	3.50
रवीन्द्र द्वादशी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	3.00
रवीन्द्र-कथा	"	2.50
यथार्थ और कल्पना	सं० विराज, एम० ए०	4.00
बंद कली की मंजिल	कृश्न चन्दर	10.00
स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	"	5.00
काला सूरज	"	3.50
पूरे चांद की रात	"	4.00
अन्नदाता	"	4.00
मिट्टी के सनम	"	3.00
कश्मीर की कहानियां	"	5.00
दिल, दौलत और दुनिया	"	3.00
आधे घंटे का खुदा	"	5.00
सरगम	"	2.50
उलझी लड़की : काले बाल	"	3.00
पंजाबी की श्रेष्ठ कहानियां	संकलन : विजय चौहान	5.00
मराठी की श्रेष्ठ कहानियां	संकलन : विजय बापट	4.00
अमरीका की श्रेष्ठ कहानियां	अनु० बालकृष्ण	5.00
रहस्यपूर्ण कहानियां	एडगर एलेन पो	6.00
*1966 की श्रेष्ठ कहानियां	महेन्द्र कुलश्रेष्ठ (सं०)	2.00
*प्रेम और हत्या के रहस्यमय मुकदमे	प्रकाश पण्डित	3.00
*ये जासूस महिलाएं	सत्यदेव नारायण सिन्हा	3.00

शिकार एवं वन्य जीवन

हाथियों का खेदा	विराज	
जंगल के रहस्य	विराज	1.50

मेरी प्रिय कहानियां

इस पुस्तकमाला में क्रमश: सभी प्रमुख कहानीकार प्रकाशित किए जा रहे हैं और कहानियों का चुनाव भी उन्होंने स्वयं ही किया है। इसके अतिरिक्त शैली, कथ्य आदि पर प्रकाश डालने की दृष्टि से प्रत्येक में उनकी भूमिकाएं भी हैं जिनसे इन पुस्तकों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। समसामयिक कहानी साहित्य और प्रमुख कहानीकारों को इस प्रकार समग्र रूप से जानने में यह पुस्तकमाला बहुत ही उपयोगी है। इस माला में अब तक निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :

मेरी प्रिय कहानियां	आचार्य चतुरसेन	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	रांगेय राघव	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृतलाल नागर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृतराय	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	यशपाल	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	इलाचन्द्र जोशी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	विष्णु प्रभाकर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	मोहन राकेश	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	बलवंतसिंह	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	कृश्न चन्दर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	निर्मल वर्मा	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृता प्रीतम	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	राजेन्द्र यादव	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	उषा प्रियंवदा	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	कमलेश्वर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	शैलेश मटियानी	5.00

नाटक : एकांकी

पृथ्वी का स्वर्ग	डा० रामकुमार वर्मा	4.00
सारंग-स्वर	,,	5.00
जुही के फूल (एकांकी-संग्रह)	,,	3.50
अग्नि-शिखा	,,	4.00
जय बाङ्ला	,,	3.00
करफ्यू	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	5.00
युगे-युगे क्रांति	विष्णु प्रभाकर	4.00
डाक्टर	,,	3.00
रक्तदान	हरिकृष्ण प्रेमी	5.00
ममता	,,	3.00
कीर्ति-स्तम्भ	,,	3.50
आषाढ का एक दिन (विशिष्ट संस्करण)	मोहन राकेश	6.00
न्याय की रात	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	3.50
रेवा	,,	3.00
अशोक	,,	4.00
शिव-धनुष	डा० चन्द्रशेखर	2.00
कलापूर्ण एकांकी	सं० डा० दशरथ ओझा	5.00
अभिनव एकांकी	सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ	3.00
नये एकांकी	सं० अज्ञेय	3.50
श्रेष्ठ एकांकी	सं० कृष्ण विकल	2.50
कांच के खिलौने (नाटक-संग्रह)	अनु० अमिताभ	5.00
प्रकृति का प्रतिशोध	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	2.50
बांसुरी	,,	2.50
अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	3.00
कुमारसंभव	,,	3.50
स्वप्नवासवदत्ता	महाकवि भास	4.00
मृच्छकटिक	शूद्रक	4.00
मुद्राराक्षस	सामंत विशाखदत्त	2.50

शेक्सपियर के नाटक

ओथेलो (Othello)	(अनु० डा० रांगेय राघव)	2.50
मैकबेथ (Macbeth)	,,	2.50
निष्फल प्रेम (Love's Labour's Lost)	,,	2.50
भूल-भुलैया (Comedy of Errors)	,,	2.50

शेक्सपियर के नाटक

बारहवीं रात (Twelfth Night)	(अनु० डा० रांगेय राघव)	2.50
जैसा तुम चाहो (As You Like It)	,,	2.50
जूलियस सीज़र (Julius Caesar)	,,	2.50
रोमियो जूलियट (Romeo Juliet)	,,	2.50
वेनिस का सौदागर (Merchant of Venice)	,,	2.50.

आत्मकथा : संस्मरण : जीवन-चरित्र

यादों की बरात	जोश मलीहाबादी	10.00
क्या भूलूं क्या याद करूं (भाग–1)	बच्चन	10.00
नीड़ का निर्माण फिर (भाग–2)	,,	12.00
प्रवास की डायरी	,,	16.00
पंत के सौ पत्र : बच्चन के नाम	सं० बच्चन	4.00
बच्चन के पत्र : निरंकारदेव सेवक के नाम	,,	4.00
गंगा की पुकार	सोमदत्त बखोरी (मारिशस)	8.70
मेरा जीवन-संघर्ष	वेद मेहता	4.00
याद रही मुलाकातें	अक्षयकुमार जैन	5.00
रूसी सफरनामा	बलराज साहनी	7.50
पाकिस्तानी जेलों में तीन वर्ष	त्रिलोकचन्द्र	6.00
बच्चन : निकट से	सं० अजित कुमार	15.00
अपना देश : पड़ोसी देश	नन्दलाल वानप्रस्थी	3.50
अभिनेत्री की आपबीती	हंसा वाडकर	5.00
भारत की अग्रणी महिलाएं	आशारानी व्होरा	
सरदार पटेल	सेठ गोविन्ददास	4.00
देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद	,,	2.50
लालबहादुर शास्त्री	महावीर अधिकारी	3.00
कोलम्बस	,,	2.50
राष्ट्रपति राधाकृष्णन्	अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार	5.00
नोबल पुरस्कार विजेता साहित्यकार	ठाकुर राजबहादुरसिंह	9.00
सिख धर्म के दस गुरु	बी० एस० गुजराती	4.00
हमारे वीर सेनानी	सुदर्शन चोपड़ा	5.00
भारत के वीर सपूत	सावित्रीदेवी वर्मा	5.00
लाला हरदयाल	धर्मवीर	12.00
महाराजा रणजीतसिंह	कुलदीप नागर	3.00

आत्मकथा : संस्मरण : जीवन-चरित्र

विश्व के महान् वैज्ञानिक	फिलिप केन	12.00
आज की वैज्ञानिक महिलाएं	एडना योस्ट	5.00
महामानव	डा० मान्धाता ओझा	4.00
भारत के प्रसिद्ध खिलाड़ी	योगराज थानी	4.00
विश्व के महान् शिक्षाशास्त्री	जयजयराम शास्त्र	6.00
*साबरमती का संत	यशपाल जैन	3.00
शिवाजी	भीमसेन विद्यालंकार	3.00
वीर वैरागी	भाई परमानन्द	2.50
जीवन-रश्मि	सत्यकाम विद्यालंकार	2.50

बच्चन की रचनाएं

अभिनव सोपान	15.00	सतरंगिनी	4.00
उभरते प्रतिमानों के रूप	8.00	मधुबाला	4.00
कटती प्रतिमाओं की आवाज़	8.00	मधुशाला	4.00
दो चट्टानें	8.00	जन गीता	4.00
जाल समेटा		भाषा अपनी भाव पराये	4.00
बहुत दिन बीते	6.00	मिलन यामिनी	4.00
नागर गीता	6.00	खैयाम की मधुशाला	3.00
मरकत द्वीप का स्वर	5.00	मधुकलश	3.00
आरती और अंगारे	5.00	निशा-निमंत्रण	4.00
चौंसठ रूसी कविताएं	5.00	आकुल अंतर	3.00
किंग लियर	6.00	धार के इधर-उधर	3.00
हैमलेट	5.00	सूत की माला	3.00
ओथेलो	4.00	प्रणय-पत्रिका	3.00
चार खेमे चौंसठ खूंटे	4.00	एकांत संगीत	2.50
त्रिभंगिमा	4.00	बंगाल का काल	2.00

कविता

जय भारत जय	सोहनलाल द्विवेदी	12.00
पतझर : एक भावक्रान्ति	सुमित्रानंदन पंत	15.00
चित्रांगदा	,,	12.00
हरी बांसुरी, सुनहरी टेर	,,	3.00
पूर्वा	अज्ञेय	10.00
सागर-मुद्रा	,,	7.00
गीतांजलि	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	6.00

कविता

महादेवी के श्रेष्ठ गीत	सं० गंगाप्रसाद पाण्डेय	7.50
गीति सप्तक	सं० डा० राकेश गुप्त, डा० चतुर्वेदी	5.00
दो टूक	बालकवि बैरागी	6.00
'ग्र' से ग्रसभ्यता	दिनकर सोनवलकर	4.00
इति	दिनेश नंदिनी	5.00
उत्तरायण (महाकाव्य)	डा० रामकुमार वर्मा	8.00
कुटिया का राजपुरुष (खंडकाव्य)	'बटुक'	3.50
गीत भी, ग्रगीत भी	नीरज	2.50
प्यास मेरी कल्पना की	कृष्ण मोहन	6.00
प्यास बढ़ती ही गई	रामनिवास जाजू	5.00
घटनाम्रों के मध्य में	,,	6.00
केशव-सुधा	डा० विजयपाल सिंह	10.00

उर्दू शायर : जीवनी ग्रौर संकलन

गालिब	सं० प्रकाश पंडित	2.50
मोमिन	,,	2.50
जोश मलीहाबादी	,,	2.50
मजाज़	,,	2.50
मजरूह सुल्तानपुरी	,,	2.50
फैज़ ग्रहमद फैज़	,,	2.50
साहिर लुधियानवी	,,	2.50
ग्रख्तर शीरानी	,,	2.50
ग्रकबर इलाहाबादी	,,	2.50
जगन्नाथ 'ग्राज़ाद'	,,	2.50
'ग्रर्श' मल्सियानी	,,	2.50
शकील बदायूनी	,,	2.50
फिराक गोरखपुरी	,,	2.50

उर्दू शायरी

उर्दू गुलिस्तां की बुलबुलें	सं० श्रीरामनाथ सुमन	4.00
*उर्दू गज़ल के नये रंग	प्रकाश पण्डित	3.00
*शकील की गज़लें	,,	2.00
*जफर की शायरी	,,	2.00
*उर्दू की बेहतरीन नज़्में	,,	2.00

जीवनोपयोगी

आत्म-विकास	आनन्द कुमार	7.00
मनुष्य का विराट् रूप	,,	6.00
साधना	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	3.00
बिन मांगे मोती मिले	श्रीमन्नारायण	4.00
मानसिक शक्ति के चमत्कार	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
चरित्र-निर्माण	,,	5.00
सफलता के सूत्र	,,	4.00
सफल जीवन	,,	3.00
पंचतंत्र	आचार्य विष्णुशर्मा	3.50
हितोपदेश	श्री नारायण पंडित	3.50
*महापुरुषों की सूक्तियां	मानसहंस	2.00
*तीस दिन में सफलता	परेरा	2.00

संस्कृत के अमर ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद

इस पुस्तकमाला में हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा संस्कृत साहित्य की अनमोल कृतियों के रूपान्तर सरल हिन्दी में प्रस्तुत किए गए हैं। संस्कृत साहित्य में रुचि रखनेवाले पाठकों के लिए उपयोगी पुस्तकें।

वाल्मीकि रामायण	महर्षि वाल्मीकि	5.00
कौटिल्य अर्थशास्त्र	आचार्य चाणक्य	4.50
स्वप्नवासवदत्ता	महाकवि भास	4.00
मृच्छकटिक	राजा शूद्रक	4.00
दशकुमारचरित	महाकवि दण्डी	3.75
हितोपदेश	श्री नारायण पंडित	3.50
पंचतंत्र	आचार्य विष्णु शर्मा	3.50
कादम्बरी	आचार्य बाणभट्ट	3.50
रघुवंश	महाकवि कालिदास	3.50
कुमारसंभव	,,	3.50
अभिज्ञानशाकुन्तल	,,	3.00
मुद्राराक्षस	सामन्त विशाखदत्त	2.50

उद्योग : खनिज : व्यापार

रत्नगर्भा भारत भूमि	भगवानसिंह	5.00
भारतीय चाय		3.75

'आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि' पुस्तकमाला

इन पुस्तकों में समसामयिक हिन्दी के मूर्धन्य कवियों की कविताएं ली गई हैं। वे कविताएं, जिन्होंने राष्ट्र के उन्मेष में सहयोग दिया है, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन में योगदान दिया है और जो काल की परिधि को लांघकर तात्कालिकता से ऊपर उठकर और ज्यादा निखर-संवरकर अमिट हो गई हैं। इन पुस्तकों को प्रमुखतः दो अंशों में बांटा गया है। प्रथम अंश में कवि के आत्मीय मित्र लेखक द्वारा कवि का रोचक और अंतरंग परिचय दिया गया है और प्रसंगवश संकलन में आई कविताओं के कवि के जीवन के साथ संदर्भ का उल्लेख किया गया है, जिससे उक्त कविताओं का आशय और बड़े परिप्रेक्ष्य में पाठक ग्रहण कर सकें। दूसरे अंश में कवि की चुनी हुई कविताएं विद्वान संपादक द्वारा संगृहीत की गई हैं और चयन में कवि की सम्मति को भी प्रश्रय दिया गया है। हिन्दी काव्य की चुनी हुई ये रचनाएं इन संकलनों में इस रूप में एक साथ मिल जाती हैं कि इससे हिन्दी काव्य का समसामयिक रूप हम स्पष्टता से हृदयंगम कर सकते हैं।

महादेवी वर्मा	सं० गंगाप्रसाद पांडेय	4.00
अज्ञेय	,, विद्यानिवास मिश्र	4.00
सुमित्रानंदन पंत	,, बच्चन	4.00
बच्चन	,, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	4.00
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	,, भवानीप्रसाद मिश्र	4.00
रामधारीसिंह 'दिनकर'	,, मन्मथनाथ गुप्त	4.00
नीरज	,, क्षेमचन्द्र 'सुमन'	4.00
भगवतीचरण वर्मा	,, अमृतलाल नागर	4.00
माखनलाल चतुर्वेदी	,, हरिकृष्ण 'प्रेमी'	4.00
शिवमंगलसिंह 'सुमन'	,, आनन्दप्रकाश दीक्षित	4.00
गिरिजाकुमार माथुर	,, डा० नगेन्द्र : कैलाश वाजपेयी	4.00

विवाहित जीवन : परिवार-नियोजन

इन पुस्तकों में पारिवारिक सुख-समृद्धि बढ़ाने के लिए बहुत ही उपयोगी और आवश्यक सुझाव सरल भाषा में दिए गए हैं। जैसा कि पुस्तकों के नामों से स्पष्ट है—इनमें पति-पत्नी संबंध को मधुर बनाने, एक-दूसरे को समझने, परिवार का भविष्य बनाने के लिए परिवार-नियोजन, स्वास्थ्य, सफाई, बच्चों के पालन-पोषण की अच्छी विधियां, शिक्षा—आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तकें बहुत ही उपयोगी और हर परिवार में रखने योग्य हैं।

सरल परिवार-नियोजन	: डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	8.00
जीवन-साथी	: सत्यकाम विद्यालंकार	6.00
आदर्श पत्नी	: सन्तराम, बी० ए०	4.00
शिशु-पालन	: डा० युद्धवीरसिंह	3.50
परिवार-चिकित्सा	: ,,	4.50
जहां सुमति तहं संपति नाना	: ब्रजभूषण	1.50
मनोरथ	: ,,	1.50
नई राह पर	: शांति भट्टाचार्य	1.50

स्वास्थ्य : चिकित्सा

इन पुस्तकों में दैनिक जीवन में काम आने वाली स्वास्थ्य-संबंधी हिदायतें—खान-पान, रहन-सहन, सफाई, कसरत आदि के साथ मनुष्य-शरीर के बाहरी और भीतरी अंगों और उनमें लगनेवाली बीमारियों तथा उनके लक्षण और पहचान के साथ उनके इलाज की विधियां बताई गई हैं।

मानव-शरीर : संरचना और कार्य	: डा० एलबर्ट टोके	12.00
नीरोग जीवन	: आचार्य चतुरसेन	2.00
स्वास्थ्य-रक्षा	: ,,	2.00
आदर्श भोजन	: ,,	1.50
हमारा शरीर	: ,,	1.00
योग के आसन	: श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	3.00

'देश और निवासी' पुस्तकमाला

'देश और निवासी' माला की ये पुस्तकें न भूगोल हैं, न इतिहास—ये इन देशों के निवासियों, उनके जीवन, आशा-आकांक्षाओं तथा उन्नति-अवनति के मनोहारी सचित्र विवरण हैं। मनुष्य कहां, किस तरह रह और कैसे जी रहा है, इसका ज्ञान हम सबके लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है—विशेष रूप से उन किशोरों के लिए जो विलक्षण रूप से उन्नत संसार में जीवन बिताएंगे और उसका संचालन करेंगे। जानकारी से भरपूर ये पुस्तकें परिवार के सभी सदस्यों के लिए समान रूप से उपयोगी और स्कूलों तथा पुस्तकालयों में रखने योग्य हैं। इस पुस्तकमाला में अब तक निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :

इंडोनेशिया	: जितेन्द्र कुमार मित्तल	3.00
अफ्रीका	: ,,	3.00
मारिशस	: ,,	3.00
थाईलैंड	: ,,	3.00
मिस्र	: आनन्द जैन	3.00
बर्मा	: ,,	3.00
इसराइल	: ,,	3.00
इटली	: ,,	3.00
जर्मनी	: ,,	3.00
भूटान	: कमला सांकृत्यायन	3.00
सिक्किम	: ,,	3.00
रूस	: जगदीशचन्द्र जैन	3.00
अमेरिका	: प्राणनाथ सेठ	3.00
ब्रिटेन	: ब्रजकिशोर नारायण	3.00
जापान	: हरिदत्त शर्मा	3.00
श्रीलंका	: भदन्त आनन्द कौसल्यायन	3.00
नेपाल	: विराज, एम० ए०	3.00
अफगानिस्तान	: जमनादास अख्तर	3.00
पाकिस्तान	: हंसराज रहबर	3.00
फ्रांस	: ओमप्रकाश पालीवाल	3.00
चेकोस्लोवाकिया	: ,,	3.00
चीन	: हंसराज रहबर	3.00
कनाडा	: त्रिलोक दीप	3.00
बांग्ला देश	: बिनोद गुप्त	3.00
आस्ट्रेलिया	: [illegible]	3.00

'भारत-दर्शन' पुस्तकमाला

'भारत-दर्शन' माला की हिन्दी में पहली बार प्रकाशित ये सुन्दर, सचित्र पुस्तकें भारत के राज्यों का सरल भाषा और रोचक शैली में परिचय कराती हैं। इन्हें प्रत्येक राज्य के जाने-माने लेखकों द्वारा लिखा गया है और विशेषज्ञों द्वारा सम्पादित और संशोधित किया गया है। इनमें अनेकता में एकता की भारतीय विशेषता को दर्शाते हुए राज्यों की अपनी संस्कृति, जन-जीवन, साहित्य और कलाओं पर प्रकाश डाला गया है। अनेक चित्रों तथा बहुरंगे आवरण से सज्जित ये पुस्तकें हर घर और पुस्तकालय की शोभा हैं।

मणिपुर त्रिपुरा	: डा० कमला सांकृत्यायन	3.00
अरुणाचल मिजोरम	: ,,	3.00
भारत के द्वीप	: योगराज थानी	3.00
हरियाणा	: ,,	3.00
गोआ : पाण्डिचेरी	: योगराज थानी, हरिमोहन शर्मा	3.00
महाराष्ट्र	: हरिमोहन शर्मा	3.00
तमिलनाडु	: बालशौरि रेड्डी	3.00
आंध्र प्रदेश	: 'आरिगपूडि'	3.00
गुजरात	: पीताम्बर पटेल, नागर	3.00
बंगाल	: हंसकुमार तिवारी	3.00
हिमाचल प्रदेश	: विराज, एम० ए०	3.00
कश्मीर	: जीवनलाल 'प्रेम'	3.00
मध्य प्रदेश	: राजेन्द्र अवस्थी	3.00
मैसूर	: बालशौरि रेड्डी	3.00
राजस्थान	: यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	3.00
पंजाब	: सुदर्शन चोपड़ा	3.00
बिहार	: सत्यदेव नारायण सिन्हा	3.00
नागालैंड	: जयन्त वाचस्पति	3.00
केरल	: के० जी० बालकृष्ण पिल्लै	3.00
लद्दाख	: त्रिलोक 'दीप'	3.00
उत्तर प्रदेश	: हरिदत्त शर्मा	3.00
मेघालय	: वीणा श्रीवास्तव	3.00
दिल्ली	: रमेश बक्षी	3.00
असम	: जयन्त वाचस्पति	3.00

'स्वदेश-परिचय' माला

इन पुस्तकों में देश के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव पर प्रकाश डाला गया है। भारत की महिमा पुराने समय में किन-किन कारणों से थी, उसके आधार क्या थे, यह सब कुछ इस पुस्तक में पढ़ने को मिलता है। सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और हिन्दी के विशिष्ट लेखक डा० भगवतशरण उपाध्याय ने अपनी पुस्तकों में बहुत ही सरल और रोचक भाषा में इतिहास और संस्कृति के इन विषयों को प्रस्तुत किया है, जो कि हिन्दी में अपने ढंग का पहला प्रयास माना गया है। पुस्तकमाला की अन्य पुस्तक भी अपने विषय के विशेषज्ञ द्वारा लिखी गई है। सभी पुस्तकों में विषयानुसार चित्र दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें भारत सरकार तथा अन्य प्रादेशिक सरकारों से पुरस्कृत हैं।

भारत की कहानी	: डा० भगवतशरण उपाध्याय	2.00
भारतीय संस्कृति की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय चित्रकला की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय मूर्तिकला की कहानी	: ,	2.00
भारतीय नगरों की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय संगीत की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय भवनों की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय साहित्यों की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय नदियों की कहानी	: ,,	2.00
भारतीय संस्कृति के विस्तार की कहानी	: ,,	2.00
कितना सुन्दर देश हमारा	: ,,	2.00
भारतीय स्वाधीनता की कहानी	: प्रो० राधाकृष्ण	2.00

ज्ञान-विज्ञान

ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी	अनु० रमेशचन्द्र वर्मा	2.50
पुस्तक की कहानी	एम० इलिन	2.50
बिजली की कहानी	आर्नल्ड मैण्डेल बॉम	2.50
प्रसिद्ध आविष्कारक : आविष्कार	फ्लैचर प्रैट	2.50
उड़ान की कहानी	राबर्ट डी० लूमिस	2.50
चिकित्सा के आविष्कारों की कहानी	डेविड डीट्ज़	2.50
अन्तरिक्ष में उड़ान की कहानी	हैरल्ड एल० गुडविन	2.50
रोमांचकारी वैज्ञानिक यात्राएं	रेमण्ड होल्डेन	2.50
मशीन युग की कहानी	रोजर बर्लिगेम	2.50
घड़ी की कहानी	एम० इलिन	2.50
राकेट की कहानी	विली ले	2.50
टेलीफोन की कहानी	केथेराइन बी० शिप्पेन	2.50
समुद्र की कहानी	फर्डीनेण्ड सी० लेन	2.50
एटम की कहानी	ईरा एम० फ्रीमैन	2.50
रसायन की कहानी	,,	2.50
वायुयान की कहानी	अनु० धर्मपाल शास्त्री	2.50
उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों की कहानी	रसेल ऑवन	2.50
मौसम की कहानी	ईवान रे टान्नेहिल	2.50
सितारों की कहानी	अनु० केशव सागर	2.50
सागर तल की खोज	रूथ ब्रिण्ड्ज़	2.50
प्रसिद्ध आविष्कारों की कहानी	अनु० सुखदेव प्रसाद बरनवाल	2.50
आग : हमारी मित्र व शत्रु	रमेश वर्मा	2.50
रेडार	गोपीनाथ श्रीवास्तव	2.50
कम्प्यूटर	रमेश वर्मा	3.00
ब्रह्माण्ड-यात्रा शुरू हो गई	रामस्वरूप चतुर्वेदी	3.00
प्रकाश की कहानी	त्रिलोकचन्द्र गोयल	3.00
जीवन की कहानी	इर्विंग एडलर	4.00
सूर्य की कहानी	कुलदीप चोपड़ा	4.00

'क्यों और कैसे' विज्ञानमाला

विज्ञान के इस युग में आप नई-नई वैज्ञानिक बातों की जानकारी चाहते हैं। साथ ही पुराने इतिहास के धुंधले पृष्ठों को भी समझना चाहते हैं। प्रकृति के विचित्र रहस्यों की जानकारी कौन नहीं चाहता ! 'क्यों और कैसे' पुस्तकमाला इसीकी पूर्ति करती है। कठिन विषयों को अनेक रंगीन और आकर्षक चित्रों की सहायता से इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बच्चे भी इसे आसानी से समझ लें। ये सभी पुस्तकें पाठकों के लिए बड़ी उपयोगी हैं। वैज्ञानिक विषयों पर सरल, सुन्दर और रंगीन चित्रों से भरपूर ये पुस्तकें प्रत्येक स्कूल की लाइब्रेरी के लिए उपयोगी हैं।

सितारे (Stars)	4.00
हवाई जहाज़ (Flight)	4.00
मौसम (Weather)	4.00
हमारा शरीर (The Human Body)	4.00
बिजली (Electricity)	4.00
साहसपूर्ण यात्राएं (Explorations & Discoveries)	4.00
मशीनें (Machines)	4.00
विज्ञान की बातें (Beginning Science)	4.00
हमारी पृथ्वी (Our Earth)	4.00
रॉकेट (Rockets & Missiles)	4.00
विज्ञान के खेल (Science Experiments)	4.00
कीड़े-पतंगे (Insects)	4.00
आदमी की कहानी (Primitive Man)	4.00
परमाणु शक्ति (Atomic Energy)	4.00
माइक्रोस्कोप (Microscope)	4.00
रसायन-विज्ञान (Chemistry)	4.00
गणित की कहानी (Mathematics)	4.00

सरल विज्ञानमाला

यह विज्ञान का युग है। सभी क्षेत्रों में नई-नई जानकारियों तथा ग्राविष्कारों के कारण जीवन बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। इन सब विषयों का ज्ञान ग्राज सभी के लिए ग्रावश्यक है। बड़े ग्राकार में ग्राफसेट पर छपी ये ग्रादि से ग्रन्त तक सचित्र पुस्तकें इस ग्रावश्यकता की पूर्ति करती हैं। इन्हें प्रत्येक विषय के ग्रधिकारी विद्वानों ने लिखा ग्रौर सम्पादित किया है। ये बालकों तथा सामान्य पाठकों, सभी के लिए समान रूप से लाभदायक हैं।

समय (Time)	4.00
चुम्बक (Magnet & Magnetism)	4.00
चन्द्रमा (The Moon)	4.00
वायु ग्रौर जल (Air & Water)	4.00
ध्वनि (Sound)	4.00
प्रकाश ग्रौर रंग (Light & Colour)	4.00
मरुस्थल (Deserts)	4.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक (Famous Scientists)	4.00
ध्रुव प्रदेश (Polar Regions)	4.00
समुद्र-विज्ञान (Oceanography)	4.00
बुनियादी ग्राविष्कार (Basic Inventions)	4.00
कम्प्यूटर (Robots & Electronic Brains)	4.00

सुगम विज्ञान

सरल भाषा में ग्रनेक चित्रों सहित

हमारा पड़ोसी चांद	रमेश वर्मा	2.00
हवा की बातें	केशव सागर	2.00
ग्रावाज़	,,	2.00
ग्राग की कहानी	,,	2.00
पानी		2.00

'आविष्कार और आविष्कारक' माला

विख्यात वैज्ञानिकों और आविष्कारकों के जीवन तथा उनके महान् आविष्कारों के बारे में एक सरल कहानी के रूप में सीधे-सादे और अत्यन्त रोचक ढंग से लिखी गई और अनेक आकर्षक चित्रों से भरपूर ये बहुरंगी पुस्तकें हिन्दी में अपने ढंग की पहली और अनूठी हैं।

यशस्वी लेखकों द्वारा लिखित और प्रसिद्ध चित्रकारों द्वारा चित्रित इन पुस्तकों से आविष्कारकों और खोज-कर्त्ताओं के जीवन, उनकी महान् वैज्ञानिक खोज और विज्ञान-जगत् में उनके महत्त्व की जानकारी प्राप्त होती है।

बालकों के मन में कौतूहल, जिज्ञासा एवं कुछ बनने की प्रेरणा देने वाली ये पुस्तकें प्रत्येक घर में रहनी चाहिए। इन्हें पढ़कर बालकों में अभूतपूर्व साहस एवं नाना प्रकार के प्रयोग करने की इच्छा का जागरण होगा जो उनकी ज्ञानवृद्धि में भली प्रकार सहायक होगा। संसार के महान् वैज्ञानिकों की जीवनी तथा महापुरुषों के जीवन-आख्यान पढ़ने की ओर भी उनकी रुचि बढ़ेगी।

हवाई जहाज़ के आविष्कारक राइट बन्धुओं की कहानी	: श्रीकांत व्यास	2.50
नई दुनिया की खोज : कोलम्बस की कहानी	,,	2.50
महान् वैज्ञानिक बैंजामिन फ्रैंकलिन	,,	2.50
टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल की कहानी	,,	2.50
ग्रामोफोन और चलचित्र के आविष्कारक एडीसन की कहानी	,,	2.50
परमाणु शक्ति के आविष्कारक फेर्मी की कहानी	,,	2.50
प्रसिद्ध वैज्ञानिक एल्बर्ट आइन्स्टाइन की कहानी	: बालकृष्ण	2.50
टेलीग्राफ के आविष्कारक फिनले मोर्स की कहानी	: कांतिमोहन	2.50

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)	: जोनाथन स्विफ्ट	2.00
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)	: डेनियल डिफो	2.00
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)	: आर० एल० स्टीवेन्सन	2.00
चांदी का बटन (Kidnapped)	: ,,	2.00
कठपुतला (Pinnochio)	: कार्लो कोलोदी	2.00
वीर सिपाही (Ivanhoe)	: सर वाल्टर स्कॉट	2.00
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)	: ,,	2.00
तीसमारखां (Don Quixote)	: माइगेल द सरवांते	2.00
तीन तिलंगे (Three Musketeers)	: अलेक्जेण्डर ड्यूमा	2.00
काला फूल (Black Tulip)	: ,,	2.00
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)	: ,,	2.00
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)	: चार्ल्स डिकेन्स	2.00
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)	: एण्डरसन	2.00
रॉबिनहुड (Robinhood)	रूपांतरकार : श्रीकांत व्यास	2.00
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)	: ,, ,,	2.00
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)	: जुले वर्न	2.00
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues under the Sea)	: ,,	2.00
जादूनगरी (Alice in Wonderland)	: लेविस कैरोल	2.00
मूंगे का द्वीप (Coral Island)	: आर० एम० बेलेण्टाइन	2.00
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)	: मार्क ट्वेन	2.00
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)	: ग्रिम बन्धु	2.00
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)	: रूपा० श्रीकांत व्यास	2.00
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)	: जहूरबख्श	2.00

लोक-कथाएं

लोक-कथाएं हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्रस्तुत लोक-कथा-माला में शिक्षाप्रद कथाएं सरल और रोचक भाषा में दी गई हैं, जो स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करती हैं। मोटा मोनो टाइप, बढ़िया कागज, कलात्मक मुद्रण, आकर्षक बहुरंगा कवर। किशोरों और वयस्कों के लिए ये पुस्तकें समान रूप से उपयोगी हैं।

शिक्षाप्रद कथाएं	**आनन्द कुमार**	2.00
जातक कथाएं	,,	2.00
नीति कथाएं	,,	2.00
मनोरंजक कथाएं	,,	2.00
भारतीय कथाएं	,,	2.00
सदाचार की कथाएं	,,	2.00
महापुरुषों की कथाएं	,,	2.00
अमर कथाएं	,,	2.00
लोक-कथाएं	,,	2.00
आदर्श कथाएं	,,	2.00

'सचित्र लोक-कथा' माला

लोक-कथाएं किसी देश के जाति-समाज की सम्पत्ति होती हैं। विविधताओं से पूर्ण भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में लोक-कथाओं का अटूट खजाना भरा पड़ा है। अक्सर पुस्तक रूप में न छपने के कारण इन लोक-कथाओं से हम अपरिचित ही रहते हैं। 'सचित्र लोक-कथा' माला में इस अभाव को दूर करने का प्रथम प्रयत्न किया जा रहा है। इस माला की पुस्तकों में विभिन्न प्रदेशों की चुनी हुई रोचक लोक-कथाएं कलात्मक दोरंगे चित्रों के साथ छापी जा रही हैं। निम्नलिखित पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं :

बंगाल की लोक-कथाएं	: **हंसकुमार तिवारी**
कश्मीर की लोक-कथाएं	: **जीवनलाल 'प्रेम'**
राजस्थान की लोक-कथाएं	: **शांति भट्टाचार्य**
पंजाब की लोक-कथाएं	: **विजय चौहान**
गुजरात की लोक-कथाएं	: **मनहर चौहान**

प्रेरणाप्रद रोचक जीवनियां

सत्यकाम विद्यालंकार

हमारे राष्ट्र-निर्माता	2.00
महात्मा गांधी	1.00
सरदार पटेल	1.00
शिवाजी	1.00

मनोहर जुनेजा

डा० ज़ाकिर हुसैन	2.00
भारत के महान् इंजीनियर डा० विश्वेश्वरैया	2.00

वीरेन्द्रकुमार गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास	1.50
महाकवि कालिदास	1.50

प्राणनाथ वानप्रस्थी

सदाचारी बच्चे	1.00
महापुरुषों का बचपन	1.00
वीर पुत्रियां	1.00
श्रादर्श बालक	1.00
श्रादर्श देवियां	1.00
सच्ची देवियां	1.00
साहसी बालक	1.00
भारत के महान् ऋषि	1.00
गुरु गोविन्दसिंह	1.00
श्रच्छे बच्चे	1.00
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	1.00
गुरु नानकदेव	1.00
वीर हनुमान	1.00
सुभाषचन्द्र बोस	1.00
श्रीकृष्ण	1.00
रवीन्द्रनाथ टैगोर	1.00
गौतम बुद्ध	1.00
सम्राट् श्रशोक	1.00
हरिसिंह नलवा	1.00
विनोबा भावे	1.00
सरदार भगतसिंह	1.00
चन्द्रशेखर श्राज़ाद	1.00
चाणक्य	1.00

विजय विद्यालंकार

इंदिरा गांधी	2.00
लालबहादुर शास्त्री	1.00
वीर सावरकर	1.00

श्राचार्य चतुरसेन

बा श्रौर बापू	1.25
महापुरुषों की झांकियां	1.50

पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द	1.50

राष्ट्रबन्धु

ये महान् कैसे बने	1.50

श्राशाराम माहेश्वरी

युग-निर्माता जवाहरलाल नेहरू	1.50

चमूपति, एम० ए०

हमारे स्वामी	1.00

नारायण प्रसाद बिन्दु

श्रीश्ररविन्द	1.00

प्रो० दीवानचन्द शर्मा

श्राचार श्रौर धर्म	1.25

विश्वनाथ

महापुरुषों के संस्मरण	1.25
गांधीजी से क्या सीखें	1.00
महाराणा प्रताप	1.00
बापू से सीखो	0.75

विनोद

स्वामी रामतीर्थ	1.00
स्वामी विवेकानन्द	1.00
लोकमान्य तिलक	1.00
लाला लाजपतराय	1.00
डा० राजेन्द्रप्रसाद	1.00
जवाहरलाल	1.00

[illegible]

सत्य का पुजारी	1.00

सचित्र ज्ञानवर्धक कहानियां

धर्मपाल शास्त्री
शेक्सपियर की कहानियां 3.50
जितेन्द्रकुमार
सात महान् आश्चर्यों की कहानी 2.00
सत्यदेव नारायण
जानने की कहानियां 2.00
कृश्न चन्दर
दूर देश की कहानियां 2.50
हमारा घर 2.00
भगवतशरण उपाध्याय
खज़ाने का चोर 1.50
सूरजपंखी चिड़िया 1.50
शीशमहल की राजकुमारी 1.50
शेर बड़ा या मोर 1.50
बुद्धि का चमत्कार 1.50
बिना विचारे जो करे 1.50
'निधिनेह'
नानी की कहानियां 2.00
राहुल सांकृत्यायन
मानव की कहानी 1.50
विराज, एम० ए०
जंगल के रहस्य 1.50
प्राणनाथ वानप्रस्थी
1857 की कहानी 1.50
सुदर्शन
पारस 2.00
सत्यकाम विद्यालंकार
सरल महाभारत 1.50
विनोदकुमार
सरल रामायण 1.25
विनोद
आविष्कारों की कहानियां 2.50
धर्मपाल शास्त्री
सरल हितोपदेश 1.50
सरल पंचतंत्र 1.00
सिंदबाद 1.00
ठाकुर राजबहादुरसिंह
करुणा की कहानियां 1.50
आनन्दकुमार
सूझ-बूझ की कहानियां 1.50
बीरबल की कहानियां 1.00
चोर पकड़ा गया 1.50
प्रकाश पंडित
निराला जानवर 1.25
चांद का सफर 1.00
जगदीश दीक्षित 'आनन्द'
अलीबाबा और चालीस चोर 1.00
विश्वनाथ
साहस के पुतले 1.50

रोचक जीवनोपयोगी पुस्तकें

प्राणनाथ वानप्रस्थी
सुन्दर कथाएं 1.00
अच्छे बनो 0.75
विश्वनाथ
गुलिवर की कहानी 0.75
रसीली कहानियां 0.75
गांधीजी से क्या सीखें 1.00
बापू से सीखो 0.75
सुदर्शन
फूलों का गुच्छा 0.75
धर्मपाल शास्त्री
हिन्दुस्तान हमारा 2.00
हम एक हैं 1.50
हमारे त्योहार 1.00
प्रो० दीवानचन्द
आचार और धर्म 1.25
आचार्य चतुरसेन
अच्छी आदतें 1.50
मोहम्मद खलीक
आदमी 1.00
प्रकाश पंडित
चिड़ियाघर 1.00
आओ सरकस देखें 1.00
रामचन्द्र तिवारी
आओ देखें 1.00
केशवसागर
आओ सीखें 1.00
सीखने की बातें 1.00

बहुरंगी सचित्र कविता संग्रह

भावी रक्षक देश के	: बालकवि बैरागी	1.50
चाचा नेहरू	: विष्णुकांत पाण्डेय	1.50
मां, यह कौन ?	: रामेश्वरदयाल दुबे	1.50
अपना देश	: रामचन्द्र तिवारी	1.25
आओ करें सवारी	: ,,	1.00
मेरी गुड़िया कुछ तो बोल	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
आओ मिलकर गाएं	: ,,	1.00
खेलें कूदें नाचें गाएं	: ,,	0.75
हमारे पक्षी	: रुद्रदत्त मिश्र	0.75
फूल खिले हैं डाली-डाली	: ,,	0.75

बहुरंगी सचित्र कहानियां

सिन्दबाद	(पुरस्कृत)	: महेन्द्र कुलश्रेष्ठ	2.00
सफेद घोड़ा	(पुरस्कृत)	: प्रणव चक्रवर्ती	2.00
ईसप की कहानियां		: ,,	1.50
पंचतंत्र की कहानियां	भाग-1	: ,,	1.50
हितोपदेश की कहानियां	भाग-1	: ,,	1.50

आध्यात्मिक

वेद-सुधा	: सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
ईशोपनिषद्	: सत्यभूषण योगी	3.00
असली पुष्पांजलि (गीत और भजन)	:	2.50
भक्ति-दर्पण	: महाशय राजपाल	1.50
बाल सत्यार्थ प्रकाश	: प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार	1.50
हिन्दू धर्म की विशेषताएं	: स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	1.50
आर्य निबन्ध माला	: पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति	1.00
वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी	: पं० धर्मदेव सिद्धांतालंकार	1.00
सत्संग गुटका (संध्यामंत्र, हवनमंत्र, प्रार्थना, भजन, नियम आदि)		0.40
हवनमंत्र (संपूर्ण स्वस्तिवाचन तथा शांति प्रकरण सहित)		0.25
वैदिक संध्या	: महर्षि दयानंद सरस्वती	0.10

हमारी पुरस्कृत पुस्तकें

भारत सरकार से पुरस्कृत

1. जहां सुमति तहं संपति नाना	: ब्रजभूषण	1.50
2. भारतीय संस्कृति की कहानी	: डा० भगवतशरण उपाध्याय	2.00
3. भारत की कहानी	: ,,	2.00
4. कितना सुन्दर देश हमारा	: ,,	2.00
5. आदमी	: मोहम्मद खलीक	1.00
6. हमारे त्योहार	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
7. हमारा शरीर	: चतुरसेन शास्त्री	1.00
8. आइन्स्टाइन की कहानी	: बालकृष्ण	2.50
9. हमारे पक्षी	: रुद्रदत्त मिश्र	0.75
10. हवा की बातें	: केशव सागर	2.00
11. आग की कहानी	: ,,	2.00
12. फूल खिले हैं डाली-डाली	: रुद्रदत्त मिश्र	0.75
13. पानी	: केशव सागर	2.00
14. आवाज़	: ,,	2.00
15. आओ करें सवारी	: रामचन्द्र तिवारी	1.00
16. अपना देश	: ,,	1.25
17. हम एक हैं	: धर्मपाल शास्त्री	1.50
18. हमारा पड़ोसी चांद	: रमेश वर्मा	2.00
19. भारत के महान् ऋषि	: प्राणनाथ वानप्रस्थी	1.00
20. युग-निर्माता जवाहरलाल नेहरू	: आशाराम माहेश्वरी	1.50
21. संसार के सात महान् आश्चर्यों की कहानी	: जितेन्द्रकुमार	2.00
22. ज़िन्दगी की राह	: बालशौरि रेड्डी	3.00
23. तीन एकांकी	: पी० लक्ष्मीकुट्टि अम्मा	2.00
24. यादें	: पद्मिनी मेनन	3.50

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

25. केशव का आचार्यत्व	: डा० विजयपालसिंह	20.00
26. केशव और उनका साहित्य	: ,,	15.00
27. काश्मीर : समस्या और पृष्ठभूमि	: गोपीनाथ श्रीवास्तव	12.00
28. कब तक पुकारूं	: डा० रांगेय राघव	15.00
29. हवा की बातें	: केशव सागर	2.00

30.	यौन मनोविज्ञान	: [illegible] मन्मथनाथ गुप्त	12.00
31.	कीर्ति-स्तम्भ	: हरिकृष्ण प्रेमी	3.50
32.	हिंन्दी नाटक : उद्भव और विकास	: डा० दशरथ ओझा	20.00
33.	पक्षी और आकाश	: डा० रांगेय राघव	5.00
34.	भारतीय संगीत की कहानी	: डा० भगवतशरण उपाध्याय	2.00
35.	भारतीय भवनों की कहानी	: ,,	2.00
36.	मेरी गुड़िया कुछ तो बोल	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
37.	खेलें कूदें नाचें गाएं	: ,,	0.75
38.	सरल पंचतंत्र	: ,,	1.00
39.	सरल हितोपदेश	: ,,	1.50
40.	अच्छी आदतें	: आचार्य चतुरसेन	1.50
41.	महापुरुषों की झांकियां	: ,,	1.50
42.	ममता	: हरिकृष्ण प्रेमी	3.00

पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत

43.	गुरु गोविन्दसिंह	: प्राणनाथ वानप्रस्थी	1.00
44.	चांद का सफर	: प्रकाश पंडित	1.00

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

45.	गाइड	: आर० के० नारायण	6.00
46.	एक म्यान, दो तलवारें	: नानकसिंह	8.00
47.	लद्दाख की छाया	: भवानी भट्टाचार्य	10.00

संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत

48.	आषाढ का एक दिन	: मोहन राकेश	6.00

यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत

49.	आग हमारी मित्र व शत्रु	: रमेश वर्मा	2.50
50.	ब्रह्मांड-यात्रा शुरू हो गई	: रामस्वरूप चतुर्वेदी	3.00
51.	सफेद घोड़ा	: प्रणव चक्रवर्ती	2.00

जनवरी '73 के नये प्रकाशन

1. **कंजा** (उपन्यास) : लोकप्रिय लेखिका शिवानी का यह नवीनतम उपन्यास है। 'कंजा' में सुन्दरता के प्रति आकृष्ट एक पुरुष और प्रेम करके भी जीवन-भर मूक-मौन रहने वाली आधुनिक विचारों की एक नारी का बहुत रोचक और मार्मिक चरित्र प्रस्तुत हुआ है। अपनी विशिष्ट शैली में लिखा शिवानी का यह उपन्यास कुमायूं के लोक-जीवन की मोहक झांकी प्रस्तुत करती है।

2. **बोलते क्षण** (ललित निबंध) : जगदीशचन्द्र माथुर के ललित निबंध बहुचर्चित रहे हैं। विषय-प्रतिपादन, भाषा-शैली आदि दृष्टियों से वे हिन्दी के प्रथम कोटि के लेखक हैं। 'बोलते क्षण' में लेखक के जीवन के वे अमर और मुखर क्षण हैं जो उन्होंने अपनी यात्रा, भ्रमण, चर्चा-परिचर्चा, भेंट-मुलाकात और अन्य महत्त्वपूर्ण प्रसंगों के संस्मरण के रूप में चित्रित किए हैं।

3. **हाथियों का खेदा** (शिकार) : मैसूर में पिछले दिनों हुए खेदा का दृश्य जिसमें जंगली हाथियों को जीवित ही पकड़ा जाता है, श्री विराज ने स्वयं जाकर देखा और अपने कैमरे से फोटोग्राफ लिए। पुस्तक में खेदे के रोचक और जीवन्त वर्णन के साथ उन अवसरों के लेखक के लिए वे ही फोटोग्राफ भी दिए गए हैं। वन्य जीवन पर यह रोचक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

4. **भारत की अग्रणी महिलाएं** (जीवनियां) : आशारानी व्होरा बहुत लम्बे अर्से से लिख रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जीवन के सभी क्षेत्रों में पहल करने वाली भारतीय महिलाओं की जीवन-झांकी प्रस्तुत हुई है। जहां तक संभव हो सका है, लेखिका ने खुद जाकर उनसे साक्षात्कार किए हैं और उनके जीवन के बारे म प्रामाणिक विवरण दिए हैं।

भारत-दर्शन और देश और निवासी पुस्तकमालाओं की नई पुस्तकें। सदा की तरह साज-सज्जा और अनेक रंगीन चित्रों के साथ :

5.	**जर्मनी**	आनन्द जैन	3.00
6.	**अरुणाचल-मिजोरम**	डा० कमला सांकृत्यायन	3.00
7.	**मणिपुर-त्रिपुरा**	डा० कमला सांकृत्यायन	3.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

आगामी प्रकाशन

1. **जाल समेटा** (काव्य) : हिन्दी के लोकप्रिय कवि बच्चन की नवीनतम कविताओं के इस संग्रह में कवि की बहुचर्चित नई रचनाएं दी गई हैं। कवि के कथनानुसार काव्य-विषय पर यह उनकी अन्तिम पुस्तक है, इस दृष्टि से भी इस कृति का बड़ा महत्त्व है।

2. **संकेत** (उपन्यास) : 'संकेत' बंगला के प्रमुख उपन्यासकार ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के विशिष्ट उपन्यासों में एक है। ग्रामीण जीवन पर आधारित इसकी सशक्त कथा, आंसू और मुस्कान में संजोई हुई है।

3. **गले-गले पानी** (उपन्यास): लोकप्रिय उपन्यासकार रामकुमार भ्रमर के नये उपन्यास 'गले-गले पानी' में ग्राम प्रेम-कथात्मक उपन्यासों की लीक से हटकर पति-पत्नी के संबंधों और पुरुष-स्त्री के प्रेम को आज के यथार्थ के नये धरातल पर स्वीकृति देने का सशक्त प्रयास किया गया है।

4. **तिलस्म** (व्यंग्य-संग्रह) : शरद जोशी की चुनीदा तथा बहुचर्चित नई कहानियों का संकलन।

5. **राजा राममोहनराय** (जीवनी): सीमा : प्रस्तुत पुस्तक में महान सुधारक राजा राममोहन राय की जीवनी के साथ-साथ उनके सुधार-कार्यों का ब्योरा सरल, सुबोध तथा रोचक भाषा में दिया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

यातना के क्षण मेरे अपने हैं

—मन्नू भंडारी

(लेखिका की प्रकाशनाधीन 'मेरी प्रिय कहानियां' की भूमिका के अंश)

मेरी अधिकांश कहानियों के मूल में कहीं न कहीं अनुभूति की वैयक्तिकता ही रही है। अनेक बार ऐसा हुआ है कि दूसरों के अनुभव और जिन्दगी के कुछ हिस्सों ने अनायास ही मुझे कहानी के रूप में बांध दिया, लेकिन बाद में पाया कि वह आकर्षण इतना अनायास नहीं था। उसके पीछे कहीं अनजाने और अचेतन में मेरा अपना ही अनुभव था जो एक भीतरी समानता पाकर उस ओर झुका था। 'शायद', 'सजा', 'अकेली' और 'तीसरा आदमी' जैसी अनेक कहानियां हैं जो तब मुझे दूसरों ने दी थीं, लेकिन, आज समय गुज़र जाने पर जब मैं उन सबसे बिल्कुल तटस्थ हो गई हूं तो लगता है वे कतई दूसरों की कहानियां नहीं हैं। वे मेरी उस मानसिक अवस्था की कहानियां हैं जिनका अर्थ मैंने दूसरों के बहाने पाया था। और शायद यही कारण है कि वे आज अचानक ही मुझे प्रिय लगने लगीं।

आज भी याद आता है कलकत्ते का वह बंगाली परिवार जो ठीक हमारे घर के सामने गराज पर बनी एक मियानी में रहता था। गृहस्वामी किसी जहाज़ पर मैकेनिक था और दो साल के बाद ही वह घर आ पाता था। उस परिवार ने इस स्थिति को एक प्रकार से स्वीकार भी कर लिया था। गृहस्वामी से अलग उन लोगों की अपनी ज़िन्दगी थी, अपने सुख-दुख थे, जिन्हें वे स्वयं जीते थे। लगता था जैसे गृहस्वामी जहाज़ और घर की मशीनों में केवल तेल देने का माध्यम-भर था। इस स्थिति को मैंने भी बरसों तक देखा। वह घर छोड़ देने के बाद भी वह परिवार, सम्बन्धों की वह विडम्बना मुझे बराबर हाण्ट करती रहती। कई बार इसपर कहानी लिखी भी पर कभी संतोष नहीं हुआ। शायद इसलिए कि कहानी का वह मूल बिन्दु नहीं मिल पा रहा था जो पूरी स्थिति को परिभाषित भी करता और दूसरी ओर मेरे किसी अनुभूत सत्य का हिस्सा भी होता। फिर लगा, अधिकांश मध्यवर्गीय परिवारों की स्थिति यही है कि हम अपने-अपने ढंग से गृहस्थी की मशीनों में बस तेल-भर देते रहते हैं और सम्बन्धों के नाज़ुक सूत्र मशीनी ज़िन्दगी में अनजाने ही कहीं कुचल जाते हैं। कुचलन की यह कचोट जब बहुत तीखी हुई थी तभी इस कहानी ने एक सार्थक रूप ग्रहण किया था।

इसी तरह 'अकेली' की सोमा बुआ को बचपन में जाने कब देखा था कि किस प्रकार घर से उपेक्षा पाकर वह अपने-आपको दूसरों के लिए महत्त्वपूर्ण बनाने के भ्रम में हास्यास्पद बनाती जा रही थी। उस समय कहानी सोमा बुआ की व्यथा को वाणी देने के लिए ही लिखी थी पर बरसों बाद मुझे उसमें कहीं अपना अंश, अपनी व्यथा दीख[illegible] मुझे [illegible] हो [illegible]

'सज़ा' कहानी की विडंबना भी किसी और ही परिवार में घटित हुई थी, लेकिन बाद में एक नितान्त भिन्न धरातल पर वह मुझे अपनी व्यक्तिगत कहानी का ही रूपक लगने लगी। 'सज़ा' का नायक एक ऐसी विचित्र स्थिति में रहता है जहां वह बिना फैसला हुए ही सज़ा की यातना भोग रहा था और जब रिहाई का निर्णय हुआ था तो वह इतना टूट चुका था कि इस खुशी को जी सकने की सामर्थ्य ही उसमें नहीं रह गई थी। प्रतीक्षा के समय को उसने जेल की चारदीवारी में नहीं, मन की चारदीवारी के पीछे घुटते हुए गुज़ारा था। कहानी लिख गई थी और मैं कहीं उस परिवार के सामने अपने को एक विचित्र-से अपराध-भाव से ग्रस्त-सी पाती थी—किसीकी सारी ज़िन्दगी दांव पर लगी हो, कोई अपने जीवन के भयंकर क्राइसिस से गुज़र रहा हो और कोई उस-पर बैठकर कहानी लिखे! लेकिन एकाएक ही लगा कि यह उस अकेले आदमी की त्रासदी की ही कहानी नहीं है। क्या ऐसा नहीं होता कि कभी-कभी हम अपनी ज़िन्दगी के सारे सुख-स्वप्न, आकांक्षाएं किसी एक स्थिति के साथ जोड़ बैठते हैं और उस स्थिति तक पहुंचने के लिए मोह-ग्रस्त की तरह सारे संकट, सारी यातनाएं झेलते चले जाते हैं। पर उस स्थिति पर पहुंचकर एक दुखद विस्मय के साथ पाते हैं कि गन्तव्य तक पहुंचने के प्रयत्न में ही सारे सुख-स्वप्न झर गए, सारा उत्साह और उल्लास समाप्त हो गया। उपलब्ध को भोगने की अक्षमता उपलब्धि को निरर्थक बना देती है। लक्ष्य-प्राप्ति का वह सुख तो ज़िदगी में कभी नहीं आता, यह यातना-मात्र ही हमारी ज़िन्दगी की वास्तविकता बनकर रह जाती है।

संक्रान्ति-कालीन मूल्यों के बीच खंडित व्यक्तित्व का साथ किस तरह आदमी-दर-आदमी को तोड़ता चला जाता है, इस अनुभूति से 'बन्द दराज़ों का साथ' में दो-चार होना पड़ा। इस प्रकार के व्यक्तित्व के लिए ज़िन्दगी को उसकी संपूर्णता में जीना न केवल असंभव होता है, बल्कि अपने और अपने सम्पर्क में आने वालों के लिए खंड-खंड में जीने का अनन्त सिलसिला पैदा करते जाना उसकी मज-बूरी है।

इन कहानियों की बात करते हुए सहसा ही मुझे लगता है कि उस पुरानी बात में कहीं एक बहुत बड़ी सच्चाई है: यातना और करुणा हमें दृष्टि देती है। अपने सुख और उल्लास के क्षणों में हम अपने से बाहर होते हैं, औरों के साथ होते हैं; यातना के क्षणों में हम अपने भीतर जाते हैं और वे हमारे अपने होते हैं। हो सकता है उल्लास और प्रसन्नता के क्षण मेरी ज़िन्दगी के सर्वश्रेष्ठ क्षण रहे हों लेकिन यातना के ये क्षण मेरे अपने हैं, और सृजनधर्मा हैं। उन्हें विभिन्न कहानियों में अभिव्यक्ति न मिली होती तो निःसंदेह ज़िन्दगी का बहुत कुछ टूट-बिखर गया होता। आज जब सब कुछ बहुत पीछे छूट गया है तो लगता है कि ये क्षण ही मेरे प्रिय क्षण हैं और उनसे उपजी कहानियां ही प्रिय कहानियां।

•

'मानस का हंस'

—नरेन्द्र कोहली

बहुत पहले अमृतलाल नागर ने 'बूंद और समुद्र' में एक पात्र को जन्म दिया था—बाबा रामजी को। बाबा रामजी दिशा-निर्देशक चैतन्य के रूप में अवतरित हुए थे। निःस्वार्थ सेवा-भाव को लेकर निरंतर कर्म के माध्यम से चेतना को जागरूक करने के अद्भुत प्रतीक हैं बाबा रामजी। बाबा रामजी हमारे अपने युग की संवेदना भी हैं तथा आवश्यकता भी। परंतु 1950 ई० के बाद के भौतिकवादी परिवेश में भी बाबा रामजी युग-सत्य नहीं हैं। वे अपने परिवेश में असहज तो नहीं हैं, किंतु असामान्य अवश्य हैं।

पर 'मानस का हंस' में बाबा रामजी का ही अधिक सामान्य और विकसित रूप हैं तुलसीदास। वही रूपाकार, वही शांत स्वभाव, वह 'रामजी', 'राम भगतवा', 'राम भगतनिया' जैसे संबोधन, वह सेवा-भाव तथा कर्म-तत्परता और वैसी ही विकसित आध्यात्मिकता। लगता है बाबा रामजी, तुलसीदास के विकास में एक सीढ़ी-मात्र थे। और तुलसीदास अपने उस मुगलकालीन परिवेश में असहज तो नहीं ही हैं, बाबा रामजी के समान असामान्य भी नहीं हैं।

नागर जी की जिस संवेदना ने बाबा रामजी का निर्माण किया था, उसी ने एक पूर्ण विकसित चैतन्य के रूप में तुलसी का सृजन किया।

उपन्यास की मूल संवेदना ही जैसे नायक के स्वरूप में साकार हुई है। भौतिकता-वाद से अत्यधिक ग्रस्त आपाधापी के इस युग में, घृणा को जीतकर, प्रेम का प्रसार करते हुए, निरर्थक भोग तथा अनावश्यक साधनाओं का संतुलित तिरस्कार करते हुए निरंतर कर्म का संदेश देने के लिए, नागर जी ने मानव तुलसी का बड़ा सहज चित्रण किया है, जिसके सम्मुख जीवन की कठिनतम भौतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां आईं, पर वह टूटा नहीं। और यह नहीं कि तुलसी कोई अतिमानव है। उसमें मानव की वे सब कमज़ोरियां हैं, जो मनुष्य को अपने गंतव्य तक पहुंचने से पूर्व, मार्ग में ही भरमा लेती हैं। पर तुलसी में उनको क्रमशः जीतने का धैर्य तथा साधना है। आज के युग में छलांग मारकर अपने गंतव्य तक सफलतापूर्वक पहुंच जाने की जो व्याकुलता-आतुरता है, उसके लिए तुलसी का सतत संघर्ष कितना भव्य मार्ग-निर्देशक है।

और तत्कालीन जीवन का युग-सत्य प्रस्तुत करनेवाला यह ऐतिहासिक उपन्यास, मुगलकालीन सामाजिक इतिहास को कितने जीवन्त रूप में प्रस्तुत करता है। मुगलों तथा पठानों का संघर्ष, अकबर का राज्य, उत्तराधिकारी जहांगीर का शासन—और उन सबका सामान्य जनता पर प्रभाव। अब तक सामान्यतः ऐतिहासिक उपन्यास के नाम पर या तो प्रख्यात शासकों के जीवन-चरित्र देखने में आए हैं, या तथाकथित ऐतिहासिक परिवेश में काल्पनिक पात्रों की उच्छृंखल गतिविधियां, जिन्हें ऐतिहासिक

प्रामाणिकता का अंकुश भी नियंत्रित नहीं कर पाता। दोनों ही रूप में सामाजिक इतिहास प्रस्तुत नहीं हो पाया। तुलसीदास के चरित्र में यह सुखद सम्मिश्रण है कि तुलसी इतिहास का प्रख्यात चरित्र है, अतः उसके जीवन की घटनाओं के नाम पर मनमाना कल्पना-विलास संभव नहीं है; पर वह चरित्र एक 'सामान्य जन' है, अतः जन-जीवन के चित्रण की उपेक्षा किसी भी भांति नहीं हो सकती। अतः सामान्य-जीवन के परिवेश को पूर्ण ऐतिहासिक प्रामाणिकता के साथ चित्रित करना पड़ेगा, जो नागर जी ने पूर्ण सफलता के साथ किया है।

'अमृत और विष' में नागर जी ने औपन्यासिक शिल्प का एक नया प्रयोग प्रस्तुत किया था: एक उपन्यास-लेखक का अपना जीवन तथा उस जीवन में से बुना जाता हुआ उपन्यास। लेखक के लेखन-प्रक्रिया के प्रत्यक्ष अध्ययन के इसी शिल्प का प्रौढ़ रूप है 'मानस का हंस'। तुलसी का जीवन: घटनाएं और विचार, स्थान और चरित्र; तथा रामचरितमानस में एक भिन्न परिवेश में चित्रित होते हुए वे स्थान, चरित्र, घटनाएं विचार···और उन सबके बीच बोलती हुई तुलसी की भावना, तुलसी की पीड़ा। मेरा निश्चित मत है कि 'मानस का हंस' पढ़ने के पश्चात् 'रामचरितमानस' का सौन्दर्य अधिक विकसित, प्रौढ़ तथा मानवीय रूप में पाठक के सम्मुख उभरता है। कितना ताल-मेल है तुलसी के जीवन और रामचरितमानस में, जैसे तुलसी का अपना जीवन ही रामचरितमानस में उतरता जाता है। वही अवधी बोली है; वही मिथिला, अयोध्या, चित्रकूट तथा प्रयाग है; पार्वती अम्मा हैं; नरहरि बाबा जैसे विश्वामित्र के रूप में आए हों; रत्ना उसी प्रकार आ मिली जिस प्रकार सीता राम को जनक-वाटिका में मिली थीं; चारों ओर आसुरी राज्य के चिह्न हैं; शासक, सैनिक और साधु-महात्मा के रूप में रावण के राक्षस अयोध्या तथा बनारस तक में पहुंचे हुए हैं; फिर रत्नावली का विरह। बेनीमाधव जीवन-चरित सुनने के लिए वैसे ही पहुंचे हैं जैसे काकभुसुंडी के पास गरुड़ या शिव के सम्मुख पार्वती। मानस की श्रोता-आख्याता शैली का सहज ही निर्वाह हो जाता है।

और कैसा ज़बर्दस्त किस्सागो है अमृतलाल नागर। कैसी ही कहानी हो, किसी की भी कहानी हो, किसी भी युग की कहानी हो—कैसी अबाध गति से बहती जाती है: छिछले-छिछले नहीं, कहीं गहरे पैठकर, सब कुछ प्रत्यक्ष-साक्षात् करती चलती है। कथा आरंभ हुई और फिल्मी तकनीक से पूर्व-स्मृति में साक्षात् चित्र उपस्थित हो गया। फिर नहीं लगता कि कहानी सुनाई जा रही है: सब कुछ प्रत्यक्ष है, जीवन्त है।

आज तक हिन्दी में तुलसी ही नहीं, किसी भी साहित्यकार-कलाकार की इतनी पूर्ण, बृहत्, प्रामाणिक तथा रोचक जीवनी उपन्यास के शिल्प में बांधकर प्रस्तुत नहीं की गई। अद्भुत प्रयत्न है नागर जी का, कृति तथा कृतिकार के जीवन में घटनाओं को बिंब-प्रतिबिंब भाव से प्रस्तुत किया है: मानस में तुलसी के जीवन को खोजा है और तुलसी के जीवन में मानस को। यदि कृतिकार के जीवन और कृति में ऐसा तादात्म्य न होता तो कदापि इतना श्रेष्ठ ग्रंथ नहीं रचा जा सकता था।

यादों की बरात

पुस्तकें बहुत लिखी जा रही हैं और लिखी जाएंगी लेकिन 'यादों की बरात' जैसी पुस्तक किसी भी देश और काल में बहुत कम लिखी गई है। इस पुस्तक का प्रणेता कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, वरन् एक ऐसा काव्यस्रष्टा (जोश मलीहाबादी) और युगद्रष्टा है जिसने अपनी रचनाओं से साहित्य के एक युग का निर्माण किया है।

इसकी कविताओं ने भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में पाञ्चजन्य का तुमुल घोष किया जिसे सुनकर दुश्मन के हौसले पस्त हो गए। इसकी रचनाएं 'कोमलकांत पदावली' नहीं, वरन् आग और शोलों के प्रतीक हैं। इसमें यदि आभिजात्य का दर्प है तो एक 'भारतीय' का गर्व भी।

'यादों की बरात' एक ऐसी पुस्तक है जिसके पढ़ने से पिछले पच्चीस-तीस वर्ष की स्मृतियां जाग्रत् हो उठती हैं। स्वाधीनता-संग्राम का तुमुल नाद, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का दमन-चक्र, देश का विभाजन, रक्तपात, खून-खच्चर इत्यादि।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से इस कवि का अत्यंत निकट का सम्पर्क था, किन्तु भाग्यचक्र के फेर में पाकिस्तान चले जाना और वहां की नागरिकता कबूल कर बस जाना आदि सभी बातें आईने की तरह इस छोटे-से संस्करण में साफ हो गई हैं।

आज जब पाकिस्तान के बारे में कवि के सुन्दर सपने टूट चुके हैं, और जब वह अपने जीवन की संध्या-वेला में नैराश्य के सागर में डूब रहा है, उस समय उसे याद आती है अपनी जन्मभूमि मलीहाबाद की सुन्दर अमराइयों की, जब मौरों की भीनी-भीनी सुगंध से समस्त वातावरण सुवासित हो रहा है, जब कोयल की मधुर कुहूक कानों में शहद घोल रही है, और पपीहे की 'पी कहां' हृदय में एक टीस पैदा करती है, याद आती है लखनऊ और दिल्ली की गलियों की, गंगा और यमुना की गरजती लहरों की और हिमालय के शुभ्र गर्वोन्नत ललाट की। याद आती है शान्तिनिकेतन की जहां उसने गुरुदेव के सान्निध्य में अपने जीवन के बहुमूल्य क्षण बिताए थे। याद आती है 'तीनमूर्ति' की जहां न जाने कितनी बार जवाहरलाल के साथ उसके संलाप हुए थे।

ऐसी ही तमाम-तमाम यादों की एक पूरी बरात आप जोश मलीहाबादी की आत्मकथा 'यादों की बरात' में पाएंगे।

(भारतीय साहित्य)

समाचार

१३ साहित्यकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार

साहित्य अकादमी के कार्यकारी मंडल ने १९७२ वर्ष के लिए १३ पुस्तकों को अकादमी पुरस्कार के लिए चुना है।

हिन्दी की पुस्तक का पुरस्कार श्री भवानीप्रसाद मिश्र को उनकी पुस्तक 'बुनी हुई रस्सी' के लिए मिला है।

पुरस्कार के लिए चुनी गई रचनाओं के नाम हैं : सैयद अब्दुल मलिक का उपन्यास 'अघरी आत्मार काहिनी' (असमिया), संतोषकुमार घोष का उपन्यास 'शेष नमस्कार' (बंगला), स्वर्गीय श्री वत्स विकल का उपन्यास 'फुल्ल बिन डाली' (डोगरी), श्री भवानीप्रसाद मिश्र का कविता-संग्रह 'बुनी हुई रस्सी' (हिन्दी), श्री एस०एस० भूस्नूरमठ का विवेचन 'शूंक्या सम्पदानेय परामर्श' (कन्नड़), अली मोहम्मद लोन का नाटक 'सुय्या' (कश्मीरी), ए० के० पोट्टेक्काट का उपन्यास 'ओरु देशथिन्टे कथा' (मलयालम), गोदावरी परुलेकर की आत्मकथा 'जेव्हा माउनुस जागा हो तो' (मराठी), मनोजदास का कथा-संग्रह 'मनोजदाशांक कथा ओ काहिनी' (उड़िया), सन्तसिंह सेखों का नाटक 'मित्तर पियारा' (पंजाब), गुना साम्ताणी की कहानियां 'अपराजिता' (सिन्धी), टी० जयकान्तन का उपन्यास 'शिल नरंगलिल शिलामणितार्कल' (तमिल), श्री श्री का कविता-संग्रह 'श्री श्री साहित्यमु' (तेलुगु)।

अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कृत

गत दिनों केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रो० नूरुल हसन द्वारा भारत के दस अहिन्दी-भाषी हिन्दी लेखकों को पुरस्कार दिये गये। इनमें आंध्र के श्री आंजनेय शर्मा, केरल की डा० सिस्टर क्लेमेटमेरी तथा डा० टी०के० सरला देवी और कश्मीर के डा० जवाहर हांडू उल्लेखनीय हैं। समारोह में इससे भी महत्त्वपूर्ण प्रशस्ति उन सात लेखकों की की गई जिनका चिन्तन हिन्दीतर भाषाओं के अध्ययन से मुखरित हुआ है।

पंजाबी साहित्य पर पुरस्कार

गत दिनों पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा आयोजित भाई वीरसिंह शताब्दी समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश के शिक्षा मंत्री उमराव सिंह ने भाई वीरसिंह और भाई नानकसिंह की स्मृति में, पंजाब सरकार की ओर से, दो वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की। उक्त पुरस्कार प्रत्येक वर्ष पंजाबी की श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं पर दिए जाएंगे, जिनमें से प्रत्येक की राशि 3100 रुपये होगी।

बच्चन जी की कविता न लिखने की घोषणा

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि डा० हरिवंश राय बच्चन ने अपनी 65वीं वर्षगांठ पर घोषणा की कि वे अब कविता नहीं लिखेंगे और जब भी कुछ लिखना होगा, गद्य में लिखेंगे। उन्होंने कहा, "अब मैं उस स्थिति का अनुभव करना चाहता हूं जब जीवन स्वयं कविता हो जाता है।"

डा० बच्चन का अंतिम कविता-संग्रह 'जाल समेटा' राजपाल एण्ड सन्ज द्वारा शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

स्व० मोहन राकेश को

श्रद्धाञ्जलि

—चन्द्रा औलक

जब मेरी समस्त शक्तियाँ नष्ट हो रही हों
मुझे बल देना
प्रेरणा
कि मैं—तुम्हारे सशक्त भावों को कस कर थामे रह सकूँ,
विजय पाऊँ—अपने पराजित भाव पर
मेरे मुख को उत्फुल्लता से रंग देना
कि मैं
मुर्झाये चेहरों को स्वस्थ खाद से पुष्ट कर सकूँ
कि अभी—
मैंने एक भी फसल नहीं चखी,
बचाने में ही सारी शक्तियाँ खो दीं
चिड़ियों और जड़कुतरों से
आह, कितनी कठिन होगी स्वरक्षा···और
शेष नहीं हुआ अभी पहला मुआवज़ा,
ठहरो, पहले चुका लेने दो पावना
तब आने देना पराजय को,
अभी खाली नहीं कोई आसन
उपयुक्त धरातल
कि पराजय को लगाऊँ गले अपने···
ऐसा करूँगी—जब
नितान्त चुक जाऊँगी
किन्तु
इस सबसे पहले
मुझे थोड़ा और बल दो।

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32

रजिस्टर्ड नं० डी-41

केरल के हिन्दी विद्वान डा० मलिक मोहम्मद

'वैष्णव भक्ति-आन्दोलन का अध्ययन' के यशस्वी लेखक डा० मलिक मोहम्मद का नाम आज हिन्दी जगत् में विशेष रूप से जाना जाने लगा है। अभी हाल ही में जब केन्द्रीय हिन्दी समिति का पुनर्गठन किया गया तो उन्हें भी इसमें मनोनीत कर दक्षिण में उनके द्वारा की गई हिन्दी सेवा का सम्मान किया गया है। केन्द्रीय हिन्दी समिति के अतिरिक्त डा० मलिक मोहम्मद गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति तथा शिक्षा मंत्रालय की हिन्दी शिक्षा समिति के भी सदस्य चुने गए हैं। सम्प्रति, आप कालीकट विश्वविद्यालय के भाषा संकाय के अधिष्ठाता हैं। दक्षिण से उनके ओजस्वी व्यक्तित्व ने उत्तर के हिन्दी विद्वानों को भी अभिभूत कर लिया है। उनके ग्रन्थ 'वैष्णव भक्ति-आन्दोलन का अध्ययन' का हिन्दी के शोध प्रबंध साहित्य में एक विशेष योगदान रहा है।

हाल ही में जब वे केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक में भाग लेने आए थे, तब पत्रकार सम्मेलन में हिन्दी के संबंध में उन्होंने अपने मौलिक विचार प्रकट किए।

डा० मलिक मोहम्मद का मत है कि हिन्दी को सही अर्थों में एक संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। प्रोफेसर मलिक मोहम्मद ने यह स्वीकार किया कि इस सिलसिले में गैर-हिन्दू हिन्दी विद्वान और हिन्दी-भाषी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। डा० मलिक मोहम्मद ने पत्रकारों को बताया कि हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द, जिनमें अंग्रेज़ी भी शामिल है, काफी मात्रा में स्वीकार किए जाने चाहिए। संस्कृत या फारसी पर निर्भर रहना भूल है। केरल के इस हिन्दी विद्वान ने यह बात स्वीकार की कि भाषा अपने स्वभाव के अनुकूल जिन शब्दों को ग्रहण करती है वे ही अभिव्यक्ति का सही माध्यम बन सकते हैं। कृत्रिम रूप से दूसरी भाषाओं के शब्द चस्पां करना न तो हिन्दी भाषा को विकसित करेगा और न ही उसको किसी रूप में संपर्क भाषा बनाने में सहायक करेगा।

डा० मलिक मोहम्मद के अन्य सुझाव दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी पढ़नेवालों की कठिनाइयों के बारे में थे।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित

सम्पादक : विश्वनाथ

नया साहित्य

वर्ष 18
अंक 2

फरवरी, 1973
वार्षिक मूल्य 5.00
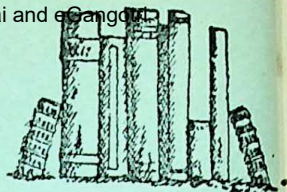
किताबों की दुनिया

मिर्ज़ा ग़ालिब और उनके मकान

उर्दू के महान शायर मिर्ज़ा ग़ालिब कब, कहां और किन-किन मकानों में रहे—यह बात अभी भी काफी विवादास्पद है। इस सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित तथा अली ज़वाद ज़ैदी द्वारा लिखित एक पुस्तिका में काफी रोचक प्रकाश डाला गया है। पुस्तिका में दिल्ली के सात ऐसे मकानों की सूची दी गई है जिनपर ग़ालिब काबिज़ रहे। सन् 1814 के आसपास वे पूरी तरह दिल्लीवासी बन गए थे और सन् 1829 में उनके पास खारी बावली का एक मकान था। सन् '30 में उन्होंने वह मकान बदल दिया और जामा मस्जिद के पीछे के एक मकान में आ गए। सन् 1840-41 के दौरान का उनका जो पता मिलता है उसमें फाटक हब्श खां में रहने का जिक्र है। सन् 1847 में उन्होंने फिर मकान बदला लेकिन किस मुहल्ले में गए इस बात का कोई उल्लेख नहीं है। सन् 1850 के बाद अगले दस वर्षों में उन्होंने तीन बार मकान बदले और तीनों ही बल्लीमारान में थे। उनकी मृत्यु जिस मकान में हुई वह गली कासिम-जान में था।

शेक्सपियर के नाटकों पर प्रश्नचिह्न

असली और नकली शेक्सपियर को लेकर एक विवाद-ग्रस्त खोज अभी पिछले दिनों अंग्रेज़ी समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई थी। अब अमेरिका के एक भूतपूर्व सरकारी अधिकारी तथा लेखक चार्लटन ऑगवर्न ने 'शेक्सपियर, दि मैन बिहाइंड दि नेम' नाम की एक पुस्तक लिखकर शेक्सपियर के नाटकों की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगाने का प्रयास किया है। ऑगवर्न के अनुसार शेक्सपियर के नाम से जितने भी नाटक अभी तक प्रकाश में आए हैं वे वस्तुत: आक्सफोर्ड के सत्रहवें अर्ल एडवर्ड डि वेर के लिखे हैं, जिनपर तत्कालीन राजनैतिक व सामाजिक समस्याओं से बचने के लिए, वास्तविक लेखक ने शेक्सपियर का नाम दे दिया था। ऑगबर्न के अनुसार इस शंका का समाधान स्ट्रेटफोर्ड स्थित ट्रिनिटी चर्च के स्मारक में सुरक्षित शेक्सपियर के नाटकों की मूल हस्तलिखित पांडुलिपियों की लिखावट तथा शेक्सपियर के वसीयतनामे पर अंकित उसके चार हस्ताक्षरों की लिखावट में मिलान करके किया जा सकता है। ऑगबर्न का यह भी कहना है कि उक्त चर्च के अधिकारी इस रहस्य का उद्घाटन नहीं होने देना चाहते। इसलिए ऑगबर्न ने कानूनी कार्रवाई करना तय किया है, ताकि उक्त स्मारक से नाटकों की मूल पाण्डुलिपियां निकलवाई जा सकें और शेक्सपियर के हस्ताक्षरों से उनकी लिखावट का मिलान करके सही तथ्यों तक पहुंचा जा सके। इसके लिए वह भारी मूल्य देकर शेक्सपियर की कब्र ... खरीदने को भी तैयार हैं।

हमारे घर के देवता—सुमित्रानन्दन पंत

—अमृतलाल नागर

(लेखक की शीघ्र प्रकाश्य कृति 'जिनके साथ जिया' का एक अंश)

निराला जी सन् '२६ के लगभग लखनऊ में आ बसे थे। प्रायः तभी से मैं उनके यहां आने-जाने लगा। निराला जी अर्वाचीन भारतीय कवियों में यदि सर्वाधिक किसी की बातें किया करते थे तो पंत और गुरुदेव की। इन दोनों ही के प्रति वे होड़ में, रीझ में, रिसियान-खिसियान में अक्सर बहुत-कुछ कहा करते थे। सन्'३४ में डॉ० रामविलास शर्मा यहां विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए आ गए; कुछ समय के बाद वे निराला जी के साथ ही रहने भी लगे। मेरी-उनकी घनिष्ठता वहीं से बढ़ी। कभी-कभी नौजवानी के लहरे में निरालाजी को छेड़ने के लिए हममें से कोई पंत या रवि ठाकुर की ऐंडी-बैंडी खोट निकालकर आप तरह देकर निकल जाता था और निराला जी ताव में आकर हमें डेढ़ घण्टिया लेक्चर पिला देते थे। निराला को पंत की अनेक कविताएं कण्ठस्थ थीं। गुरुदेव और पंत की शान के खिलाफ वे किसी से एक वाक्य नहीं सुन सकते थे, आप भले ही तैश में आकर गाली तक दे बैठें। पंत जी के प्रति मेरा भक्ति-भाव निराला जी की देन है। मैं समझता हूं कि डॉ० रामविलास के लिए भी यही बात कही जा सकती है।

उस ज़माने में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में जितने अधिक और नये-नये चित्र पंत जी के छपा करते थे उतने शायद किसी और के नहीं। अनेक हिन्दी-प्रेमी विश्वविद्यालय के छात्रों ने अपने यहां पंत के चित्र टांग रखे थे। मेरे लिए भी वर्षों तक पंत जी चित्र-मात्र, काव्य-मात्र, बातें-मात्र ही रहे।

सन् '43 में बंबई में पंत जी के पहली बार दर्शन हुए। श्री उदयशंकर के साथ वे बम्बई आए थे। बन्धुवर नरेन्द्र शर्मा से बम्बई में मेरी घनिष्ठता बहुत बढ़ गई थी, उन्हीं के साथ पंत जी के दर्शन करने के लिए गया। कुछ दिनों बाद पंत जी दूसरी बार बम्बई पधारे और नरेन्द्र जी के घर पर ठहरे। महीनों हमारी सुख की शामें बीती हैं। नरेन्द्र जी का घर मेरे घर से अधिक दूर न था। पंत जी शाम को वहां से चलकर मेरे यहां आते। मैं यह जानता था कि पंत जी अकेले समुद्र किनारे सैर करने नहीं जा सकते इसलिए जहां तक बनता, लाख काम छोड़कर पांच बजे तक घर लौटने का समय साधता था, फिर भी कभी न कभी देर हो ही जाती थी। कम्पाउण्ड में उनके लिए आराम-कुर्सी रख दी जाती थी। पंत जी मेरी लड़की अचला से बातें किया करते थे। एक दिन मुझे लौटने में बहुत देर हो गई। जब घर आया तो पत्नी ने कहा कि पंत जी बड़ी देर तक तुम्हारी राह देखकर चौपाटी पर गए हैं। मैं हारा-थका एक प्याली चाय पीने के लालच में बैठा रहा, परन्तु मन में यह बराबर लग रहा था कि अकेले सैर करने में पंत जी को अवश्य अटपटा लग रहा होगा। तब तक पंत जी भीड़ से बहुत घबराते थे।

कुछ दिनों पहले ही नरेन्द्र जी पंत जी के सामने उनका [illegible] हुए मुझे यह सुना चुके थे कि एक बार पंत जी कहीं भीड़ में फंस गए तो लौटकर नरेन्द्र जी से कहा कि, अरे नरेन्द्र वहां तो इतनी भीड़ थी, इतनी भीड़ थी कि देखो मेरे कोट का बटन टूट गया। चाय बन भी न पाई थी कि पंत जी लौट आए। मैं सहम रहा था कि उनके चेहरे पर थकान और परेशानी होगी, मगर पंत जी तो उत्साह और उमंग में थे। अपने देर से आने की क्षमा-भरी सफाई देते हुए मैंने बात उठाई, पंत जी बोले, "पहले तो मैं सोचता रहा कि अगर बन्धु नहीं आए तो फिर मेरा घूमना आज न हो सकेगा, फिर मैंने सोचा कि आज मैं अकेला ही चलूं। अरे बन्धु, वहां तो बहोत लोग थे। मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ, पर आज हमारा, 'सुख-दुख' नहीं हुआ। इसी से मैं एक राउण्ड करके चला आया।"

पहाड़ में, यानी अल्मोड़ा की तरफ, हमजोली आपस की बातों को 'सुख-दुख करना' कहते हैं। पंत जी मेरी बांह पर हाथ रक्खे शिवाजी पार्क की चौपाटी पर एक छोर से दूसरे छोर तक चार-छह चक्कर लगाते हुए मुझे अपने मन की बातें सुनाया करते थे। कभी अपने घर की, कभी इधर-उधर की, कभी सैद्धान्तिक— यही उनका सुख-दुख करना था। मैंने कहा "हां, पंत जी, सुख-दुख करना रह ही गया। परन्तु पंत जी, चौपाटी पर तो रोज़ ही इतने लोग रहते हैं, फिर आपने आज ही भीड़ क्यों देखी?"

"रोज़ तो आप साथ में रहते हैं, इसलिए भीड़ पर ध्यान ही नहीं जाता, सुख-दुख करने में ही मन लगा रहता है।"

ऊपर से कहने-सुनने में यह बात भले ही [illegible] सच है कि पंत जी जब अपने में रम जाते हैं तो उन्हें बाहर के लगाव का होश नहीं रहता।

सन् '46 में मद्रास में उदयशंकर जी की फिल्म 'कल्पना' के लिए संवाद लिखने के लिए गया था। पंत जी ने उसके गीत लिखे थे। हाल ही में अपनी लम्बी बीमारी के बाद उन्होंने स्वास्थ्य-लाभ किया था। उन दिनों प्रायः बड़े खोए हुए रहते थे। उनके उदास चेहरे पर कान्ति विराजती थी। एक दिन बंगले के लॉन में मेरी बांह पर हाथ रक्खे मौन टहलते-टहलते वे सहसा खड़े होकर सामने वाले वृक्ष को सिर उठाकर देखने लगे। क्रमशः पलों के हेर-फेर में उनकी खोई आंखों में चमक बढ़ने लगी मेरी बांह पर पंजे का उल्लास-भरा दबाव बढ़ा, उमंग से बोले, "सामने देखिए बन्धु, कविताएं झर-झर झर रही हैं।" उसके दस-पन्द्रह दिनों के बाद ही 'स्वर्ण-किरण' की कविताएं कागज़ पर उतरने लगीं।

पंत जी ने मेरे औद्धत्य को अनेक बार अपनी करुणा से बांधकर मुझे संतुलित किया है। वह सब कथा फिर कभी ठंडे-निर्लिप्त मन से लिख सका तो लिखूंगा। पंत जी ने मेरे बड़े कठिन क्षणों को बड़े ममत्व से दुलारकर हल्का बनाया है। मुझे बहलाने और उद्बोधन देने के लिए उन्होंने बम्बई में मुझे नियमित रूप से डेढ़-दो महीने तक कालिदास की रचनाएं सुनाई हैं। मैंने महाकवि से रघुवंश पूरा सुना है और 'कुमारसंभव' तथा 'मेघदूत' के अनेक अंश। पंत जी ने बड़े प्रेम और आग्रह से मेरे उपन्यास 'महाकाल' के प्रूफ देखे हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'लाइफ' : आरंभ और अंत

—विश्व प्रकाश

संसार के कोने-काने में पढ़े जाने वाले अमेरिका के सचित्र साप्ताहिक 'लाइफ' का बंद हो जाना अपने-आप में एक आश्चर्यजनक घटना है। 'लाइफ' में रुचि रखने-वाले लगभग हर व्यक्ति को उसका बंद होना एक व्यक्तिगत हादसा महसूस हुआ है। 'लाइफ' एक सामान्य साप्ताहिक पत्रिका न होकर एक संस्था थी, एक प्रवृत्ति थी, संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष थी।

आज से लगभग 36 वर्ष पहले 19 नवम्बर, 1936 को लाइफ का पहला अंक प्रकाशित हुआ था। जिन लोगों को उस अंक की याद होगी उन्हें वह चित्र भी नहीं भूला होगा जिसमें एक नवजात शिशु को लिए हुए एक डाक्टर दिखाया गया था और शीर्षक दिया गया था—'लाइफ बिगिन्स' (जीवन शुरू होता है)। उन्हीं लोगों को तब भला कैसा लगा होगा जब गत 8 दिसम्बर, शुक्रवार को 36 वर्षों के गौरवपूर्ण जीवन के बाद 'लाइफ' के बंद होने की खबर मिली होगी। निश्चय ही उन्हें अपने एक अन्तरंग मित्र के असामयिक निधन का-सा अहसास हुआ होगा।

'लाइफ' के पहले अंक की दो लाख प्रतियां छापी गई थीं, जो बाज़ार में आते-आते ही बिक गईं। फलतः दूसरा अंक तीन लाख छपवाना पड़ा, लेकिन उसकी बिक्री की भी वही हालत रही। यहां तक कि दिसम्बर में ही 'लाइफ' की खपत 5 लाख प्रतियों से अधिक हो गई। तब तक कोई भी पत्रिका अपने पहले वर्ष में पांच लाख से अधिक नहीं खप पाई थी जबकि 'लाइफ' ने मात्र कुछ सप्ताहों में ही उस सीमा को पार कर लिया था।

इस अभूतपूर्व सफलता का प्रमुख कारण 'लाइफ' की चमक-दमक नहीं बल्कि उसका वह मिला-जुला रूप था जिसमें हर पाठक को अपनी रुचि की चीज़ मिल जाती थी। बाद के वर्षों में यद्यपि 'लाइफ' के रूप-विधान में अनेकानेक परिवर्तन होते रहे लेकिन उसका वह सबरसपन अंत तक किसी न किसी रूप में कायम रहा।

'लाइफ' के प्रकाशन की योजना पहले-पहल किस रूप में प्रकाशक के सामने आई, इसकी भी एक कहानी है। सन् 1934 में 'लाइफ' के प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी हेनरी ल्यूस की भेंट प्रतिभाशाली महिला क्लेयर बूथ ब्रोका से एक दावत में हुई। ब्रोका से ही आगे चलकर ल्यूस ने विवाह भी कर लिया। उक्त दावत में ब्रोका ने ल्यूस को बताया कि एक सम्पादक की हैसियत से उसने एक सचित्र पत्रिका की डमी तैयार की है। कुछ मास बाद वे दोनों एक दावत में फिर मिले और ल्यूस ने पत्रिका के संबंध में फिर बात चलाई। उसने कहा, "जिस पत्रिका की डमी और योजना तुमने तैयार की है, मैं उसके बारे में तुमसे विस्तार से बातें करना चाहता हूं।" बातों के दौरान ब्रोका ने बताया कि उसने अपनी पत्रिका का नाम 'लाइफ' सोचा है। उक्त नाम ल्यूस को भी पसन्द आ गया अतः उन्होंने पिछले 54 वर्षों से प्रकाशित हो रही उक्त नाम की पत्रिका का नाम

पर्याप्त मूल्य देकर खरीद लिया और दो वर्ष बाद ही नई 'लाइफ' का प्रकाशन शुरू हो गया। नई 'लाइफ' के उद्देश्य की घोषणा करते हुई ल्यूस ने कहा, 'लाइफ' का उद्देश्य है—जीवन को देखना, दुनिया को देखना, महान घटनाओं का प्रत्यक्ष-दर्शी बनना, गरीबों के चेहरों और घमण्डियों की आदतों को पढ़ना, मशीनों-सेनाओं-जंगल-चांद आदि आश्चर्यजनक चीज़ों के बारे में तथ्यों का उद्घाटन करना आदि।"

···और अपने 36 वर्षों के जीवन में 'लाइफ' ने उपरोक्त बातों को मद्देनज़र रखते हुए साहित्य, समाज, संस्कृति, राजनीति और विज्ञान के क्षेत्रों में महत्त्व-पूर्ण भूमिका निभाई। मार्गरेट बर्क-ह्वाइट अल्फ्रेड आइसेन्टेड, रॉबर्ट कापा, पीटर स्टेकपोल, कार्ल मीडन्स, डेविड डगलस डन्कन, लैरी बरोज़, गॉर्डन पार्क्स जैसे महानतम छायाकारों के चित्र 'लाइफ' के माध्यम से जनता के बीच पहुंचे और प कारिता के क्षेत्र में 'दि पिक्चर ए नामक नवीनतम विद्या की शुरुआत हुई यही नहीं 'लाइफ' के पृष्ठों पर हेमिं फॉकनर और चर्चिल जैसे साहित्यका की महत्त्वपूर्ण रचनाएं भी छपीं औ नार्मन मेलर जैसे आधुनिक लेखकों वैज्ञानिक-कल्पनात्मक लेख भी।

'लाइफ' का सर्कुलेशन 85 ला प्रतियों तक पहुंचा और सारी दुनिया यह पत्रिका खूब पढ़ी गई। परंतु टेलि विज़न के प्रचार तथा अन्य कारणों से ग दस वर्षों में इसका प्रचार घटने लगा। गत चार वर्षों में 'लाइफ' को 22 करो रु० का घाटा रहा और छपनेवाली प्रति की कुल संख्या भी घटाकर केवल 50 ला कर दी गई। यह संभवतः पत्रिकारिता एक युग का अंत था जिसके फलस्वरू पत्रिका बंद हो गई।

हमारे घर के देवता (पृ० 4 का शेष)

'बूंद और समुद्र' में प्रूफ की अशुद्धियां देखकर बोले, "श्रीनिवास से कह देते कि मुझे प्रूफ भेजते रहते। मैं देख देता।"

मैंने कहा, "हां, अब आपको ऐसे ही कष्ट देकर तो मैं अपने लिए जस मोल लूंगा।"

सहज बोले, "क्यों, इसमें क्या हो गया बन्धु ?" मैं यह तो नहीं कह सकता कि सदा परन्तु प्रायः पन्त जी सहज स्वरूप रहते हैं। जहां वे अपनी सहजता खोते हैं वहां उनकी सीमाएं भी सहज स्पष्ट हैं। उनका व्यक्तित्व इतना मधुर है कि उनकी छोटी-मोटी कमज़ोरियां भी मीठी लगती हैं। कोई मनुष्य पूर्ण नहीं होता, भले वह महापुरुष ही हो। यह सब होते हुए भी सहज स्वभाव पंत जी के व्यक्तित्व की दि शक्ति है। मद्रास में एक दिन शाम जेमिनी स्टूडियो से लौटकर घर आया देखा, बंगले की सीढ़ियों पर मेरी प और पंत जी बैठे थे। पंत जी का चेह चमक रहा था। मुझे देखते ही बोले, " बन्धु, प्रतिभा जी को तो बहुत अच् अच्छी कहानियां याद हैं। अब मैं रो इनसे कहानियां सुना करूंगा।" औ उसके बाद कुछ दिनों तक तीसरे प कहानियां सुनने के लिए ऐसे अकुलाते जैसे बच्चे अकुलाते हैं।

पंत जी के व्यक्तित्व ने मुझे ही न मेरे घर-भर को बहुत अधिक प्रभावित कि है। पंत जी हमारे घर के देवता हैं।

एक बैले की तैयारी

—शरद जोशी

(लेखक की हाल में प्रकाशित पुस्तक 'तिलस्म' की एक रचना)

बड़े पैमाने पर सरकार और छोटे पैमाने पर जनता को मूर्ख बनाने के लिए मुझे 'बैले' की उपयोगिता स्पष्ट नजर आ रही है। 'बैले' अर्थात् नृत्य-नाटिका, मगर यह क्षेत्र भी ऐसा है जहां अंग्रेज़ी शब्द हिन्दी से ज़्यादा रौब रखता है। अतः उसका ही उपयोग करना आवश्यक है। मैं चाहे नृत्य नहीं जानता, मगर अंग्रेज़ी जानता हूं। यदि सिर्फ अंग्रेज़ी से काम नहीं चलेतो नृत्य भी कर सकता हूं। पैसे के लिए कौन नहीं करता। आजकल मैं इस दिशा में गम्भीरता से विचार कर रहा हूं। एक ऐसा कन्या-प्रधान दल बनाने की सोच रहा हूं, जिनकी कमर मेरी भृकुटी के 'रीमोट कण्ट्रोल' से लचकने लगे। मैंने कुछ विषय खोजे हैं और कुछ अंग्रेज़ी शब्दों के व्यवसायिक अर्थ गहराई से समझे हैं। 'बैले' के लिए नृत्य नहीं, शब्द प्रमुख है। कुछ भी कीजिए मगर उसकी एक भावना-प्रधान, एक लहरदार कमेण्ट्री देना ज़रूरी है जिसमें भारी-भरकम से लेकर हल्के-फुल्के शब्दों तक की कसीदाकारी हो, क्रोशिया लेकर आठ-दस पंक्तियों को बुन दिया जाए और विश्वास रखा जाए कि अंग्रेज़ी को देववाणी मानने वाला वर्ग कचरे में से गूढ़ अर्थ निकाल लेगा। यदि शब्दों में शक्ति है तो आप रौब से कचरा प्रस्तुत कर सकते हैं। मैं करने वाला हूं। मुझे 'बैले' प्रस्तुत करने के लिए सरकारी मदद चाहिए। सरकार अपने को सुसंस्कृत दिखाने के लिए धन नष्ट करने को आतुर है, मेरे 'बैले' से श्रेष्ठ क्या माध्यम हो सकता है। आरम्भ के लिए एक लाख रुपया काफी होगा।

कला के क्षेत्र में सफलता की सबसे बड़ी ट्रिक है शहर में जाकर गांव बेचिए। मैं इसी दिशा में सोच रहा हूं। गांव की महिलाओं के शरीर स्वस्थ होते हैं और देखने में सुन्दर। वे ससूह में ठुमकते हुए काम करती हैं और यदि एक मुट्ठी-भर लड़कियां ग्रामीण वस्त्रों में मंच पर बिखेर दी जाएं तो शहर का दर्शक आंखें फाड़े उन्हें देखता रहता है, जब तक पर्दा न गिरे। बस, काफी हद तक यही फार्मूला चलेगा। मगर सवाल आधुनिकता का भी है। अतः नये विषय खोजने होंगे। साहित्य के अतिरिक्त सभी क्षेत्रों में एक चम्मच-भर सृजनशीलता जो आर्थिक लाभ देती है, वह एक बाल्टी-भर के लेखन से प्राप्त नहीं होता। मैंने 'बैले' के लिए विषय खोजा है और उसके पूर्व के लिए कुछ छोटे-छोटे 'आयटम' मेरे पास हैं।

पहला 'आयटम' है—दि किसान आफ इंडिया। परदा उठने पर एक किसान दिखाया जाएगा। वह किसान है, किसानी करता है जो देखने में अजीब चीज़ लगती है। चूंकि वह इस लकड़ी के मंच पर फसल उगाने में लगा है, अतः वह बड़े मज़े से नाच-नाचकर यह काम कर रहा है। वह कमर मटकाते हुए हाथ ऊपर-नीचे कर ज़मीन-आसमान एक करने में लगा ही था कि उसकी 'किसाननी' आ जाती है और फिर दोनों ठुमकते हैं। फिर वह घर चली जाती है और यह मेरा बेटा परदा गिरने तक नाचता रहता है। नृत्य द्वारा यह साबित किया जाएगा कि भारत का किसान कितनी कड़ी

मेहनत करता है। क्यों नहीं उसे काम करता देखने के लिए एक टिकट खरीदा जाए?

उसके उपरान्त मूल 'बैले' आरम्भ होता है, जिसके लिए टिकट बेचे गए हैं, पत्रकारों को बटोरा गया है और अफसरों को सादर कार्ड भेजे गए हैं। 'बैले' का कथानक एकदम ताज़ा है। पद के लिए छटपटाती मानव-आत्मा की कहानी। रेल जीवन की गति का प्रतीक है। परदा उठने पर लाइट, शेड और कार्डबोर्ड की मदद से एक रेल दिखाई गई है। लोग पत्नियों, कुलियों और सेण्ड-आफ करने वालों सहित नृत्य करते हुए आ रहे हैं और रेल में बैठने का नाटक कर रहे हैं। चाय-वाला आवाज़ लगा रहा है, गार्ड घूम रहा है, कुली पैसे मांग रहा है। हर शख्स पैर फैलाने का इरादा लिए सिमटा बैठा है। एक अफसर आता है, वह रेल चेक करता है, पटरी चेक करता है, गार्ड की मूंछें चेक करता है और सबकी सलामी लेता हुआ स्पेशल कम्पार्टमेण्ट में बैठ जाता है। सीटी बजती है, स्टीम छूटती है, गाड़ी बढ़ने की ध्वनि के साथ पिछले पर्दे के पास का दृश्य दाहिनी ओर खिंचता है। तभी एक व्यक्ति दौड़ता आता है, गार्ड को कुछ कहता है और गार्ड सीटी बजाकर रेल रोक देता है। पैसेन्जर खिड़की से झांकते नाराज़ देखते हैं। आगन्तुक रेल के स्पेशल कम्पार्ट-मेण्ट में बैठे अफसर को दो-एक ज़रूरी पत्र देता है। अफसर पत्र पढ़ने के बाद क्रोध की मुद्रा में सीना फुलाकर नृत्य करने लगता है। पत्र में मन्त्री महोदय ने आदेश दिया है कि अफसर अपना दौरा समाप्त कर दे और लौट आए। यात्री हंस रहे हैं और नृत्य कर रहे हैं। अफसर पैर पटकता हुआ तांडव कर रहा है। यात्री गार्ड से गाड़ी बढ़ाने को कह रहे हैं, अफसर गाड़ी बढ़ने नहीं दे रहा। अन्ततः गार्ड अफसर का स्पेशल कम्पार्टमेण्ट काटकर रेल बढ़ा ले जाता है। यात्रीगण ठुमकते हुए रेल के पार्श्व-संगीत में आगे बढ़ जाते हैं। अब पृष्ठभूमि में करुण संगीत है। अफसर मंच पर अकेला है और एक खाली डिब्बा। वह कभी डिब्बे में घुसकर सीट पर बैठता है, कभी वहां से उठकर बाहर आकर नाचने लगता है। संगीत उभरता है। धीरे-धीरे अफसर नृत्य करते हुए मात्र एक अकेला अफसर नहीं रहता। वह उन समस्त प्यासी भारतीय आत्माओं का प्रतीक बन जाता है जो अपनी कुर्सी से चिपके रहना चाहते हैं और उसके साथ गति के लिए आकुल हैं। गति के अभाव में कुर्सी और कुर्सी के अभाव में गति उन्हें व्यर्थ लगती है। 'बैले' का अन्त लम्बा और दिल को हिला देने वाला है। अकेला नर्त्तक एक सीट के आसपास नाच रहा है और वह नाचते-नाचते थककर गिर जाता है, वहीं पटरी पर। स्पेशल डिब्बा धीरे-धीरे हट जाता है। दूर से रेल का प्रकाश दिखाई देता है, सीटी सुनाई देती है और एक मानवीय चीख और रेल की घड़घड़ाहट के साथ परदा गिर जाता है।

आपका क्या खयाल है? यह एक खेलने लायक 'बैले' है ना। मुझे सरकारी मदद मिल जाएगी। मगर उसके पूर्व मुझे कुछ नर्त्तकों की मदद चाहिए। जो भली भांति ठुमकना जानते हों, कृपया मुझसे सम्पर्क करें।

मेरी कविता मोहभंग पर समाप्त

—बच्चन

(बच्चन की अभी-अभी प्रकाशित काव्य-संग्रह 'जाल समेटा' की भूमिका)

इस शीर्षक के अंतर्गत मैं अपने पाठकों से अपनी कृतियों के विषय में कुछ निजी बातें करता रहा हूं।

इस बार तो बहुत-सी बातें करना चाहता था।

पर जब बहुत कुछ कहने को होता है तब आदमी कुछ भी नहीं कह पाता।

वही मेरी हालत है।

मुझे अपनी एक पुरानी कविता याद आती है।

जो मैं आज कहना चाहता था उसे वह, संक्षेप में, पहले ही कह चुकी है।

तो वह कविता ही क्यों न प्रस्तुत कर दूं।

'त्रिभंगिमा' की है—

"जाल-समेटा करने में भी
समय लगा करता है, माँझी,
मोह मछलियों का अब छोड़।

सिमट गईं किरणें सूरज की,
सिमटीं पंखुरियाँ पंकज की,
दिवस चला छिति से मुँह मोड़।

तिमिर उतरता है अंबर से,
एक पुकार उठी है घर से
खींच रहा कोई बे-डोर।

जो दुनिया जगती, वह सोती;
उस दिन की संध्या भी होती,
जिस दिन का होता है भोर।

नींद अचानक भी आती है,
सुध-बुध सब हर ले जाती है,
गठरी में लगता है चोर।

अभी क्षितिज पर कुछ-कुछ लाली,
जब तक रात न घिरती काली,
उठ अपना सामान बटोर ।

जाल-समेटा करने में भी,
वक्त लगा करता है, माँझी,
मोह मछलियों का अब छोड़ ।

मेरे भी कुछ कागद-पत्रे,
इधर-उधर हैं फैले-बिखरे,
गीतों की कुछ टूटी कड़ियाँ,
कविताओं की आधी सतरें,
मैं भी रख दूँ सबको जोड़ ।"

'धीवर' अथवा 'मांझी' का प्रतीक बड़ा पुराना है । इसका आश्रय बुद्ध और ईसा तक ने लिया। अगर एक कवि भी इसका आधार लेकर कुछ अपनी बात कह सका है तो श्रेय प्रतीक की महार्थता को है । व्याख्या की आवश्यकता शायद ही हो।

कविता मोह से आरम्भ होती है—'मोह' के बड़े व्यापक अर्थ हैं—और मोह-भंग पर समाप्त होती है । नहीं; मैं सामान्यीकरण नहीं करूंगा। मेरी कविता मोहसे आरम्भ हुई थी और मोहभंग पर समाप्त हो गई—'हार' और 'जाल' मोह और मोहभंग के प्रतीक ही तो हैं--आपको याद दिला दूं कि मेरे प्रथम काव्य-संग्रह का नाम 'तेरा हार' था । इसके विघटन के चिह्न तो कुछ समय पहले दिख गए थे,—'विघटन' में 'घट' का गोलाकार भी मेरे ध्यान में है —पर पूर्णता वहीं पहुंचकर मिली है ठीक जहां से वह शुरू हुई थी । शेक्सपियर के शब्दों में 'The wheel is come full circle'— एक वृत्त पूर्ण हुआ—सांप ने मुख से पूंछ पकड़ ली—काव्य-यात्रा के लिए यह रूपक मैंने और कहीं भी प्रयुक्त किया है। हां, याद आ गया—

'कविता का पंथ अनंत सर्प-सा
जो है मुख में पूँछ दबाए ।'

(आरती और अंगारे)

मेरी मोह-मूर्तियों पर आप उंगली रखना चाहें तो कल्पना और प्रयत्न आप स्वयं करें; इस समय मैं आपको किसी प्रकार का संकेत देने की मन:स्थिति में नहीं हूं ।

मैंने मुख्यतया कविता के द्वारा अपना पथ प्रशस्त किया था, पर जहां तक मैं आ गया हूं उसके आगे, मुझे लगता है, कविता से प्रगति संभव न हो सकेगी; अब तो 'अकविता' को उपादान बनाना होगा—यारों ने तो 'अकविता' को भी कविता बना दिया है । मुझे यह मोह न व्यापे ।

यात्रा आगे संभव हुई और उसका वर्णन करने का अवसर मिला तो किसी दूसरे माध्यम से । [illegible]

जर्मन दार्शनिकों पर भारतीय प्रभाव

अभिताभ

अठारहवीं सदी के अंत में जर्मनी में दर्शन की रोमांसवादी धारा का प्रभाव था। तभी वहां पहली बार संस्कृत के कुछ ग्रंथों के अनुवाद हुए। उन्होंने उस समय के जर्मन बुद्धिजीवियों को झकझोर दिया। इम्मेनुअल कांट (1724—1804) पहला प्रतिष्ठित जर्मन दार्शनिक था जिसने भारतीय दर्शन का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया। कम ही लोग यह जानते होंगे कि भूगोल पढ़ाते समय उसने भारत के भूगोल, जनसंख्या, धार्मिक मान्यताएं, धर्म और जातिप्रथा आदि पर भी छात्रों के सामने अपने विचार प्रकट किये। उस ने मनुष्य की चार प्रमुख प्रवृत्तियों को भारतीय जाति प्रथा का तार्किक आधार ठहराया। उसने कहा, स्वभाव से भारतीय विनम्र हैं और हर राष्ट्र के प्रति सहनशील हैं; इसीलिए तातारों ने इतनी आसानी से उनपर आधिपत्य कर लिया है। ये लोग उद्यमी, परिश्रमी और अपने काम में ईमानदार हैं, चीनियों की अपेक्षा कहीं अधिक ईमानदार हैं। "इनकी नैतिकता में मानवता के अहित की कोई गुंजाइश नहीं है।" वेदों की चर्चा करते हुए कांट ने बताया कि भारतीय धर्म में बड़ी शुद्धता है, यहां ईश्वर की शुद्धतम मान्यता है जो अन्य धर्मों में दुर्लभ है। "मैं श्रेष्ठतम विवेक हूं, जो कुछ भी है, उसका कारण मैं हूं; मेरे अस्तित्व की खोज मत करो, यह तुम्हारी क्षमता से बाहर है; बस निर्दोष जीवन बिताकर मेरे आदेशों का पालन करो।" और इसी सांस में कांट ने आगे कहा, "यही उचित भी है। व्यक्तिगत अटकलों द्वारा विवेक के रहस्यों की खोज करने में कोई तुक नहीं है।" कांट की पुस्तक क्रिटिक ऑव प्योर रीजेन का अंतिम लक्ष्य यही है।

उस समय शाकुंतलम् और भगवत्-गीता जर्मन भाषा में अनूदित हो चुके थे। जॉन गोट्टफ्राइड हर्डर (1744—1803) रोमांसवादी धारा के उन प्रणेताओं में से एक था जो भारतीय विचारधारा की गहराइयों को नाप सके। उसने लिखा कि भारत वह भूमि है "जहां पहली बार मानव मस्तिष्क को सरलता, शक्ति और शुद्धता के साथ ज्ञान और गुण प्राप्त हुए हैं। यूरोप के ठंडे, दार्शनिक संसार में इसका कोई जवाब नहीं है···भारतीय आकाश के नीचे की हर चीज़ में यह चमत्कार है कि वह हमें अधिक सभ्य और अधिक विनम्र बना सकती है···मुस्लिम शासन में भारत की मूल संस्कृति की कुछ विशेषताओं में परिवर्तन हो गया है, मगर तब भी यह अनेक फलदायक कलाओं की जननी बनी हुई है।"

भारत को मानवता का आध्यात्मिक घर स्वीकार करने के दूरगामी परिणाम निकले। संपूर्ण उन्नीसवीं शताब्दी तक जर्मन दर्शन इससे प्रभावित रहा। कुछ वर्तमान जर्मन आंदोलन अभी तक इससे प्रभावित हैं। पिछली सदी के पहले दशक में जर्मनी में दर्शन के इतिहास में भारतीय दर्शन का अध्ययन शामिल हो गया था। के० जे० एच० विंडश्मन की 'फिलोसॉफी

इन द प्रोग्रेस ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री, में भारत पर 14,00 पृष्ठ थे।

आर्थर शॉपेनहॉवर (1788–1867) पहला जर्मन चिंतक था जिसे भारतीय दर्शन से ज्ञान-लाभ ही न हुआ, साथ ही आध्यात्मिक प्रेरणा भी मिली। उपनिषद् की "हर पंक्ति अर्थपूर्ण है···हर पृष्ठ पर गहरे, मौलिक विचार प्रकट किए गए हैं ···यह मेरे जीवन का आलंबन है।" उस की पुस्तक 'द वर्ल्ड एज़ विल एंड आइडिया' का स्वर वही था जो बुद्ध ने वेदांत को मोड़कर दिया था। वह बौद्ध धर्म को ईसाई धर्म से अधिक गहरा मानता था।

जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हीगेल (1170–1831) भारतीय दर्शन का सही परिपेक्ष्य में अध्ययन न कर सका। वह इस अतार्किक निष्कर्ष पर पहुंचा कि "भारतीय दर्शन में ऐतिहासिक रूप से प्रगतिशील तत्त्व नहीं हैं।" कार्ल मार्क्स सहित उस पीढ़ी के कई जर्मन दार्शनिक इस मत से प्रभावित हुए।

पॉल ड्यूसेन (1845–1919) भारतीय दर्शन के साथ फिर न्याय किया। "भारतीय दर्शन न तो मानवता का मूल चिंतन है और न ही मानव के विकास के इतिहास का एक पत्थर; यह अपने-आप में एक आध्यात्मिक संसार है।" मैक्स शीलर (1874–1928) और हर्नमन ग्रेफ कीसलिंग (1880–1946) की मान्यता थी कि पश्चिमी सभ्यता की प्रक्रिया में पूर्वी ज्ञान (पूरक के रूप में) आवश्यक है।

पश्चिमी सभ्यता ग्रीक और रोमन परम्पराओं में ढली है। विशेषज्ञों के अलावा अन्य जर्मन विद्वानों के लिए भारतीय चिंतन को समझ पाना सरल नहीं है। लेकिन जॉर्ज मिश, फ्रिट्ज़-जोखिम वॉन रिंटेलेन और कॉर्ल यास्पर्स जैसे कुछ समसामयिक चिंतकों ने भारतीय दर्शन को समझने की चेष्टा की हैं। जर्मनी में डॉ॰ सर्वेपल्लि राधाकृष्णन् और श्री अरविंद की पुस्तकों की काफी मांग है। लेकिन ज़रूरत इस बात की है कि केवल ऐतिहासिक महत्त्व को आंकने की बजाय, भारतीय दर्शन का व्यवस्थित अध्ययन हो और विवेकपूर्ण रूप से उसे पाश्चात्त्य दर्शन के सम्मुख खड़ा किया जाय। वह कार्य उतना सरल नहीं है। पश्चिमी चिंतन की विभिन्न विचार-धाराओं का ही आपस में तुल्नात्मक अध्ययन किया जाना अभी बाकी है।

जो सुख आरंभ में विष की भांति है और अन्त में अमृत की भांति और जिससे आत्मा और बुद्धि को शांति मिलती है वह सुख सात्त्विक है जो सुख आरंभ में अमृत की भांति है और अंत में विष की भांति वह राजस सुख है। जो सुख आरंभ से अंत तक आत्मा को केवल मोहनिद्रा, आलस्य में डाले रखता है वह तामस सुख है।

—गीता

'मानस का हंस' के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण पत्र

प्रिय नागर जी,

आपके प्रकाशक से 'मानस का हंस' की प्रति मिली। पिछले कई दिनों यह मेरी 'बेडसाइड कम्पेनियन' रही है। कल ही पढ़ना समाप्त हुआ।

इस उपन्यास की गरिमा चरित नायक के व्यक्तित्व में तो है ही; आपकी समन्वयात्मक दृष्टि ने सहज और निरायास गति से कथानक का पथ आलोकित करके भी इसे वन्य शालीनता प्रदान की है। सोने में सुहागा। इसलिए बहुत पहले कही गई यह उक्ति इस पुस्तक पर लागू है— "दिस इज़ नो बुक; ही हू टचेज इट, टचेज मैन।"

रामचरितमानस का चित्रपट इतना संतुलित और अपने में सम्पूर्ण है कि उसके रचयिता को हम लोग एक परिपक्व और गंतव्यप्राप्त व्यक्ति ही के रूप में देखते हैं। रत्नावली की कथा के लोकप्रचलित होने के बावजूद, विनयपत्रिका और कविता-वली के कई प्रखर अथवा आत्मप्रताड़नापूर्ण संदर्भों को जानते हुए भी हमारे मन में तुलसीदास का वही निष्कम्प रूप स्थिर रहता है जिसे मानस ने अनावृत किया है। ऐसे तुलसीदास को विकास के विभिन्न सोपानों में गुज़रता दिखाना बड़ी हिम्मत का काम है। आपका अध्यवसाय विशेष सराहनीय है, क्योंकि विनयपत्रिका आदि के उद्धरणों के लिए उपयुक्त सेटिंग तैयार करते समय आपको तत्कालीन सामाजिक इतिहास के उप-करणों को बड़ी सावधानी के साथ संजोना पड़ा है।

काम और राम के बीच अन्तर्द्वंद्व ही में आपने वह चमत्कारपूर्ण नाटकीयता प्रस्तुत की है जिसे अन्य उपन्यासकार घटनाओं की आकस्मिकता और सस्पेंस द्वारा पैदा करते हैं। मुझे खास तौर से यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आपने मेघा भगत के सहयोग से काशी में तुलसीदास द्वारा रामलीला के सूत्रपात का इतना सजीव वर्णन किया है। आपको शायद ज्ञात हो कि एक किम्वदंती यह भी है कि जैसे काशी में ऐसे ही अयोध्या में भी गोस्वामी जी ने रामलीला का प्रवर्तन किया था, किन्तु बाद में चैत्र में रामनवमी से प्रारम्भ होने वाली अयोध्या की रामलीला समाप्त हो गई।

हो सकता है, कुछ लोगों को तुलसीदास को प्लेग के दिनों में सोशल वर्कर के रूप में दिखाया जाना न रुचे। कविप्रवृत्ति के प्रतिकूल पड़ता है प्रायः ऐसा पुरुषार्थ-प्रदर्शन! किन्तु, पुराण-महाभारत से लेकर आज तक हमारे यहां तो इतिहासकार, कथाकार और नीतिकार का त्रिवेणी की भांति सामसिक रूप चलता रहा है। आपने उसी परम्परा का अत्यंत कौशल और खरेपन से निर्वाह किया है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

आपका,
जगदीशचंद्र माथुर

श्री अमृत लाल नागर का नया उपन्यास 'मानस का हंस'। प्रकाशक, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6 मूल्य : 25 रुपये

आगामी प्रकाशन

1. **हम फिदाए लखनऊ** (हास्य-व्यंग्य) : लखनऊ को बची-खुची अपनी विशिष्ट संस्कृति पर आज भी गर्व है। गलियों-मुहल्लों में ऐसे लोग आज भी मिल जायेंगे जो बीते दिनों की दास्तान के बहाने लखनऊ के गुण गाते नहीं थकते। श्री अमृतलाल नागर लखनऊ की ज़िंदगी में रमे हुए हैं। इस पुस्तक में उन्होंने हास्य-व्यंग्य का रंग देते हुए तब और अब के लखनऊ की बड़ी ज़ोरदार कहानियां प्रस्तुत की हैं।

2. **सूरजमुखी** (उपन्यास) : मुल्कराज आनन्द अंग्रेज़ी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। साहित्य एकादमी से पुरस्कृत 'सूरजमुखी' उनके आत्मकथात्मक उपन्यास माला के दूसरे उपन्यास 'मार्निंग फेस' का हिन्दी अनुवाद है। इस उपन्यास में लेखक ने एक किशोर के मन में इस संसार को लेकर क्या-क्या भावनाएं उठती रहती हैं इसका बहुत सशक्त चित्रण किया है। मनुष्य मात्र के किशोर-मन की दशाओं पर यह संभवत: सबसे बड़ा और उत्कृष्ट उपन्यास है।

3. **संकेत** (उपन्यास) : ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के इस उपन्यास में बंगाल के ग्रामीण जीवन का सशक्त चित्रण हुआ है। जीवन के सुख और दुख की खोज और पहचान में एक एकाकी व्यक्ति की इस कहानी में बंगाल के गांव, नदी, खेत, खलिहान, जंगल और जंगली फूल, घास, तिनके तक लेखक की सूक्ष्म दृष्टि में चित्रित होते चले गए हैं। 'संकेत' के पात्र एक मनुष्य ही नहीं, न बोलने वाले गांव के सब कुछ हैं।

4. **ये गलियां ये रास्ते** (उपन्यास) : द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण अपनी कहानियों के लिए बहुत ही चर्चित और लोकप्रिय लेखक हैं। 'ये गलियां ये रास्ते' उनका नया रोचक उपन्यास है। अपनी कहानियों की ही तरह इस उपन्यास की कथा मानवीय संवेदना, करुणा और स्नेहमयता से परिपूर्ण और मनोरंजक है।

5. **दूसरा पहलू** (उपन्यास) : मनोज बसु के इस उपन्यास में कई पर्दों में छिपे एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के चरित्र का पर्दाफाश किया गया है। यह रोचक चरित्र बताता है कि बुराई के सामने आने से पहले कितने समय तक वह चुपचाप समाज को क्षति पहुंचाती रहती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

उत्तरायण

डा० रामकुमार वर्मा का नवीन महाकाव्य 'उत्तरायण' मनोरम भावभूमि के साथ प्रवाहित अभिनव विचारधारा की सशक्त अभिव्यक्ति है। वाल्मीकि रामायण में उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त अंश है, यह विषय संस्कृत के इतिहास ग्रंथों में और अन्यत्र भी पर्याप्त विवाद का विषय रहा है और प्राय: मनीषियों की इस पर सहमति रही है कि यह अंश उत्तरकाल में जुड़कर उत्तरकाण्ड कहलाया है। तुलसीदास ने अपने विभिन्न रामकाव्यों में उत्तरकाण्ड की योजना तो की है परन्तु उसकी विषय-वस्तु वाल्मीकि रामायण से सर्वथा भिन्न है। उसमें सीता-निर्वासन जैसे प्रसंगों का प्राय: अभाव है।

वर्मा जी की कारयित्री प्रतिभा का अनुपम निदर्शन इस दारुण प्रसंग को रामचरित से निकाल देने में और तदर्थ प्रस्तुत कारणों को काव्य-कल्पना से चित्रित करने में है। अष्टम सर्ग (अन्तर्द्वन्द्व) और नवम् सर्ग (स्वप्न-दर्शन) एक अपूर्व मानसिक क्षेत्र की सृष्टि करते हैं। तुलसीदास रामचरित मानस की समाप्ति पर आ रहे हैं, आदर्श रामराज्य को अंकित करते-करते वे कहते हैं—

"अभिशापित क्रूर कलंक न इसमें होगा।" सहसा सीता-निर्वासन के क्रूर-कलंक का स्मरण हो आता है और उनके मुख से निकल जाता है —

> "जब नहीं राज्य में थी कलंक की रेखा,
> फिर क्यों सीता का सत्य रहा अनदेखा ?
> जब दैविक-दैहिक ताप न थे जगतल में,
> कैसी कलंक की रेखा शुभ अंचल में ?"

और वे इस निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं—

> "उत्तरचरित्र की कथा असम्भव-सी है,
> किस कवि ने रचना दोषपूर्ण यह की है ?
> राज्यारोहण के बाद समाप्त कथा है,
> फिर और बढ़ाना कथा नितान्त वृथा है।"

यही 'उत्तरायण' काव्य का प्रतिपाद्य लक्ष्य है। उत्तरकाण्ड के अन्य रामचरित्र विरोधी प्रसंगों का निर्देश करते हुए अन्त में तुलसी वाल्मीकि से पूछ बैठते हैं—

> "बतला दो कवि, कुछ भूल हुई है मुझसे,
> प्रभु की करुणा प्रतिकूल हुई है मुझसे ?
> पर 'उत्तर' का सारा रहस्य समझा दो,
> यह कैसी है गांठ इसे सुलझा दो।"

इस अन्तर्द्वन्द्व को लिए वे अर्धरात्रि में अश्रुसिक्त हो सो जाते हैं।

रात्रि के अंतिम प्रहर में तुलसी को एक स्वप्न-दर्शन होता है। वाल्मीकि आकाश से अवतीर्ण होते हैं। अपने प्रतिरूप तुलसी की शंका का निवारण करते हुए कहते हैं—

1. **जाल समेटा** (काव्य) : हिन्दी के लोकप्रिय कवि की नवीनतम कविताओं के इस संग्रह में कवि की बहुचर्चित नई रचनाएं दी गई हैं। इस संकलन का एक और दृष्टि से बड़ा महत्त्व है कि बच्चन ने पुस्तक की भूमिका में यह कहा है कि उनकी काव्य-विषय पर यह अन्तिम पुस्तक है। 6.00
2. **हाथियों का खेदा** (शिकार-वृत्तान्त) : विराज की नई पुस्तक 'हाथियों का खेदा' में पिछले दिनों मैसूर में हाथियों के जीवित पकड़ने का रोमांचक वृत्तान्त है। इस अवसर पर उपस्थित रहकर लेखक ने कैमरे से फोटोग्राफ लिए हैं जो पुस्तक में दिए गए हैं। 5.00
3. **तिलस्म** (व्यंग्य) : शरद जोशी हिन्दी के प्रथम कोटि के व्यंग्य लेखकों में स्थान रखते हैं। 'तिलस्म' में उनकी नवीनतम व्यंग्य-रचनाओं का संकलन हुआ है। कहानी के माध्यम से समाज, शासन, राजनीति आदि पर किए गए ये व्यंग्य आंखें खोल देते हैं। 6.00
4. **गले-गले पानी** (उपन्यास): रामकुमार 'भ्रमर' नये लेखकों में बहुचर्चित हैं। उनके उपन्यासों में आधुनिक जीवन के तीव्र प्रवाहों को पकड़ने की कोशिश रहती है। 'गले-गले पानी' में उन युवक-युवतियों की कहानी है जो आधुनिकता के पीछे बादहवास भाग रहे हैं। 8.00
5. **जिनके साथ जिया** (संस्मरण) : श्री अमृतलाल नागर की इस पुस्तक में प्रसाद, शरत्चन्द्र, निराला तथा समकालीन अन्य महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों के रोचक संस्मरण हैं। 5.00
6. **मेरी प्रिय कहानियां** (कहानियां) : मन्नू भंडारी के इस कहानी-संकलन में लेखिका की मनपसन्द कहानियां संकलित हैं। पुस्तक के प्रारंभ में उनकी भूमिका से कहानी साहित्य का नया आयाम खुलता है। 5.00
7. **राजा राममोहन राय** (जीवनी) : सीमा ने इस पुस्तक में उस महापुरुष की जीवनी प्रस्तुत की है, जो देश की सुषुप्तावस्था में लोगों को झकझोर कर जगाया और उनमें चेतना भरी। 1.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

"तुमको शंका है, मैंने
अनुचित लिखा राम का है चरित्र।
मेरे उस उत्तरकांड बीच
है विकृत राम का चारुचित्र।
पर मैं कहता हूं रामायण
षट्काण्ड लिखी हो भावभीन।
जोड़ा है उत्तरकाण्ड किसी
निर्मम कवि ने हो हृदय-हीन।
तब तुलसी ने भी निश्चय कर लिया—
"अब मैं भी अपने 'मानस' में
त्यागूंगा यह प्रक्षिप्त अंग।
मैं राम-राज्य कह लिख दूंगा
लव-कुश के होने का प्रसंग।
संवाद-कथा के अन्त उचित है,
ज्ञान-भक्ति का हो स्वरूप।
इस भांति कहूंगा राम-कथा,
जो विश्व-कथा होगी अनूप।"

इस प्रकार तुलसी 'उत्तरकाण्ड' की ओर 'अयन' (गमन) करते 'नान्य: पन्था: विद्यतेऽयनाम'—मुक्ति प्राप्ति के लिए अन्य कोई मार्ग नहीं, सिवाय इसके कि सीता-निर्वासन आदि कलुष प्रसंगों को छोड़कर रामभक्ति की शरण ली जाए, इस परिणाम पर पहुंच गए और कवि रामकुमार ने भी अपने काव्यसूर्य का 'उत्तरायण' प्राप्त कर लिया।

'उत्तरायण' के पूर्वोक्त भावमिश्रित वैचारिक तत्त्व-निरूपण में जो सौष्ठव है उससे कुछ कम सौष्ठव उसकी पीठिका में नहीं है। इस महाकाव्य में तुलसी संस्मरण के रूप में आत्मचरित उपस्थित करते हैं और अपने जीवन की प्रमुख कृति 'रामचरितमानस' के निर्माण की गाथा वर्णित करते हुए पूरे रामचरित पर भी संक्षेप में प्रकाश डाल जाते हैं। तुलसी का आत्म-[illegible] को मोह लेता है। उसमें रत्नावली का विवाह तथा परित्याग का प्रसंग बड़ा मार्मिक है।

वस्तुत: डा० रामकुमार वर्मा की 'उत्तरायण' कृति हिन्दी महाकाव्य के क्षेत्र में अपनी नवीनता और कल्पना से अभिनन्दनीय है। पंत ने अपने 'दो शब्द' में उन्हें समुचित ही बधाई दी है।

(**'चम्पा'**—स्नातकोत्तर विभाग भागलपुर विश्वविद्यालय की पत्रिका)

करफ्यू

'करफ्यू' में डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के सन्दर्भ में हमारे सामाजिक और नैतिक मूल्यों की जांच करने का प्रयत्न किया है। वे हमारे समाज की वर्जनाओं के ऊपर प्रहार करते हैं—वे वर्जनाएं जिनके कारण आदमी स्वतन्त्रता, समझ और सामंजस्य के बजाय सतही और ढोंग-भरी जिन्दगी बिताने के लिए मजबूर होता है। सामाजिक और नैतिक मान्यताओं के मन पर लगने वाले करफ्यू को नाटककार ने शहर में लगे हुए करफ्यू के द्वारा व्यंजित किया है जिसके फलस्वरूप स्त्री-पुरुषों के दो अलग-अलग जोड़े रात-भर एकसाथ रहने को मजबूर होते हैं। यह स्थिति अपने-आप में नाटकीय तो है ही, इससे नाटककार को पति-पत्नी के सम्बन्धों और फिर सामान्यत: स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की ओर भी जांच करने का अवसर मिलता है। स्पष्ट ही इस नाटक की मूल विषयवस्तु बहुत दिलचस्प है।

(साहित्यालोचन)

समाचार

नेशनल बुक ट्रस्ट के नये चयरमैन

नेशनल बुक ट्रस्ट के चेयरमैन पद से डा० बी० वी० केसकर के सेवामुक्त होने के बाद उक्त पद पर एक प्रमुख इतिहास-विद् डा० एस० गोपाल को नियुक्त किया गया है। डा० एस० गोपाल भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० एस० राधाकृष्णन् के एकमात्र पुत्र हैं। वे सेण्ट एंटोनी कालेज ग्राक्सफोर्ड के फेलो और नेहरू विश्व-विद्यालय में समसामयिक इतिहास के प्रोफेसर हैं।

डा० गोपाल जवाहरलाल नेहरू की चुनी हुई रचनाओं का सम्पादन भी कर रहे हैं, जिनके दो भाग अब तक प्रकाशित हो चुके हैं तथा कुछ अन्य भाग प्रकाशनाधीन हैं। डा० गोपाल भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की इतिहास शाखा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं और उन्हीं के निदेशन में विवादग्रस्त भारत-चीन सीमा-रेखा के संदर्भ में भारत की स्थिति को स्पष्ट करने वाले ऐतिहासिक तथ्यों का चयन और सम्पादन हुआ है। डा० गोपाल ने इतिहास-विषयक पूर्ण ग्रन्थों की रचना की है और सम्प्रति जवाहरलाल से संबंधित एक पुस्तक पर काम कर रहे हैं।

उर्दू की श्रेष्ठ कृतियों पर पुरस्कार

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने जनधरी '69 से 30 नवम्बर '71 के बीच प्रकाशित श्रेष्ठ उर्दू कृतियों पर पुरस्कारों की घोषणा की है। घोषित पुरस्कार पुरस्कृत कृतियों के लेखकों को प्रदान किए जाएंगे। प्रत्येक पुरस्कार की राशि दो हजार रुपया है। सैयद मसूद हसन रिज़वी (लखनऊ) को 'असलाफ-ए-मीर अनीस' पर, मजरूह सुल्तानपुरी (बम्बई) को 'गज़ल' पर, डा० यूसुफ हुसेन खान (दिल्ली) को 'ग़ालिब और रंगे ग़ालिब' पर, डा० मुगनी तबस्सुम (हैदराबाद) को 'फानी बदायूनी : शख्सियत और शायरी' पर और गुलाम रब्बानी तावां (दिल्ली) को 'ज़ौक-ए-सफर' पर पुरस्कृत किया गया है।

महात्मा गांधी की कृतियों का कैप्सूल

गत 30 जनवरी को, महात्मा गांधी की निधन तिथि पर उपराष्ट्रपति गोपाल-स्वरूप पाठक ने महान आत्मा के मृत्यु-स्थल पर ज़मीन के नीचे एक ऐसा कैप्सूल रख दिया है जिसमें महात्मा जी की कृतियों के माइक्रोफिलम संस्करण सुरक्षित हैं। उक्त कैप्सूल में महात्मा जी की कृतियों के अलावा विश्व के महापुरुषों द्वारा उन्हें दी गई श्रद्धांजलियां तथा 'बा' और 'बापू' के कांस्य-फलक भी हैं।

चीनी-अंग्रेज़ी शब्दकोश

अंग्रेज़ी के ख्यातिप्राप्त चीनी लेखक डा० लिन युतांग ने एक महत्त्वपूर्ण चीनी-अंग्रेज़ी शब्दकोश तैयार किया है। अठारह सौ पृष्ठों के इस शब्दकोश का प्रकाशन हांगकांग विश्वविद्यालय की ओर से किया गया है। यह शब्दकोश डा० लिन युतांग के सात वर्षों के अथक परिश्रम का प्रतिफल है जिसे उन्होंने ताइपेह में रहकर तैयार किया है। शब्दकोश में कला, साहित्य, विज्ञान और चीनी साम्यवाद से संबंधित लगभग एक लाख दस हज़ार प्रविष्टियां हैं। डा० लिन ने अपने शब्द-कोश का आधार वर्णमाला के 33 मूल आकारों को बनाया है।

मोतीलाल नेहरू स्मारक पुस्तकालय, भोपाल, के भवन का शिलान्यास
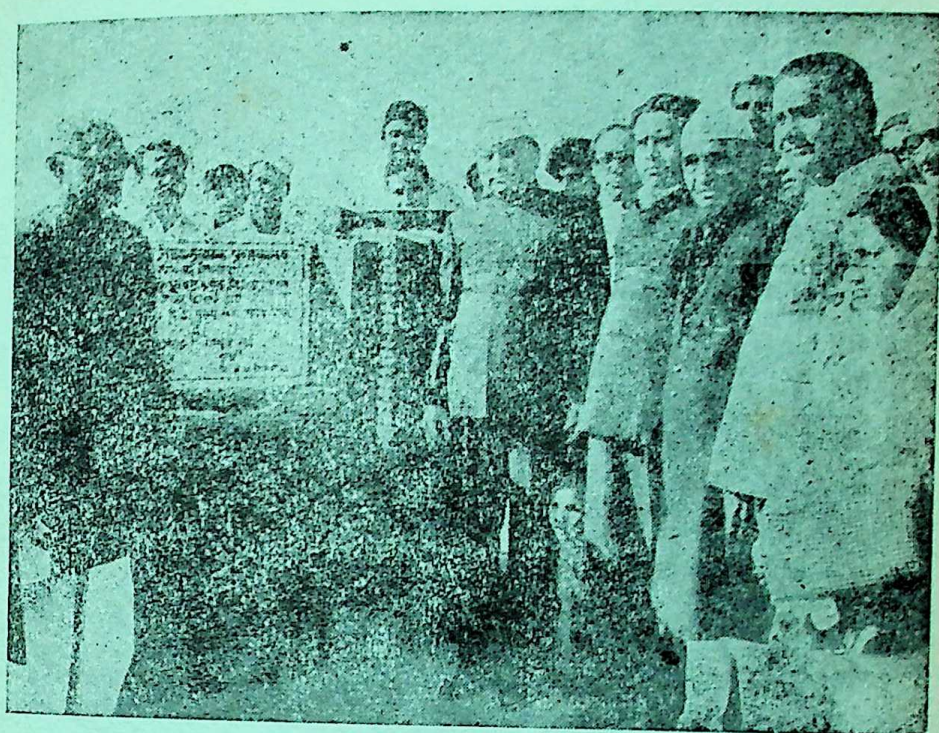
डा० सत्यनारायण सिन्हा, राज्यपाल, मध्य प्रदेश, द्वारा मोतीलाल नेहरू स्मारक पुस्तकालय के भवन का शिलान्यास समारोह के अवसर पर लिया गया चित्र। (बायें से दायें) श्री बैजनाथ प्रसाद दुबे (पुस्तकालय के संचालक), डा० सत्यनारायण सिन्हा (राज्यपाल, मध्य प्रदेश), श्री प्रकाशचन्द्र सेठी (मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश), श्री सौभाग्यमल जैन, श्री आर० के० इन्दौरिया तथा श्रीमती कुसुम जैन।
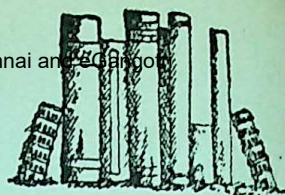
किताबों की दुनिया

बैंक से कर्ज लेकर पुस्तक का प्रकाशन

कन्नड के प्रसिद्ध कवि श्री एस० वी० परमेश्वर भट्ट ने कालिदास की सभी कृतियों का कन्नड अनुवाद एक ही ग्रंथ में स्वयं प्रकाशित किया है जिसमें मूल संस्कृत भी साथ ही दिया गया है। "कन्नड कालिदास महासंपुट" नामक यह सुंदर ग्रंथ प्रकाशन जगत् की एक महत्वपूर्ण घटना है। कवि ने इसकी रचना में तीस वर्ष लगाये हैं। इसके प्रकाशन का इतिहास भी बहुत प्रेरणाप्रद है। इसकी ढाई हज़ार प्रतियां छापने में लगभग 40 हज़ार रुपये का खर्च आना था और कवि के पास इतना पैसा नहीं था। सिंडीकेट बैंक से उन्होंने 15 हज़ार रु० का कर्ज़ लेकर पांडुलिपि प्रेस में दी और अपने चार हज़ार मित्रों को पत्र लिखे कि वे पुस्तक के प्रकाशनपूर्व मूल्य रुपये 25 पर पुस्तक खरीदें। 1700 के लगभग व्यक्तियों ने आर्डर के साथ चेक भेज दिये और उनके पास 42 हज़ार रुपया इकट्ठा हो गया। पुस्तक खरीदने वालों में टैक्सी ड्राइवर, व्यापारी और होटल कर्मचारी भी हैं। बंगलौर के एक डाक्टर ने अपने परिवार के लिए तीन प्रतियों का आर्डर दिया। प्रो० भट्ट ने पुस्तक प्रकाशित होने से पूर्व ही बैंक का कर्जा उतार दिया।

डा० त्रुब्निकोवा के अनुवाद

ताशकंद-निवासी डा० स्वेतलाना त्रुब्निकोवा ने हिन्दी की अनेक पुस्तकों का रूसी भाषा में अनुवाद किया है। उन्होंने दिनकर की कविताओं पर प्रबंध लिखकर 1965 में डाक्टरेट प्राप्त की और "नीलकुसुम" के नाम से उनकी चुनी हुई कविताओं का अनुवाद प्रकाशित कराया। उन्होंने यशपाल की दस चुनी हुई कहानियों का भी अनुवाद किया है और इस समय अमृतलाल नागर के सुप्रसिद्ध उपन्यास "अमृत और विष" का उनके द्वारा किया अनुवाद प्रेस में है। वे तमिल भाषा की भी अच्छी जानकार हैं और मास्को के इन्स्टीट्यूट आव इन्टरनेशनल रिलेशन्स में तमिल पढ़ाती हैं। इस समय वे तमिल की भी कुछ रचनाओं का अनुवाद करने में लगी हुई हैं।

पर्ल एस० बक का देहावसान

नोबल पुरस्कार विजेता अमेरिकी लेखिका पर्ल एस० बक का गत 6 मार्च को —डेनबी (वरमौंट) में अपने निवास-स्थान पर देहावसान हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु 80 वर्ष की थी। 'गुड अर्थ' नामक उपन्यास पर इन्हें 1932 में पुलिट्ज़र और 1936 में प्रकाशित अपनी दो जीवनियों—'दी एक्साइल' और 'फाइटिंग एंजेल' —पर नोबल पुरस्कार मिले। उनके बीस से अधिक उपन्यास हैं।

वेल्थी फिशर
जिन्होंने बीस लाख प्रौढ़ों को साक्षर बनाया

—जगदीशचन्द्र माथुर

(भारत में साक्षरता प्रसार के क्षेत्र में श्रीमती वेल्थी फिशर अग्रणी हैं। 20 वर्ष तक कार्य करने के बाद अब वे 94 वर्ष की आयु में अमेरिका वापस जा रही हैं। इस अवसर पर उनके एक सह-कर्मी की यह भावभीनी श्रद्धांजलि)

मोटर का दरवाज़ा खुला और फूलों को अंजलि में संभाले वह वृद्धा आगे बढ़ी ही थी कि मोटर में से झट से उतरकर भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। भावाविष्ट होकर उन्होंने उस गुलदस्ते को ग्रहण किया। दोनों के हाथ निरायास स्नेहबंधन में थोड़ी देर जुड़े रहे और कुछ मिनटों के लिये दोनों में बातें होती रहीं। पीछे लिटरेसी हाउस—साक्षरता निकेतन—का मुख्य द्वार था।

श्रीमती वेल्थी फिशर की 90 वर्ष की ज़िंदगी में शायद वह पहला अवसर था, जब उन्होंने किसीका रास्ता रोका हो। इस वर्ष (फरवरी, 1973) उनके 94 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस लंबी यात्रा में मील के पत्थर रहे हैं वे क्षण, जब श्रीमती फिशर के अपने रास्ते को कठिनाइयों ने रोका और साहस, अध्यवसाय और साधना के अचूक औज़ारों से उन्होंने अपना पथ प्रशस्त किया।

25 वर्ष की आयु में वेल्थी हौर्नसिगर संगीत का अभ्यास करने के लिए न्यूयार्क के कार्नेगी हाल की एक संगीतज्ञा की शिष्या बनीं। न्यूयार्क में टॉम नामक व्यक्ति ने उनपर मुग्ध होकर विवाह का प्रस्ताव रखा। ऑपेरा गायिका का एक सुंदर नौजवान से विवाह, भविष्य एक आकर्षक निमंत्रण की भांति ललचाने लगा।

तभी हठात् तड़ित् की चमक-सी हुई और उस चकाचौंध करने वाले प्रकाश में सुदूर क्षितिज पर किन्हीं उत्ताल तरंगों ने अपनी बांहें फैलाईं, उनके गर्जन में लोकोत्तर उल्लास का स्वर सुन पड़ा। कार्नेगी हाल में मेथॉडिस्ट मिशन के पादरी डॉ० राबर्ट स्पीअर्स ने युवजनों की सभा को संबोधित करते हुए कहा, "यदि आज दुनिया-भर में जितने सेवाव्रती मिशनरी काम कर रहे हैं, उनकी मृत्यु हो जाय, तो मुझे विश्वास है कि तुम युवक-युवतियां उन सबके स्थानों को भर सकोगे।"

वेल्थी हौर्नसिगर को लगा कि वह पादरी सीधे उन्हींसे बात कर रहा था। "मुझे न तो अब मालूम है न तब, कि कैसे मैंने अपना निश्चय लिया। एक दिन सवेरे-सवेरे हो ही गया वह अटल निश्चय, हृदय की गहराई में। परमात्मा की इच्छा थी या मेरा संकल्प, उस क्षण के बाद से किसी बात ने मुझे डांवाडोल नहीं किया।"

वेल्थी हौर्नसिगर को मेथॉडिस्ट मिशन ने सुदूर चीन के भीतरी हिस्से में यांगटिसी नदी के किनारे नानचांग नामक स्थान में लड़कियों के स्कूल की प्रधानाध्यापिका नियुक्त किया। नानचांग समुद्र-तट से 400 मील दूर था। स्कूल का नाम था 'बाओलिन'। दिसंबर, 1906 से 1917 तक वेल्थी हौर्नसिगर ने अपनी युवावस्था के 11 वर्ष उस

स्कूल को दि[illegible] ऐसे [illegible] में, जो उन दिनों मध्ययुगीन रीति-रिवाज और व्यवस्था की दलदल में फंसा हुआ था, इस साहसी युवती ने एक करिश्मा कर दिखाया। आठवीं कक्षा तक के उस मिडिल स्कूल में कुल 45 लड़कियां थीं। जब वेल्थी ने उसे छोड़ा, छात्राओं की संख्या 200 से ऊपर थी, नया भवन था, स्कूल ने नगर की विचारधारा को प्रभावित कर दिया था। एक तरफ तो वहां के गवर्नर और अभिजातवर्गीय लोग तक अपनी लड़कियों को उनके संरक्षण में रखने को प्रस्तुत होने लगे और दूसरी ओर बाओलिन ही की कई छात्राएं सनयात सेन के क्रांतिकारी आंदोलन में अग्रणी हो गईं।

मई, 1924 में फ्रेडरिक बौन फिशर नामक एक विधुर से, जो भारतवर्ष में मेथॉडिस्ट मिशन के बिशप थे, वेल्थी हौनसिंगर का रोमांस शुरू हुआ। एक महीने बाद जून, 1924 में उनका विवाह हुआ। बिशप फिशर को अमरीकी परंपरावादी क्षेत्रों में कूद-छलांग मारने वाले बिशप की उपाधि दी गई थी। उन्होंने अमरीका में गांधी जी के जीवन और संदेश पर एक पुस्तक लिखी 'दैट लिटिल ब्राउन मैन गांधी!' अंग्रेज़ी सरकार ने उसपर भारत में प्रतिबंध लगा दिया। हाल ही में वेल्थी ने उसका पुनर्मुद्रण कराया।

1938 में बिशप फिशर के असामयिक देहावसान तक 14 वर्ष का उन दोनों का दांपत्य जीवन समन्वय और तालमेल का अद्भुत आदर्श था। फिशर की मृत्यु हो गई, एक अनूठा जोड़ा टूट गया। उनकी समाधि पर रवींद्रनाथ की पंक्ति अंकित करवाई : 'और जब तुम विदा हो गये, तब मैंने अपनी धरती पर प्रभु के पदचिह्न पाते।' पति की भस्म का कुछ अंश लेकर अमरीका से भारत की यात्रा की। उन्हें दार्जिलिंग में हिमालय के चरणों में बिखेरा।

58-वर्षीय विरहिणी भार्या ने 14 वर्ष तक नाना प्रकार से अपने जीवन को समेटने की कोशिश की। इसी दौरान सन् 1947 के दिसंबर में गांधी जी से मुलाकात हुई, उनके बलिदान से एक मास पूर्व। चलते समय वेल्थी के हाथ पकड़कर गांधी जी ने कहा, "जब तुम भारत में रहने के लिए वापस आओ, तो गांव में जाकर काम करो। गांव ही भारत है।"

इसके चार वर्ष बाद 72 बरस की आयु में वेल्थी फिशर को आखिर राह मिल ही गई अपनी विस्मयकारी अक्षुण्ण ऊर्जा के ऐसे प्रयोग के लिए, जिसमें उन्हें अपने तीनों रूपों की समन्वित अभिव्यक्ति के लिए अवसर मिला। भारत पहुंचीं और गांधी जी की सुझाई दिशा पकड़ी।

इलाहाबाद के कृषि संस्थान में डॉ० मोशेर नामक अमरीकी कृषि विशेषज्ञ के निमंत्रण पर जमुना के किनारे एक बंगले के आधे हिस्से के बरामदे में उन्होंने ग्रामीणों के शिक्षण के लिए कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग प्रारंभ की। वही लिटरेसी हाउस—साक्षरता निकेतन—का पहला सोपान था।

कुछ दिनों बाद किन्हीं कारणों से कृषि संस्थान, इलाहाबाद, ने केंद्र को बंद करने का इरादा किया। लेकिन तब तक वेल्थी फिशर का दृढ़ संकल्प आयु और सहारे की सीमाओं को पार कर चुका था। वह दिन था और आज है। आगे बढ़े कदमों को फेरा नहीं। इलाहाबाद शहर में

(शेष पृष्ठ 13 पर)

लेखक का पत्र नायक के नाम

—मुल्कराज आनंद

(लेखक के प्रकाशनाधीन बृहद् उपन्यास 'सूरजमुखी' [साहित्य अकादमी से पुरस्कृत उपन्यास 'मार्निंग फेस' का अनुवाद] की भूमिका के अंश)

प्रिय कृशन,

मैं यह उपन्यास तुम्हें समर्पित कर रहा हूं। यों तो, मैं तुम्हारा प्रणेता हूं, लेकिन तुमने लगभग प्रारंभ से ही पुस्तक को अपने हाथ में ले लिया, और स्वयं लिख डाला; जैसे तुम्हीं इसके लेखक हो। इसलिए, यह वस्तुतः तुम्हारी ही पुस्तक है और मैं—मैं तो केवल शब्दों का उत्प्रेरक हूं जिनमें तुम्हारा शरीर और आत्मा, दोनों, जलते हैं, पिघलते हैं।

जब सबसे पहले तुम 'सेवन समर्स' में प्रकट हुए, तब आलोचकों ने अलग-अलग बातें कहीं। किसीने कहा तुम यदुवंशी कृष्ण के अवतार हो, तो किसीने कहा कि मात्र पंजाबी 'चिनगारी' हो। वे लोग ज़्यादा गलत नहीं थे, क्योंकि यदि मैं तुमसे सच-सच कहूं तो बात यह है कि कृष्ण की पुरानी कथा की चिनगारी मेरे हृदय और मस्तिष्क में राख से दबी-मुंदी पड़ी थी, क्योंकि इस तरह की पौराणिक कथाएं हर भारतीय को विरासत में मिलती हैं। अगर कृष्ण ने दधि की चोरी की तो तुमने आमों की चोरी की। उनकी अबोधता तुम्हारी अबोधता बन गई। फिर, सड़क के आवारा लड़के की 'चिनगारी' मुझमें भी थी और हो सकता है मैंने तुम्हें भी उसी रंग में रंग दिया हो। लेकिन, जैसा कि तुम्हें पता चलेगा, बाद के जन्मों में, वास्तव में तुम देवताओं के युग के कृष्ण नहीं थे। तुम हो सकते भी नहीं थे, क्योंकि देवताओं का युग गुज़र चुका है।

निस्संदेह, दो हज़ार वर्ष पूर्व के अपने नामराशि की तरह तुम्हारी भी दो माताएं थीं; पहली तो वह जिसकी कोख से तुमने जन्म लिया, और दूसरी वह जिसने तुमको अपने दत्तक पुत्र से भी ज़्यादा प्यार किया। और इन दोनों माताओं के प्रेम से तुमने नारीमात्र को प्यार करना सीखा। इन स्त्रियों ने अपने-आपको तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर दिया, उन्होंने अपनी सारी शक्ति तुम्हें दे दी, बुद्धि दे दी, वह ओजस्विता भी दे दी जिससे उनकी बहुमुखी गतिविधियां नष्ट हो सकती थीं, उनका सामंजस्य का विवेक नष्ट हो सकता था, उनकी मादक मधुरता लुप्त हो सकती थी, उनकी गरिमा पर पानी फिर सकता था—सच तो यह है कि उन्होंने वह सब कुछ तुम्हें दे दिया जिसकी तुम्हें बाल्यकाल से किशोरावस्था तक पहुंचने के दौरान विभिन्न संकटों का सामना करने के लिए ज़रूरत थी।

सन् १९१९ में अमृतसर में जो करफ्यू लगा था और उसके दौरान तुम्हें जो सात कोड़े खाने पड़े थे, उनकी तुलना आततायी कंस की निर्दयता से नहीं की जा सकती, क्योंकि इन कोड़ों की वजह से तुम्हारे हृदय पर अपमान के ऐसे घाव लगे जिन्हें तुम कभी भुला न सके। इन घावों के कारण ही ब्रिटिश भारत की एक छोटी-

सी छावनी की दुनिया से उठकर तुम दुख के चेतना-जगत् में पहुंचे। और तुमने चाहा, जैसा भगवान बुद्ध ने भी कहा है, कि अंधकार सूझ-बूझ और समझदारी की इच्छा का रूप धारण कर ले। उन दिनों की तबाही से तुमने उसी तरह पूर्ण जीवन प्राप्त किया जिस तरह राख से अमर पक्षी कुंकुस ने जीवन प्राप्त किया था।

संभवतः तुमने ट्राय की हेलेन की कहानी का भी कुछ अंश ग्रहण किया था या हरक्यूलीस के बीरता के कारनामों से प्रभावित हुए अथवा नार्सीसस की दन्त-कथा से आकृष्ट हुए थे। लेकिन तुमने सबसे ज़्यादा सीखा डी-वेलरा के अनुयायी आयरिश क्रान्तिकारी कैप्टेन ओ' सुलीवन की दोस्ती से— इस दोस्ती ने तुम्हें काव्य से प्रेम करना सिखाया। इसलिए, संभव है, यदुवंशी सांवले कृष्ण की तरह तुम सोलह हज़ार अप्सराओं से विवाह न करो; और न तुम हरक्यूलीस की तरह अपनी अपार 'शारीरिक शक्ति' का प्रदर्शन करो —उसी हरक्यूलीस की तरह जिसकी ई०पू० 327 में पंजाब में तूती बोलती थी। तुम नार्सीसस के आदर्श का अनुकरण कर सकते हो। तुम इतने पर ही हर्षित हो उठे थे जब क्लेरेनट वादक की पुत्री हेलेन ने सांझ के झुटपुटे में तुम्हारा हाथ पकड़कर कहा था कि क्या 'तुम उसके भगवान बनोगे', और तुमने उससे पूछा कि क्या वह तुम्हारा 'गेंदे का फूल बनेगी।'

तुम्हारे अन्दर जो कवि था वह तुम्हें अकेला रहने के लिए विवश करता था क्योंकि न तो प्लेटो तुम्हें चाहता था और न यंत्र-युग की सभ्यता, जो हर संवेदन-शील व्यक्ति को काटकर अलग कर देती है। तुम [illegible] कहते थे, बदसूरत सुन्दरताओं का आलिंगन करते थे, सारी पृथ्वी की कायापलट करने के लिए व्याकुल रहते थे और मानव बनने का यत्न करते थे पर उच्च कोटि के गुण, गहराई प्राप्त करने तथा सत्यनिष्ठ बनने की प्रक्रिया में विफल हो गए।

मैं तुम्हारी विफलताओं के बावजूद, तुम्हारे काव्य-प्रेम में विश्वास करता हूं, कमज़ोर लोगों के प्रति तुम्हारी सहानुभूति में विश्वास करता हूं और मैं तुम्हारी असीम जिजीविषा (जीने की इच्छा) में भी भरोसा करता हूं। लेकिन मैं अपनी इच्छाएं या विचार तुमपर लादूंगा नहीं। मैं तो चाहता हूं कि इस जगत् में तुम्हारे बड़े होने के साथ-साथ तुम्हारे अपने अनु-भवों से ही तुम्हें ज्ञान की ज्योति मिलनी चाहिए। यहां और अब, इस समसामयिक नरक में होते हुए भी यदि मानव परमाणु-युद्ध की लपेट से बच जाए तो शायद उसे कोई स्वर्ग मिल जाए। तुम, मैं नहीं हो। तुम मुझसे भी अधिक हो। तुम उपन्यास-नायक हो; अलबत्ता, नकारात्मक नायक। उपनिषदों, पुराणों और विट्जेनस्टीन के 'लाजिकल ट्रैक्टस' की छाया नहीं हो। तुम साक्षात् जीवन का अंग हो।

वेदना, व्यथाग्रस्त अंतःकरण वाले लोगों के लिए उपन्यास अच्छा माध्यम है। विचारों की प्रक्रियाओं और इच्छाओं, मानव-मानव के प्रेम-घृणा सम्बन्धों को इससे व्यक्त किया जा सकता है और यदि अथक रूप से ऐसा किया जाए तो संभव है कि वे पकड़ में आ जाएं······

खंडाला, 1968 —**मुल्कराज आनंद**

शरत् के साथ बिताया कुछ समय

—अमृतलाल नागर

(लेखक की नयी कृति 'जिनके साथ जिया' से)

याद आता है, स्कूल-जीवन में, जब उपन्यास और कहानियां पढ़ने का शौक हुआ, मैंने शरत् बाबू की कई पुस्तकें पढ़ डालीं। एक-एक पुस्तक को कई-कई बार पढ़ा। और आज जब उपन्यास अथवा कहानी पढ़ना मेरे लिए केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, वरन् अध्ययन का प्रधान विषय हो गया है, तब भी मैं उनकी रचनाओं को अक्सर बार-बार पढ़ा करता हूं। उनकी रचनाओं को मूल भाषा में पढ़ने के लिए ही मैंने बंगला सीखी। सचमुच ही, मैं उनसे बहुत ही प्रभावित हुआ हूं।

उनके दर्शन करने मैं कलकत्ता गया। परिचय होने के बाद, दूसरे दिन जब मैं उनसे मिलने गया, मुझे ऐसा मालूम पड़ा जैसे हम वर्षों से एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।

इधर-उधर की बहुत-सी बातें होने के बाद एकाएक वह मुझसे पूछ बैठे, "क्या तुमने यह निश्चय कर लिया है कि आजन्म साहित्य-सेवा करते रहोगे ?"

मैंने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "जी हां।"

वे बोले, "ठीक है। केवल इस बात का ध्यान रखना कि जो कुछ भी लिखो वह अधिकतर तुम्हारे अपने ही अनुभवों के आधार पर हो। व्यर्थ की कल्पना के चक्कर में कभी न पड़ना।"

आरामकुर्सी पर इतमीनान के साथ लेटे हुए, सटक के दो-तीन कश खींचने के बाद वह फिर कहने लगे, " कालेज में मुझे एक प्रोफेसर महोदय पढ़ाते थे। वह सुप्रसिद्ध समालोचक भी थे। कालेज से बाहर आकर मैंने देवदास, परिणीता, बिन्दूरछेले (बिन्दू का लड़का) आदि कुछ चीज़ें लिखीं। लोगों ने उन्हें पसन्द भी किया। एक दिन मार्ग में मुझे वे प्रोफेसर महोदय मिले। उन्होंने मुझसे कहा, 'शरत्, मैंने सुना है, तुम बहुत अच्छा लिख लेते हो। लेकिन भाई, तुमने अपनी कोई भी रचना मुझे नहीं दिखलाई।'

" संकोचवश मैंने उन्हें उत्तर दिया, 'वे कोई ऐसी चीजें नहीं, जिनसे आप ऐसे पण्डितों का मनोरंजन हो सके। उनमें रक्खा ही क्या है ?'

" उन्होंने कहा, 'खैर, मैं उन्हें कहीं से लाकर पढ़ लूंगा। मुझे तो इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि तुम लिखते हो। परन्तु शरत्, मेरी भी दो बातें हमेशा ध्यान में रखना। एक तो कभी किसीकी व्यक्तिगत आलोचना न करना और दूसरे, जो कुछ भी लिखना वह तुम्हारे अनुभवों से बाहर की चीज़ न हो।' " कहते-कहते उन्होंने एक क्षण के लिए अपनी आंखें बन्द कर लीं। फिर वे मेरी ओर देखकर बोले, "यही दोनों बातें मैं तुम्हें भी बतलाता हूं, भाई।"

किसी एक बात को बहुत आसानी के साथ कह जाना, उनकी विशेषता थी।

बातचीत करते-करते वे हास्य की पुट इस मज़े में दे जाते थे, जैसे कोई गम्भीर बात कह रहे हों।

ग्रामोफोन पर इनायतखां सितारिए का रेकार्ड बज रहा था। आखीर में उसने अपना नाम भी बताया। वे मुस्कराए, फिर हुक्के का कश खींचते हुए बोले, "भाई, तबीयत तो मेरी भी करती है कि मैं अपना रेकार्ड भरवाऊं। और आखीर में मैं भी इसी लहजे के साथ कहूं, मेरा नाम है, श्रीशरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय।"

मस्ती, भोलेपन और स्नेह की सजीव मूर्ति मालूम पड़ते थे। दुबला-पतला, छरहरा बदन, चांदी-से चमकते हुए उनके सिर के सफेद बाल, उन्नत ललाट, लम्बी नाक और बड़ी-बड़ी आंखें—उनके व्यक्तित्व की विशेषता थीं।

हिन्दी पर बात आते ही उन्होंने कहा, "तुम लोग अपने साहित्य-सम्मेलन का सभापति किसी साहित्य-महारथी को न बनाकर, राजनीतिक नेताओं को क्यों बनाया करते हो?"

मैंने उत्तर दिया, "हिन्दी में स्वयंभू कर्णधारों का एक ग्रुप है जो अपनी तबीयत से यह सब किया करता है; वरना हमारी हिन्दी में भी प्रेमचन्द, जयशंकर 'प्रसाद', मैथिलीशरण गुप्त, निराला आदि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जिनपर हम गर्व कर सकते हैं।"

उन्होंने कहा, "हमारे यहां बंगाल में भी अधिकतर साहित्य-सम्मेलन के सभापति बड़े-बड़े ज़मींदार ही बनते रहे हैं, लेकिन यह बात मुझे पसन्द नहीं। जिन्हें साहित्य शब्द के वास्तविक अर्थ का ही ज्ञान नहीं, उन्हें सम्मेलन का सभापति बनाना महज़ हिमाकत है।"

प्रेमचन्द जी के सम्बन्ध में एक बार बातचीत चलने पर, उन्होंने मुझसे कहा था, "वे बहुत अच्छे आदमी थे। मैं उनसे दो-तीन बार मिला हूं। उन्होंने मुझे बतलाया था कि हिन्दी में लेखकों को अधिक पैसा नहीं मिलता। बंगला में भी पहले यही हाल था। अब सुधर चला है। देखो न, साहित्य-सेवा के बल पर ही आज मैं भगवान की दया से दो कोठियां, मोटर, टेलीफोन आदि खरीद सका हूं।"

उनकी बातों से मैंने कई बार यह अनुभव किया कि उनमें स्नेह की मात्रा अधिक थी। कई बार बातचीत के सिलसिले में उन्होंने मुझसे कहा, "देखो अमरीत, तुम अभी बच्चे हो; फिर तुम्हारे पिता का साया भी उठ चुका है। दुनिया ऐसे आदमियों को हर तरह से ठगने की कोशिश किया करती है। तुम्हारे साथ गृहस्थी है। इसीसे मैं तुमसे यह सब कहता हूं।...और इस बात को हमेशा ध्यान में रखना कि अगर तुम्हारे पास चार पैसे हों तो अधिक से अधिक तुम उन्हीं चारों को खर्च कर डालो, लेकिन कभी किसीसे पांचवां पैसा उधार न लेना। यह भी मेरे उन्हीं प्रोफेसर महाशय का उपदेश है।"

शरत् बाबू के जीवन में कितने ही परिवर्तन आए। उन्हें अनेकों परिस्थितियों का सामना करना पड़ा—यह बात तो प्रायः बहुतों को मालूम है। हुगली ज़िले में उनका एक पुरखों द्वारा बनवाया हुआ मकान है; परन्तु वहां वे बहुत कम जाया करते थे। कलकत्ते के कालीघाट पर 'मनोहर पुकुर' नामक स्थान में उन्होंने अपनी एक कोठी बनवाई।

हवड़ा से बत्तीस मील दूर, बी० एन०

(शेष पृष्ठ 12 पर)

मेरा कहानी लेखन

—महीप सिंह

(लेखक के प्रकाशनाधीन 'मेरी प्रिय कहानियां' की भूमिका के अंश)

लिखना मैंने बहुत पहले शुरू किया था सन् 1950 के आस-पास। पर कहानियां लिखना मैंने 1956 से शुरू किया। '50 और '56 के बीच मैं क्या लिखता रहा, यह आज मुझे अच्छी तरह याद नहीं है। 1954 में कानपुर के डी० ए० वी० कॉलेज से एम० ए० करने के एक वर्ष बाद मैं बम्बई के खालसा कॉलेज में हिन्दी का प्राध्यापक नियुक्त हो गया। अपने विद्यार्थी-जीवन में ही मैं लेखक के रूप में जाना जाने लगा था, पर मेरा सब कुछ—सोचना, लिखना, जीना—एक विचित्र से व्यामोहपूर्ण आदर्शमयी दायरे में बंधा हुआ था। मैं बम्बई न गया होता तो कभी उस दायरे से मुक्त न हो पाता।

प्रारम्भ में बम्बई में खार के एवरग्रीन होटल में मैं कुछ महीने रहा। उसी होटल के एक कमरे में 'मैडम' रहती थी। वह एक ऊंची-लम्बी आकर्षक औरत थी और किसी सेठ की रखेल थी। उसने मुझे एक तरह से मेरी पहली कहानी 'मैडम' लिखने के लिए प्रेरित किया जो बाद में 'सरिता' में प्रकाशित हुई। उन्हीं दिनों मैंने एक कहानी लिखी 'उलझन'। साप्ताहिक हिन्दुस्तान के किसी अंक में प्रेमचन्द कहानी प्रतियोगिता की सूचना पढ़कर मैंने उसे उस प्रतियोगिता के लिए भेज दिया और भेजकर लगभग भूल-सा गया। दिवाली की छुट्टी मनाने मैं कानपुर आया था कि एकाएक 21 अक्टूबर, 1956 के साप्ताहिक हिन्दुस्तान के अंक में अपनी कहानी प्रथम पुरस्कृत कहानी के रूप में देखकर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई।

इन दो कहानियों के प्रकाशन के बाद मुझे एकाएक महसूस हुआ कि मैं कहानी-लेखक हूं। साथ ही यह एहसास भी बढ़ा कि मैं और जो कुछ भी हूं—बाद में हूं। अगले साल मैंने 'वेतन के पैसे', 'एक्स्ट्रा' और 'पड़ोसी' जैसी कहानियां लिखीं जो सरिता, माया और धर्मयुग में प्रकाशित हुईं। उसके अगले साल 'शास्त्रीजी', 'लिफ्ट' और 'सुबह के फूल' कहानियां लिखीं।

प्रारम्भिक दौर में दो कहानियां लिखने के बाद कहानी लिखना मुझे आसान लगने लगा था। मैं कहानी लिखने बैठता तो कभी एक ही बैठक में तो कभी-कभी दो बैठकों में कहानी पूरी कर लेता। अक्सर कागज के नीचे कार्बन रखकर कहानी लिखता और पहली प्रति किसी पत्रिका को भेज देता। पर धीरे-धीरे कहानी लिखना मेरे लिए कठिन से कठिनतर बनता चला गया।

अपने कहानी लेखन के दूसरे दौर की शुरुआत मैं 'काला बाप गोरा बाप' से मानता हूं। यह कहानी अक्टूबर '61 की सारिका में प्रकाशित हुई थी और मेरे सभी मित्रों के बीच काफी प्रशंसा की पात्र बनी थी। आज भी यह कहानी मुझे अच्छी लगती

है और पंजाबी में मेरा प्रकाशित कहानी-संग्रह इसी कहानी के नाम से है। मुझे ऐसा लगता है कि इस कहानी में मैंने कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर अपनी पहले की कहानियों से अपसरण किया। कानपुर छोड़ने के कुछ वर्षों बाद तक मुझे अनेक व्यामोह घेरे रहे थे, उनमें कहानियों में भी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के प्रयोग का मोह भी था। इस कहानी द्वारा मैं अपने-आपको कहानी की सहज और जीवन्त भाषा के निकट भी ला सका। इसी दौर की मेरी अन्य प्रिय कहानियां हैं, 'ठंडक', 'पानी और पुल' और 'झूठ'।

इन्हीं दिनों (1963 में) मुझे बम्बई छोड़ना पड़ा। 'पड़ा' इसलिए कि बम्बई से मुझे बड़ा मोह हो गया था और आसानी से मैं बम्बई त्यागने को तैयार नहीं था। परन्तु अपने कॉलेज की प्रबन्ध-समिति की अशैक्षणिक नीतियों को, जिनका मैं साल-भर से काफी मुखर होकर विरोध करता चला आ रहा था, और सहन करना मेरे लिए अत्यन्त दूभर हो गया था।

दिल्ली ने मेरे कथा-लेखन को एक नई शुरुआत दी। बम्बई तक मैं सिर्फ कहानियां लिखता था, परन्तु दिल्ली आकर कहानी को लेखन चर्चा, वाद-विवाद आदि सभी स्तरों पर जीने के लिए मैं तैयार हुआ। इन्हीं दिनों हमने कहानी में सचेतन दृष्टि की चर्चा शुरू की।

नवम्बर 1964 में मेरे द्वारा संपादित 'आधार' का सचेतन कहानी विशेषांक प्रकाशित हुआ था। सचेतनता को मैंने जीवन-दृष्टि के स्तर पर सोचा, विचारा और व्याख्यायित किया था। यह बात अलग है कि मेरे अनेक साथी उसे अपने चर्चित होने और तथाकथित विरोधियों को जी भरकर कोसने के स्तर से अधिक उन्नत स्तर पर ग्रहण करने में असमर्थ रहे।

उन्हीं दिनों मेरा दूसरा कहानी-संग्रह 'उजाले के उल्लू' प्रकाशित हुआ। 'ब्लाटिंग पेपर', 'स्वराघात', 'उजाले के उल्लू' और 'लकीरों वाला मकान' जैसी कहानियां इन्हीं वर्षों (63-64) में लिखी गईं, जिन्हें मैं अपनी कथा-यात्रा के उल्लेखनीय पड़ावों के रूप में स्वीकार करता हूं।

यह भी विचित्र है कि हर पड़ाव के बाद मुझे आगे की कहानी लिखना और कठिन लगता गया है और वर्ष में लिखी गई कहानियों की संख्या घटती चली गई है। मेरा तीसरा संग्रह 'घिराव' भी चार वर्ष के अंतराल (सन् 1968) में प्रकाशित हुआ और चौथा संग्रह 'कुछ और कितना' भी लगभग उसी अंतर से प्रकाशित हुआ है। 'घिराव' की कहानियों में 'कील', 'पारदर्शक' और 'फोकस' तथा 'कुछ और कितना' की 'शोर', 'नींद', 'कीचड़' और 'प्याले' जैसी कहानियां मेरी कथा-यात्रा के संकेत-बिंदु के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

बहुधा लोग कहते हैं कि मेरी कहानियों की विषय-वस्तु में बहुत विविधता नहीं होती और उनके सूत्र मेरे बहुत निकट के आत्मीय प्रसंगों से जुड़े होते हैं। यह अजीब बात है कि कुछ लोग मुझसे यह बात शिकायत के रूप में करते हैं। परन्तु मैं इन्हीं बातों को अपनी कहानियों के वैशिष्ट्य के रूप में ग्रहण करता हूं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में बहुत अधिक विविधता में मेरी रुचि नहीं है। अलग-अलग स्थूल रंगों की अपेक्षा मुझे एक-दो रंगों के थोड़ी-थोड़ी भिन्नता रखने वाले शेड्स ज्यादा अच्छे लगते हैं।

पुस्तकालय पूजा-गृह से श्रेष्ठ है

मोहनलाल महतो वियोगी

जीवन क्या है ? इस पर दर्शन और विचारकों ने प्रकाश डालने का बहुत प्रयास किया है किन्तु 1951 में मैंने जैसा अनुभव किया उससे यही स्पष्ट होता है कि आंसुओं से भीगी मुस्कान का ही नाम जीवन है। यों तो हमारा आंतरिक जीवन ही जीवन का सत्य रूप है किन्तु उस दिव्य जीवन को हम कैसे प्राप्त करते हैं—चिन्ता से या चिन्तन से ? ऐसा चिन्तन जो केवल मन बहलावे के लिये होता है वह मूल-रहित और बाह्याडंबर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यदि उस जीवन को जो ऐसे अर्थहीन चिन्तन से लिपटा हुआ हो हम जीवन का सपना कहें तो अनुचित नहीं होगा। यदि हमें अपने चिन्तन को अमृतमय बनाना है तो उसकी जड़ें अपने दिव्य आंतरिक जीवन में जमानी होंगी। अब 1951 की दर्दभरी कहानी सुनिए।

अचानक मेरे शहर में चेचक का भयानक उत्पात शुरू हो गया। गर्मी का मौसम था। जब रात को खुली छत पर सोता तो दूर-दूर से रोने की ऐसी आवाजें आतीं कि मन छटपटा कर रह जाता। चेचक का तांडव नृत्य मेरे घर में भी आरंभ हो गया। मेरा 19 साल का पुत्र देखते-देखते चेचक की भेंट हो गया। हम अवाक् रह गए—रोना, विलाप करना भी भूल गए कि 16 साल की बेटी चल बसी। अब हम किस-किसके लिए रोएं। यह दुर्भाग्य यहीं पर नहीं रुका। हमारे तीन और बच्चे भी हमारी आंखों के सामने दम तोड़ कर शांत हो गए। दो सप्ताह में घर खाली हो गया—पांच बच्चे सदा के लिए हमसे बिलग हो गए। 15 दिनों के भीतर ही स्वर्ग जैसा घर श्मशानवत् हो गया। मैं कभी तो सोचता कि जीवन का अंत करके शांति लाभ करूं तो कभी सोचता कि किसी जन-मानवहीन वन में जाकर अपने-आपको गंवा दूं। मेरी पत्नी भीतर से जैसे पथरा गई थी—वह न रोती और न बोलती। जो तीन पुत्र चेचक की भेंट नहीं हुए उन्हींको देखकर हम अपने आंसुओं को पोंछते थे।

इस महा चिन्तापूर्ण स्थिति से बचने का एक ही उपाय रह गया था—हम किसी भी प्रयास से चिन्ता को चिन्तन में बदल दें किन्तु वैसा चिन्तन प्राप्त कहां से करें, यह प्रश्न मेरे सामने था।

मैंने पुस्तकालय का आश्रय ग्रहण किया जो मेरे ही कमरे में था। सबसे पहले मैंने गीता का स्वाध्याय आरंभ किया। लोकमान्य का "कर्मयोग शास्त्र" और भगवान शंकराचार्य का "ब्रह्मवाद"—दोनों टीकाएं मेरे सामने थीं। स्वाध्याय का क्रम बढ़ा और दर्शन की दूसरी पुस्तकें भी सामने आईं। जो मेरे पुस्तकालय में नहीं थीं उन्हें पत्र लिख-कर बाहर से मंगवाने का प्रयास किया। यह स्वाध्याय महीनों चलता रहा और चिन्ता, शोक, व्यग्रता से एक साथ ही मुक्ति मिल गई और चिन्तन का ऐसा प्रकाश भीतर फैला कि लिखते नहीं बनता।

मैं अपना अनुभव सुना रहा हूं। मैं 1919 का कवि और लेखक हूं। कितना

पढ़ा यह बतलाना असंभव है किन्तु जब सिर पर वज्रपात हुआ तो कोई भी दूसरी शक्ति काम नहीं आई—स्वाध्याय और उसके फलस्वरूप चिन्तन ने ही मेरे जीवन को संभाला, उसके स्तर को ऊपर उठाया और यह स्पष्ट कर दिया कि जीवन क्या है, चिन्ता क्या है, चिन्तन क्या है।

प्रकाश को सर्वत्र प्रकाश ही मिलता है, अंधकार उसे घेर नहीं सकता। उसी तरह स्वाध्याय और गहरे चिन्तन से जो प्रकाश हमारे आंतरिक जीवन को प्राप्त होता है उसे शोक, दुःख, चिन्ता आदि जीवन के बैरी घेर कर बर्बाद नहीं कर सकते। यह स्पष्ट है कि जो समय चिन्ता में बीता या जीवन का जितना अंश चिन्ता खा गई वह चितानल में स्वाहा हो गया किन्तु जो अंश चिन्तन में बीता वह अमर हो गया।

मैं यह चाहता हूं कि हमारा समग्र स्वाध्याय और चिन्तन में व्यतीत हो जिससे हम इसी शरीर से अमरता लाभ कर सकें।

जब हम किसी जन-मानव-शून्य स्थान में होते हैं, रात गंभीर और काली होती है और हाथ पसारे भी नहीं सूझता तो कौन हमारे साथ होता है ? हमारे भीतर का प्रकाश ही ऐसी स्थिति में साथ देता है और वह प्रकाश चिन्ता से नहीं, गहरे स्वाध्याय से उत्पन्न होने वाले चिन्तन से उत्पन्न होता है। अध्ययन का महत्व मन बहलाने में नहीं है, जीवन को अमरता प्रदान करने में है और यह ज्योति हमारे भीतर चिन्तन से उत्पन्न होती है।

मैं किसी भी पूजा-स्थान से पुस्तकालय को अधिक महत्व इसलिए देता हूं कि उसमें संसार के वन्दनीय महापुरुष अपने विचारों के रूप में साकार उपस्थित रहते हैं—एक देवता नहीं, हज़ारों देवता उस ज्ञान-मन्दिर में अमरता की वर्षा करते रहते हैं। उस अमृत-वर्षा से अपने जीवन को यदि हम अमर न बना सकें तो इसमें दोष किसका है। सौभाग्य, दुर्भाग्य आदि के निर्माता किसी न किसी रूप में हम स्वयं हैं, दूसरा कोई नहीं।

मैं इन पंक्तियों को अपने उसी पुस्तकालय में बैठकर लिख रहा हूं जिस पुस्तकालय में बैठकर मैंने 1951 के तूफान से अपनी रक्षा की थी। आज मेरा यह पुस्तकालय मेरे लिए ममतामयी माता की गोद है, भगवान का आशीर्वाद है, अन्तहीन सौभाग्य का जन्मस्थान है और मेरे परिवार के लिए पवित्र मंदिर है।

शरद् के साथ (पृष्ठ 8 का शेष)

आर० लाइन पर 'देउल्टी' स्टेशन से लगभग दो मील और आगे 'पानीत्राश' नामक एक गांव है। देउल्टी स्टेशन से एक कच्ची सड़क प्रायः सीधी ही वहां तक चली गई है। आसपास दोनों तरफ या तो खेत अथवा तलैया हैं। कच्चे-सुन्दर मकान, परचून की, करघा बिननेवाले की, पान-सिगरेट, चाय-बिस्कुट आदि की दूकानें, एक पक्का छोटा-सा स्कूल, केले और खजूर के पेड़ आदि बड़े अच्छे लगते हैं। एक पगडण्डी से उतरकर सामने ही डाक्टर बाबू की सफेद रंग से पुती हुई झोंपड़ी (दवाखाना)—दिखाई पड़ती है। दवाखाने के दोनों तरफ तलैयां हैं। यह सब कुछ देखने से आदमी सहज ही में समझ जाएगा कि यह शरत् का देश है। उससे लगभग दो

(शेष पृष्ठ 13 पर)

वेल्थी फिशर (पृष्ठ 4 का शेष)

छोटा-सा मकान लिया, अमरीका जाकर वर्ल्ड लिटरेसी नामक संस्था से संपर्क स्थापित कर रुपये जमा किये। लखनऊ में के०एम० मुंशी गवर्नर थे। उन्होंने सुझाया क्यों न लखनऊ में अपना केंद्र ले आइए।

आखिर सन् 1956 में 76 वर्ष की आयु में अपने हाथों फावड़े से लखनऊ हवाई अड्डे के रास्ते में एक नीची-सी ज़मीन पर भवन की नींव रखी। फरवरी, 1957 में भवन का उद्घाटन मुंशी साहब ने किया। वह उद्घाटन उपलब्धि भी थी और नई यात्रा का प्रारंभ भी। लगभग 15 वर्षों में लिटरेसी हाउस, लखनऊ, देश में प्रौढ़ साक्षरता का प्रमुख केंद्र बन गया है। विभिन्न राज्यों से प्रौढ़-शिक्षण-विधि सीखने के लिए लोग आते हैं। 1972 तक 10,000 लोग प्रशिक्षण पा चुके हैं। अनुमानतः बीस लाख प्रौढ़ों को उन्होंने शिक्षित किया।

सन् 1964 में उन्हें फिलिप्पीन का मैगसेसे पुरस्कार मिला। 1971 में उन्हें अमरीका का वह ह्यूमेनिटरियन पुरस्कार दिया गया, जो उनसे पहले अल्बर्ट स्विट्ज़र और विंसटन चर्चिल जैसे सुविख्यात पुरुषों को मिल चुका था।

तेजस्विता, उल्लास और सहज भूलों का यह अनूठा सम्मिश्रण न होता तो वेल्थी फिशर वेल्थी फिशर न होतीं, हम उनके सहकर्मी इस खटमिट्ठेपन के इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि अब फरवरी, 1973 में जब वे लिटरेसी हाउस और भारतवर्ष से शायद अंतिम विदा ले रही हैं, तो शंका होती है कि जब मधुबाला ही न रहेगी तो हम पीनेवालों की टोली क्या जम पायेगी ? **('धर्मयुग' से साभार)**

शरत् के साथ (पृष्ठ 12 का शेष)

फरलांग और आगे चलकर पक्का दो-मंजिला मकान है। फाटक के ठीक सामने ही कमलों से भरी हुई एक पुष्करिणी, और बंगले के बायीं ओर विशाल 'रूपनारायण' नद बहता है। यही शरत् बाबू का गांववाला, अपना बनाया हुआ मकान है। वे यहीं रहना पसन्द करते थे।

उन्होने मुझे अपनी लाइब्रेरी दिखलाई, बहुत काफी किताबें हैं।

"देखो अमरीत, यह मेरी मेज है। इसीपर मैंने अपनी प्रायः सभी किताबें लिखी हैं।"—बांस के डण्डे में लकड़ी का एक चौड़ा तख्ता एक कोने से पिरोया हुआ था। आरामकुर्सी पर बैठकर वह प्रायः उसीपर लिखा करते थे।

बंगले के बरामदे में 'रूपनारायण' नद के सामने ही बैठना उन्हें पसन्द था।

मरने से लगभग डेढ़ महीने पहले मैं उनसे मिलने पानीत्राश गया था। तब वे सूखकर कांटा हो चुके थे। उन्हें संग्रहणी की शिकायत हो गई थी। जो कुछ खाते वह हज़म नहीं होता था—यहां तक कि 'क्वेकर-ओट्स' भी नहीं।

उन्होंने मुझसे कहा, "अब इस जीवन में मुझे और कोई भी लालसा बाकी नहीं रही। यह शरीर भी प्रायः निर्जीव ही-सा हो चुका है। मैं बहुत थक गया हूं। यमराज मुझे जिस वक्त भी 'इन्विटेशन-कार्ड' भेजेंगे मैं उसी वक्त, निस्संकोच जाने के लिए तैयार बैठा हूं।"

कौन जानता था, उस दिन, अन्तिम बार ही, 'रूपनारायण' के तट पर खड़ा हुआ मैं उस महान कलाकार के व्यक्तित्व का दर्शन कर रहा था।

आगामी प्रकाशन

सिकन्दर हार गया (कहानी-संग्रह) : हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक श्री अमृतलाल नागर की इन कहानियों में सामाजिक जीवन के अनेक पहलू उभरकर आए हैं। इन कहानियों में मनोविज्ञान का सहारा लेकर चरित्रों का चित्रण किया गया है। अपने ढंग से इन उत्कृष्ट कहानियों में बहुत ही विविधता और रोचकता है।

सूरजमुखी (उपन्यास) : मुल्कराज आनन्द के अंग्रेजी उपन्यास 'मौर्निंग फेस' का यह हिन्दी अनुवाद है। इस उपन्यास पर लेखक को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है। 'सूरजमुखी' में उभरते किशोर मन की आशा-आकांक्षाओं, हर्ष-उल्लास, सुख-दुख और भावाकुलता तथा भावुकता का बहुत सशक्त चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में भारत की आज़ादी के संघर्ष का धीरे-धीरे उभरता रूप चित्रित किया गया है जो बहुत ही रोचक है।

हाल मुरीदों का (उपन्यास) : यह पंजाबी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री कर्तारसिंह दुग्गल के पंजाबी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। एक विशाल पृष्ठभूमि में पंजाब के ग्रामीण जीवन का और समय-विशेष के इतिहास का बहुत ही गीतात्मक ढंग से चित्रण हुआ है। वस्तुतः 'हाल मुरादों का' गद्य में महाकाव्य है।

चांद काला है (उपन्यास) : मनोज बसु के इस उपन्यास में कई पर्दों में छिपे एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के चरित्र का पर्दाफाश किया गया है। यह रोचक चरित्र बताता है कि बुराई सामने आने से पहले कितने समये तक चुपचाप समाज को क्षति पहुंचाती रहती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

आतंक : नरेन्द्र कोहली

'आतंक' मुझे बहुत अच्छा लगा है। वर्तमान समाज की विषम परिस्थितियों में मनुष्य किस प्रकार बेबसी से लाचार है, इसका बड़ा ही जीवन्त चित्रण आपने किया है। इसमें एक चरित्र ऐसा शक्तिशाली है जो परिस्थिति के दबाव को साहसपूर्वक अस्वीकार कर सकता है। वह राजपूत पुलिस अफसर है। मैं चाहता था कि कुछ और चरित्र भी और अधिक दबंग होते। यथार्थ तो शायद यही है। प्रायः हर आदमी आतंक से जर्जर हो उठा है लेकिन एकाध चरित्र ऐसे शक्तिशाली अवश्य होने चाहिए जिनको देखकर कमज़ोर भले आदमियों को साहस और शक्ति मिले। इस उपन्यास में आपने बड़े शहरों के आतंकमय जीवन को बहुत अच्छी तरह चित्रित किया है। इसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। हर क्षेत्र में और हर तबके में दृढ़ इच्छाशक्ति संपन्न कुछ मनुष्य अब भी अवश्य मिलते हैं, उनमें से एक को आपने ढूंढ़ निकाला है। मेरा अनुमान है कि और भी मिलेंगे। आपकी सफलता के लिए फिर एक बार बधाई देता हूं। **(डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के एक पत्र से)**

सावित्री

काव्य का अनुवाद, वह भी श्रीअरविन्द के 'सावित्री' जैसे दार्शनिक महाकाव्य का, एक अत्यन्त कठिन कार्य है। इसलिए श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह ने भावानुवाद की स्वतंत्र पद्धति का सहारा लिया है। वास्तव में 'सावित्री' जैसे अन्तःप्रज्ञ अथवा इन्ट्यूशनल काव्य के साथ यात्रा कर पाना संभव नहीं, अधिक से अधिक उस अर्थ के निकट पहुंचा जा सकता है जिसे कवि व्यंजित करना चाहता है। अठारह पृष्ठों की लंबी भूमिका बताती है कि व्योहार राजेन्द्रसिंह ने 'सावित्री' को समझने, उसके साथ चलने की चेष्टा की हैं, जिसके बिना भावानुवाद भी नहीं किया जा सकता। स्वयं अरविन्द को उद्धृत करते हुए भूमिका में कहा गया है कि 'सावित्री' की रचना उनके लिए हुई है जो 'अतिमानस' के स्तर पर कार्य कर सकते हैं। एक प्रकार से यह अन्तर की अनुस्यूत आध्यात्मिकता का प्रकाशन है।

'सृष्टि का आरंभ' से लेकर 'शाश्वत दिवस' के ग्यारह सर्गों के अंत में उपसंहार है। अनुवादक ने यह ध्यान रखा है कि कथा के मुख्य तंतु पाठकों के समक्ष रख दिये जायें पर वह अरविन्द के इस लक्ष्य से भी परिचित है कि कथा कहना उनका मुख्य उद्देश्य नहीं है। इसीलिए दार्शनिक मन्तव्यों को प्रकाशित करने में व्योहार जी ने पर्याप्त श्रम किया है और जाहिर है कि संश्लिष्ट प्रसंगों के अनुवाद में भाषा क्लिष्ट हो गई है। पर इसके अतिरिक्त कोई विकल्प भी नहीं था, संभवतः। 'शून्यता की रात्रि में से चेतना की ज्योति का सनातन जागरण' प्रथम पृष्ठ की ये पंक्तियां गीता की याद दिलाती हैं :

1. **ये गलियां ये रास्ते** (उपन्यास) : कहानीकार के रूप में बहुचर्चित श्रौर बहुत ही लोकप्रिय श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' का यह नया उपन्यास है। 'ये गलियां ये रास्ते' में उन आधुनिक लेखकों पर तीखा व्यंग्य है जो साहित्य-कला की आड़ में मनमाने शिकार खेलते हैं। 4.00

2. **हम फिदाए लखनऊ** (हास्य-व्यंग्य) : सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अमृतलाल नागर की इस नई पुस्तक में व्यंग्य-विनोद, हास-परिहास से भरी कहानियों में लखनऊ—पुराना-नया—आपके सामने साकार हो जाता है। 5.00

3. **दो आंखें** (उपन्यास) : बंगाल के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के प्रमुख उपन्यास 'संकेत' का यह हिन्दी अनुवाद है। जीवन की तलाश और पहचान में भटकनेवाले एक एकाकी यात्री की इस कहानी में मानो, बंगाल के गांवों के बहाने समस्त भारतीय गांवों की आत्मकथा प्रस्तुत कर दी गई है। 6.00

4. **मेरी प्रिय कहानियां** (कहानियां) : महीप सिंह बहुचर्चित नये कहानीकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। उनकी अपनी लिखी रोचक भूमिका के साथ स्वयं उनकी पसन्द की चुनी कहानियां प्रस्तुत पुस्तक में दी गई हैं। 5.00

5. **आत्मबल से जो चाहो बनो** (प्रेरणात्मक साहित्य) : हिमांशु श्रीवास्तव की इस नई पुस्तक में आत्मबल और उसके वरदान पर बहुत रोचक और मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला गया है। आज के भीड़ और प्रतियोगिता के युग में यह सफलता की कुंजी प्रस्तुत करती है। 6.00

6. **चित्तौड़गढ़ की कहानी** (ऐतिहासिक) : सरल भाषा और रोचक शैली में चित्तौड़गढ़ की कहानी कहकर प्राणनाथ वानप्रस्थी ने चित्तौड़गढ़ के इतिहास के मुंह में मानो जबान दे दी है। 2.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी'...। इसमें संदेह नहीं कि व्योहार जी ने 'सावित्री' के मूल प्रयोजन को जान लिया है और इसे वे स्वतंत्र रीति से अभिव्यक्ति देने की इच्छा से अनुवाद के इस कार्य में संलग्न हुए हैं। संभव है यह भावानुवाद किसी ऐसे प्रयत्न का प्रेरक बने जब कोई कवि 'सावित्री' का संपूर्ण अनुवाद काव्य में प्रस्तुत कर सके।

मुझे यह देखकर संतोष हुआ कि गहन दार्शनिक मन्तव्यों से संपन्न इस काव्य को व्योहार जी स्पष्टता के साथ हमारे सामने रख सके हैं। महाभारत में सावित्री का जो कथानक अठारह श्लोकों में है उसे श्रीअरविन्द ने दस हज़ार पंक्तियों में लिखा और व्योहार जी ने एक प्रकार से पुन: उसका संक्षिप्तीकरण करने का यत्न किया है। आशा है, इस अनुवाद से 'सावित्री' को समझने में सहायता मिलेगी।

(डा० प्रेमशंकर : 'वीणा')

अजीब आदमी

उर्दू कथा-लेखिका इस्मत चुगताई अपनी यथार्थवादी दृष्टि और शैलीगत विशिष्टताओं के कारण बहुत बड़े पाठक-वर्ग को प्रभावित करती रही हैं। आलोच्य कृति 'अजीब आदमी' उनका एक सद्य: प्रकाशित उपन्यास है जिसमें बम्बई के फिल्म-जगत् का बड़ा ही रोचक एवं प्रभावशाली चित्रण किया गया है।

कथा-नायक धर्मदेव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण उपन्यास में छाया रहता है। धर्मदेव अभिनेता, निर्देशक और फिल्म-निर्माता है। वह आशिक-मिज़ाज युवक है। मंगला से पहले उसका प्रेम-विवाह होता है। पत्नी के प्यार में वह बिलकुल तन्मय हो जाता है। बाद में जरीना के सम्पर्क में आने पर उसे अपनी फिल्म की हीरोइन बना लेता है। अभिनय के निकट सम्पर्क की परिणति उनके शारीरिक सम्पर्क में होती है। लेकिन जरीना उसकी फिल्म से हटने के बाद सभी सम्बन्धों को झटककर तोड़ देती है और बाद में उसके प्रति उपेक्षा एवं अवज्ञा का रुख अपना लेती है। इस उपेक्षा से वह उत्तेजना और मानसिक तनाव से आक्रान्त हो जाता है। इसी मन:स्थिति में वह पद्मा नामक फिल्मी वेश्या के शारीरिक सम्मोहन में आबद्ध होता चला जाता है। उसके व्यक्तित्व के कई पहलू हैं। उसका दिमाग परिवार में केन्द्रित रहता है, उसका दिल जरीना के लिए चंचल रहता है और उसका शरीर पद्मा की बांहों में आबद्ध होकर अपना अभीप्सित प्राप्त किया करता है। इस तरह वह त्रिकोण में चक्कर काटता रहता है किन्तु किसीसे अपने को अलग नहीं रख पाता। यही वह विशिष्ट तत्व है जिसके कारण उसका व्यक्तित्व अन्तत: उपन्यास के रणधीर और जरीना जैसे चरित्रों की दृष्टि में विस्मय का विषय बना रहता है।

इस्मत चुगताई का प्रस्तुत उपन्यास इस अर्थ में महत्वपूर्ण प्रतीत होता है कि इसमें कथा-लेखिका ने फिल्म-जगत् को प्रामाणिक सन्दर्भों के साथ रोचक शैली में रूपायित करने का प्रयास किया है। परिणामत: उपन्यास की कथा गुरुदत्त, गीतादत्त और वहीदा रहमान के सुप्रसिद्ध रोमांस का आभास देने लगती है।

(डॉ० विपिन बिहारी ठाकुर : प्रकर)

ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोह

गत दिनों राजधानी दिल्ली में बंगला के प्रसिद्ध कवि श्री विष्णु डे को उनके "स्मृति सत्ता भविष्यत्" काव्य पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। विज्ञान भवन में पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया जिसमें राजधानी के अनेक लेखक तथा साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। डा॰कर्णसिंह ने समारोह की अध्यक्षता की।

पुस्तक-प्रचार के लिए पद-यात्रा

कन्नड साहित्य परिषद् ने गत दिनों पुस्तकों के प्रचार के लिए बंगलौर में एक पद-यात्रा का आयोजन किया। इसमें 100 व्यक्ति सम्मिलित हुए, प्रत्येक के पास दो झोलों में तीस-तीस पुस्तकें थीं। ये तीन दिन तक नगर और गांवों में घूम-घूमकर पुस्तकें बेचते रहे।

उसका नारा है—हर घर में पुस्तकालय और यह कि हर घर साल-भर में कम से कम 100 रुपये की पुस्तकें अवश्य खरीदे।

सर्वमान्य बाइबिल का प्रकाशन

क्रिश्चियन यूनिटी मूवमेंट नामक संस्था ने ईसाई धर्म के सभी संप्रदायों के लिए मान्य एक बाइबिल तैयार की है जो यूरोप और अमेरिका के सात प्रकाशकों द्वारा छापी जा रही है। रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट और अन्य छोटे-मोटे सभी संप्रदायों ने इसे स्वीकार कर लिया है और पोप ने भी इसे आशीर्वाद दिया है। इंग्लैंड में इसका प्रकाशन हो चुका है, अन्य देशों में धीरे-धीरे किया जा रहा है।

म॰ प्र॰ शासन साहित्य परिषद् के पुरस्कार

मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् ने वर्ष 1972 के लिए 10 अखिल भारतीय और 16 प्रादेशिक पुरस्कारों की घोषणा की है। नये पुरस्कार विषयों में युवालेखन के लिए गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार उर्दू के लिए दो प्रादेशिक पुरस्कार तथा प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका के लिए 3 हज़ार रु॰ का पुरस्कार है।

पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल है।

लेखकों को राष्ट्रीय पुरस्कार

भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं में विद्यालय स्तर की पुस्तकों के लेखकों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार देने की योजना शुरू करने का निर्णय किया है। यह योजना अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के उपलक्ष्य में शुरू की जा रही है। इसके अन्तर्गत हर वर्ष दस-दस हज़ार रुपये के 100 पुरस्कार दिए जाएंगे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यह योजना चलाने के लिए उपयुक्त प्रबन्ध कर रहा है।

1973-74 के पुरस्कारों के लिए 31 दिसम्बर, 1972 को या इससे पूर्व प्रकाशित पुस्तकें ही भेजी जा सकती हैं। शीघ्र ही उन विषयों की घोषणा की जाएगी जिन पर लिखी गई पुस्तकों पर पुरस्कार दिए जाते हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार समारोह

दिल्ली के कामानी हाल में साहित्य अकादमी का पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। अकादमी के अध्यक्ष डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ने पुरस्कार वितरित किया। कुल तेरह भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार दिए गए। कृतियों में 5 उपन्यास, 2 नाटक, 2 कहानी-संग्रह, 2 कविता-संग्रह और 2 सामान्य ग्रंथ हैं। पुरस्कृत लेखकों में चार की आयु साठसे ऊपर है, चार की पचास और साठ के बीच, चार की चालीस और पचास के बीच और एक की तीस से चालीस के बीच। इनमें केवल चार लेखन के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं करते, तीन अध्यापक हैं, दो सरकारी नौकर हैं, एक पत्रकार हैं, एक सामाजिक कार्य करते हैं, एक की मृत्यु हो चुकी है। मराठी की लेखिका श्रीमती गोदावरी परुलकर कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की सक्रिय नेत्री हैं और हिन्दी के कवि भवानी प्रसाद मिश्र पक्के गांधीवादी हैं। दो अन्य लेखक भी कम्युनिस्ट हैं अथवा रहे हैं। नौ लेखक विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त हैं, शेष नहीं।

नया साहित्य

(रजिस्ट्रार आफ न्यूज़ पेपर के आदेशानुसार)

फार्म 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशन का स्थान—	दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि—	मासिक
3.	मुद्रक का नाम—	विश्वनाथ एम० ए०
	राष्ट्रीयता—	भारतीय
	पता—	'नया साहित्य' कार्यालय, दिल्ली-6
4.	प्रकाशक का नाम—	विश्वनाथ एम० ए०
	राष्ट्रीयता—	भारतीय
	पता—	'नया साहित्य' कार्यालय, दिल्ली-6
5.	सम्पादक का नाम—	विश्वनाथ एम० ए०
	राष्ट्रीयता—	भारतीय
	पता—	'नया साहित्य' कार्यालय, दिल्ली-6
6.	पत्र के मालिकों का नाम व पता—	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-6

मैं, विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि उपर्युक्त विवरण सत्य और विश्वसनीय है और इसकी मुझे पूरी जानकारी है।

दिनांक 1-3-1973 प्रकाशक

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32 रजिस्टर्ड नं० डी-411

पुस्तकें हमारी मित्र

इन्दिरा गांधी

मैंने पढ़ना पहले-पहल कब शुरू किया, यह अब मुझे याद नहीं है। पर वह निश्चय ही अक्षर-ज्ञान के तुरन्त बाद की बात होगी। किसीने मुझसे कभी पढ़ने को नहीं कहा, बल्कि सचाई यह थी कि [illegible] के समय या कहीं बाहर जाते वक्त मुझे ज़बर्दस्ती पढ़ने से रोका जाता था और किताब को छोड़ते हुए मुझे काफी कष्ट होता था। लेकिन पिताजी को पुस्तकों से प्रेम था और घर में हर कहीं किताबें ही किताबें नज़र आती थीं, जिसका मुझपर ज़रूर असर पड़ा होगा। सभी विषयों पर आसपास ही यदि पुस्तकें मौजूद हों तो पढ़ना कितना आसान हो जाता है!

पुस्तकों से केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि आराम भी मिलता है, मनोरंजन भी होता है, और ये हमारे लिए अच्छा मित्र सिद्ध होती हैं। पुस्तकों द्वारा हम अपने समय के और बीते युगों के सभी तरह के लोगों से मिलते हैं और परिचित होते हैं, सभी तरह के स्थानों को देखते हैं और जानते हैं। हमारे आगे चुनने को अपार सामग्री होती है। पढ़ने से हमारी आन्तरिक क्षमताओं को बल मिलता है और नये-नये विषयों में रुचि पैदा होती है। इस तरह हम विचारों और सिद्धान्तों में गहरे पैठ सकते हैं, जिससे हममें चिन्तन की भी आदत पड़ती है।

जब भी मैं विदेश जाती हूं तो मुझे उन तरह-तरह की सचित्र और रंगीन पुस्तकों को देखकर, जो आजकल वहां सभी उम्र के बच्चों के लिए निकल रही हैं, ईर्ष्या-सी होती है। बच्चों के लिए भारत में इधर कुछ पुस्तकें छपी हैं, पर ये हमारी ज़रूरतों को पूरा नहीं करतीं। हमारे प्राचीन साहित्य और इतिहास में प्रचुर सामग्री है। यह अच्छा ही है कि बच्चों को अपनी पृष्ठभूमि का ज्ञान हो, पर साथ ही यह भी ज़रूरी है कि उनका आधुनिक आविष्कारों और प्रगति से तथा विश्व-भर की महान प्रतिभाओं के विचारों से सम्पर्क रहे।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंट्समैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित सम्पादक : विश्वनाथ

नया साहित्य

वर्ष 18 अप्रैल, 1973
अंक 4 वार्षिक मूल्य 5.00
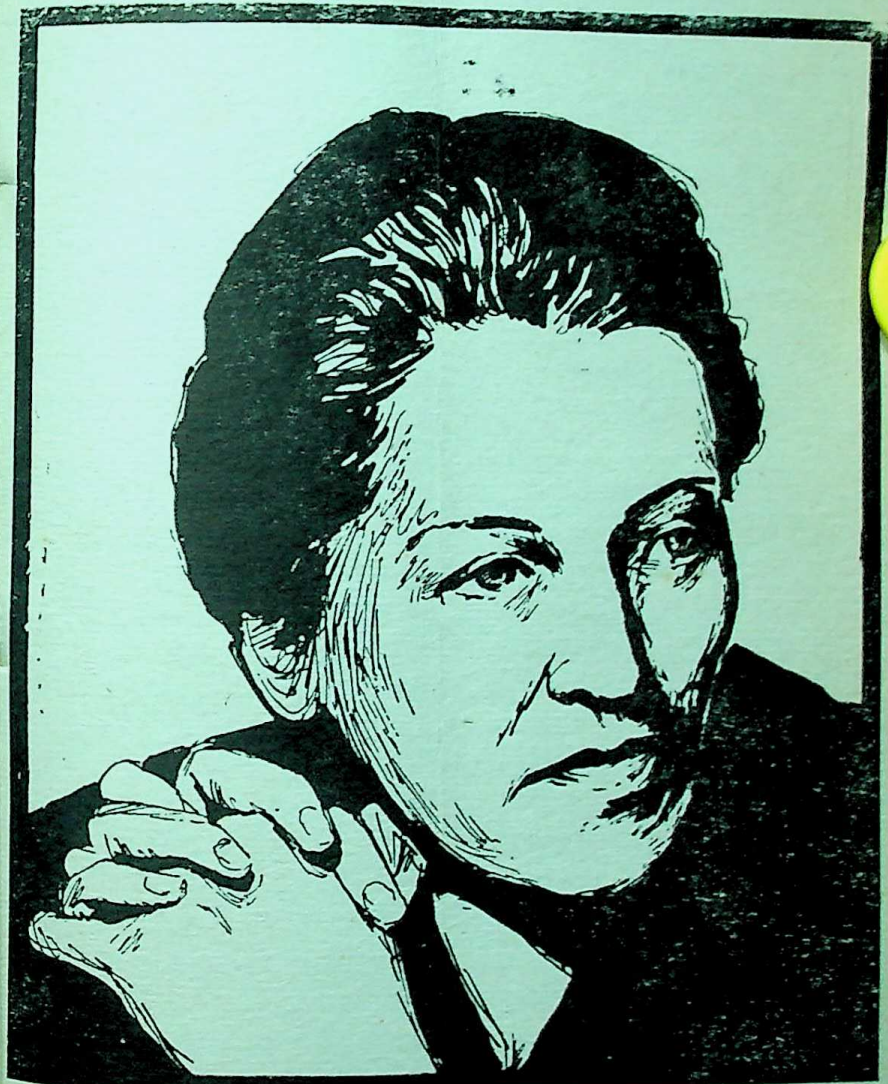
नोबल पुरस्कार-विजेता उपन्यास-लेखिका पर्ल बक, जिनका पिछले दिनों निधन हो गया।

किताबों की दुनिया

रूस में तुलसी-जयन्ती

भारत के सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि तुलसीदास की 400 वीं जयन्ती मनाने के लिए मास्को स्थित विज्ञान अकादमी के पूर्वाध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो० बी० गाफुरोव की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है। पिछले तेरह वर्षों से गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएं सोवियत यूनियन के साहित्य-जगत् में चर्चा का विषय रही हैं। इसके अतिरिक्त रामायण का अनूदित रूप में मंचन केन्द्रीय बाल थियेटर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहा है। मंचन महीने में दो बार होता है तथा इसे देखने को भीड़ उमड़ पड़ती है।

मोहन राकेश को 'आधे-अधूरे' पर कालिदास पुरस्कार

मध्य प्रदेश शासन की साहित्य परिषद् का सर्वोच्च अखिल भारतीय साहित्यिक पुरस्कार 'कालिदास पुरस्कार' स्वर्गीय श्री मोहन राकेश को उनकी नाट्य कृति 'आधे अधूरे' पर प्रदान किया गया है। सन् 1972 के लिए यह पुरस्कार, जो तीन हजार रुपये का है, श्री राकेश को मरणोपरान्त प्रदान किया गया है।

मारीशस को हिंदी प्रेस भेंट

मारीशस तथा फिजी में हिन्दी भाषी पाठकों की सुविधा के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने भारी संख्या में हिन्दी पुस्तकें तथा हिन्दी टाइपराइटर भेजने, शिक्षा वृत्तियां देने और हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए पग उठाए हैं। मारीशस में हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय की ओर से 1.20 लाख रुपये की कीमत का एक हिन्दी मुद्रणालय (प्रेस) उपहारस्वरूप मारीशस भेजा जा रहा है। फिजी स्थित भारतीय उच्चायोग को 30 हजार रुपये मूल्य की हिन्दी पुस्तकें भेजी जा चुकी हैं तथा इस वर्ष 15 हजार रुपये मूल्य की पुस्तकें खरीद कर भेजे जाने की योजना है।

पंजाब सरकार द्वारा साहित्यकारों का सम्मान

पंजाब सरकार ने विख्यात नाटककार डा० रोशन लाल आहूजा और सरदार राजिन्द्र सिंह, सम्पादक 'कौमी एकता', नई दिल्ली को इस वर्ष के सर्वोत्तम साहित्यकारों के रूप में चुना है। पंजाब के मुख्य मंत्री ज्ञानी जैलसिंह ने पटियाला में भाषा विभाग के वार्षिक साहित्य समारोह में उनको अभिनंदन-पत्र और नकद पुरस्कारों के साथ सम्मानित किया। 'मध्यकालीन हिन्दी और पंजाबी प्रेमाख्यान' पर पुस्तक के लेखक डा० ओमप्रकाश को एक हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया है। सर्वोत्तम पंजाबी काव्य और उपन्यास के लिए क्रमशः सर्वश्री सुखपाल सिंह हसरत और हरनाम दास सहराई को पुरस्कार दिया गया है।

कहानी मेरी ज़रूरत है

—रामकुमार

(सुप्रसिद्ध कहानीकार और चित्रकार रामकुमार की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'मेरी प्रिय कहानियां' की भूमिका के अंश)

शिमला में बचपन के बिताए हुए सर्दियों के वे लम्बे-लम्बे दिन जो कभी समाप्त होते न जान पड़ते, उनका अकेलापन और सन्नाटा और ऊब जैसे हमेशा के लिए चिपक गया हो। खाली-उजाड़ मकान, बन्द स्कूल, कोई मित्र नहीं, कोई दिनचर्या नहीं, दिन-भर पहाड़ियों की दौड़, पेड़ों पर चढ़ना या कभी डांट पड़ने पर किताब लेकर बैठ जाना। दिन-भर की ऊब के बाद हर शाम को कालीबाड़ी जाने का आकर्षण विशेष महत्त्व रखता था। बर्फ गिरती तो कमरे की बंद खिड़कियों के शीशों में से पहाड़ों को सफेद होता हुआ देखते। छोटा-सा घर अपने में एक दुनिया थी जिसकी चहारदीवारी के भीतर अपने को बहुत सुरक्षित महसूस करना एक ऐसी कमज़ोरी थी जिससे बाद में भी छुटकारा मिलना सहज नहीं जान पड़ा। अपने ही भीतर सिमटते जाना अपने किलों के दीवारों को मजबूत करने के समान था।

छत से दूर-दूर तक दिखाई देती हुई मकानों की कतारें और रात के लिए बसेरा ढूंढते हुए पक्षियों के झुण्ड, घाटों पर घूमते हुए अचानक मुठभेड़ हो जाती एक ऐसे अपरिचित चेहरे से जो तुरन्त अपने घेरे में बांध लेता—ऐसे कितने ही दृश्य, कितने ही क्षण, कितने ही चेहरे जब भीतर की तहों में दबते जाते हैं तो उनके साथ और भी बहुत कुछ जुड़ता जाता है जो उनका अपना नहीं था।

एक अनुभव कभी-कभी या मेरे साथ प्राय: एक ही रचना में पूर्ण रूप से चित्रित नहीं हो पाता। कुछ समय बाद या एक लम्बे अरसे के बाद कहीं महसूस होने लगता है कि कहीं कोई कमी रह गई हो, कुछ छूट गया हो, उसके किसी दूसरे पहलू को व्यक्त करने की आवश्यकता जान पड़ने लगी हो। कोई चरित्र, कोई घटना, कोई दृश्य बार-बार अपने साथ पूर्ण रूप से न्याय न होने की बात दोहराता है। संभवत: एक उपन्यास में लेखक उससे मुक्ति पा लेता हो लेकिन एक कहानी-लेखक के लिए ऐसा सम्भव नहीं हो पाता। कहानी खत्म हो जाने के बाद भी खत्म नहीं होती और आने वाली रचनाओं में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में उसकी परछाइयां दिखाई देती रहती हैं।

एक स्थान पर पहुंचकर अपनी सीमाओं को जानना भी उतना ही आवश्यक जान पड़ता है जितनी कि विकास के नये धरातलों की खोज। चौंका देने वाली घटनाएं, बहुत उलझी हुई परिस्थितियां, पेचींदगियों से भरे चरित्र—इन सबसे बचने की ही कोशिश रहती है यद्यपि अपने-आप में इनका महत्त्व कम नहीं है और इन्हें लेकर विभिन्न प्रकार के प्रयोग करने का कौतूहल भी आकर्षित करता है। और इसके विपरीत हैं

दैनिक जीवन के छोटे-छोटे सुख-दुःख, साधारण-सी दिखाई देने वाली समस्याएं, ऐसे सपाट-से मैदान जैसी ज़िंदगी जहां विशेष कुछ भी नहीं घटता, जिन्हें हम रोज ही बहुत स्वाभाविक ढंग देखते एवं महसूस करते होंगे। लेकिन कहीं भीतर ही भीतर सोए हुए ज्वालामुखी दहकते रहते हैं। हर कलाकार को अपने क्षेत्र में चुनाव करने पड़ते हैं और न चाहते हुए भी कई दिशाओं में भटकने का प्रलोभन छोड़ना पड़ता है।

लैंडस्केप से मुझे सदा मदद मिलती है—मनुष्य के भीतर झांकने की एक चेष्टा, उस नकाब को उतारकर एक झलक देख पाने की जो हर व्यक्ति के साथ उसकी छाया की भांति चिपका रहता है, और कुछ समय के लिए अपना नकाब भी उतार देने की।

नये शहर, नये देश, नये बाजार और गलियां और पुल, पेड़, पर्वत, आकाश सब कुछ मन के भीतर ऐसा उत्साह और ऐसी दृष्टि जगा देते हैं कि कुछ उलझनें अपने-आप स्पष्ट हो जाती हैं और कुछ और भी जटिल हो जाती हैं, जिनके विषय में पहले कभी ऐसा अनुमान भी नहीं लगाया था। एक खाली मकान की तलाश करते हुए कितने ही ऐसे इलाकों की सैर जहां कभी जाने का अवसर न मिलता, कितने ही खाली घरों के ताले खोलकर, कमरों के भीतर ताक-झांक जहां पिछले वर्षों के दौरान वहां रहने वालों की बासी गंध मिलती—और उसीके साथ जुड़ती जाती उन सब मकानों की गन्ध जहां एक समय हम रह रहे थे लेकिन अब उनका कुछ भी शेष नहीं बचा था। वह ज़िंदगी, ये लोग, ये स्थितियां खत्म हो चुकी थीं।

हर रोज सुबह कैनवास के साथ मुलाकात करना एक अत्यन्त स्वाभाविक-सी दैनिक घटना है जिसका क्रम वर्षों से चलता आ रहा है। कैनवास की अपनी समस्याएं हैं और मेरी अपनी। कोशिश रहती है कि दोनों मिलकर एक-दूसरे की सहायता करें और समस्याओं का हल खोजें। इसमें लंबे-लंबे गैप देने से हम दोनों की समीपता में अंतर आने लगता है और एक-दूसरे का साथ निभाना कठिन होने लगता है। यही बात कोरे कागजों के साथ भी जान पड़ती है। लेकिन पिछले कई वर्षों से परिस्थितियों की जकड़ में कागजों की दूरी निरन्तर बढ़ती रही जिसका कोई हल निकाल पाना संभव नहीं हो सका। लेकिन दूसरी धारा में बहने के मोह से पूर्ण रूप से अपने-आपको मुक्त कर लेना भी संभव नहीं हुआ। अपने बचपन को अपने से बिल्कुल अलग कर देना अपने साथ ही अन्याय करना है। वह एक ऐसी ज़रूरत भी होती है, जिसे पूरा करना महत्त्वपूर्ण होता है। किसी दिन उन्हें पूरा करने के मोह में आदमी अपने अधूरे स्वप्नों को सहेज कर रखता जाता है।

आज यह सोचकर बहुत अजीब-सा लगता है कि लगभग बीस वर्ष पूर्व जब पेरिस में चित्रकला की शिक्षा ले रहा था तो चित्रकारों की अपेक्षा लेखक मित्र ही मेरे अधिक निकट थे, हर शनिवार को लेखक संघ की सभाओं में जाना ही मुझे अधिक रुचिकर लगता था, अरागों और एलुआर से भेंट करके साहित्यिक समस्याओं पर उनके बिचार जानने चाहे थे। बुदापेस्त में जब मैंने एक व्यक्ति से मिलने की इच्छा प्रकट की तो वे थे जार्ज लूकाच। एक बार पिकासो ने कहा था कि वे अन्य

(शेष पृष्ठ 12 पर)

रूस में रायल्टी का प्रश्न

देव मुरारका

इस वर्ष 1 जुलाई से अंतरराष्ट्रीय स्वत्त्वाधिकार सभा (इंटरनेशनल कापी राइट कन्वेंशन) में सोवियत संघ के प्रवेश से रूसी और अन्य देशों के लेखकों-प्रकाशकों के बीच रायल्टी को लेकर चले आ रहे लंबे विवाद की समाप्ति हो जाएगी। इस तरह पूर्व-पश्चिम के रास्ते का एक और रोड़ा हट जाएगा। मई में रूसी प्रतिनिधि दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करेंगे। इन दिनों सोवियत संघ में प्रकाशन व्यवसाय से संबद्ध हर व्यक्ति सरगर्मी से इसके प्रभाव का अनुमान लगा रहा है।

उन विदेशी लेखकों को, जिनकी रचनाएं रूसी या सोवियत संघ की अन्य भाषाओं में अनूदित हुई हैं, यह खुशफहमी नहीं पालना चाहिए कि उनके बैंक खाते यकायक लबालब भर जाएंगे। ऐसा नहीं लगता कि मसविदे पर दस्तखत करने से पहले की अवधि की जो रॉयल्टी लेखकों-प्रकाशकों की निकलती है, उसे रूस चुकाएगा। बजाय इसके उन्हें इस बात की फिक्र करनी चाहिए कि क्या भविष्य में उनकी पुस्तकें इतनी तत्परता से अनूदित होंगी ? यह समस्या का एक पहलू है। सुविख्यात रूसी सूत्रों को ताज्जुब है कि जब सोवियत संघ के वित्तमंत्रालय की विदेशी मुद्रा के भयंकर अभाव का सामना करना पड़ रहा है तो उसने यह कदम कैसे उठाया, जो उसका भार बढ़ा देगा। शायद वे नहीं जानते कि वित्तमंत्रालय के चतुर नौकरशाहों ने पहले ही खाका बना लिया है कि रूस को जितनी रायल्टी चुकानी पड़ेगी, उससे कहीं ज्यादा मिलेगी।

बौद्धिकों का एक वर्ग है, जो उक्त निर्णय से प्रसन्न है, लेकिन एक दूसरा वर्ग भी है, जिसे आशंका है कि इस कार्रवाई का नतीजा यह होगा कि भविष्य में उत्कृष्ट विदेशी साहित्यिक ग्रंथों के अनुवाद में भारी गिरावट आएगी। उनका ख्याल है कि घटिया पुस्तकों के अनुवाद की प्रवृत्ति बढ़ेगी, क्योंकि उन्हीं लेखकों की पुस्तकों के अनुवाद आसानी से छपेंगे, जो रायल्टी लेने पर ज़ोर नहीं देंगे। मसलन 'भरोसे के साम्यवादी लेखक' या तीसरी दुनिया के गरीब लेखक, जिनकी पुस्तकों में रूस की अधिक दिलचस्पी नहीं है, या पूर्वी यूरोप के लेखक, जिन्हें नकद रायल्टी नहीं देनी होगी।

इन लेखकों को अभी तक पैसा मिल जाया करता था। किसी सैद्धांतिक आधार पर नहीं, राजनैतिक कारणों से। भुगतान का कुछ अंश अपरिवर्त्तनीय रूबलों में भी मिल जाया करता था। वे इस रकम को रूस में खर्च कर सकते थे। रूस के उपर्युक्त बौद्धिक खेमे को यह खतरा दिख रहा है कि पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के लेखकों से जो बौद्धिक ऊर्जा मिलती थी, उसका करीब-करीब सफाया हो जाएगा—इसलिए कि ये लेखक रॉयल्टी लेने से चुकेंगे नहीं। लगता है कि इस तरह के डर कपोलकल्पित नहीं हैं। कई पत्रिकाएं हैं जो कम या ज्यादा विदेशी साहित्य पर निर्भर हैं। उदाहरणार्थ

यदि अनुवाद न छापने दिए गए तो 'विदेशी साहित्य' नामक मासिक पत्रिका तो निरर्थक ही हो जाएगी, क्योंकि यही उसका एकमात्र काम है। वैसे इस पत्रिका का प्रकाशन बंद हो जाने की संभावना नहीं है। इसी तरह 'विदेश' साप्ताहिक में अनुवाद छापने पर रोक लगाई गई, तो उसे भी अपने हाथ-पैर सिकोड़ने पड़ेंगे। बहुत संभव है कि ऐसी पत्रिकाओं का आकार घटा दिया जाए और यदि वित्तमंत्रालय वाकई कटौती करने पर उतारू हो जाता है, तो पत्रिकाओं की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रकाशन संस्थानों को भी सावधानी से अपना बजट बनाकर अनुवाद-कार्य में शिथिलता लानी पड़ेगी।

यह तो हुआ ऋणात्मक पक्ष। लाभों में सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि विदेशी पुस्तकों के अनुवाद की ऊटपटांग काट-छांट की जाएगी। 40 पंक्तियों की कविता को दस पंक्तियों में प्रस्तुत कर देना सोवियत संघ के अनुवादकों के लिए आम बात है। हाल ही में बर्टोल्ट ब्रेश्ट के प्रसिद्ध नाटक गैलीलियो **गेलिली** का तांगानिका नाट्यशाला में प्रदर्शन हुआ। इसमें से उस प्रसिद्ध अंश को हटा दिया गया, जिसमें गैलीलियो अपने विद्रोही शिष्य को एक पांडुलिपि बंदीगृह से चोरी-छिपे बाहर ले जाने को देता है। बेशक कोई पांडुलिपि विदेश भिजवाना और वहां छपवाना रूस के शासकों के सोचने के तौर-तरीके के विरुद्ध है। संभव है मृत लेखकों की रचनाओं को इस तरह कूड़ा बनाए जाने से रोका न जा सके, किंतु रूस के अब स्वत्वाधिकार सभा के सदस्य बन जाने से जीवित लेखक अपनी रचनाओं को मूलरूप में प्रकाशित कराने का प्रयत्न कर सकेंगे।

सिद्धांततः रूसी लेखक अपनी अनूदित पुस्तकों पर रॉयल्टी पाने के हकदार हो गए हैं, किंतु अभी तक लेखकों की बाहर से प्राप्त रॉयल्टी सरकार लेती रही है। न्यू स्टेट्समैन की राय में निकट भविष्य में नहीं तो बाद में रूसी लेखकों को रॉयल्टी मिलने लगेगी। किन्तु सोवियत सरकार, जो स्वत्वाधिकार (और रॉयल्टी) लेखकों को व्यक्तिशः न देकर अपने पास रखती है, वह इस बात की कानूनी हकदार हो जाएगी कि जिस लेखक को न चाहे, उसकी पुस्तक का अनुवाद विदेशों में प्रकाशित न होने दे। इस दशा में साल्झेनित्सिन जैसे लेखकों को कठिनाई होगी। ऐसी स्थिति में सोवियत सरकार का स्वत्वाधिकार सभा में प्रवेश पहले जितना ही विवादास्पद बन जाएगा।

यह सही है कि रूस ने वित्तीय लाभ-हानि को मद्देनज़र रखते हुए ही मसौदे पर हस्ताक्षर करने की ठानी है। यूरोप से समझौता करने की उसकी आकांक्षा उसे इस दिशा में धकेल भी सकती है। फिर यह उसकी मन:स्थिति के अनुकूल और इस इच्छा से चालित भी है कि सोवियत संघ में नव वैधानिकता का सूत्रपात हो। फिर भी सोवियत सरकार की नौकरशाही अपनी कार्रवाई के नतीजों को हमेशा अपने वश में नहीं रख सकती। उसके सामने ऐसी स्थिति आएगी ही कि उसे अपने लेखकों के साथ उदारता बरतनी पड़ेगी। इसलिए कि उसने साहित्य को निर्यात करके भुनाने का निश्चय किया है।

('दिनमान' से साभार उद्धृत)

भारतीय पाठकों में महिला पाठकों की संख्या अधिक

—अमिताभ

साक्षर पुरुषों की तुलना में भारत की साक्षर महिलाएं अधिक पुस्तकें पढ़ती हैं—यह जानकारी नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, द्वारा हाल ही में किए गए सर्वेक्षण से मिली है। उदाहरण के लिए, दिल्ली के पुस्तक-पठन सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को लें। दिल्ली के नियमित पाठकों में 41 प्रतिशत महिलाएं हैं, जबकि पुरुष केवल 26 प्रतिशत। ऐसे लोगों में, जिन्होंने कभी कोई पुस्तक पढ़ी ही नहीं, पुरुषों की संख्या 24 प्रतिशत है जबकि महिलाओं की संख्या मात्र 18 प्रतिशत।

महिलाओं द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या जहां पांच या पांच से अधिक प्रति-माह है वहां प्रति माह पुरुषों द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या कहीं कम है।

हां, उर्दू पुस्तकें स्त्रियों की तुलना में पुरुषों में अधिक लोकप्रिय रहीं—इस वर्ग में पुरुष पाठकों की संख्या जहां 13 प्रतिशत रही स्त्रियों की मात्र 4 प्रतिशत। लेकिन पंजाबी, तमिल तथा बंगला भाषा-भाषी पाठकों में स्त्रियों की ही संख्या पुरुषों से अधिक रही। पाठकों में 60 प्रतिशत का झुकाव कथा-साहित्य की ओर रहा जबकि 31 प्रतिशत पाठक ऐसे भी थे जो कथा-साहित्य के साथ-साथ सामान्य साहित्य की ओर भी झुकाव रखने वाले थे।

कथा-साहित्य के पाठकों में भी स्त्रियां मर्दों से आगे रहीं। स्त्री-पाठकों की संख्या 65 प्रतिशत रही जबकि पुरुषों की मात्र 26 प्रतिशत। 18 से 24 वर्ष वय के लोग अधिक नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ते रहे जबकि व्यापारी वर्ग के लोगों का पुस्तकों की ओर झुकाव न्यून रहा। उच्च पदस्थ व्यक्ति कम ही पढ़ पाए लेकिन जिन्होंने पढ़ा, नियमित रूप से पढ़ा।

सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि 60 प्रतिशत पुस्तक-प्रेमियों ने पुस्तकें खरीदकर पढ़ीं शेष लाइब्रेरियों या मित्रों पर निर्भर रहे। यह अलग बात है कि मित्रों से पढ़ने को उधार ली गईं पुस्तकें कभी उसके मालिक को वापस न की गईं। विश्व के पांच बड़े पुस्तक-प्रकाशक देशों में भारत का भी नाम आता है। शेष चार हैं—सोवियत यूनियन, अमेरिका, इंग्लैंड तथा जापान।

साधारणतौर पर भारत में 11,220 पुस्तकें प्रति वर्ष प्रकाशित होती हैं। जिनमें लगभग एक-तिहाई अंग्रेज़ी भाषा में छपती हैं।

सन् 1970 तक राष्ट्रीय अनुक्रमणिका में अंग्रेज़ी की लगभग सवा लाख पुस्तकें आ चुकी हैं। अन्य भाषाओं की पुस्तकों की संख्या इस प्रकार है। हिन्दी—19,454, मराठी—12,016 तथा बंगला—11,960। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या इस प्रकार है—तेलुगु 6,780, तमिल 6,438; मलयालम 6,190; कन्नड 4,834; उड़िया 2,617; पंजाबी 2,311; उर्दू 2,293; संस्कृत 1,712; तथा असमी 1,452।

प्रति वर्ष इतनी पुस्तकें प्रकाशित होने के बावजूद हाल यह है कि देश की प्रति दस लाख की आबादी पर केवल 22 पुस्तकें प्रकाशित हो पाती हैं जबकि यूरोप में इतनी ही आबादी पर 418 पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

सन् 1971 में भारत ने 4 करोड़ रुपये मूल्य की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं आयात की थीं साथ ही 2 करोड़ रुपये मूल्य की पुस्तकों का निर्यात भी किया था।

अब से कुछ वर्ष पहले तक भारत बर्मा, श्रीलंका, पाकिस्तान, मलयेशिया तथा सिंगापुर को भारी मात्रा में पुस्तकें निर्यात करता था। अनेक कारणों से इन देशों को किए जाने वाले पुस्तक-निर्यात में मंदी आई लेकिन इसकी क्षति-पूर्ति पश्चिमी एशियाई देशों, अमेरिका तथा इंग्लैंड को निर्यात की जाने वाली पुस्तकों की मात्रा में बढ़ोत्तरी होने के कारण हो गई।

लेखक और लेखन

अक्सर लोग मुझसे पूछते रहते हैं कि मुझपर किन लेखकों और कलाकारों का प्रभाव पड़ा है। जो नाम एकदम ध्यान में आते हैं, लिखता हूं—मार्क ट्वेन, फ्लोवा, स्टैण्डल, बाख, टाल्सटाय, दास्तोवस्की, जॉन डन, मोपांसा, किपलिंग, थोरो, शेक्सपियर, मोज़ार्ट, दांते, वॉन गॉग, गोगां आदि। सच तो यह है कि मैंने कलाकारों से भी उतना ही सीखा है, जितना लेखकों से। यह मत पूछिए कि यह कैसे संभव है? इसका उत्तर देने में मुझे फिर एक दिन लग जाएगा।

—अर्नेस्ट हेमिंग्वे

लेखक होने का एक लाभ यह है कि लेखक अपनी गलतियों का उपयोग अपनी रचनाओं में कर सकता है। मैंने उन्हें अपनी कहानियों के कथानकों में बदल दिया है।

—सामरसेट मॉम

अक्सर मैं बहुत गहरे विषयों पर कलम उठाता हूं, और ऐसे शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में करता हूं, जिनपर एतराज़ किया जा सकता है। पर मैं जानता हूं कि जब भी मैंने किसी विषय पर लिखा, पहले सफे पर 786 अवश्य लिखा। जिसके अर्थ होते हैं—बिस्मिल्लाह। मैं, जो आम तौर पर खुदा की हस्ती को नहीं मानता, कागज़ पर मोमिन बन जाता हूं। यह वह कागज़ी मंटो है, जिसे आप कागजी बादामों की तरह उंगलियों से तोड़ सकते हैं; वैसे वह हथौड़े से टूटने वाला भी नहीं है।

—मंटो

किस्सा तोता पढ़ाने का

हरिदत्त शर्मा

हमारे सामने हिन्दी के ख्यातनामा लेखक श्री हंसराज रहबर की लघु औपन्यासिक कृति 'किस्सा तोता पढ़ाने का'* है। श्री रहबर ने इस कृति में यथास्थितिवाद को पनपाने तथा उससे समझौता करने वाले पात्रों को लिया है। ये पात्र हमारे 'कर्णधार समाज' में सर्वत्र मिलते हैं। उन्हें दूर जाकर तलाश करने की आवश्यकता नहीं। संढोलिया परिवार भी दिखाई पड़ जाते हैं, मनीश जैसे 'बौद्धिक' और उनके समानधर्मा तो मिलते ही मिलते हैं, और नीलम जैसी स्वैरिणियों की भी कमी नहीं।

उपन्यासकार रहबर अपनी इस कृति में उन वर्गों के अंतरंग को उद्घाटित करते हैं जो भारतीय समाज को अनेकानेक रूपों में पीड़ा का संसार देते रहते हैं। संढोलिया परिवार उन वर्गों में अग्रणी पूंजीवादी वर्ग का प्रतिनिधि हैं। साम्राज्यवादी 'मनीषी' मैकाले की शिक्षा में दीक्षित मनीश अस्थिरचेता शिष्ट मध्यम वर्ग के 'आधुनिक बोधसंपन्न उपवर्ग का विद्वान प्रतिनिधि' है और नीलम धन के चोंचलों से उभरी स्वच्छंद कामवासना की उपलब्धि, जो अपने यथार्थ के प्रति 'जागरूक' हैं।

उपन्यास में सेठ संढोलिया परिवार का आर्थिक शोषक पक्ष कम, सांस्कृतिक शोषक पक्ष अधिक उभारा गया है। उसका 'धर्म' सामंती धारणाओं से संपृक्त है, जो पापजन्य कुंठाओं के लिए नशे का भी काम करता है। उसका 'दर्शन' उसके 'धर्म' से विशिष्ट है। वह आधुनिक मनोविज्ञान का सहारा लेकर सामंतकालीन पुनर्जन्मवाद को नये रूप में प्रतिष्ठापित करता है। उसकी 'संस्कृति' भी सामंती परकोटों से बाहर निकली 'पूंजीवादी विकृति' है, लेकिन नई वेशभूषा में यह मनोहारिणी है।

यह 'विकृति' नामी संस्कृति 'नई' कला, 'नई' पत्रकारिता और 'नये' साहित्य का विकास करके खूब जमकर 'जनसेवा' करती है। इस 'संस्कृति' के पुरोधा हैं औपन्यासिक प्रबोध कुमार और नेमिचंद किंतु अपनी 'मौलिकता' से इसे छविमान किया है मनीश ने, इसीलिए वह नायक है, वह साहित्य और संस्कृति को नये आयाम देता है। वह 'निर्द्वंद्ववाद' की प्रस्थापना करता है जिसके अनुसार पशु-पक्षियों जैसे प्राकृतिक संबंध ही इष्ट होने चाहिए।

मनीश 'निर्द्वंद्ववाद' की वकालत अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री-पुरुष-संबंधों में तो करता ही है, लेकिन वह आसानी से आर्थिक-राजनीतिक संबंधों में भी 'फिट'

---

* प्रकाशक : राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली
मूल्य : 5.00

हो जाती है। निर्द्वंद्ववाद से जनता का कितना भी शोषण किया जा सकता है। यह सिद्धांत समाज के धींगों के लिए बड़ा उपयोगी है। यों तो शोषक शासक सदा से ही स्वैरी रहे हैं, लेकिन सिद्धांत की प्रतिष्ठा से सामाजिक स्वीकृति मिल जाने में सुविधा रहती है।

इसी तरह की धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक लहरों से युग-सत्य समाजवाद को 'रहस्यवाद' बना दिया गया है। सेठ संढोलिया परिवार बड़े 'कलात्मक' ढंग से देसी 'संभ्रांतों' और विदेशी 'महाजनों' का सहयोग लेकर चुपके-चुपके शोषण के जाल बिछाता है। उपन्यासकार रहबर सोवियत संघ के 'सामाजिक साम्राज्यवाद' को भी इस 'षड्यंत्र' में खींच लेता है।

श्री रहबर 'क्रांतिकारी' लेखक हैं, इसलिए वह उपन्यास में भी 'चीन बनाम रूस' की समस्या से बच नहीं पाते। इस खींचतान के बावजूद वह भारत के सांस्कृतिक संदर्भ में सोचते हैं और भारतीय मुहावरे में बोलते हैं। यह बात दूसरी है कि उनकी सोच से उनके अपने सहयोगियों अथवा समानधर्माओं की सहमति न हो। मुख्य बात यह है कि उनकी समझ तो यह बन रही है कि भारत में परिवर्तन भारत के ही माध्यम से आएगा।

इस समझ के कारण ही वह अपने दर्शन और इतिहास का अध्ययन करते हैं। इसीके कारण स्वामी विवेकानंद उनके प्रिय दार्शनिक हैं, इसीके कारण वह भारतीय आदर्शवादी दर्शनों में से लोकवादी तत्त्व निकालने के लिए सचेष्ट रहते हैं और इसी कारण प्रस्तुत औपन्यासिक कृति की पात्रा कपिला (मनीषा) का चरित्र बड़ा प्रखर बना है।

संढोलिया परिवार की 'कृपा' पाकर 'बड़ा' बन जाने वाले मनीश ने जब कपिला को अपने 'बड़प्पन' का बखान करते हुए यह चिट्ठी लिखी कि वह बेटी सहित दिल्ली आकर उसके महज्जीवन की सहभागिनी बने तो कपिला ने जो अस्वीकृतिसूचक उत्तर दिया, वह रहबर की उत्कट भारतीयता का परिचायक है।

इस कृति में लेखक ने 'बुद्धि कर्मानुसारिणी' (मनुष्य की बुद्धि उसके व्यवहार और परिवेश से बनती है) सूत्र से अपने पात्रों को पूरी तरह से नापा है। मनीश, नीलम और रतनलाल के उदाहरण इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। एक कालेज का अध्यापक मनीश सेठ के घर में तोते को पढ़ाते-पढ़ाते, उस वातावरण में रहते-रहते किस तरह स्वयं पालतू तोता बन जाता है—यही तो उपन्यास का निहित मंतव्य है।

श्री रहबर ने मैकाले-शिक्षा-प्रसूत मनीश और उपन्यास में वर्णित उन जैसे 'मनीषियों', 'बौद्धिकों' और 'बुद्धिजीवियों' के माध्यम से उन सभी कलाकारों, संस्कृतिकर्मियों, कवियों और साहित्यकारों पर कड़ा कटाक्ष किया है जो मात्र अपनी परिस्थितियों और व्यवस्था की उपज हैं और जो वर्तमान में प्रसुप्त न तो अतीत के श्रेष्ठ तत्त्वों को देख पाते हैं और न उन नये तत्त्वों को जिनका सुखद भविष्य के लिए विकास किया जा सकता है।

□ □

प्रकाशन-व्यवसाय में स्वस्थ परम्पराएं और नये दिशा-बोध

भारत की प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं में राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, का एक बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय स्थान है। इस संस्था की स्थापना सन् 1891 में लाहौर में हुई थी। प्रकाशन-व्यवसाय में स्वस्थ परम्पराएं और नये दिशा-बोध लाने के लिए यह संस्था अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर चुकी है। प्रत्येक मास एक योजनाबद्ध रूप में हिन्दी के गण्यमान्य प्रतिष्ठित लेखकों की विविध विषयों पर नई पुस्तकें यहां से प्रकाशित होती हैं। इन नई पुस्तकों की चर्चा प्रायः सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में होती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा अब तक तीन हज़ार से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें बड़ी संख्या हिन्दी पुस्तकों की है। विभिन्न उपयोगी विषयों पर प्रकाशित ये पुस्तकें बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी तरह के पाठकों की मांग और रुचि को पूरा करती हैं।

इस संस्था द्वारा ऐसी कई नई पुस्तकमालाओं का भी प्रकाशन किया गया है जो अपनी उपयोगिता और लोकप्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं। बहुत-सी पुस्तकें तो केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय, उत्तर प्रदेश सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् एवं पंजाब भाषा-विभाग से सम्मानित एवं पुरस्कृत हैं।

राजपाल एण्ड सन्ज की गौरवपूर्ण परम्परा को आगे बढ़ाने में विश्वविख्यात विद्वान लेखकों ने अपना योगदान दिया है। महान् दार्शनिक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन् की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं के हिन्दी अनुवाद यहां से प्रकाशित हुए हैं। हिन्दी के लोकप्रिय कवि बच्चन की प्रायः समस्त रचनाएं तथा आचार्य चतुरसेन, डा० रांगेय राघव और गुरुदत्त के प्रायः सभी श्रेष्ठ उपन्यासों को प्रकाशित करने का श्रेय राजपाल एण्ड सन्ज़ को ही प्राप्त है। उर्दू के प्रसिद्ध लेखक कृश्न चन्दर की रचनाएं हिन्दी में सर्वप्रथम इसी संस्था द्वारा प्रकाशित होकर अत्यन्त लोकप्रिय हुईं। बंगला के ख्यातिप्राप्त उपन्यासकार ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, विमल मित्र, विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय, मनोज बसु और प्रेमेन्द्र मित्र आदि के श्रेष्ठ उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद भी इसी संस्था से प्रकाशित हुए हैं। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, अमृतलाल नागर, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, शिवानी एवं मन्मथनाथ गुप्त प्रभृति उपन्यासकारों की कई श्रेष्ठ कृतियां राजपाल एण्ड सन्ज द्वारा ही प्रकाश में आई हैं। विश्व-साहित्य के महान लेखक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकारों की कुछ उल्लेखनीय कृतियां भी राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित हुई हैं—जैसे अर्नेस्ट हेमिंग्वे, विलियम फाकनर, जान स्टेनबैक, जैक लंडन, मार्क ट्वेन, नैथेनियल हाथार्न, एफ०स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड आदि की कृतियां।

इस समय उपलब्ध समस्त पुस्तकों की सूची यहां दी जा रही है (*चिह्नित पुस्तकें पॉकेट बुक्स का लाइब्रेरी संस्करण हैं)—

1972 के विशिष्ट प्रकाशन

मानस का हंस	(उपन्यास)	अमृतलाल नागर	25.00
श्मशान चम्पा	,,	शिवानी	6.00
परिमल	,,	गुरुदत्त	8.00
मधु	,,	,,	10.00
कुंभीपाक	,,	नागार्जुन	5.00
बदलते रंग	,,	रजनी पनिकर	6.00
सुबह की तलाश	,,	नरेन्द्रदेव वर्मा	5.00
कालिन्दी	,,	ताराशंकर बन्द्योपाध्याय	10.00
मन्वंतर	,,	,, ,,	10.00
एक काली लड़की	,,	,, ,,	5.00
मैं सम्राट् हूं	,,	मनोज बसु	5.00
आक के पत्ते	,,	अमृता प्रीतम	4.00
अजीब आदमी	,,	इस्मत चुगताई	7.00
आधा रास्ता	,,	कृश्न चन्दर	5.00
बंद कली की मंज़िल	(कहानी-संग्रह)	कृश्न चंदर	10.00
क्वार्टर तथा अन्य कहानियां		मोहन राकेश	8.00
पहचान तथा अन्य कहानियां		,,	8.00
वारिस तथा अन्य कहानियां		,,	8.00
हंसनेवाली बात, रोनेवाली बात	,,	कर्तारसिंह दुग्गल	4.00
लिखि कागद कोरे	(निबन्ध)	अज्ञेय	6.00
भवन्ती	,,	,,	8.00
वेद-सुधा	(दर्शन)	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
शिवमंगलसिंह 'सुमन'	(कविता)	सं० आनन्दप्रकाश दीक्षित	4.00
जय भारत जय	,,	सोहनलाल द्विवेदी	12.00
सावित्री	(महाकाव्य)	श्रीअरविन्द	12.00
उत्तरायण	,,	डा० रामकुमार वर्मा	8.00
यादों की बरात	(जीवनी)	अनु० हंसराज रहबर	10.00
हमारे वीर सेनानी	,,	सुदर्शन चोपड़ा	5.00
करफ्यू	(नाटक)	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	5.00
प्रेम अपवित्र नदी	(उपन्यास)	,,	12.00
हमारी संस्कृति	(दर्शन)	डा० राधाकृष्णन्	8.00
अपनी-अपनी बीमारी	(हास्य-व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई	5.00
भारत-पाक निर्णायक युद्ध	(राजनीति)	डी० आर० मानकेकर	12.00

* सर्वत्र चिह्नित पुस्तकें हिन्द पॉकेट बुक्स की लाइब्रेरी संस्करण हैं।

धर्म और दर्शन

भारतीय दर्शन–1	डा० राधाकृष्णन्	30.00
भारतीय दर्शन–2	,,	40.00
प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार	,,	20.00
भगवद्गीता	,,	15.00
धर्म और समाज	,,	15.00
सत्य की ओर	,,	8.00
पूर्व और पश्चिम : कुछ विचार	,,	7.00
धर्म : तुलनात्मक दृष्टि में	,,	6.00
हमारी संस्कृति	,,	8.00
उपनिषदों की भूमिका	,,	2.00
गौतम बुद्ध : जीवन और दर्शन	,,	2 50
सावित्री	श्रीअरविन्द	
	अनु० व्यौहार राजेन्द्रसिंह	12.00
भारत का मूर्तिशिल्प	डा० चार्ल्स फाबरी	25.00
भारत की संस्कृति और कला	डा० राधाकमल मुकर्जी	15.00
संस्कृति और जन-जीवन	युधिष्ठिर भार्गव	10.00
वेद-सुधा	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
ईशोपनिषद्	सत्यभूषण योगी	3.00

मनोविज्ञान

फ्रायड : मनोविश्लेषण	सिगमंड फ्रायड	16.00
यौन मनोविज्ञान	हैवलॉक एलिस	12.00
आधुनिक बाल-मनोविज्ञान	डी० आई० लाल	10.00

राजनीति

न्यूक्लीय विस्फोट और उनके प्रभाव	डा० डी० एस० कोठारी	
भारत-पाक निर्णायक युद्ध	डी० आर० मानकेकर	12.00
काश्मीर : समस्या और पृष्ठभूमि	गोपीनाथ श्रीवास्तव	12.00
भारतीयकरण	बलराज मधोक	6.00
*नेहरू ने कहा	डा० केवल धीर	2.00
कैनेडी के ओजस्वी विचार	वैसले पैंडर्सन	2.50
*हिन्दुस्तान की कहानी	जवाहरलाल नेहरू	4.00
भारत एक है	सीताचरण दीक्षित	1.00
सौ सवाल एक जवाब	प्रभाकर माचवे	1.00

शोध-प्रबन्ध एवं आलोचना

वैष्णव भक्ति-आन्दोलन का अध्ययन	डा० मलिक मोहम्मद	30.00
केशव का आचार्यत्व	डा० विजयपालसिंह	20.00
केशव और उनका साहित्य	,,	15.00
हिन्दी और मलयालम में कृष्णभक्ति-काव्य	डा० भास्करन नायर	15.00
हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	डा० एस० एन० गणेशन	15.00
संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद	डा० देवेन्द्रकुमार	13.00
हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	डा० दशरथ ओझा	20.00
आज का भारतीय साहित्य	संपादित	15.00
समीक्षाशास्त्र	डा० दशरथ ओझा	8.00
पाश्चात्य समीक्षा की रूपरेखा	डा० प्रतापनारायण टण्डन	12.00
बच्चन का परवर्ती काव्य	डा० श्यामसुन्दर घोष	6.00
हिन्दी और तेलुगु : एक तुलनात्मक अध्ययन	डा० जी० सुन्दर रेड्डी	4.00
काव्य में उदात्त तत्त्व	डॉ० नगेन्द्र तथा नेमिचन्द्र जैन	3.00

व्याकरण : लेखनकला

संस्कृत स्वयं-शिक्षक, भाग–1	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	5.00
संस्कृत स्वयं-शिक्षक, भाग–2	,,	5.00
अभिनव हिन्दी व्याकरण	एन० नागप्पा	8.00
सुगम हिन्दी व्याकरण	जीवनाथ व धर्मपाल शास्त्री	2.50
हिन्दी छन्द:प्रकाश	रघुनन्दन शास्त्री	3.00
हिन्दी निबन्ध लेखन	विराज, एम० ए०	5.00
प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण	,,	3.00
पत्र-व्यवहार तथा अनुवाद	एस० सदाशिवम	3.00

ललित निबन्ध

भवन्ती	अज्ञेय	8.00
लिखि कागद कोरे	,,	6.00
डा० नगेन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध	सं० भारतभूषण अग्रवाल	7.00
मन की मौज	राजनाथ पांडेय	6.00
बिखरे चित्र	वाशिंगटन इर्विंग	6.00
झरोखे	इमर्सन एवं अन्य साहित्यकार	6.00
नये-पुराने झरोखे	डा० हरिवंशराय 'बच्चन'	5.00
कवियों में सौम्य संत	,,	5.00

ललित निबन्ध

बोलते क्षण	जगदीशचन्द्र माथुर	7.00
शब्द की लकीरें	डा० चन्द्रप्रकाश वर्मा	4.00
साहित्य के पथ पर	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	2.50
विचार-तरंग	प्रो० दीवानचन्द शर्मा	2.50

शिक्षा

स्वतन्त्र भारत में शिक्षा	हुमायुन कबिर	6.00
शिक्षा में नये प्रयोग	डा० सूरजभान	5.00
शिक्षा-संगठन	के० सी० मलैया	6.00
शिक्षण सिद्धान्त	,,	4.00
शिक्षण की समस्याएं	हैरल्ड टेलर	7.00

शब्दकोश

सुगम अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश	डा० उदयनारायण तिवारी	4.00
व्यावहारिक हिन्दी कोश	,,	4.00
भारत ज्ञान-कोश 1972-73	सं० अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार	4.00

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकें

मनोविकार विज्ञान	ओ' हौवर्ट मौरर	15.00
सामाजिक तथा राजनैतिक शास्त्र के सिद्धान्त	अर्नेस्ट बार्कर	15.00
लोक सम्पर्क	राजेन्द्र	15.00

एकाधिकृत विक्रेता

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

सचित्र विश्वकोश

ILLUSTRATED ENCYCLOPÆDIA IN HINDI

(TEN VOLUMES)

इस सचित्र विश्वकोश में लगभग दो हज़ार विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में ऐसी आवश्यक जानकारी संकलित हैं जो न केवल विद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के लिए वरन् प्रत्येक परिवार के लिए उपयोगी हैं। लगभग ढाई हज़ार रंगीन चित्रों से वर्णित विषयों की व्याख्या की गई है। प्रत्येक खण्ड अपने-आप में पूर्ण है। प्रत्येक विषय की जानकारी अकारादि क्रमानुसार दी गई है जिससे इसमें दी हुई किसी भी विषय की जानकारी तुरन्त ढूंढ़ी जा सकती है।

1.	पृथ्वी, आकाश, खनिज	10.00
2.	जीव-जन्तु, पेड़-पौधे	10.00
3.	मनुष्य, विकास : शरीर-रचना, स्वास्थ्य	10.00
4.	राजनीति, प्रशासन, धर्म	10.00
5.	कृषि, उद्योग, व्यापार-शिल्प	10.00
6.	आविष्कार, खोज और खोज-यात्री, पर्यटन	10.00
7.	विज्ञान, वैज्ञानिक, आविष्कारक	10.00
8.	साहित्य, कला, दर्शन, पुराणकथा	10.00
9.	इतिहास, व्यक्ति, घटनाएं	10.00
10.	देश और निवासी, प्रमुख नगर	10.00

दस भागों के पूरे सेट का मूल्य 100.00

ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक और नवीनतम जानकारी से भरपूर हिन्दी का एक मात्र बहुरंगा विश्वकोश !

उपन्यास

आचार्य चतुरसेन

वयं रक्षाम:	15.00
वैशाली की नगरवधू	12.00
सोना और खून : भाग–1	10.00
सोना और खून : भाग–2	10.00
सोना और खून : भाग–3	10.00
सोना और खून : भाग–4	10.00
हरण निमंत्रण	6.00
खग्रास	8.00
बगुला के पंख	6.00
*ईदो	3.00
पत्थर-युग के दो बुत	5.00
धर्मपुत्र	5.00
हृदय की प्यास	4.00
सह्याद्रि की चट्टानें	3.00
*गोली	4.00
*बहते आंसू	4.00
*आत्मदाह	4.00

सं० रांगेय राघव

संसार के महान् उपन्यास	12.00

रांगेय राघव

कब तक पुकारूं	15.00
आखिरी आवाज़	8.00
घरौंदा	7.00
राई और पर्वत	6.00
देवकी का बेटा	6.00
लखिमा की आंखें	5.00
यशोधरा जीत गई	5.00
मेरी भव बाधा हरो	5.00
पक्षी और आकाश	7.00
राह न रुकी	5.00
रत्ना की बात	5.00
भारती का सपूत	5.00
लोई का ताना	5.00
पथ का पाप	5.00
धरती मेरा घर	4.50
बन्दूक और बीन	4.00
पतझर	4.00
उबाल	4.00
कल्पना	4.00
पराया	3.50
प्रोफेसर	3.00

गुरुदत्त

मधु	10.00
परिमल	8.00
तबेला	8.00
गिरते महल	8.00
धूप-छांह	7.50
मृगतृष्णा	7.00
तब और अब	7.00
प्रवंचना	7.00
जग एक सपना	6.00
सागर और सरोवर	6.00
अपने-पराये	6.00
पड़ोसी	6.00
जागृति	6.00
प्रतिशोध	5.00

राहुल सांकृत्यायन

मधुर स्वप्न	7.00
कप्तान लाल	2.50

अमृतलाल नागर

मानस का हंस	25.00
भूख	8.00
सात घूंघट वाला मुखड़ा	4.00

अनन्त गोपाल शेवड़े

कोरा कागज	12.00
कोरा कागज (छात्र-संस्करण)	5.00

उपन्यास

भगवतीप्रसाद वाजपेयी	
उनसे न कहना	6.00
पुष्पगंधा	6.00
एक प्रश्न	6.00
टूटते बंधन	5.00
रात और प्रभात	6.00
विष्णु प्रभाकर	
स्वप्नमयी	3.00
दर्पण का व्यक्ति	3.00
द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'	
ये गलियां ये रास्ते	
गंगाप्रसाद विमल	
हो कुछ हो	
डा० देवराज	
अजय की डायरी	10.00
भीतर का घाव	5.00
मन्मथनाथ गुप्त	
षड्यंत्र	7.00
शहीद और शोहदे	6.00
शरीफों का कटरा	5.00
*नरक	3.00
मोहन राकेश	
न आने वाला कल	6.00
राजेन्द्र यादव : मन्नू भंडारी	
एक इंच मुस्कान	8.00
मोहनलाल महतो 'वियोगी'	
महामंत्री	4.00
गुलशन नन्दा	
कटी पतंग	6.00
झील के उस पार	6.00
रामकुमार	
*वापसी	2.00
डा० लक्ष्मीनारायण लाल	
प्रेम अपवित्र नदी	12.00
महेन्द्रनाथ	
*रात अंधेरी है	3.00
रामकुमार भ्रमर	
कांचघर	7.00
गले गले पानी	8.00
तीसरा पत्थर	5.00
नरेन्द्रदेव वर्मा	
सुबह की तलाश	5.00
मोहन चोपड़ा	
सुबह से पहले	4.00
शिवानी	
विषकन्या	4.00
अपराधिनी	5.00
श्मशान चम्पा	6.00
कैंजा	
मालती परुलकर	
इन्नी	
रजनी पनिकर	
बदलते रंग	6.00
निर्मला वाजपेयी	
सूखा सैलाब	2.50
प्रकाशवती	
अनामा	7.00
इस्मत चुगताई	
अजीब आदमी	7.00
हंसराज रहबर	
किस्सा तोता पढ़ाने का	5.00
*अमिता	2.00
नानकसिंह	
पुजारी	6.00
गीला बारूद	7.00
संघर्ष	4.50
कलाकार	3.50
एक म्यान, दो तलवारें	8.00

उपन्यास

भैरवप्रसाद गुप्त

बांदी	10.00

प्रतापनारायण टंडन

पल दो पल	10.00

नरेन्द्र कोहली

आतंक	6.00

श्रवणकुमार

प्रेत	

गोविन्द मिश्र

उतरती हुई धूप	5.00

बालशौरि रेड्डी

स्वप्न और सत्य	7.00
ज़िन्दगी की राह	3.00
बैरिस्टर	3.00
शबरी	2.00

शान्तिनारायण

महारानी झांसी	6.00

आनन्दप्रकाश जैन

आठवीं भांवर	6.00

नागार्जुन

कुम्भीपाक	5.00
वरुण के बेटे	5.00
उग्रतारा	4.00
इमरतिया	3.00

शिवशंकर शुक्ल

मोंगरा	3.50

हरिनारायण आप्टे

चाणक्य और चन्द्रगुप्त	7.00

विमल मित्र

पटरानी	6.00
नायिका	6.00
मन क्यों उदास है	6.00
काजल	5.00

भवानी भट्टाचार्य

लद्दाख की छाया	10.00

विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय

पथेर पांचाली	6.00

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

अभियान	10.00
कालिन्दी	10.00
आरोग्य निकेतन	10.00
शताब्दी की मृत्यु	
संकेत	
पांच पुतलियां	
मन्वंतर	10.00
कालरात्रि	8.00
काला फूल	8.00
*दुनिया एक बाज़ार	3.00
बेगम	6.00
गुलबदन	5.00
एक काली लड़की	5.00
वसन्त राग	4.00
न्यायमूर्ति	5.00
रायकमल	5.00

मनोज बसु

रात का मेहमान	18.00
मैं सम्राट हूं	5.00
कैसे भूलूं	4.00
चांद काला है	

प्रेमेन्द्र मित्र

बालू के द्वीप	4.00

वनफूल

हमराही	3.00

जरासंध

महाश्वेता की डायरी	4.00
छाया	5.00

प्रो० ना० सी० फड़के

प्रवासी	4.00
स्वप्नों के सेतु	7.00

उपन्यास

आर० के० नारायण	
गाइड	6.00
मुल्कराज आनन्द	
सूरजमुखी	
वापसी	8.00
*सात समुन्दर पार	3.00
सात साल	5.00
गांव	6.50
ख्वाजा अहमद अब्बास	
तीन पहिये	5.00
कर्तारसिंह दुग्गल	
हाल मुरीदों का	
कृश्न चन्दर	
चम्बल की चमेली	6.00
तूफान की कलियां	8.00
कार्निवाल	4.00
मेरी यादों के चिनार	5.00
आधा रास्ता	5.00
दादर पुल के बच्चे	3.50
उलटा वृक्ष	3.00
पराजय	6.00
एक गधे की आत्मकथा	5.00
एक गधे की वापसी	4.00
एक गधा नेफा में	5.00
दूसरा पुरुष दूसरी नारी	5.00
सितारों से आगे	3.00
चांदी का घाव	6.00
बोरबन क्लब	5.00
आंख की चोरी	5.00
प्यार एक खुशबू है	5.00
*जब खेत जागे	3.00
अमृता प्रीतम	
आक के पत्ते	4.00
जलावतन	6.00
जेबकतरे	4.00
एक थी अनीता	5.00
नागमणि	4.00
दिल्ली की गलियां	5.00
*पिंजर	3.00
*पांच बरस लम्बी सड़क	3.00
शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय	
*काशीनाथ	3.00
*दोराहा	3.00
*शुभदा	2.00
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	
*कृष्णकान्त का वसीयतनामा	2.00
सत्यकाम विद्यालंकार	
*मुक्ता	2.00
यज्ञदत्त	
*कुमुद	2.00
ए० हमीद	
*मैं फिर आऊंगी	3.00
*पतझड़ के बाद	3.00
*तूफान की रात	3.00
*फूल उदास हैं	3.00
मार्क ट्वेन	
बहती धारा	10.00
यादों की घाटियां	15.00
जॉर्ज आर्वेल	
उन्नीस सौ चौरासी	3.00
नैथेनियल हॉथार्न	
कलंक	8.00
हवेली	10.00
अर्नेस्ट हेमिंग्वे	
पुल	15.00
फॉकनर	
भालू	2.00
उचक्के	10.00

उपन्यास

हेनरी जेम्स

हृदय के बंधन	15.00
एक औरत का चेहरा	15.00

विला कैथर

प्रेमिका	8.00

जॉन स्टेनबैक

अनाम यात्री	10.00
*एक मछुआ एक मोती	2.00

जैक लंडन

जंगल की पुकार	10.00

सिंक्लेयर लेविस

अपराजित	15.00

एफ० स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड

लालसा	8.00

इवो आंद्रिच, अनु० 'अज्ञेय'

अनीका का ज़माना	8.00

लुइसा एम० अल्काट

चार बहनें	8.00

कहानी

बाहर-भीतर	आचार्य चतुरसेन	6.00
दुखवा मैं कासे कहूं	,,	6.00
धरती और आसमान	,,	6.00
सोया हुआ शहर	,,	6.00
कहानी खत्म हो गई	,,	6.00
सिकन्दर हार गया	अमृतलाल नागर	6.00
ये तेरे प्रतिरूप	अज्ञेय	4.00
किनारे से किनारे तक	राजेन्द्र यादव	6.00
छोटे-छोटे ताजमहल	,,	6.00
गहरे अंधेरे में	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	4.00
खुले आसमान के नीचे एक रात	,,	6.00
ज़िंदा मुर्दे	कमलेश्वर	3.00
क्वार्टर तथा अन्य कहानियां	मोहन राकेश	8.00
पहचान तथा अन्य कहानियां	,,	8.00
वारिस तथा अन्य कहानियां	,,	8.00
एक और ज़िन्दगी	,,	5.00
मोहन राकेश : श्रेष्ठ कहानियां	,,	5.00
लाजवन्ती	द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'	3.50
महान् प्रेमी और उनकी प्रेमिकाएं	इलाचन्द्र जोशी	4.50
धरती अब भी घूम रही है	विष्णु प्रभाकर	5.00
ललक	कुलभूषण	4.00
हंसने वाली बात, रोने वाली बात	करतारसिंह दुग्गल	4.00

कहानी

तलाश	राजेन्द्र अवस्थी	3.50
कहानी-कुंज	सं० अरुणप्रभा	3.00
भारतीय प्रणय-कहानियां	सं० शरद देवड़ा	8.00
रवीन्द्र द्वादशी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	3.00
रवीन्द्र-कथा	,,	2.50
यथार्थ और कल्पना	सं० विराज, एम० ए०	4.50
बंद कली की मंज़िल	कृश्न चन्दर	10.00
स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	,,	5.00
काला सूरज	,,	3.50
पूरे चांद की रात	,,	4.00
अन्नदाता	,,	4.00
मिट्टी के सनम	,,	3.00
कश्मीर की कहानियां	,,	5.00
दिल, दौलत और दुनिया	,,	3.00
आधे घंटे का खुदा	,,	5.00
सरगम	,,	2.00
कश्मीरी की कहानियां	शिवन कृष्ण रैना	
पंजाबी की श्रेष्ठ कहानियां	संकलन : विजय चौहान	5.00
अमरीका की श्रेष्ठ कहानियां	अनु० बालकृष्ण	5.00
रहस्यपूर्ण कहानियां	एडगर एलेन पो	6.00

हास्य-व्यंग्य

भारतपुत्र नौरंगीलाल	अमृतलाल नागर	6.00
हम फिदाए लखनऊ	,,	
अपनी-अपनी बीमारी	हरिशंकर परसाई	5.00
तिलस्म	शरद जोशी	6.00
जुही के फूल	डा० रामकुमार वर्मा	3.50

शिकार एवं वन्य जीवन

हाथियों का खेदा	विराज	5.00
जंगल के रहस्य	विराज	1.50

मेरी प्रिय कहानियां

इस पुस्तकमाला में क्रमशः सभी प्रमुख कहानीकार प्रकाशित किए जा रहे हैं और कहानियों का चुनाव भी उन्होंने स्वयं ही किया है। इसके अतिरिक्त शैली, कथ्य आदि पर प्रकाश डालने की दृष्टि से प्रत्येक में उनकी भूमिकाएं भी हैं जिनसे इन पुस्तकों का महत्व और भी बढ़ जाता है। समसामयिक कहानी साहित्य और प्रमुख कहानीकारों को इस प्रकार समग्र रूप से जानने में यह पुस्तकमाला बहुत ही उपयोगी है। इस माला में अब तक निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :

मेरी प्रिय कहानियां	आचार्य चतुरसेन	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	रांगेय राघव	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृतलाल नागर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृतराय	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	यशपाल	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	इलाचन्द्र जोशी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	विष्णु प्रभाकर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	मोहन राकेश	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	बलवंतसिंह	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	कृश्न चन्दर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	निर्मल वर्मा	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	अमृता प्रीतम	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	राजेन्द्र यादव	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	मन्नू भंडारी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	कमलेश्वर	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	शैलेश मटियानी	5.00
मेरी प्रिय कहानियां	महीपसिंह	5.00

नाटक : एकांकी

पृथ्वी का स्वर्ग	डा० रामकुमार वर्मा	4.00
सारंग-स्वर	,,	5.00
जुही के फूल (एकांकी-संग्रह)	,,	3.50
अग्नि-शिखा	,,	4.00
जय बाङ्ला	,,	3.00
करफ्यू	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	5.00
युगे-युगे क्रांति	विष्णु प्रभाकर	4.00
डाक्टर	,,	3.00
रक्तदान	हरिकृष्ण प्रेमी	5.00
ममता	,,	3.00
कीर्ति-स्तम्भ	,,	3.50
आषाढ का एक दिन (विशिष्ट संस्करण)	मोहन राकेश	6.00
न्याय की रात	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	3.50
रेवा	,,	3.00
अशोक	,,	4.00
शिव-धनुष	डा० चन्द्रशेखर	2.00
कलापूर्ण एकांकी	सं० डा० दशरथ ओझा	5.00
अभिनव एकांकी	सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ	3.00
नये एकांकी	सं० अज्ञेय	3.50
श्रेष्ठ एकांकी	सं० कृष्ण विकल	2.50
कांच के खिलौने (नाटक-संग्रह)	अनु० अमिताभ	5.00
प्रकृति का प्रतिशोध	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	2.50
बांसुरी	,,	2.50
अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	3.00
कुमारसंभव	,,	3.50
स्वप्नवासवदत्ता	महाकवि भास	4.00
मृच्छकटिक	शूद्रक	4.00
मुद्राराक्षस	सामंत विशाखदत्त	2.50

शेक्सपियर के नाटक

ओथेलो (Othello)	(अनु० डा० रांगेय राघव)	2.50
मैकबेथ (Macbeth)	,,	2.50
निष्फल प्रेम (Love's Labour's Lost)	,,	2.50
भूल-भुलैयां (Comedy of Errors)	,,	2.50

शेक्सपियर के नाटक

बारहवीं रात (Twelfth Night)	(अनु० डा० रांगेय राघव)	2.50
जैसा तुम चाहो (As You Like It)	,,	2.50
जूलियस सीज़र (Julius Caesar)	,,	2.50
रोमियो जूलियट (Romeo Juliet)	,,	2.50
वेनिस का सौदागर (Merchant of Venice)	,,	2.50

आत्मकथा : संस्मरण : जीवन-चरित्र

यादों की बरात	जोश मलीहाबादी	10.00
क्या भूलूं क्या याद करूं (भाग—1)	बच्चन	10.00
नीड़ का निर्माण फिर (भाग—2)	,,	12.00
प्रवास की डायरी	,,	16.00
पंत के सौ पत्र : बच्चन के नाम	सं० बच्चन	4.00
बच्चन के पत्र : निरंकारदेव सेवक के नाम	,,	4.00
गंगा की पुकार	सोमदत्त बखोरी (मारिशस)	4.00
मेरा जीवन-संघर्ष	वेद मेहता	4.00
याद रही मुलाकातें	अक्षयकुमार जैन	5.00
जिनके साथ जिया	अमृतलाल नागर	5.00
रूसी सफरनामा	बलराज साहनी	7.50
पाकिस्तानी जेलों में तीन वर्ष	त्रिलोकचन्द्र	6.00
भारतीय सेना की कहानी	गौतम शर्मा	
अपना देश : पड़ोसी देश	नन्दलाल वानप्रस्थी	3.50
अभिनेत्री की आपबीती	हंसा वाडकर	5.00
भारत की अग्रणी महिलाएं	आशारानी व्होरा	7.00
नोबेल पुरस्कार विजेता महिलाएं	आशारानी व्होरा	
सरदार पटेल	सेठ गोविन्ददास	4.00
देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद	,,	2.50
लालबहादुर शास्त्री	महावीर अधिकारी	3.00
कोलम्बस	,,	2.50
राष्ट्रपति राधाकृष्णन्	अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार	5.00
नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार	ठाकुर राजबहादुरसिंह	9.00
सिख धर्म के दस गुरु	बी० एस० गुजराती	4.00
हमारे वीर सेनानी	सुदर्शन चोपड़ा	5.00
भारत के वीर सपूत	सावित्रीदेवी वर्मा	5.00
लाला हरदयाल	धर्मवीर	12.00
महाराजा रणजीतसिंह	कुलदीप बग्गा	3.00

आत्मकथा : संस्मरण : जीवन-चरित्र

विश्व के महान् वैज्ञानिक	फिलिप केन	12.00
आज की वैज्ञानिक महिलाएं	एडना योस्ट	5.00
महामानव	डा० मान्धाता ओझा	4.00
भारत के प्रसिद्ध खिलाड़ी	योगराज थानी	4.00
विश्व के महान् शिक्षाशास्त्री	जयजयराम शावय	6.00
*साबरमती का संत	यशपाल जैन	3.00
शिवाजी	भीमसेन विद्यालंकार	3.00
वीर वैरागी	भाई परमानन्द	2.50
जीवन-रश्मि	सत्यकाम विद्यालंकार	2.50

बच्चन की रचनाएं

अभिनव सोपान	15.00	सतरंगिनी	4.00
उभरते प्रतिमानों के रूप	8.00	मधुबाला	4.00
कटती प्रतिमाओं की आवाज	8.00	मधुशाला	4.00
दो चट्टानें	8.00	जन गीता	4.00
जाल समेटा	6.00	भाषा अपनी भाव पराये	4.00
बहुत दिन बीते	6.00	मिलन यामिनी	4.00
नागर गीता	6.00	खैयाम की मधुशाला	3.00
मरकत द्वीप का स्वर	5.00	मधुकलश	3.00
आरती और अंगारे	5.00	निशा-निमंत्रण	4.00
चौंसठ रूसी कविताएं	5.00	आकुल अंतर	3.00
किंग लियर	6.00	धार के इधर-उधर	3.00
हैमलेट	5.00	सूत की माला	3.00
ओथेलो	4.00	प्रणय-पत्रिका	3.00
चार खेमे चौंसठ खूंटे	4.00	एकांत संगीत	2.50
त्रिभंगिमा	4.00	बंगाल का काल	2.00

कविता

जय भारत जय	सोहनलाल द्विवेदी	12.00
पतझर : एक भावक्रान्ति	सुमित्रानंदन पंत	15.00
चित्रांगदा	,,	12.00
हरी बांसुरी, सुनहरी टेर	,,	3.00
पूर्वा	अज्ञेय	10.00
सागर-मुद्रा	,,	7.00
गीतांजलि	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	6.00

कविता

महादेवी के श्रेष्ठ गीत	सं० गंगाप्रसाद पाण्डेय	7.50
गीति सप्तक	सं० डा० राकेश गुप्त, डा० चतुर्वेदी	5.00
दो टूक	बालकवि बैरागी	6.00
'अ' से असभ्यता	दिनकर सोनवलकर	4.00
इति	दिनेशनंदिनी	5.00
उत्तरायण (महाकाव्य)	डा० रामकुमार वर्मा	8.00
कुटिया का राजपुरुष (खंडकाव्य)	'बटुक'	3.50
गीत भी, अगीत भी	नीरज	1.50
प्यास मेरी कल्पना की	कृष्ण मोहन	6.00
प्यास बढ़ती ही गई	रामनिवास जाजू	5.00
घटनाओं के मध्य में	,,	6.00
केशव-सुधा	डा० विजयपालसिंह	10.00

उर्दू शायर : जीवनी और संकलन

गालिब	सं० प्रकाश पंडित	2.50
मोमिन	,,	2.50
जोश मलीहाबादी	,,	2.50
मजाज़	,,	2.50
मजरूह सुल्तानपुरी	,,	2.50
फैज़ अहमद फैज़	,,	2.50
साहिर लुधियानवी	,,	2.50
अख्तर शीरानी	,,	2.50
अकबर इलाहाबादी	,,	2.50
जगन्नाथ 'आजाद'	,,	2.50
'अर्श' मल्सियानी	,,	2.50
शकील बदायूनी	,,	2.50
फिराक गोरखपुरी	,,	2.50

उर्दू शायरी

उर्दू गुलिस्तां की बुलबुलें	सं० श्रीरामनाथ सुमन	4.00
*उर्दू गज़ल के नये रंग	प्रकाश पण्डित	3.00
*शकील की गज़लें	,,	2.00
*जफर की शायरी	,,	2.00
*उर्दू की बेहतरीन नज़्में	,,	2.00

जीवनोपयोगी

आत्म-विकास	आनन्द कुमार	7.00
मनुष्य का विराट् रूप	,,	6.00
साधना	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	3.00
बिन मांगे मोती मिले	श्रीमन्नारायण	4.00
मानसिक शक्ति के चमत्कार	सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
चरित्र-निर्माण	,,	5.00
सफलता के सूत्र	,,	4.00
सफल जीवन	,,	3.00
पंचतंत्र	आचार्य विष्णुशर्मा	4.00
हितोपदेश	श्री नारायण पंडित	3.50
आत्मबल से जो चाहो बनो	हिमांशु श्रीवास्तव	

संस्कृत के अमर ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद

इस पुस्तकमाला में हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा संस्कृत साहित्य की अनमोल कृतियों के रूपान्तर सरल हिन्दी में प्रस्तुत किए गए हैं। संस्कृत साहित्य में रुचि रखनेवाले पाठकों के लिए उपयोगी पुस्तकें।

वाल्मीकि रामायण	महर्षि वाल्मीकि	5.00
कौटिल्य अर्थशास्त्र	आचार्य चाणक्य	4.50
स्वप्नवासवदत्ता	महाकवि भास	4.00
मृच्छकटिक	राजा शूद्रक	4.00
दशकुमारचरित	महाकवि दण्डी	3.75
हितोपदेश	श्री नारायण पंडित	4.00
पंचतंत्र	आचार्य विष्णु शर्मा	3.50
कादम्बरी	आचार्य बाणभट्ट	3.50
रघुवंश	महाकवि कालिदास	3.50
कुमारसंभव	,,	3.50
अभिज्ञानशाकुन्तल	,,	3.00
मुद्राराक्षस	सामन्त विशाखदत्त	2.50

उद्योग : खनिज : व्यापार

रत्नगर्भा भारत भूमि	भगवानसिंह	5.00
भारतीय चाय	,,	3.75

'आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि' पुस्तकमाला

इन पुस्तकों में समसामयिक हिन्दी के मूर्धन्य कवियों की कविताएं ली गई हैं। वे कविताएं, जिन्होंने राष्ट्र के उन्मेष में सहयोग दिया है, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन में योगदान दिया है और जो काल की परिधि को लांघकर तात्कालिकता से ऊपर उठकर और ज्यादा निखर-संवरकर अमिट हो गई हैं। इन पुस्तकों को प्रमुखत: दो अंशों में बांटा गया है। प्रथम अंश में कवि के आत्मीय मित्र लेखक द्वारा कवि का रोचक और अंतरंग परिचय दिया गया है और प्रसंगवश संकलन में आई कविताओं के कवि के जीवन के साथ संदर्भ का उल्लेख किया गया है, जिससे उक्त कविताओं का आशय और बड़े परिप्रेक्ष्य में पाठक ग्रहण कर सकें। दूसरे अंश में कवि की चुनी हुई कविताएं विद्वान संपादक द्वारा संगृहीत की गई हैं और चयन में कवि की सम्मति को भी प्रश्रय दिया गया है। हिन्दी काव्य की चुनी हुई ये रचनाएं इन संकलनों में इस रूप में एक साथ मिल जाती हैं कि इससे हिन्दी काव्य का समसामयिक रूप हम स्पष्टता से हृदयंगम कर सकते हैं।

महादेवी वर्मा	सं० गंगाप्रसाद पांडेय	4.00
अज्ञेय	,, विद्यानिवास मिश्र	4.00
सुमित्रानंदन पंत	,, बच्चन	4.00
बच्चन	,, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	4.00
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	,, भवानीप्रसाद मिश्र	4-00
रामधारीसिंह 'दिनकर'	,, मन्मथनाथ गुप्त	4.00
नीरज	,, क्षेमचन्द्र 'सुमन'	4.00
भगवतीचरण वर्मा	,, अमृतलाल नागर	4.00
माखनलाल चतुर्वेदी	,, हरिकृष्ण 'प्रेमी'	4.00
शिवमंगलसिंह 'सुमन'	,, आनन्दप्रकाश दीक्षित	4.00
गिरिजाकुमार माथुर	,, डा० नगेन्द्र	4.00

विवाहित जीवन : परिवार-नियोजन

इन पुस्तकों में पारिवारिक सुख-समृद्धि बढ़ाने के लिए बहुत ही उपयोगी और आवश्यक सुझाव सरल भाषा में दिए गए हैं। जैसा कि पुस्तकों के नामों से स्पष्ट है—इनमें पति-पत्नी संबंध को मधुर बनाने, एक-दूसरे को समझने, परिवार का भविष्य बनाने के लिए परिवार-नियोजन, स्वास्थ्य, सफाई, बच्चों के पालन-पोषण की अच्छी विधियां, शिक्षा—आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तकें बहुत ही उपयोगी और हर परिवार में रखने योग्य हैं।

सरल परिवार-नियोजन	: डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	8.00
जीवन-साथी	: सत्यकाम विद्यालंकार	6.00
आदर्श पत्नी	: सन्तराम, बी० ए०	4.00
शिशु-पालन	: डा० युद्धवीरसिंह	3.50
परिवार-चिकित्सा	: ,,	4.50
जहां सुमति तहं संपति नाना	: व्रजभूषण	1.50
मनोरथ	: ,,	1.50
नई राह पर	: शांति भट्टाचार्य	1.50

स्वास्थ्य : चिकित्सा

इन पुस्तकों में दैनिक जीवन में काम आने वाली स्वास्थ्य-संबंधी हिदायतें—खान-पान, रहन-सहन, सफाई, कसरत आदि के साथ मनुष्य-शरीर के बाहरी और भीतरी अंगों और उनमें लगनेवाली बीमारियों तथा उनके लक्षण और पहचान के साथ उनके इलाज की विधियां बताई गई हैं।

मानव-शरीर : संरचना और कार्य	: डा० एलबर्ट टोके	12.00
नीरोग जीवन	: आचार्य चतुरसेन	2.00
स्वास्थ्य-रक्षा	: ,,	2.00
आदर्श भोजन	: ,,	1.50
हमारा शरीर	: ,,	1.00
योग के आसन	: श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	3.00

'देश और निवासी' पुस्तकमाला

'देश और निवासी' माला की ये पुस्तकें न भूगोल हैं, न इतिहास—ये इन देशों के निवासियों, उनके जीवन, आशा-आकांक्षाओं तथा उन्नति-अवनति के मनोहारी सचित्र विवरण हैं। कनुष्य कहां, किस तरह रह और कैसे जी रहा है, इसका ज्ञान हम सबके लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है—विशेष रूप से उन किशोरों के लिए जो विलक्षण रूप से उन्नत संसार में जीवन बिताएंगे और उसका संचालन करेंगे। जानकारी से भरपूर ये पुस्तकें परिवार के सभी सदस्यों के लिए समान रूप से उपयोगी और स्कूलों तथा पुस्तकालयों में रखने योग्य हैं। इस पुस्तकमाला में अब तक निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :

इंडोनेशिया	: **जितेन्द्रकुमार मित्तल**	3.00
अफ्रीका	: ,,	3.00
मारिशस	: ,,	3.00
थाईलैंड	: ,,	3.00
मिस्र	: **आनन्द जैन**	3.00
बर्मा	: ,,	3.00
इसराइल	: ,,	3.00
इटली	: ,,	3.00
जर्मनी	: ,,	3.00
भूटान	: **कमला सांकृत्यायन**	3.00
सिक्किम	: ,,	3.00
रूस	: **जगदीशचन्द्र जैन**	3.00
अमेरिका	: **प्राणनाथ सेठ**	3.00
ब्रिटेन	: **ब्रजकिशोर नारायण**	3.00
जापान	: **हरिदत्त शर्मा**	3.00
श्रीलंका	: **भदन्त आनन्द कौसल्यायन**	3.00
नेपाल	: **विराज, एम० ए०**	3.00
अफगानिस्तान	: **जमनादास अख्तर**	3.00
पाकिस्तान	: **हंसराज रहबर**	3.00
चीन	: ,,	3.00
फ्रांस	: **ओमप्रकाश पालीवाल**	3.00
चेकोस्लोवाकिया	: ,,	3.00
कनाडा	: **त्रिलोक दीप**	3.00
बंगला देश	: **विनोद गुप्त**	3.00
आस्ट्रेलिया	: **दलजीत बग्गा**	3.00

'भारत-दर्शन' पुस्तकमाला

'भारत-दर्शन' माला की हिन्दी में पहली बार प्रकाशित ये सुन्दर, सचित्र पुस्तकें भारत के राज्यों का सरल भाषा और रोचक शैली में परिचय कराती हैं। इन्हें प्रत्येक राज्य के जाने-माने लेखकों द्वारा लिखा गया है और विशेषज्ञों द्वारा सम्पादित और संशोधित किया गया है। इनमें अनेकता में एकता की भारतीय विशेषता को दर्शाते हुए राज्यों की अपनी संस्कृति, जन-जीवन, साहित्य और कलाओं पर प्रकाश डाला गया है। अनेक चित्रों तथा बहुरंगे आवरण से सज्जित ये पुस्तकें हर घर और पुस्तकालय की शोभा हैं।

मणिपुर : त्रिपुरा	: डा० कमला सांकृत्यायन	3.00
अरुणाचल मिजोरम	: ,,	3.00
भारत के द्वीप	: योगराज थानी	3.00
हरियाणा	: ,,	3.00
गोआ : पाण्डिचेरी	: योगराज थानी, हरिमोहन शर्मा	3.00
महाराष्ट्र	: हरिमोहन शर्मा	3.00
तमिलनाडु	: बालशौरि रेड्डी	3.00
आंध्र प्रदेश	: 'आरिगपूडि'	3.00
गुजरात	: पीताम्बर पटेल, नागर	3.00
बंगाल	: हंसकुमार तिवारी	3.00
हिमाचल प्रदेश	: विराज, एम० ए०	3.00
कश्मीर	: जीवनलाल 'प्रेम'	3.00
मध्य प्रदेश	: राजेन्द्र अवस्थी	3.00
मैसूर	: बालशौरि रेड्डी	3.00
राजस्थान	: यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	3.00
पंजाब	: सुदर्शन चोपड़ा	3.00
बिहार	: सत्यदेव नारायण सिन्हा	3.00
नागालैंड	: जयन्त वाचस्पति	3.00
केरल	: के० जी० बालकृष्ण पिल्लै	3.00
लद्दाख	: त्रिलोक 'दीप'	3.00
उत्तर प्रदेश	: हरिदत्त शर्मा	3.00
मेघालय	: वीणा श्रीवास्तव	3.00
दिल्ली	: रमेश बक्षी	3.00
असम	: जयन्त वाचस्पति	3.00

'स्वदेश-परिचय' माला

इन पुस्तकों में देश के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव पर प्रकाश डाला गया है। भारत की महिमा पुराने समय में किन-किन कारणों से थी, उसके आधार क्या थे, यह सब कुछ इस पुस्तक में पढ़ने को मिलता है। सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता और हिन्दी के विशिष्ट लेखक डा० भगवतशरण उपाध्याय ने अपनी पुस्तकों में बहुत ही सरल और रोचक भाषा में इतिहास और संस्कृति के इन विषयों को प्रस्तुत किया है, जो कि हिन्दी में अपने ढंग का पहला प्रयास माना गया है। पुस्तकमाला की अन्य पुस्तक भी अपने विषय के विशेषज्ञ द्वारा लिखी गई है। सभी पुस्तकों में विषयानुसार चित्र दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें भारत सरकार तथा अन्य प्रादेशिक सरकारों से पुरस्कृत हैं।

भारत की कहानी	:	**डा० भगवतशरण उपाध्याय**	2.00
भारतीय संस्कृति की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय चित्रकला की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय मूर्तिकला की कहानी	:	,	2.00
भारतीय नगरों की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय संगीत की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय भवनों की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय साहित्यों की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय नदियों की कहानी	:	,,	2.00
भारतीय संस्कृति के विस्तार			2.00
की कहानी	:	,,	2.00
कितना सुन्दर देश हमारा	:	,,	2.00
भारतीय स्वाधीनता की कहानी	:	**प्रो० राधाकृष्ण**	2.00

ज्ञान-विज्ञान

ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी	अनु० रमेशचन्द्र वर्मा	2.50
पुस्तक की कहानी	एम० इलिन	2.50
बिजली की कहानी	आर्नल्ड मैण्डेल बॉम	2.50
प्रसिद्ध आविष्कारक : आविष्कार	फ्लैचर प्रैट	2.50
उड़ान की कहानी	राबर्ट डी० लूमिस	2.50
चिकित्सा के आविष्कारों की कहानी	डेविड डीट्ज़	2.50
अन्तरिक्ष में उड़ान की कहानी	हैरल्ड एल० गुडविन	2.50
रोमांचकारी वैज्ञानिक यात्राएं	रेमण्ड होल्डेन	2.50
मशीन युग की कहानी	रोजर बर्लिंगेम	2.50
घड़ी की कहानी	एम० इलिन	2.50
राकेट की कहानी	विली ले	2.50
टेलीफोन की कहानी	कैथेराइन बी० शिप्पेन	2.50
समुद्र की कहानी	फर्डीनेण्ड सी० लेन	2.50
एटम की कहानी	ईरा एम० फ्रीमैन	2.50
रसायन की कहानी	,,	2.50
वायुयान की कहानी	अनु० धर्मपाल शास्त्री	2.50
उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों की कहानी	रसेल ऑवन	2.50
मौसम की कहानी	ईवान रे टान्नेहिल	2.50
सितारों की कहानी	अनु० केशव सागर	2.50
सागर तल की खोज	रूथ ब्रिण्ड्ज़	2.50
प्रसिद्ध आविष्कारों की कहानी	अनु० सुखदेव प्रसाद बरनवाल	2.50
आग : हमारी मित्र व शत्रु	रमेश वर्मा	2.50
रेडार	गोपीनाथ श्रीवास्तव	2.50
कम्प्यूटर	रमेश वर्मा	3.00
ब्रह्माण्ड-यात्रा शुरू हो गई	रामस्वरूप चतुर्वेदी	3.00
प्रकाश की कहानी	त्रिलोकचन्द्र गोयल	3.00
जीवन की कहानी	इर्विंग एडलर	4.00
सूर्य की कहानी	कुलदीप चोपड़ा	4.00

'क्यों और कैसे' विज्ञानमाला

विज्ञान के इस युग में आप नई-नई वैज्ञानिक बातों की जानकारी चाहते हैं। साथ ही पुराने इतिहास के धुंधले पृष्ठों को भी समझना चाहते हैं। प्रकृति के विचित्र रहस्यों की जानकारी कौन नहीं चाहता! 'क्यों और कैसे' पुस्तकमाला इसीकी पूर्ति करती है। कठिन विषयों को अनेक रंगीन और आकर्षक चित्रों की सहायता से इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बच्चे भी इसे आसानी से समझ लें। ये सभी पुस्तकें पाठकों के लिए बड़ी उपयोगी हैं। वैज्ञानिक विषयों पर सरल, सुन्दर और रंगीन चित्रों से भरपूर ये पुस्तकें प्रत्येक स्कूल की लाइब्रेरी के लिए उपयोगी हैं।

सितारे (Stars)	4.00
हवाई जहाज़ (Flight)	4.00
मौसम (Weather)	4.00
हमारा शरीर (The Human Body)	4.00
बिजली (Electricity)	4.00
साहसपूर्ण यात्राएं (Explorations & Discoveries)	4.00
मशीनें (Machines)	4.00
विज्ञान की बातें (Beginning Science)	4.00
हमारी पृथ्वी (Our Earth)	4.00
रॉकेट (Rockets & Missiles)	4.00
विज्ञान के खेल (Science Experiments)	4.00
कीड़े-पतंगे (Insects)	4.00
आदमी की कहानी (Primitive Man)	4.00
परमाणु शक्ति (Atomic Energy)	4.00
माइक्रोस्कोप (Microscope)	4.00
रसायन-विज्ञान (Chemistry)	4.00
गणित की कहानी (Mathematics)	4.00

सरल विज्ञानमाला

यह विज्ञान का युग है। सभी क्षेत्रों में नई-नई जानकारियों तथा ग्राविष्कारों के कारण जीवन बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। इन सब विषयों का ज्ञान ग्राज सभी के लिए ग्रावश्यक है। बड़े ग्राकार में ग्राफसेट पर छपी ये ग्रादि से ग्रन्त तक सचित्र पुस्तकें इस ग्रावश्यकता की पूर्ति करती हैं। इन्हें प्रत्येक विषय के ग्रधिकारी विद्वानों ने लिखा ग्रौर सम्पादित किया हैं। ये बालकों तथा सामान्य पाठकों, सभी के लिए समान रूप से लाभदायक हैं।

समय (Time)	4.00
चुम्बक (Magnet & Magnetism)	4.00
चन्द्रमा (The Moon)	4.00
वायु ग्रौर जल (Air & Water)	4.00
ध्वनि (Sound)	4.00
प्रकाश ग्रौर रंग (Light & Colour)	4.00
मरुस्थल (Deserts)	4.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक (Famous Scientists)	4.00
ध्रुव प्रदेश (Polar Regions)	4.00
समुद्र-विज्ञान (Oceanography)	4.00
बुनियादी ग्राविष्कार (Basic Inventions)	4.00
कम्प्यूटर (Robots & Electronic Brains)	4.00

सुगम विज्ञान

सरल भाषा में ग्रनेक चित्रों सहित

हमारा पड़ोसी चांद	रमेश वर्मा	2.00
हवा की बातें	केशव सागर	2.00
ग्रावाज	,,	2.00
ग्राग की कहानी	,,	2.00
पानी	,,	2.00

'आविष्कार और आविष्कारक' माला

विख्यात वैज्ञानिकों और आविष्कारों के जीवन तथा उनके महान् आविष्कारों के बारे में एक सरल कहानी के रूप में सीधे-सादे और अत्यन्त रोचक ढंग से लिखी गई और अनेक आकर्षक चित्रों से भरपूर ये बहुरंगी पुस्तकें हिन्दी में अपने ढंग की पहली और अनूठी हैं।

यशस्वी लेखकों द्वारा लिखित और प्रसिद्ध चित्रकारों द्वारा चित्रित इन पुस्तकों से आविष्कारकों और खोज-कर्त्ताओं के जीवन, उनकी महान् वैज्ञानिक खोज और विज्ञान-जगत् में उनके महत्त्व की जानकारी प्राप्त होती है।

बालकों के मन में कौतूहल, जिज्ञासा एवं कुछ बनने की प्रेरणा देने वाली ये पुस्तकें प्रत्येक घर में रहनी चाहिए। इन्हें पढ़कर बालकों में अभूतपूर्व साहस एवं नाना प्रकार के प्रयोग करने की इच्छा का जागरण होगा जो उनकी ज्ञानवृद्धि में भली प्रकार सहायक होगा। संसार के महान् वैज्ञानिकों की जीवनी तथा महापुरुषों के जीवन-आख्यान पढ़ने की ओर भी उनकी रुचि बढ़ेगी।

हवाई जहाज़ के आविष्कारक राइट बन्धुओं की कहानी	: श्रीकांत व्यास	2.50
नई दुनिया की खोज : कोलम्बस की कहानी	,,	2.50
महान् वैज्ञानिक बैंजामिन फ्रैंकलिन	,,	2.50
टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल की कहानी	,,	2.50
ग्रामोफोन और चलचित्र के आविष्कारक एडीसन की कहानी	,,	2.50
परमाणु शक्ति के आविष्कारक फेर्मी की कहानी	,,	2.50
प्रसिद्ध वैज्ञानिक एल्बर्ट आइन्स्टाइन की कहानी	: बालकृष्ण	2.50
टेलीग्राफ के आविष्कारक फिनले मोर्स की कहानी	: कांतिमोहन	2.50

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)	: जोनाथन स्विफ्ट	2.00
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)	: डेनियल डिफो	2.00
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)	: आर० एल० स्टीवेन्सन	2.00
चांदी का बटन (Kidnapped)	: ,,	2.00
कठपुतला (Pinnochio)	: कार्लो कोलोदी	2.00
वीर सिपाही (Ivanhoe)	: सर वाल्टर स्कॉट	2.00
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)	: ,,	2.00
तीसमारखां (Don Quixote)	: माइगेल द सरवांते	2.00
तीन तिलंगे (Three Musketeers)	: अलेक्ज़ेण्डर ड्यूमा	2.00
काला फूल (Black Tulip)	: ,,	2.00
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)	: ,,	2.00
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)	: चार्ल्स डिकेन्स	2.00
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)	: एण्डरसन	2.00
रॉबिनहुड (Robinhood)	रूपांतरकार : श्रीकांत व्यास	2.00
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)	: ,, ,,	2.00
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)	: जुले वर्न	2.00
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues under the Sea)	: ,,	2.00
जादूनगरी (Alice in Wonderland)	: लेविस कैरोल	2.00
मूंगे का द्वीप (Coral Island)	: आर० एम० बेलेण्टाइन	2.00
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)	: मार्क ट्वेन	2.00
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)	: ग्रिम बन्धु	2.00
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)	: रूपा० श्रीकांत व्यास	2.00
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)	: जहूरबख्श	2.00

लोक-कथाएं

लोक-कथाएं हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्रस्तुत लोक-कथा-माला में शिक्षाप्रद कथाएं सरल और रोचक भाषा में दी गई हैं, जो स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करती हैं। मोटा मोनो टाइप, बढ़िया कागज़, कलात्मक मुद्रण, आकर्षक बहुरंगा कवर। किशोरों और वयस्कों के लिए ये पुस्तकें समान रूप से उपयोगी हैं।

शिक्षाप्रद कथाएं	आनन्द कुमार	2.00
जातक कथाएं	,,	2.00
नीति कथाएं	,,	2.00
मनोरंजक कथाएं	,,	2.00
भारतीय कथाएं	,,	2.00
सदाचार की कथाएं	,,	2.00
महापुरुषों की कथाएं	,,	2.00
अमर कथाए	,,	2.00
लोक-कथाएं	,,	2.00
आदर्श कथाएं	,,	2.00

'सचित्र लोक-कथा' माला

लोक-कथाएं किसी देश के जाति-समाज की सम्पत्ति होती हैं। विविधताओं से पूर्ण भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में लोक-कथाओं का अटूट खज़ाना भरा पड़ा है। अक्सर पुस्तक रूप में न छपने के कारण इन लोक-कथाओं से हम अपरिचित ही रहते हैं। 'सचित्र लोक-कथा' माला में इस अभाव को दूर करने का प्रथम प्रयत्न किया जा रहा है। इस माला की पुस्तकों में विभिन्न प्रदेशों की चुनी हुई रोचक लोक-कथाएं कलात्मक दोरंगे चित्रों के साथ छापी जा रही हैं। निम्नलिखित पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं :

बंगाल की लोक-कथाएं	: **हंसकुमार तिवारी**
कश्मीर की लोक-कथाएं	: **जीवनलाल 'प्रेम'**
राजस्थान की लोक-कथाएं	: **शांति भट्टाचार्य**
पंजाब की लोक-कथाएं	: **विजय चौहान**
गुजरात की लोक-कथाएं	: **मनहर चौहान**

प्रेरणाप्रद रोचक जीवनियां

सत्यकाम विद्यालंकार

हमारे राष्ट्र-निर्माता	2.00
महात्मा गांधी	1.00
सरदार पटेल	1.00
शिवाजी	1.00

मनोहर जुनेजा

डा० ज़ाकिर हुसैन	2.00
भारत के महान् इंजीनियर डा० विश्वेश्वरैया	2.00

वीरेन्द्रकुमार गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास	1.50
महाकवि कालिदास	1.50

प्राणनाथ वानप्रस्थी

सदाचारी बच्चे	1.00
महापुरुषों का बचपन	1.00
वीर पुत्रियां	1.00
आदर्श बालक	1.00
आदर्श देवियां	1.00
सच्ची देवियां	1.00
साहसी बालक	1.00
भारत के महान् ऋषि	1.00
गुरु गोविन्दसिंह	1.00
अच्छे बच्चे	1.00
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	1.00
गुरु नानकदेव	1.00
वीर हनुमान	1.00
सुभाषचन्द्र बोस	1.00
श्रीकृष्ण	1.00
रवीन्द्रनाथ टैगोर	1.00
गौतम बुद्ध	1.00
सम्राट् अशोक	1.00
हरिसिंह नलवा	1.00
विनोबा भावे	1.00
सरदार भगतसिंह	1.00
चन्द्रशेखर आज़ाद	1.00
चाणक्य	1.00

विजय विद्यालंकार

इंदिरा गांधी	2.00
लालबहादुर शास्त्री	1.00
वीर सावरकर	1.00

आचार्य चतुरसेन

बा और बापू	1.25
महापुरुषों की झांकियां	1.50

पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द	1.50

राष्ट्रबन्धु

ये महान् कैसे बने	1.50

आशाराम माहेश्वरी

युग-निर्माता जवाहरलाल नेहरू	1.50

चमूपति, एम० ए०

हमारे स्वामी	1.00

नारायण प्रसाद बिन्दु

श्रीअरविन्द	1.00

प्रो० दीवानचन्द शर्मा

आचार और धर्म	1.25

विश्वनाथ

महापुरुषों के संस्मरण	1.25
गांधीजी से क्या सीखें	1.00
महाराणा प्रताप	1.00
बापू से सीखो	1.00

विनोद

स्वामी रामतीर्थ	1.00
स्वामी विवेकानन्द	1.00
लोकमान्य तिलक	1.00
लाला लाजपतराय	1.00
डा० राजेन्द्रप्रसाद	1.00
जवाहरलाल नेहरू	1.00

प्रकाश पण्डित

सत्य का पुजारी	1.00

सीमा

राजा राममोहन राय	1.00

सचित्र ज्ञानवर्धक कहानियां

धर्मपाल शास्त्री
शेक्सपियर की कहानियां 3.50

जितेन्द्रकुमार
सात महान् आश्चर्यों की कहानी 2.00

सत्यदेव नारायण
जानने की कहानियां 2.00

कृश्न चन्दर
दूर देश की कहानियां 2.50
हमारा घर 2.00

भगवतशरण उपाध्याय
खज़ाने का चोर 1.50
सूरजपंखी चिड़िया 1.50
शीशमहल की राजकुमारी 1.50
शेर बड़ा या मोर 1.50
बुद्धि का चमत्कार 1.50
बिना विचारे जो करे 2.00

'निधिनेह'
नानी की कहानियां 2.00

राहुल सांकृत्यायन
मानव की कहानी 1.50

विराज, एम० ए०
जंगल के रहस्य 1.50

प्राणनाथ वानप्रस्थी
1857 की कहानी 1.50
चित्तौड़गढ़ की कहानी 2.00
सरल महाभारत 1.50

सुदर्शन
पारस 2.00

सत्यकाम विद्यालंकार
सरल रामायण 1.25

विनोद
आविष्कारों की कहानियां 2.50

धर्मपाल शास्त्री
सरल हितोपदेश 1.50
सरल पंचतंत्र 1.00
सिंदबाद की कहानी 1.00

ठाकुर राजबहादुरसिंह
करुणा की कहानियां 1.50

आनन्दकुमार
सूझ-बूझ की कहानियां 1.50
बीरबल की कहानियां 1.00
चोर पकड़ा गया 1.50

प्रकाश पण्डित
निराला जानवर 1.25
चांद का सफर 1.00

जगदीश दीक्षित 'आनन्द'
अलीबाबा और चालीस चोर 1.00

विश्वनाथ
साहस के पुतले 1.50

रोचक जीवनोपयोगी पुस्तकें

प्राणनाथ वानप्रस्थी
सुन्दर कथाएं 1.00
अच्छे बनो 0.75

विश्वनाथ
गुलिवर की कहानी 0.75
रसीली कहानियां 0·75
गांधीजी से क्या सीखें 1.00
बापू से सीखो 0.75

सुदर्शन
फूलों का गुच्छा 0.75

धर्मपाल शास्त्री
हिन्दुस्तान हमारा 2.00
हम एक हैं 1.50
हमारे त्योहार 1.00

प्रो० दीवानचन्द
आचार और धर्म 1.25

आचार्य चतुरसेन
अच्छी आदतें 1.50

मोहम्मद खलीक
आदमी 1.00

प्रकाश पण्डित
चिड़ियाघर 1.00
आओ सरकस देखें 1.00

रामचन्द्र तिवारी
आओ देखें 1.00

केशवसागर
आओ सीखें 1·00
सीखने की बातें 1.00

बहुरंगी सचित्र कविता-संग्रह

भावी रक्षक देश के	: बालकवि बैरागी	1.50
चाचा नेहरू	: विष्णुकांत पाण्डेय	1.50
मां, यह कौन ?	: रामेश्वरदयाल दुबे	1.50
अपना देश	: रामचन्द्र तिवारी	1.50
आओ करें सवारी	: ,,	1.00
मेरी गुड़िया कुछ तो बोल	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
आओ मिलकर गाएं	: ,,	1.00
खेलें कूदें नाचें गाएं	: ,,	0.75
हमारे पक्षी	: रुद्रदत्त	0.75
फूल खिले हैं डाली-डाली	: ,,	0.75

बहुरंगी सचित्र कहानियां

सिन्दवाद	(पुरस्कृत)	: महेंद्र कुलश्रेष्ठ	2.00
सफेद घोड़ा	(पुरस्कृत)	: प्रणब चक्रवर्ती	2.00
ईसप की कहानियां		: ,,	1.50
पंचतंत्र की कहानियां	भाग-1	: ,,	1.50
हितोपदेश की कहानियां	भाग-1	: ,,	1.50

आध्यात्मिक

वेद-सुधा	: सत्यकाम विद्यालंकार	4.00
ईशोपनिषद्	: सत्यभूषण योगी	3.00
असली पुष्पांजलि (गीत और भजन)	:	
भक्ति-दर्पण	: महाशय राजपाल	1.50
बाल सत्यार्थ प्रकाश	: प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार	1.50
हिन्दू धर्म की विशेषताएं	: स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	1.50
आर्य निबंध माला	: पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति	1.00
वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी	: पं० धर्मदेव सिद्धांतालंकार	1.00
सत्यसंग गुटका (संध्यामंत्र, हवनमंत्र, प्रार्थना, भजन, नियम आदि)		0.40
हवनमंत्र (संपूर्ण स्वस्तिवाचन तथा शांति प्रकरण सहित)		0.25
वैदिक संध्या	: महर्षि दयानन्द सरस्वती	0.10

हमारी पुरस्कृत पुस्तकें

भारत सरकार से पुरस्कृत

1. जहां सुमति तहं संपति नाना	: ब्रजभूषण	1.50
2. भारतीय संस्कृति की कहानी	: डा० भगवतशरण उपाध्याय	2.00
3. भारत की कहानी	: ,,	2.00
4. कितना सुन्दर देश हमारा	: ,,	2.00
5. आदमी	: मोहम्मद खलीक	1.00
6. हमारे त्यौहार	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
7. हमारा शरीर	: चतुरसेन शास्त्री	1.00
8. आइन्स्टाइन की कहानी	: बालकृष्ण	2.50
9. हमारे पक्षी	: रुद्रदत्त मिश्र	0.75
10. हवा की बातें	: केशव सागर	2.00
11. आग की कहानी	: ,,	2.00
12. फूल खिले हैं डाली-डाली	: रुद्रदत्त मिश्र	0.75
13. पानी	: केशव सागर	2.00
14. आवाज	: ,,	2.00
15. आओ करें सवारी	: रामचन्द्र तिवारी	1.00
16. अपना देश	: ,,	1.25
17. हम एक हैं	: धर्मपाल शास्त्री	1.50
18. हमारा पड़ोसी चांद	: रमेश वर्मा	2.00
19. भारत के महान् ऋषि	: प्राणनाथ वानप्रस्थी	1.00
20. युग-निर्माता जवाहरलाल नेहरू	: आशाराम माहेश्वरी	1.50
21. संसार के सात महान् आश्चर्यों की कहानी	: जितेन्द्रकुमार	2.00
22. जिन्दगी की राह	: बालशौरि रेड्डी	3.00
23. तीन एकांकी	: पी० लक्ष्मीकुट्टि अम्मा	2.00
24. यादें	: पद्मिनी मेनन	3.50

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

25. केशव का आचार्यत्व	: डा० विजयपालसिंह	20.00
26. केशव और उनका साहित्य	: ,,	15.00
27. काश्मीर : समस्या और पृष्ठभूमि	: गोपीनाथ श्रीवास्तव	12.00
28. कब तक पुकारूं	: डा० रांगेय राघव	15.00
29. हवा की बातें	: केशव सागर	2.00

30. यौन मनोविज्ञान	: अनु० मन्मथनाथ गुप्त	12.00
31. कीर्ति-स्तम्भ	: हरिकृष्ण प्रेमी	3.50
32. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास	: डा० दशरथ ओझा	20.00
33. पक्षी और आकाश	: डा० रांगेय राघव	5.00
34. भारतीय संगीत की कहानी	: डा० भगवतशरण उपाध्याय	2.00
35. भारतीय भवनों की कहानी	: ,,	2.00
36. मेरी गुड़िया कुछ तो बोल	: धर्मपाल शास्त्री	1.00
37. खेलें कूदें नाचें गाएं	: ,,	0.75
38. सरल पंचतंत्र	: ,,	1.00
39. सरल हितोपदेश	: ,,	1.50
40. अच्छी आदतें	: आचार्य चतुरसेन	1.50
41. महापुरुषों की झांकियां	: ,,	1.50
42. ममता	: हरिकृष्ण प्रेमी	3.00

पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत

43. गुरु गोविन्दसिंह	: प्राणनाथ वानप्रस्थी	1.00
44. चांद का सफर	: प्रकाश पंडित	1.00

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

45. गाइड	: आर० के० नारायण	6.00
46. एक म्यान, दो तलवारें	: नानकसिंह	8.00
47. लद्दाख की छाया	: भवानी भट्टाचार्य	10.00

संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत

48. आषाढ का एक दिन	: मोहन राकेश	6.00

यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत

49. आग हमारी मित्र व शत्रु	: रमेश वर्मा	2.50
50. ब्रह्मांड-यात्रा शुरू हो गई	: रामस्वरूप चतुर्वेदी	3.00
51. सफेद घोड़ा	: प्रणब चक्रवर्ती	2.00

मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियां

तीन जिल्दों में

नई कहानी के रूप में कहानी के क्षेत्र में आए नये मोड़ का नेतृत्व जिन कहानियों ने किया उनमें बहुत बड़ी संख्या मोहन राकेश की कहानियों की है। 'आर्द्रा', 'मिस पाल', 'मलबे का मालिक', 'जानवर और जानवर', 'एक और जिन्दगी', 'सुहागिनें', 'एक ठहरा हुआ चाकू', 'क्वार्टर' तथा अन्यान्य कितनी ही कहानियां न केवल एक लम्बे अरसे तक चर्चा का विषय बनी रही हैं, बल्कि हिन्दी कहानी की स्थायी उपलब्धियों के रूप में स्थापित भी हो चुकी हैं। कहानी के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करते हुए भी मोहन राकेश की कुल चौवन कहानियां ही हैं। हिन्दी कहानी के पाठकों, आलोचकों तथा शोधकर्ताओं की निरन्तर मांग को देखते हुए राकेश की आज तक की सम्पूर्ण कहानियां तीन जिल्दों में प्रकाशित की गई हैं। आज जबकि मोहन राकेश हमारे बीच नहीं रहे, इन कहानियों का ऐतिहासिक महत्त्व हो गया है और इन रचनाओं की सम्पूर्णता और अधिक बढ़ गई है।

1. **क्वार्टर तथा अन्य कहानियां** (पहली जिल्द) : एक ओर जहां इसमें आपको राकेश की सर्वाधिक चर्चित कहानी 'मिस पाल' और नवीनतम (और अब संभवतः उनकी अंतिम) कहानी 'क्वार्टर' मिलेंगी, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी पुरानी कहानियां भी मिलेंगी जिनके केवल नाम ही सुनाई देते हैं, वे पढ़ने या देखने को कभी नहीं मिलीं। इस संकलन में कुल पन्द्रह कहानियां हैं। मूल्य : 8.00

2. **पहचान तथा अन्य कहानियां** (दूसरी जिल्द) : इसमें राकेश की बहुचर्चित कहानियां 'एक ठहरा हुआ चाकू', 'मलबे का मालिक', 'उसकी रोटी' आदि के अतिरिक्त उनकी अनुपलब्ध कहानियों में से कुछ यहां दी गई हैं और इस तरह इस संकलन में कुल उन्नीस कहानियां हैं। मूल्य 8.00

3. **वारिस तथा अन्य कहानियां** (तीसरी जिल्द) : इस तीसरे खंड में 'एक और ज़िन्दगी', 'जानवर और जानवर', 'जीनियस' आदि प्रसिद्ध कहानियों के अतिरिक्त कुछ उनकी अनुपलब्ध कहानियां हैं। इस तरह इस संग्रह में उनकी कुल बीस कहानियां हैं। मूल्य 8.00

मोहन राकेश की अन्य रचनाएं

आषाढ का एक दिन (नाटक) अंदर के पृष्ठों में देश-विदेश के विविध रंगमंचों के अभिनय के कुछ महत्त्वपूर्ण फोटोग्राफ — 6.00

आकार क्राउन, रैक्सीन की जिल्द — 6.00

न आने वाला कल (उपन्यास) — 6.00

एक और ज़िन्दगी (कहानी-संग्रह)

राजपाल एण्ड सन्ज़

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थ निर्माण योजना के अंतर्गत हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मनोविकार-विज्ञान

ओ' हौबर्ट मौरर

प्रस्तुत पुस्तक ओ' हौबर्ट मौरर कृत 'दि क्राइसिस इन साइकैट्री ऐंड रिलीजन' का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद है। इसमें लेखक ने उन कारणों का खोजपूर्ण अध्ययन किया है, जो मानसिक व संवेगात्मक विक्षोभ-जन्य समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से सुलझाने में धर्म और व्यावसायिक मनोविकार-विज्ञान की विफलता के लिए उत्तरदायी हैं।

कपड़े की पक्की जिल्द । मूल्य : 15.00

सामाजिक तथा राजनैतिक शास्त्र के सिद्धांत

अर्नेस्ट बार्कर

यह पुस्तक अर्नेस्ट बार्कर कृत अंग्रेज़ी पुस्तक 'प्रिंसिपल्स आफ सोशल एंड पोलिटिकल थियोरी' का प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद है। इसमें विद्वान लेखक ने उन मूल तत्त्वों का विवेचन किया है जो राष्ट्रीय समाज तथा राष्ट्रीय राज्य के विकास के आधार हैं।

कपड़े की पक्की जिल्द । मूल्य : 15.00

लोक-सम्पर्क

राजेन्द्र

आज के प्रचार-संवेदी समाज में स्थायी प्रभाव कायम करने के लिए लोक-सम्पर्क अद्वितीय साधन है। इस महत्त्वपूर्ण विषय का हिन्दी में पहली बार प्रस्तुतीकरण हो रहा है।

इस पुस्तक में लोक-सम्पर्क के इतिहास, स्वरूप तथा इस विधा में हुए अब तक के विकास का सरल और प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत करने के साथ ही अनुभवी लेखक ने लोकमत-निर्माण, समाचारपत्रों से सम्पर्क, सामूहिक संचार प्रक्रिया एवं प्रचार-अभियान आदि विषयों की रोचक और व्यावहारिक जानकारी देने का प्रयास किया है। लोक-सम्पर्क तथा पत्रकारिता में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक विशेष रूप से उपयोगी है।

कपड़े की पक्की जिल्द । मूल्य : 15.00

प्रकाशनाधीन अन्य पुस्तकें

भारतीय पक्षी (मुद्रणाधीन)

भारत में बंधुत्व-संगठन (मुद्रणाधीन)

एकाधिकृत विक्रेता

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

मेरा नया उपन्यास

डा० प्रभाकर माचवे

[हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं के सुप्रसिद्ध विद्वान और हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक, कवि तथा आलोचक डा० प्रभाकर माचवे कई बार विदेश-भ्रमण कर चुके हैं। अमेरिका में कुछ साल तक अतिथि प्राध्यापक के रूप में उन्होंने अध्यापन किया है। सम्प्रति वे साहित्य अकादमी दिल्ली के मंत्री-पद पर हैं। यहां डॉ० प्रभाकर माचवे के शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले नवीनतम उपन्यास की भूमिका के अंश प्रस्तुत हैं जो बहुत ही रोचक है।]

मेरा विचार बहुत दिनों से एक विस्तृत कैनवास पर बड़ा-सा उपन्यास लिखने का था। कई बार मैंने उसके कई ड्राफट बनाए और फाड़कर फेंक दिए। अब की बार यह जो प्रकाशनार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं यह प्रारूप भी मेरी दृष्टि में बहुत संपूर्ण या निर्दोष नहीं है। पर फिर इस तरह से सर्वसम्पूर्णता के लिए राह देखते बैठने में पूरी जिंदगी खत्म हो जाएगी और शायद वह सर्वांगसुन्दर संपूर्णता कभी हाथ ही नहीं आएगी। मनुष्यमात्र अपूर्ण है। अतः उसकी कृति भी अपूर्ण ही रहेगी। इसी पशोपेश में प्रकाशक को वादा करके भी मैं अपनी यह लघु उपन्यास की पाण्डुलिपि समय पर नहीं दे सका।

इस उपन्यास में मैंने खण्ड कल्पित किए हैं। पहले छह अध्याय 'काल' के अन्तर्गत आते हैं। तीन पीढ़ियों के तीन-तीन स्त्री-पुरुष पात्रों की जवानी उनकी स्थितियों के परस्पर संपर्क-सूत्रों, समानता-विषमता की कहानी। दूसरे खण्ड में जिसे मैं 'देश-विदेश' मानता हूं (बल्कि 'दिक्' कहना अधिक उचित होगा), यही छह पात्र काल के बन्धन तोड़कर तीन खण्डों में घूमते हैं। पश्चिम का एक छोर अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को, पश्चिम के ही दूसरे छोर सोवियत रूस के पड़ोसी बलगारिया की राजधानी सोफिया, और तीसरे नव-निर्मित बांगलादेश में एक कल्पित स्थान सुवर्णश्री के परिपार्श्व पर। उन्हीं परिवारों और उनके परिवेशों की यह कथा है। समापन के लिए मैंने भारत का एक गांव चुना है सेवापुर। यह सारा उपन्यास 'काल' और 'दिक्' के परिणामों में कुछ मानवाकारों की अपनेपन की खोज है। कई प्रश्न उसमें जानबूझकर अनुत्तरित छोड़े गए हैं। कलाकृति कोई दर्शन की पोथी नहीं, जिससे सारे तर्क-वितर्क चाहे जाएं।

शायद इन सौ-डेढ़ सौ पृष्ठों को पढ़कर पाठकों के मन में कुछ खलबली मचे। शायद कुछ प्रश्न और शंकाएं उठें। शायद नये समाधान के लिए तृष्णा जगे। इसी आशा से यह सब लिखा गया है। मूलतः यह सब लेखन अपनी ही मन की घुण्डी खोलने की कोशिश में से उपजा है। उसपर और कोई कसौटियां लगाना व्यर्थ होगा।

कहानी मेरी जरूरत है

(पृष्ठ 4 का शेष)

चित्रकारों से अधिक नहीं मिलते क्योंकि वे उन्हें कोई नई बात बतलाने में असमर्थ हैं, लेकिन एक कवि, एक संगीतकार से बातें करते वक्त उन्हें बहुत-से नये तत्त्व पता चलते हैं। इन प्रभावों ने मेरी चित्रकला पर अपनी छाप अवश्य छोड़ी होगी यद्यपि स्पष्ट रूप से उसका पता पाना सहज नहीं जान पड़ता।

यह बात भी विचित्र-सी लगती है कि चित्रकला और अपनी कहानियों के प्रति मेरा दृष्टिकोण अलग-अलग रहा हो चाहे इसके कुछ भी कारण हों।

ऐसा लगता है जैसे दोनों की अपनी निजी समस्याएं हों, विशेषताएं हों, कुछ उपलब्ध करने की अलग-अलग ऊंचाइयां हों जिससे दोनों की दूरी हमेशा बनी रहती है।

रंगों की अपनी अनुभूति, आकृतियों का अपना सौन्दर्य व्यक्त करने का अपना मानदण्ड है। एक की कमी दूसरे से पूरी नहीं की जा सकती।

बराबर ऐसा महसूस होता रहता है कि अनुभूति का कोई एक क्षण रंगों की अपेक्षा केवल शब्दों में ही जिया जा सकता है। कोई-कोई चेहरा कैनवास पर अपनी पोर्ट्रेट चित्रितनहीं करवा सकता, उसे व्यक्त करने के लिए केवल शब्द चाहिए। एक विशेष मन:स्थिति केवल रंगों और आकृतियों के ढांचे में ही अपना स्थान पा सकती है। हो सकता है कि यह मेरी कमजोरी हो, एक ही माध्यम से अपने-आपको पूर्ण रूप से व्यक्त न कर पाने की असमर्थता हो।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुस्तकों पर पुरस्कार

उत्तर प्रदेश सरकार ने 1972-73 के लिए हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की कुछ पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार देने की घोषणा की है। कुल पुरस्कार की राशि 68000 रुपये है। राजपाल एण्ड सन्ज़ से प्रकाशित पांच पुस्तकों के लेखक भी इन पुरस्कारों में सम्मिलित हैं—(1) पृथ्वी का स्वर्ग (डा० राम कुमार वर्मा) 500 रुपये; (2) दो ट्रक (बालकवि बैरागी) 500 रुपये; (3) 'अ' से असभ्यता (दिनकर सोनवलकर) 500 रुपये; (4) पल दो पल (डा० प्रताप नारायण टंडन) 500 रुपये और (5) कोरा कागज (अनन्त गोपाल शेवडे) 500 रुपये।

भ्रमर के उपन्यास मराठी तथा गुजराती में अनूदित

हिन्दी की नई पीढ़ी के सुपरिचित उपन्यासकार रामकुमार 'भ्रमर' के दो उपन्यासों का संपूर्ण अनुवाद मराठी की दो पत्रिकाओं ने एक-एक अंक में प्रकाशित किए हैं।

'कांचघर' महाराष्ट्र के जन-जीवन पर हिन्दी में पहला उपन्यास है और उसका प्रकाशन राजपाल एण्ड सन्ज़ ने किया है। 'पुतलीबाई' हिन्द पॉकेट बुक्स से प्रकाशित है।

राजपाल एण्ड सन्ज़ से ही प्रकाशित भ्रमर के एक और श्रेष्ठ उपन्यास 'तीसरा पत्थर' का गुजराती अनुवाद हाल ही में अहमदाबाद के स्वतिक प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है।

बलराज साहनी के नाम

[हिन्दी फिल्म-जगत् के सुप्रसिद्ध अभिनेता बलराज साहनी अपने पूर्व-जीवन में महात्मा गांधी के निकट सान्निध्य में रह चुके हैं। वे फिल्म-जगत् में आने से पूर्व गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवन-काल में शांति-निकेतन में अंग्रेज़ी प्राध्यापक के रूप में कुछ सालों तक कार्य किया। देश-विदेश का वे अनेक बार भ्रमण कर चुके हैं। बी० बी० सी०, लंदन के विदेशी प्रसारण विभाग में उन्होंने काम किया है। फिल्म अभिनेताओं में अपनी योग्यता, सुरुचि और साहित्यिकता के कारण उनका विशिष्ट स्थान है। उन्होंने कहानियां, रिपोर्ताज़, यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं पर बहुत लिखा है। 'रूसी सफरनामा' उनकी नई पुस्तक है जिसमें उनकी रूस-यात्रा का रोचक वृत्तान्त है। हिन्दी के वरिष्ठ विद्वान पद्मभूषण श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने उक्त पुस्तक पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया श्री साहनी को एक पत्र के रूप में लिखी है जो यहां प्रस्तुत है।]

प्रिय श्री साहनी जी, वन्दे।

आपकी महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'रूसी सफरनामा' को मैं बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूं और उसकी आमफहम भाषा तथा सुलझे हुए विचारों पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

आपके इस ग्रन्थ ने मेरे दो-तीन दिन का कार्यक्रम ही बिगाड़ दिया। मैं ज़्यादा पढ़ नहीं पाता और नेत्रज्योति कुछ मंद होने से आंखों पर ज़्यादा ज़ोर डाल भी नहीं सकता। पुस्तक की रिव्यू तो फिर लिखूंगा, इस समय दो-चार बातें जैसी सूझती जाएंगी अपनी खिचड़ी भाषा में लिख दूंगा। पर्सनल टचेज मुझे बहुत पसंद आए। सबसे ज़्यादा रुचि मुझे अहमद जमील साहब की कविता 'अपूर्व खुशियों का युग आ रहा है' 'दि हिन्दी ट्रान्सलेशन इज़ सुपर्ब,' उन्होंने मानो मेरे मन की बात ही कह दी है।

यह खत लम्बा होता जा रहा है और मैंने अभी तक आधी बातें भी नहीं लिखीं। अब संक्षेप में कुछ निवेदन कर दूं।

भारतीय दूतावास की शिकायत बिल्कुल ठीक है। मुझे भी यही कष्टप्रद अनुभव हुआ था। वे लोग पक्के नूरोक्रैट हैं। रेडियो स्टेशन पर चाय का अभाव मुझे भी खटका। इन छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा करने से सारा मजा किरकिरा हो जाता है। शांति निकेतन में ठीक वक्त पर चाय न मिलने से प्राचार्य पं० पद्मसिंह जी का मूड़-खराब हो गया था। मैं तो अक्सर अपनी चाय थर्मोस में लेकर जाता हूं। बकौल मौलवी अब्दुल हक साहब 'हज़ार में एक आदमी चाय बनाना जानता है।'

लेनिनग्राद के शहीद स्मारक की तीर्थयात्रा मैंने भी दो बार की थी। फल मैं भी नहीं ले गया था, यह भूल हुई। उसके चित्र मैंने खींचे थे। आपने गोर्की संग्रहालय क्यों नहीं देखा? दास्तोवस्की का संग्रहालय भी दर्शनीय है। मैं तीसरी बार रूस जाने का इच्छुक हूं, पर 81 वर्ष के युवक को कोई दूतावास भेजने की हिम्मत नहीं करता।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

आगामी प्रकाशन

1. **हाल मुरीदों का** (उपन्यास) : पंजाबी के सुप्रसिद्ध कथाकार कर्त्तारसिंह दुग्गल के इस उपन्यास में पंजाब के आधी सदी के जीवन को बहुत विस्तार से चित्रित किया गया है । स्वाधीनता-आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर इसकी कहानी गद्य में महाकाव्य है।

2. **जोगी मत जा** (उपन्यास) : बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विमल मित्र के इस उपन्यास में राजमहल में बंद एक विधवा रानी की मार्मिक कहानी है जो समाज से प्रतिकार लेने के लिए नारी से हिंसक पशु बन गई है। साधना, तपस्या और संयम के ऊपर सौंदर्य और यौवन की विजय इसमें रोचक ढंग से दिखाई गई है।

3. **भारत के जंगली जीव** (वन्य जीवन) : ब्रिटेन के प्राणी-विशेषज्ञ ई० पी० जी की अंग्रेज़ी पुस्तक 'दि वाइल्ड लाइफ आफ इंडिया' का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें भारत के जंगलों और प्रमुख चिड़ियाघरों में पाए जाने वाले विभिन्न जीव-जन्तुओं के आंतरिक जीवन की कौतूहल जगाने वाली बातें और लेखक द्वारा लिए उनके फोटोग्राफ हैं। ई० पी० जी ने अपना आधा जीवन भारत में बिताकर अपनी रुचि को तृप्ति देने के लिए इन जंगली जीव-जंतुओं से जो घनिष्ठ साहचर्य बनाए रखा वह इस पुस्तक के प्रति पृष्ठ पर दिखाई देता है।

4. **भारतीय सेना की कहानी** (भारतीय सेना) : प्रस्तुत पुस्तक में कर्नल गौतम शर्मा ने भारतीय सेना के सभी अंगों का विस्तृत परिचय दिया है। स्वतंत्रता के बाद भारत पर बार-बार आए युद्ध-संकट और उनमें हमारी जीत के क्या रहस्य हैं, हमारी सैनिक शक्ति कितनी है, 'भारतीय सेना की कहानी' को पढ़कर यह सब समझने में सुविधा मिलती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

प्रेम अपवित्र नदी

लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने इस उपन्यास में दिल्ली को अपने कथानक का घटनास्थल बनाया है। उपन्यास तीन हिस्सों—चांदनी चौक, कनाट प्लेस और गोल्फ लिंक—में विभाजित है। उपन्यास के तीनों खण्ड असल में तीन पीढ़ियों की, उनकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की, उसके बीच के अलगाव, फासले और संघर्ष की कहानी कहते हैं। उपन्यास की कहानी 'कपूर' वाले खानदान की एक 'कुल-परम्परा' से शुरू होती हैं जिनके अनुसार सेठ सूरज कपूर, अपनी पत्नी, ब्रजरानी को महावीर नाम के एक पंडे को दान करता है और फिर दान का मूल्य देकर दान वापस लेना चाहता है। लेकिन ब्रजरानी की सुन्दरता महावीर को कहीं गहरे में छू जाती है और वह युगों से चलती हुई दान की इस 'पवित्र' परम्परा को भूलकर कह उठता है, "यह दान मैं किसी मूल्य पर वापस नहीं दूंगा।" यह है ऊपर से तटस्थ बने रहने का नाटक करते कपूर वाले खानदान की पहली पीढ़ी की कहानी। चांदनी चौक खण्ड का सबसे सशक्त पात्र ब्रजरानी है जो अपने जीवन-संग्राम को अकेले ही लड़ती है।

उपन्यास का दूसरा खंड कनाट प्लेस कपूर वाले खानदान की दूसरी पीढ़ी की कहानी है जिसके नायक हैं 'कुंवर' जो आधुनिक होने का अहंकार तो पालते हैं लेकिन साथ ही अतीत की परम्पराओं से इतने जुड़े हैं कि वर्तमान में रहते हुए भी वर्तमान को जान नहीं सकते। कुंवर के लिए हर चीज़ बिजनेस है और प्रेम फिजूल चीज़। इस खंड का सबसे सजीव पात्र है कुंवर की पत्नी शिवानी जिसे उसके पति ने बहुत गहरा शॉक दिया है और उसके भीतर की कमल को, उसके बचपन को, प्रेम करने के उसके अधिकार को, 'वर्तमान' से जूझने और अपनी इच्छा के कल को जीने के लिए तैयार कर दिया है और वह अपना घर छोड़कर, जो उसका अपना नहीं था, एक पराये घर में (विष्णुपद के पास), जो उसके लिए पराया नहीं था, चली जाती है।

तीसरा मोड़—तीसरी पीढ़ी, कुंवर और शिवानी के बेटे विजय की पीढ़ी। कपूर वालों का जीवन। अब तक की सारी पीढ़ियों का सारा जीवन चाहे वह घर-परिवार का हो, चाहे व्यापार का, शर्तों का जीवन था लेकिन इस पीढ़ी को यह सब स्वीकार नहीं है। और कुंवर को उनकी शर्तों को न मानना स्वीकार नहीं है। नतीजा—टूटन, बिखराव।

भारतीय स्वतंत्रता-संघर्ष से शुरू होकर कहानी दूसरे आम चुनाव तक आकर समाप्त होती है। इस बीच के परिवर्तन को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। सामान्य जीवन को संपूर्ण रूप से चित्रित करने में यह उपन्यास पूरी तरह सक्षम है।

(भारतीय साहित्य)

1. **सूरजमुखी** (उपन्यास) : मुल्कराज आनंद अंग्रेज़ी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। साहित्य अकादमी से पुरस्कार प्राप्त 'सूरजमुखी' उनके आत्म-कथात्मक उपन्यास माला के दूसरे उपन्यास 'मार्निंग फेस' का हिन्दी अनुवाद है। इसमें लेखक ने एक किशोर-मन में संसार को लेकर कैसी भावनाएं उठती रहती हैं इसका सशक्त चित्रण किया है।

---

2. **सिकन्दर हार गया** (कहानी-संग्रह) : अमृतलाल नागर की इस पुस्तक में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर बहुत रोचक कहानियां हैं। श्री नागर का हास्य-व्यंग्य और गंभीर लेखन पर समान अधिकार है, इन कहानियों में उनका दूसरा पक्ष सशक्त रूप से उभरा है।

---

3. **चांद काला है** (उपन्यास) : मनोज बसु के इस उपन्यास में मनुष्य के विविध रूपों को बहुत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया हैं। उपन्यास के मुख्य पात्र के अवसरवादी व्यक्तित्व का चित्रण अच्छा बन पड़ा है।

---

4. **नोबल पुरस्कार-विजेता महिलाएं** (जीवनी) : श्रीमती आशा रानी व्होरा की इस पुस्तक में उन महिलाओं की जीवनी है जिन्हें मानवता के कल्याणकारी कार्यों के उपलक्ष्य में नोबल पुरस्कार दिया गया।

5· **मेरी आंखों से** (कहानी-संग्रह) : देश में असुरक्षा और अशांति का जो वातावरण चल रहा है, उसका सशक्त चित्रण बंगला के कहानीकारों ने ही किया है। इस संकलन में बंगला के प्रतिष्ठित लेखकों की वैसी ही कहानियां हैं—जिनमें बंगाल ही नहीं पूरे देश का प्रतिबिंब है।

---

6. **महारानी झांसी** (जीवनी) : प्राणनाथ वानप्रस्थी बाल-साहित्य के प्रमुख लेखक हैं। इस पुस्तक में उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की जीवनी सरल और रोचक बनाकर प्रस्तुत की है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

किंग लियर

शेक्सपियर की बहुचर्चित चालीस कृतियों में सैंतीस नाटक हैं जिनमें मैकबेथ, ओथेलो, हैमलेट और किंग लियर इन चार नाटकों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। शायद इस सबब से कि यह चारों नाटक एक गहरा झटका देते हुए दुःखानुभूति के साथ खत्म होते हैं और पात्रों के स्थितिजन्य मनोद्वंद्व के साथ तादात्म्य का सफर कर रहा पाठक या दर्शक एकाएक सिर पर आ पड़ी इस विपता के लिए तैयार नहीं हो पाता और त्वरित एडजस्ट हो जाने के प्रति इनकारी-भर छोड़ता है कि जीवन के साथ समरस हुए चरित्रों की अनोखी नियति प्रायः झेली नहीं जाती और यह एक अकाट्य तथ्य है कि सुखों की अपेक्षा संक्लेशों की स्मृति, दुःखपरितापित क्षणों की छटपटाहट की याद मस्तिष्क-पटल पर अधिक स्थिर-ताज़ा रह पाती है और यौगिक शब्दों में 'आनंदमय वेदना' की यही वह उपलब्धि है जो शेक्सपियर के उक्त चारों नाटकों को ज़िंदा रख सर्वोच्च स्थान दिलवाए है।

शेक्सपियर के दुखांत नाटकों की इस त्रासदी को शब्दसूत्रों में बांधते हुए बच्चन लिखते हैं: "अपूर्ण जीवन भले-बुरे के संघर्ष से पूर्ण होने के क्रम में हैं। उसमें बुरा तो नष्ट होता ही है, कुछ भला भी बुरे से अपरिहार्य रूप से जुड़े होने के कारण नष्ट हो जाता है। त्रासदी बुरे के नष्ट होने से नहीं होती; भले के नष्ट होने से होती है, पर एक अंतर सभी त्रासदियों में स्पष्ट देखा जा सकेगा। अपने विनाश के क्षणों में जहां बुरा केवल अपनी विवशता देखता है वहां भला किसी न किसी [illegible] अपने उत्सर्ग की सार्थकता से अचेत नहीं रहता।" त्रासदी को एकांत विषाद, नैराश्य अथवा दुःख से ऊपर उठा लेने के लिए इतना पर्याप्त है कि इसका चित्रमय स्पष्ट आभास 'किंग लियर' में मिल जाता है अगर सहृदयता से नाट्यांतर्गत अनुभूतियों के साथ एकात्म भाव स्थापित किया जाए तो।

इसमें संदेह नहीं कि 'किंग लियर' का यह अविकल अनुवाद भावानुसारी और मूल कृति की महत्ता को बहुतांश में प्रतिपादित करनेवाला बन पड़ा है और बच्चन जी ने भाषांतरण में आद्यंत मजबूत पकड़ बनाए रखी है और कथाक्रम को कहीं ढीला, खण्डित या अस्पष्ट नहीं होने दिया है। **(नवभारत)**

हमारे वीर सेनानी

भारत माता सदा से ही वीर-प्रसविनी रही है। देश पर संकट आने पर राम, कृष्ण, शिवाजी व प्रताप की वीर संतानों ने दुश्मन के छक्के छुड़ाने में हमेशा ही अद्वितीय साहस का परिचय दिया है। सन '47 से' 71 तक के युद्धों में जान की बाज़ी लगाकर मातृभूमि का मस्तक ऊंचा रखने वाले भारतीय सेना के तीनों अंगों के वीरों की शौर्य-गाथाएं देश के हर नागरिक के लिए प्रेरणास्रोत हैं विशेषकर नवयुवकों व किशोरों के लिए तो यह जीवन की मार्गदर्शिका ही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में सरल किन्तु प्रवाहमयी भाषा में लेखकों ने परमवीर तथा महावीर चक्रों से सम्मानित भारतीय जवानों व अफसरों के शौर्य प्रसंगों का वर्णन किया है। पुस्तक में इन वीरों के चित्र भी दिए गए हैं। **(युगधर्म)**

समाचार

बेकारों के लिए दूकान

शिक्षित किन्तु बेरोजगार लोगों को रोज़गार देने के उद्देश्य से रेलवे प्लेटफार्म पर पुस्तकों की दुकानें खोली जाएंगी। हाल में ही इस प्रकार का वक्तव्य संसद में रेलमन्त्री द्वारा दिया गया।

ऐसा करने का उद्देश्य उन संस्थानों का एकाधिकार समाप्त करना भी है जो अब तक रेलवे प्लेटफार्म पर इस प्रकार की दुकानें चलाते रहे हैं।

पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि यदि तीन या चार शिक्षित परन्तु बेकार व्यक्ति मिलकर सहकार कायम कर लें तो उन्हें दुकान चलाने की अनुमति दे दी जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक मदद भी उपलब्ध कराई जाएगी।

शारीरिक शिक्षा व खेलकूद की पुस्तकों के लिए पुरस्कार

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की शारीरिक शिक्षा और खेल-कूद की पुस्तकों के लिए तीसरी राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता के अन्तर्गत 1972-73 वर्ष के राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए दो पुस्तकें चुनी गई हैं।

इस योजना का उद्देश्य शारीरिक शिक्षा और खेलों के बारे में उच्च स्तर की पुस्तकों के लेखन को प्रोत्साहन देना है।

ये दो पुस्तकें हैं : 'ट्रेनिंग विदाउट स्ट्रेनिंग' (अंग्रेज़ी), और 'खो खो' मराठी, अंग्रेज़ी पुस्तक के लेखक टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड, जमशेदपुर के श्री केन क्रो बोसन तथा मराठी पुस्तक के लेखक एम० एस० विश्वविद्यालय, वड़ौदा के प्राध्यापक श्री योगेश यादव हैं। दोनों पुरस्कार एक-एक हजार रु० के हैं। इसके अलावा विभिन्न शारीरिक संस्थानों के उपयोग के लिए भारत सरकार इन पुस्तकों की 250 प्रतियां भी खरीदेंगी।

इनके अलावा दो पुस्तकें और चुनी गई हैं, जिन्हें सरकार खरीदेगी तथा खेल परिषदों को बांटेगी । ये हैं : महाराष्ट्र सरकार के शारीरिक शिक्षा एवं खेल सलाहकार श्री डी०जी० धर द्वारा लिखित पुस्तक 'कबड्डी' (अंग्रेज़ी) और कराइ-कुडी (तमिलनाडु) स्थित अलगप्पा शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय के श्री जे०डेविड मेन्युल राज द्वारा लिखित पुस्तक 'सिलंबम—टेक्नीक एण्ड एवेल्युएशन'।

मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् द्वारा पुस्तकों पर पुरस्कार

मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद् ने 1971 में प्रकाशित विविध विषयों की श्रेष्ठ पुस्तकों पर पुरस्कारों की घोषणा की है। इन पुरस्कृत पुस्तकों में राजपाल एण्ड सन्ज़ से प्रकाशित भगवान सिंह की पुस्तक 'भारतीय चाय' को रविशंकर शुक्ल पुरस्कार (2000 रुपये) तथा डा० भगवतशरण उपाध्याय की पुस्तक 'बुद्धि का चमत्कार' को रसनिधि पुरस्कार (1100 रुपये) मिला है। पहली पुस्तक में भारतीय चाय के व्यावसायिक पक्षों के साथ ही सामान्य जानकारी की विशद बातें हैं। दूसरी पुस्तक सरल-रोचक कहानियों का संकलन है।

हिन्दी-विदुषी रूसी महिला श्वेतलाना भारत में

फतहचंद शर्मा आराधक

मास्को राजकीय अंतरराष्ट्रीय संबंध संस्थान की प्रमुख सदस्या डा० श्वेतलाना वी० अवनिकोव आजकल दिल्ली आई हुई हैं। वे अप्रैल मास तक दिल्ली में रहेंगी। इसके बाद वे देश के अन्य स्थानों पर भारतीय साहित्य की नवीनतम प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगी। डा० श्वेतलाना अपने देश की भाषा के अतिरिक्त हिंदी, उर्दू और तमिल की पंडित हैं। वे दस वर्ष बाद हिंदी और भारतीय भाषाओं के विशेष अध्ययन के लिए भारत आई हैं। नई दिल्ली में पिछले माह जब उनसे भेंट हुई तब उनसे मिलकर पता लगा कि वे कवि रामधारी सिंह दिनकर के काव्य की बड़ी प्रशंसिका हैं। केवल प्रशंसिका ही नहीं, उन्होने दिनकर की कविताओं का रूसी भाषा में भावानुवाद 'नील कुसुम' के नाम से किया है। उन्हें दिनकर के अतिरिक्त पंत, निराला और सुब्रह्मण्य भारती की रचनाएं भी पसंद हैं। उनका विश्वास है कि आपस में भिन्न-भिन्न देशों की मैत्री साहित्य के माध्यम से चिरस्थायी और आशाजनक रहती है।

उन्होंने कहा कि मुंशी प्रेमचंद, विप्लवी साहित्यकार श्री यशपाल तथा कृश्न-चंदर आदि की कृतियां रूस में बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं। उन कृतियों को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे हम सहज में भारत के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों और विचारधाराओं से भली प्रकार परिचय पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी का प्रेम सोवियत रूस में विशेष रुचिकर तथा मैत्रीपूर्ण भावना से व्याप्त है। सोवियत रूस के ताशकंद, लेनिन-ग्राद और मास्को में हिंदी के उच्चतम शिक्षण के लिए इन विश्वविद्यालयों में अलग-अलग हिंदी संकाय हैं जहां बड़ी रुचि के साथ साहित्य-अनुरागी शिक्षण प्राप्त करते हैं। उन्होंने अपने हिंदी-प्रेम के प्रति कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि हमें हिंदी साहित्य से अनेक रचनाएं पढ़कर बहुत-सी जानकारी मिलती है।

डा० श्वेतलाना ने कहा कि हमारे देश में संस्कृत के प्रति भी अनुराग है। संस्कृत रूसी भाषा के बहुत करीब दिखाई देती है। मेरा नाम 'श्वेतलाना' है जिसमें श्वेत शब्द संस्कृत का है। इससे यह पता चल जाता है कि रूसी भाषा संस्कृत के बहुत निकट है। डा० श्वेतलाना ने यशपाल की कथाओं का भी रूसी में अनुवाद किया है। अमृतलाल नागर के साहित्य में उनकी विशेष रुचि है। वे आधुनिक हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं का विशेष अध्ययन अपने भारत-प्रवास काल में करेंगी। उन्होंने कहा कि उजबेक क्षेत्र में रहने वाले लोग भारतीय साहित्य में विशेष अनुरक्ति रखते हैं। उन्हें अनेक लेखक बड़े प्रिय हैं और संस्कृत साहित्य के प्रति भी उन्हें विशेष रुचि है। कालिदास एवं अन्य कवियों के अतिरिक्त पंचतंत्र की कहानियां भी बड़ी रुचि के साथ पढ़ी जाती हैं।

('नवभारत टाइम्स' से साभार)

हिन्दी-विद्वान डा० मलिक मोहम्मद का अभिनन्दन

दिल्ली के साहित्यकारों एवं प्राध्यापकों की ओर से आज यहां डा० मलिक मोहम्मद का अभिनन्दन किया गया। भारत सरकार की ओर से कालीकट विश्वविद्यालय के ओरिएंटल भाषा विभाग के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार डा० मलिक को इस वर्ष पद्मश्री से अलंकृत किया गया है।

डा० मलिक द्वारा हिन्दी भाषा को दिए योगदान की सराहना करते हुए अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष-पद से बोलते हुए केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री श्री डी० पी० यादव ने कहा, "हम एक सम्पर्क भाषा के जरिये कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक समस्त देश को भावनात्मक एकता में जोड़ सकते हैं।"

श्री यादव ने अध्यापकों से भाषा, शिक्षा और एकता में योगदान देने की अपील करते हुए कहा कि अध्यापकों के ऊपर से लोगों का विश्वास नहीं उठना चाहिए। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि लगभग साढ़े तीन सौ प्रश्नपत्र कुछ प्रदेशों के मुखियों को भेजे गए थे जिनमें से उन्हें एक का उत्तर प्राप्त हुआ है। दो हजार से अधिक व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले इस मुखिया ने लिखा है कि गांव वालों का अध्यापकों पर से विश्वास समाप्त होता जा रहा है।

केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री ने कहा कि हिन्दी के विकास का कार्य अध्यापकों के ऊपर है तथा डा० मलिक उन अहिन्दी भाषी लोगों में से हैं जिन्होंने हिन्दी के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है।

इस अवसर पर डा० जगदीशचंद्र माथुर ने कहा कि उत्तर भारत के लोगों को दक्षिण भारत की एक भाषा अवश्य सीखनी चाहिए। श्री माथुर ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम तीन भाषाएं अवश्य आनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि हिन्दी को पूर्ण रूप से व्यवहार में लाने के लिए हमें कुछ ठोस कदम उठाने पड़ेंगे। देश की एकता एक साहित्य, एक भाषा से जानी जाती है तथा देश की एकता के लिए एक सम्पर्क भाषा का होना अत्यन्त आवश्यक है।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित सम्पादक : विश्वनाथ

नया साहित्य

वर्ष 18 मई, 73
अंक 5 वार्षिक मूल्य 5.00

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का चित्र जिन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य पर भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार मिला है
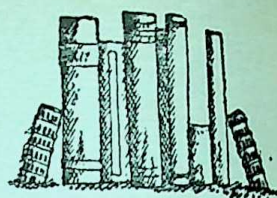
किताबों की दुनिया

समुद्र-पक्षी पर लोकप्रिय उपन्यास

अमेरिका में इन दिनों एक ऐसा उपन्यास बहुत लोकप्रिय हो उठा है जिसमें न नायक है, न नायिका, न प्यार-मुहब्बत। इसमें दस हज़ार से ज़्यादा शब्द नहीं हैं, और खाली जगह में समुद्री पक्षियों के चित्र दिए गए हैं। यह एक समुद्र-पक्षी की कहानी है जो सजिल्द संस्करण में दस लाख से ज़्यादा बिक चुकी है। पुस्तक का नाम है 'जोनाथन लिविंग्स्टन सीगल' और लेखक हैं रिचर्ड बाख। जानकारों का कहना है कि यह पाल बनयन के 'पिलग्रिम्स प्राग्रेस' और खलील जिब्रान के 'दि प्राफेट' की भांति संसार के महान साहित्य में स्थान प्राप्त करेगा।

चार पृष्ठों की किताब

न्यूयार्क स्टेट यूनिवर्सिटी ने 364 पृष्ठों की पहली माइक्रोफिलम पुस्तक प्रकाशित की है जो कार्ड आकार के कुल चार पृष्ठों में पूरी आ गई है। इसे अच्छे ढंग से टाइप कराकर विशेष रूप से फिलम बना ली गई। इसका मुद्रित रूप न प्रकाशित हुआ है, न होगा। मूल्य भी बहुत कम है, केवल दस डालर, जबकि मुद्रित रूप में इसका मूल्य तीस डालर से कम न होता। पुस्तक का नाम है 'दि गोथिक वर्ड' और लेखक हैं ब्रायन रीगन। पुस्तक की केवल कुछ सौ प्रतियां छापी गई हैं। और जैसे-जैसे आर्डर आते हैं, और छाप ली जाती हैं। जिन पुस्तकों में सामान्य पाठकों को रुचि नहीं होती और जिन्हें छापते प्रकाशक कतराते हैं, उनको इसी पद्धति से छापने का निश्चय अमेरिका के सभी विश्वविद्यालय कर रहे हैं।

भारतीय मन और मस्तिष्क पर पुस्तक

भारतीय जन, जीवन और संस्कृति के मन और मस्तिष्क का विश्लेषण करने वाली एक रोचक पुस्तक 'इंडियन इनसाइट्स' के नाम से प्रकाशित हुई है जिसके लेखक हैं श्री क्राइटन लेसी। इस पुस्तक में महात्मा गांधी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधाकृष्णन्, श्री नेहरू से लेकर सभी प्रदेशों के सभी वर्गों के लोगों से बातचीत और इण्टरव्यू लेकर स्थिति को रखने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक में धर्म, नैतिकता, भ्रष्टाचार आदि सभी बातों की बड़ी गहराई से चर्चा की गई है।

बलराज साहनी : कुछ यादें

—डा० प्रभाकर माचवे

मैं गांधीजी के सेवाग्राम आश्रम में था, तब सन् चालीस में बलराज जी से मेरा पहला परिचय हुआ। आर्य नायकम् के बुनियादी तालीमी संघ में वे काम करते थे। शांति निकेतन से आए थे। फिर मेरठ में हिन्दी साहित्य परिषद् के एक अधिवेशन में वे अपनी पहली पत्नी दमो के साथ, एक खानाबदोश की तरह, पूरा सामान मय चूल्हा लिए रामगढ़ कांग्रेस जाने की तैयारी में थे, तब मिला। 'हंस' के रेखाचित्रांक में वे पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक मज़ाकिया खाका खींच चुके थे और 'रविवार का सर्वनाश' जैसी कहानियां भी उन्होंने तब लिखी थीं। एक प्रबुद्ध, प्रगतिशील विचारों के, उदारमना, मानवतावादी बलराज तब हिन्दी के एक अच्छे लेखक के नाते हम युवकों के प्रिय मित्र थे।

फिर याद आती है 'जादू की कुर्सी'—एक नाटक, जो उन्होंने स्वयं लिखा और उसमें काम भी किया। इससे पहले 'धरती के लाल' में बलराज की पत्नी ने जी-तोड़ परिश्रम किया था। 'जादू की कुर्सी' इलाहाबाद के प्रगतिशील साहित्य सम्मेलन के साथ 'इप्टा' में बलराज ने दिखाया था। वह एक अविस्मरणीय अनुभव था। बलराज से भारत-सोवियत मैत्री संघ के स्थापन दिवस पर बंबई में कई बार मिलना हुआ। इधर बलराज का लिखना कम हो गया था। फिल्म-जगत् में वे अभिनेता के नाते मसरूफ हो गए, 'दो बीघा ज़मीन' का बलराज आज भी सबकी याद का विषय बना रहेगा।

मैं नागपुर रेडियो पर था। तब बलराज किसी जलसे के लिए आए। कृपा करके वे मेरे घर भी पधारे। शायद कोई साहित्य-गोष्ठी थी, विद्रोही, नरेश मेहता, मुक्तिबोध, प्रशान्त पाण्डेय आदि कई मित्र थे। वहां मुझे आग्रह करने लगे कि बल्लार शाह के कोयला-मज़दूरों की ज़िन्दगी पर कोई उपन्यास क्यों नहीं लिखते? अभी एक मास पूर्व वे बंबई में साहित्य अकादमी के कार्यालय में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य के नाटक-गोष्ठी का सभापतित्व करने आए। बड़े प्रेम से अपना 'रूसी सफरनामा'—'प्रिय प्रभाकर को पुराने प्यार के साथ' लिखकर दे गए थे।

इधर मैंने उनकी दो किताबें पढ़ी थीं—'यादें' और 'रूसी सफरनामा', मुझे बेहद पसंद आई थीं। रूसी सफर की कई बातें तो हमने भी अनुभव की थीं। पंजाबी भाषा में इधर लिखने का उन्हें शौक प्रबल हुआ था, और 'मेरा पाकिस्तानी सफरनामा' उसी में से निकला था। अपनी फिलमी जीवन की आत्मकथा भी उन्होंने पूरी की। वे तहेदिल से सरल बोल-चाल की हिन्दी और हिन्दुस्तानी को माननेवाले शख्स थे। उन्हें किसी भी प्रकार की संकीर्णता, जातीयतावाद, सांप्रदायिकता बिलकुल पसन्द नहीं थी। ऐसे खुशमिज़ाज, हर दिल अज़ीज, परिहासप्रिय मित्र की याद आती है, तो मन यही करता है कि काश, फिल्म के बजाय वे साहित्य के क्षेत्र में रहते—तो बहुत बड़ी सेवा हिंदी और पंजाबी की वे करते! अबकी बार साहित्य अकादेमी की पंजाबी सलाहकारी समिति पर उन्हें चुना गया था। पर 'विधना के मन और'!

बांग्ला देश के साहित्य-मित्र

फरवरी 20 से 28, 1973 में, बांग्ला देश अकादेमी के डाइरेक्टर जनरल डा० मज़-हरुल इस्लाम साहब के निमंत्रण पर भारत सरकार की ओर से मेरे मित्र श्री कर्तार-सिंह दुग्गल और डा० सुरेश अवस्थी के साथ ढाका जाने का मुझे सुअवसर मिला। 21 फरवरी को वहां शहीद-दिवस मनाया जाता है। बीस बरस पहले पांच विद्या-र्थियों ने बांग्ला भाषा के लिए (उर्दू की अनिवार्यता के विरुद्ध) गोलियां खाईं और जान दी —उन्हीं सलाउद्दीन-ज़ब्बार-रफीक-बरकत-सलाम की याद में शहीद मीनार पर फूल-मालाएं चढ़ाई जाती हैं। सारा देश शोक मनाता है। सवेरे से छोटी-छोटी बांग्ला पत्रिकाएं जिनमें कविता-कहानियां आदि छापकर युवकों-युवतियों की टोलियां नंगे पैर रवीन्द्र-संगीत, नज़रुल-गीति गाती हुई ढाका शहर की सड़कों पर निकल पड़ती हैं। शहीद-मीनार फूलों के ढेर से ढक जाती है। रात के बारह बजे से रेडियो-टेलीविज़न पर सारे दृश्य दिखाए जाते हैं, कार्यक्रम होते हैं। मैं और श्री दुग्गल इस पवित्र सुबह एक बड़ा-सा पुष्प-चक्र (रीद) उस अमर शहीद-स्थान पर रखने गए।

आठ दिन की यात्रा में कई लेखकों, कवियों, विद्वानों, संपादकों, पत्रकारों, भाषाविदों, प्राध्यापकों से मिलना हुआ। मैं कम से कम छह सभाओं में बोला। मैंने कम से कम पचास रेखाचित्र बनाए (कुछ दिल्ली और बंबई के टेलीविज़न पर दिखाए भी), सबका ब्यौरा यहां संभव नहीं। पर इस पत्रिका के पाठक-लेखक, प्रकाशक, पुस्तक-प्रेमियों के लिए कुछ तथ्य बता दूं। भारत से बांग्ला देश में बहुत कम पुस्तकें पहुंचती हैं। वहां अंग्रेज़ी और बांग्ला पुस्तकें ही अधिकतर लोग चाहते हैं। नीचे मैं कुछ विद्वानों के नाम-पते भी दे रहा हूं, जिन्हें विशेष पुस्तकें चाहिए हैं। यदि प्रकाशक या उन पुस्तकों के लेखक-संग्राहक पुस्तकें भेज सकें तो बड़ा उपकार होगा।

डा० मज़हरुल इस्लाम राजशाही विश्वविद्यालय के कुलपति थे। वे मुजीबु-र्रहमान के व्यक्तिगत मित्र हैं। उन्होंने दो वर्ष से अकादेमी का कार्यभार संभाला है। नवाब बर्दवान की पुरानी कोठी में, तीन मंज़िली इमारत में यह 'बांग्ला अकादेमी' है। इसी स्थान से विद्यार्थियों ने भाषा सत्याग्रह किया था। इस संस्था में कोश-निर्माण-कार्य (स्व० डा० शाहिदुल्ला का बांग्ला बोलियों का कोश यहीं से छपा था), लोकगीत-लोककथा आदि लोकसाहित्य-संग्रह प्रकाशन, वैज्ञानिक पुस्तकों के अनुवाद, पुरस्कार-वितरण आदि कार्य होते हैं। संस्था का वार्षिक बजट चौरासी लाख 'टाका' (रुपये) के बराबर है। डाइरेक्टर जनरल का वेतन ढाई हज़ार टाका प्रतिमास है। इस संस्था में कई विद्वान कार्य करते हैं। एक अंग्रेज़ी में और एक बांग्ला में त्रैमासिक पत्रिका, और एक बच्चों का मासिक प्रकाशित होता है। जब हम गए थे तो एक लेखक ने पुरस्कार अस्वीकार कर दिया था, उसकी बड़ी चर्चा थी।

फिर मिले ढाका विश्वविद्यालय के प्रो० कबीर चौधरी (जिनके भाई

(शेष पृ० 8 पर)

रामविलास शर्मा की दृष्टि में

प्रिय अमृत,

कई विघ्न-बाधाओं को पार करते हुए कल तुम्हारा उपन्यास समाप्त किया। तुम्हारी कला का निखार और बाहर और भीतर की दुनिया में तुम्हारी पैठ देखकर मन आनन्द से भर गया। किसी आलोचक ने अभी तक तुलसीदास को उनके परिवेश में इतने गहरे उतरकर न देखा था जितने गहरे तुमने देखा है। तुम्हारी पुस्तक तमाम टुट-पुंजिये 'आधुनिकता बोधवादियों', अनास्था-निगारों और वामपंथी लफ्फाज़ों के मुंह पर करारा झापड़ है जो अपनी मूल्यहीनता के गर्द-गुबार में तुलसीदास को घसीटकर उन्हें सामंतों का चाकर और वर्ण-व्यवस्था का पोषक मानते हैं। तुम्हारे किसी भी बड़े उपन्यास की कथावस्तु ऐसी सुगठित नहीं है जैसे 'मानस के हंस' की है। तुम लगभग साढ़े चार सौ पृष्ठों तक बाबा के साथ रहे, बड़ी बात है।

तुमने तुलसीदास की रचनाओं के आधार पर जो कारीगरी की है,उसकी जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। रामायण लिखने के मोड़ से 'खेती न किसान को' आदि जोड़ना और 'विनयपत्रिका' पर रामजी की सही कराना इलहाम वाली कला—inspired art—है। पूरी पुस्तक में अवधी भाषा की ऐसी तरावट है कि किसान जीवन से तुम्हारा लगाव देखकर हम नये सिरे से तुम पर सौ जान से फिदा होते हैं। तुमने तुलसीदास के बालक-जीवन का ऐसा जानदार वर्णन किया है कि इच्छा होती है, तुमसे कहूं, एक उपन्यास ऐसा लिखो जिसमें सारे प्रमुख पात्र 14 साल से कम उम्रवाले बच्चे ही हों। किशोर तुम्हारे उपन्यासों में अनेक हैं, बच्चे बहुत कम। और बहुत कम उनपर कुछ लिखने के अधिकारी हैं। 'हनुमान चालीसा' रचे जाने का सन्दर्भ बहुत ऊंचे दर्जे की सूझ है। तुम्हारे मेघाभगत तुलसीदास के बाद इस उपन्यास के सबसे सजीव पात्र हैं। इनके अलावा गंगाराम, गंगेश्वर, बटेश्वर, रामू आदि अनेक पात्र जो बाबा के सम्पर्क में आते हैं, मन पर अपनी बहुत स्पष्ट छाप छोड़ जाते हैं। रत्नावली के घर के भीतर से लेकर बनारस की गलियों तक तुमने जो कुछ देखा है, वह प्रत्यक्षवत् देखा है। तुम्हारी कला प्रत्यक्षवत् ही उसे पाठकों को दिखाती है। यह नई सिद्धि है, पुरानी कला का नया निखार है।

तुम्हारे उपन्यास में अंतर्जगत् और बाह्य जगत् परस्पर जुड़े हुए हैं। 'अन्तर-जामिहु ते बड़ बाहिरजामी' राम वाली उक्ति यहां चरितार्थ होती है। तुलसी का अन्तर्द्वंद्व और उनके जीवन का बाह्य संघर्ष एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं। तुलसी की भक्त

ग्रौर कवि वाली साधना उस युग के सामा-जिक संघर्ष से जुड़ी हुई है ग्रौर यह संघर्ष मूलतः सामन्ती व्यवस्था का ग्रान्तरिक संघर्ष है। तुलसी पर ढेले फेंकने वाले, उनके घर में ग्राग लगाने वाले वैसे ही हिन्दू थे जैसे गांधी को मारने वाला गोडसे। यह ग्रांतरिक संघर्ष कितना विकट था, कितना विकट है, यह तुम्हीं देख सकते थे, तुम्हीं देख सकते हो। तुलसीदास से जो व्यवस्था टकराई थी वह ग्रभी चूर-चूर नहीं हुई। रामचरितमानस से चली ग्राती हुई उसी संघर्ष-शृंखला की एक कड़ी 'मानस का हंस' है, ग्राज के संदर्भ में तुम्हारे उपन्यास की यही सार्थकता है।

तुमने तुलसीदास को जिन गलियों-मुहल्लों में घुमाया है; संतों, महंतों, फकीरों, कंगालों, रईसों के बीच उन्हें जिस रूप में देखा है; ग्रकाल-पीड़ितों ग्रौर महामारी से ग्रस्त नागरिकों की सेवा करते युवकदल को संगठित करते, ग्रखाड़े खुलवाते, लीला कराने के लिए ठठेरों-ग्रहीरों के चौधरियों से बतियाते, योजना बनाते दिखाया है, वह परम सत्य है, तुलसीकाव्य के ग्रलावा ग्रन्य भाषाओं के, विशेष रूप से मराठी काव्य से वह युगसत्य पुष्ट होता है।

तुम्हारी उपमाएं बहुत जगह ग्रनूठी हैं। हमें एक जो बहुत पसंद ग्राई, वह है, "दिन-भर मोहिनी रूपी ग्रपनी पीठ की खुजली को वे राम-रट रूपी जनेऊ से खुज-लाते रहे।" (पृष्ठ० 164) कई जगह तुम्हारे साधारण-से लगनेवाले वाक्य बड़ी गहरी व्यंजना लिए हुए हैं, यथा—"तुलसी के पांव ग्रब पीछे नहीं लौट सकते। यह श्मशान उसके शंखघोष से गूंजना ही चाहिए।" (पृ० 117)

तुलसीदास का व्यक्तित्व विराट् है, उसे पूरी तरह प्रतिफलित कर पाना दुस्साध्य है। फिर जाकी रही भावना जैसी; सम्भव है, हमें जो लगता है कि तुम-से छूट गया है, वही तुम्हारी सच्ची पकड़ हो। तुलसीदास रामदर्शन के लिए लाला-यित भावुक भक्त मात्र नहीं थे। वह परम-तार्किक श्रेष्ठ दार्शनिक शंकर ग्रादि की तर्क योजना से परिचित मौलिक विचारक थे। 'सौन्दर्य लहरी' में केवल माया है, ब्रह्मसूत्रों के भाष्य में केवल ब्रह्म है। 'रामचरितमानस' में ब्रह्म ग्रौर माया दोनों हैं।

तुलसीदास के समस्त संस्कार कृषक जीवन के हैं, उनकी भाषा पर ग्रवध के किसानों की बोली-बानी का गहरा रंग है। तुम्हारे उपन्यास में वह किसानों के बीच प्रायः नहीं ही दिखाई देते हैं। वह जंगलों में भी बहुत घूमे थे ग्रौर कोल ग्रादि वन्य जातियों के जीवन से परिचित थे।

'चित्रकूट जनु ग्रचल ग्रहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी।।' यह घात चूके बिना मुठभेरी मारवाली बात दण्डकारण्य के 'सहरिये'—बाघ का शिकार करने वाले कोल भीलों की ग्राखेट कला से ली गई है। बाघ के आने पर माथे पर कुल्हाड़ी से सीधा वार; घात चूका तो ग्रहेरी गया। शबरी वाला प्रसंग बढ़िया है किन्तु ना-काफी है।

तुलसीदास ज्योतिष से अवश्य परि-चित थे किन्तु तुम्हारी पुस्तक में ज्योतिष के अनेक चमत्कार हैं जो नियतिवाद की ग्रोर संकेत हैं।

—तुम्हारा
रामविलास

हिन्दी नाटक और पारसी थियेटर

—डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

(लेखक की प्रकाशनाधीन पुस्तक 'पारसी-हिन्दी रंगमंच' की भूमिका से)

आज से करीब 18-20 वर्ष पहले जब मैं हिन्दी रंगमच-जगत् में आया और आगे जब संपूर्ण रूप से इससे प्रतिबद्ध हुआ तो नाट्य-लेखन, प्रस्तुतीकरण, अभिनय, निर्देशन, रंगा-लोचन, रसरंजन (दर्शक) इन समी धरातलों पर मैंने बड़ी तीव्रता से अनुभव किया कि हमारे आधुनिक या वर्तमान रंगमंच से हमारी निजी परंपरा के बीच कोई बहुत बड़ा व्यवधान है। स्पष्ट शब्दों में मुझे अनुभूत हुआ कि आधुनिक हिन्दी रंगमंच के पीछे प्रायः साठ वर्षों तक जिस पारसी थियेटर का जीवन जिया जा चुका है, वह न तो आधुनिक रंगमंच की परंपरा के रूप में काम दे रहा है और न ही इससे हमारा साक्षात्कार हो रहा है। वह महज हमारे बीच एक ठंडे अन्तराल के रूप में उपस्थित है।

इस अनुभव को लेकर जब मैं समस्त भारत के केन्द्रों में, अहिन्दी क्षेत्रों के रंग-कर्मियों से मिला और उनसे इस विषय में विचारों का आदान-प्रदान हुआ तो किसी न किसी स्तर पर सबने यह स्वीकार किया कि किसी भी रंगमंच के लिए उसका निकट-तम अतीत और उसकी समझ तथा उससे साक्षात्कार बहुत ही अनिवार्य है। बिना निकट अतीत को जाने और बिना उसके हर पहलू से साक्षात्कार किए अपने वर्तमान की रचना नहीं की जा सकती।

इसी सत्य ने मुझे 'पारसी थियेटर' (ठेटर या थियेटर इसी नाम से जाना-पुकारा जाता था) के बीच 'पारसी-हिन्दी थियेटर' के प्रति आकर्षित किया और जैसे-जैसे मैं इस अध्ययन में लगा तो मैं इसकी विशालता, इसके फैलाव और इसकी गहराई से आश्चर्यचकित रह गया। पारसी नाटकों को प्रकाशित-अप्रकाशित रूप में पाना और उन्हें पढ़ना इतना आसान न था। इससे अधिक संकट यह था कि उस काल के महत्त्व-पूर्ण रंगकर्मी अब इस संसार में नहीं हैं। वे ऐसे रंगकर्मी थे जिन्होंने न अपने बारे में कुछ लिखा और न उनके बारे में किसीने कुछ लिखा। वे लोग बस अपनी कला में मस्त थे और पूरा पारसी थियेटर-काल उनके प्रति विमोहित था। हिन्दी में तो इस प्रसंग में कुछ भी संतोषपूर्ण सामग्री मुझे नहीं मिली। कुछ सामग्री उर्दू, गुजराती में अवश्य मिली; लेकिन उस रंगमंच के अध्ययन की सामग्री को रंगमंचीय मुहावरे में प्रकट करना और उस पूरी सामग्री को नाट्य-शिल्प की भाषा और परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्त होना, ऐसा मुझे कहीं नहीं मिला।

पिछले कितने ही वर्षों के अध्ययन और परिश्रम के बाद जो कुछ मैंने पाया, उसे विनम्र रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं। इस 'थियेटर' को इसकी समग्रता में देखने और इसके नाट्य मूल्यों को तलाशने का यह एक संकल्प-फल है। मैंने अनुभव किया कि यह

प्राप्ति हमारी परंपरा की है और यह पारसी नाट्य परंपरा जिस तरह से भी शुरू हुई हो, अंततः हमारी निजी परंपरा और हमारी संस्कृति की है। इसका प्रभाव अब तक हमारी हिन्दी फिल्मों पर है, हमारे साहित्यिक नाटकों और हमारे जन-मानस पर है और यही वह सत्य है जिसे जाने बिना हम आज आधुनिक रंगमंच की कल्पना नहीं कर सकते।

मैंने अंततः और स्वभावतः अपने अध्ययन का आधार पारसी थियेटर की नाट्य कृतियों को ही बनाया है। अनगिनत नाटकों को पढ़कर उसके भीतर से इस रंगमंच को इसकी निजी अर्थवत्ता और समग्रता में ढूंढ़ने का प्रयत्न किया है। विभिन्न भाषाओं की, विशेषकर हिन्दी क्षेत्र की, उन दिनों की पत्र-पत्रिकाओं की फाइलों से भी पर्याप्त सामग्री मिली है। इसके अतिरिक्त सौभाग्य से मुझे पारसी थियेटर के दिनों के कुछ निर्देशक, अभिनेता, संगीत-निर्देशक और रंगकर्मियों से भी मिलने का सौभाग्य हुआ।···पारसी थियेटर का यह अध्ययन मेरे लिए इतना कष्टकर और साथ ही आनंदकर था कि जब मैं घूमकर इस काल के लेखकों और कलाकारों तथा उस विशाल दर्शक समाज को याद करता हूं तो मेरा मन कृतज्ञता से भर जाता है।

बांग्ला देश ··(पृष्ठ 4 का शेष)

प्रो॰ मुनीर चौधरी की निर्मम हत्या, ढाका के पतन के दो दिन पहले बौद्धिकों के कत्ले आम में की गई थी), बांग्ला भाषा के प्रोफेसर और काजी नजरुल इस्लाम के जीवनी-लेखक रफीकुल इस्लाम, जहांगीरनगर विश्वविद्यालय के उपकुलपति आबू हसन (जो दूसरे दिन बनारस विश्वविद्यालय में 'वेदों में काव्य' विषय पर पेपर पढ़ने जा रहे थे), उपन्यासकार शौकत उस्मान (जिनका हिंदी में अनूदित उपन्यास 'धर्मयुग' में क्रमशः छपा था, पर वे डा॰ धर्मवीर भारती से कभी मिले नहीं, पत्र-व्यवहार है), डा॰ अलाउद्दीन अल आज़ाद, कवि शफीकुर्रहमान, कवयित्री बेगम सूफिया कमाल (जिनकी इंदिरा गांधी पर 'हे भारत जननी' वाली कविता बहुत प्रसिद्ध हुई), पुस्तक प्रकाशन से संबद्ध सरदार जैनुद्दीन, लोकगीतों के वयोवृद्ध संग्राहक मन्सूरुद्दीन (जिन्हें देवेन्द्र सत्यार्थी 1955 में मिले थे) आदि अनेक लोग थे।

अब मन्सूरुद्दीन साहब (37, शांति नगर, ढाका) को भारतीय लोकगीत और लोककथा के बारे में किताबें अंग्रेज़ी में या बांग्ला में चाहिए हैं। विशेषतः तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि के

(पृष्ठ 13 पर)

रूस में कूका रामसिंह का एक पत्र

—बलराज साहनी

(लेखक की कृति 'रूसी सफ़रनामा' से)

थियेटर में नताशा से फिर मुलाकात हुई। मैंने नताशा से उस पत्र का ज़िक्र किया जो कूका रामसिंह जी ने सन् 1876 में रूस के ज़ार को किसीके हाथ भेजा था। नताशा ने कहा कि वह हिन्दूशास्त्र की विदुषी मैडम लुस्तरनिक को जानती है जो इस सिलसिले में हमारी मदद कर सकती हैं। उनसे हमें मिलाने का उसने वादा किया।···

वापस होटल पहुंचे तो मैडम लुस्तरनिक हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। साठ से ऊपर उम्र होगी उनकी। प्राचीन भारत के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करने का उन्हें जनून-सा है। हमारे देश के बारे में उनका ज्ञान किसी हिन्दुस्तानी विशेषज्ञ को भी मात कर सकता है। उन्हें हमारे देश से असीम प्यार है। यह कोई अजीब बात नहीं है क्योंकि जो भी व्यक्ति भारत की बहुमुखी संस्कृति का जितना ज़्यादा अध्ययन करता है, उसकी झोली अनमोल रत्नों से भरती जाती है और वह हमारे देश को प्यार करने लगता है।

कूका रामसिंह जी के पत्र के बारे में हमारी फरमाइश मैडम लुस्तरनिक ने बड़े ध्यान से सुनी। पत्र के बारे में उन्हें पता था पर वह इतनी जल्दी कैसे और कहां से मिलेगा, इस बात पर वे सोचने लगीं।

"यह तो घास के ढेर में से सुई ढूंढने वाली बात है," उन्होंने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में कहा, "और समय भी बहुत थोड़ा है। कल रात को आप जा रहे हैं। पर कोशिश करना मेरा फर्ज़ है जो मैं ज़रूर करूंगी। मुझे शक है कि ज़ार हुकूमत के पुराने कागज़ात कहीं मास्को न ले जाए गए हों। ख़ैर, कल शाम को मैं फिर इसी समय आपसे मिलने आऊंगी और जो भी खबर होगी, दूंगी।"···

(दूसरे दिन) मैडम लुस्तरनिक को हमारी प्रतीक्षा करते हुए एक घंटे से ज़्यादा समय हो गया था। हमने उनसे माफी मांगी। वे हमारी स्थिति को अच्छी तरह समझती थीं। वे हमारे साथ हमारे कमरे में चली आईं ताकि बातों के दौरान हम सामान भी बांध सकें। डेढ़ घंटे के अन्दर हमें रेलवे स्टेशन पहुंचना था। कमरे में पहुंचने तक मैडम ने कूका रामसिंह के पत्र का कोई ज़िक्र नहीं किया। हम प्रश्नवाचक दृष्टि से एक-दूसरे की तरफ देखते रहे। अगर पत्र नहीं मिला तो मैडम को ऊपर आने की तकलीफ करने की क्या ज़रूरत थी ?

कमरे में पहुंचकर हम बैठक में मेज़ के गिर्द बैठ गए। उसी खामोशी से मैडम ने अपना बैग खोला और उसमें से कूका रामसिंह का पत्र निकालकर हमारे सामने रख दिया। वह गुरुमुखी लिपि में लिखा हुआ था। हमने उसकी नकल उतार ली। उसमें लिखा था— " एक ओम्कार सतगुरु ।।

“लिखा बाबा [illegible] का । हमने रूसनाथ की ओर एक सूबा भेजा है, उसकी ज़बानी बात समझ लेनी । गुरुवचन सिंह सूबे का नाम है । गुरु गोविन्दसिंह जी का वचन है कि जब 1278 हिजरी आवे तब संत खालसा प्रकट होवेगा । नरंगजेब से वचन हूआ है, इंग्लिश दु:ख देवेगा नामधारियों को, तब रूस आवेगा, अंग्रेज़ को दूर करेगा । और रूस बहादुर की जीत होगी । गुरु बावे नानक साहब जी का वचन हैं, मैं अवतार धारूँगा ।

> एक···?···सितम ते आवै । करे जुद्ध बहु दुन्द मचावै । शेशनागहि अन्त को पावै । ब्रह्मा बिशन अन्त नहिं पायो । नेत-नेत कर मुखों अलावै । सरब दीप के राजा जानो । करन जुद्ध ते···? कठि आनो । रकत ताजिया तंग परशनों विच पशौर, खंडा घोड़ा मर्द जो ढूंढ़ रहे सम ठौर । लाहौर शहर जब होसी जंग । रकत ताजिया तब होसी तंग । रोज रुपया नौकर हाथ ना आवै ।

“गुरुनानक साहब का हुक्म है नाथ जी आवैगा, तिसंकी जीत होवेगी, तीन लाख पन्द्रह हजार सिख हमारे बस में हैं । और भी किए जा रहे हैं । पंजाब उजरेगा, शहर जलेंगे । आठ युद्ध होवेंगे । अंग्रेज चौंतीस बरस रहेगा हिन्द में । दो बरस बाकी रहते हैं । [illegible] (जार) नाथ [illegible]पुर (पीटर्सवर्ग) से आवेगा । और पंजाब में सब छावनियां खाली पड़ी हैं । आठ सिखों ने दंगा किया । असबर भी पहल की है । एक सूबा सौ सिख बेगुनाह मरे हैं । भजन-बंदगी वाला उन आठों के अलावा उन्होंने तोप के आगे रखे हैं । आपको हुकुम बाबा नानक जी का कि हमारी रक्षा करें । तीन लाख पन्द्रह हजार सिख आपके लिए तैयार हैं । और भी इकट्ठे किए जा रहे हैं । जिस समय आयें और चाहें उसी समय हाजिर होंगे । और जी सब सिखों ने अर्ज की थी श्री गुरु दसवें पातशाह गुरु गोविन्दसिंह जी के पास कि कहां-कहां आठ युद्ध होंगे । एक काबुल के पहाड़ों में, एक काबुल में, एक जमरौद में, एक पेशावर में, एक जम्बू में, एक लाहौर में, एक फीरोजपुर में, एक लुधियाने में । और जी मुख्तयारकाह बाबा बुद्धसिंह भैणी में रहते हैं । पैंतीस सूबे उसके आगे काम देने वाले हैं ।”

हम हैरान रह गए । बेचारी मैडम लुस्तरनिक कहां-कहां भटकी होंगी इस पत्र की खोज में । हमारी आंखें भर आईं । कुछ उस दु:खी देशभक्त को याद करके जिसके साथियों को फिरंगी ने तोप से मरवा डाला था, और कुछ उस महिला के अहसान को देखकर जिसका बदला हम चुका नहीं सकते थे ।

महान लेखिका और मानवी पर्ल बक

—आशारानी व्होरा

(लेखिका की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक "नोबल पुरस्कार विजेता महिलाएं" से)

साहित्य में 1938 का नोबल पुरस्कार प्रख्यात लेखिका पर्ल बक को मिला। इस साहित्यिक पुरस्कार से सम्मानित होने वाली आप अमेरिका की प्रथम महिला थीं, जो 80 वर्ष की आयु तक उद्देश्यपूर्ण लेखन और समाज सेवा दोनों कार्यों में जुटी रहीं।

"मैं एक अजीव किस्म की नारी हूं, जो लिखे बिना सुखी नहीं रह सकती।" कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के पत्रकारिता स्कूल में भाषण देते समय अपने संबंध में यह वाक्य बोलने वाली पर्ल एस० बक सचमुच एक ऐसी धनी लेखिका थीं जिन्होंने वृद्धावस्था में अपनी आत्मकथा के अंत में भी यही लिखा, "कोरे कागज़ों का एक दस्ता मेरी मेज़ पर रखा हुआ पुस्तक की प्रतीक्षा कर रहा है। मैं एक लेखिका हूं, अत: नई पुस्तक लिखने के लिए अपना पेन उठा लेती हूं।"

पर्ल एस० बक बीसवीं सदी की एक ऐसी आदर्श चरित्र और महान व्यक्तित्व की धनी महिला थीं जिसपर संसार की हर नारी गर्व कर सकती है। उनका सम्पूर्ण लेखन पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाली एक कड़ी के रूप में है। मानव और मानव के बीच की खाई को पाटने का, विश्व-बंधुत्व की भावना को फैलाने का और मनुष्य में सोई सद्भावना को जगाने का जितना काम अकेली पर्ल बक ने किया है, उतना शायद किसी भी एक साहित्यकार ने नहीं। उनका अपना व्यक्तित्व भी पूर्व-पश्चिम दोनों से इतना अधिक जुड़ा है कि उन्हें अमेरिकी उपन्यासकार कहें या चीनी, इसपर भी मत-भेद है।

पर्ल एस०बक अमेरिका में जन्मीं, चीन में पलीं, रहीं और फिर अपने देश अमेरिका में आ बसीं। पर अमेरिकी होने और अमेरिका में रहने पर भी वे स्वयं को एशिया के ही अधिक निकट पाती थीं।

पर्ल एस० बक चाहती थीं कि कलाकार अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें। बदलती स्थितियों से न तो उहें भयभीत होना चाहिए, न निराश। साहित्यकार ही जीवन के तथ्यों की खोज कर संसार को नई राह दिखा सकता है। मानव जाति की व्याख्या करना और एक उन्नत सुखी समाज की कल्पना ही नहीं, निर्माण करना भी उसीका काम है। यह महत्त्वपूर्ण कार्य मनुष्य की सामान्य समझ के विकास से सम्पन्न होगा; मनुष्य-मनुष्य में भेद मिटाकर ही संभव होगा।

स्वयं पर्ल एस० बक ने इस ज़िम्मेदारी को बखूवी समझा और निभाया। उनका सम्पूर्ण लेंखन एक उद्देश्यपूर्ण लेखन है, और यही उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि भी है।

उनकी विश्वविख्यात कलाकृति 'द गुड अर्थ' भी चीनी पृष्ठभूमि पर ही लिखी हुई है । 1931 में इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही सारी दुनिया में इसकी चर्चा हुई । विश्व की सभी पुस्तकों में सर्वाधिक बिक्री उसकी हुई और पर्ल एस० बक को संसार की एक असाधारण उपन्यासकर्त्री के रूप में मान्यता इसी पुस्तक ने दिलाई ।

पर्ल एस० बक का जन्म हिल्सबोरो, वेस्ट वर्जीनिया में 26 जून, 1892 में हुआ था । माता-पिता चीन में अमेरिकी मिशनरी थे । बालिका पर्ल पांच महीने की आयु में ही अपने माता-पिता के साथ चीन आ गई थीं । उनका बचपन अमेरिकी जीवन की तड़क-भड़क से दूर चीन के किसान परिवारों के बीच व्यतीत हुआ । उन्हें अपनी बूढ़ी चीनी नर्स से बौद्ध और ताओ धर्म की अनेक आश्चर्यजनक कहानियां सुनने को मिलीं ।

श्रीमती पर्ल एस० बक का प्रथम उपन्यास 'ईस्ट विंड, वेस्ट विंड' 1930 में प्रकाशित हुआ था । इसका प्लाट उन्होंने चीन से अमेरिका जाते हुए यात्रा के दौरान अपने जहाज़ के एकान्त कमरे में बैठकर सोचा था । अंग्रेज़ी जहाज़ के यात्री औपचारिकता में बंधे एक-दूसरे से कम से कम बोलते थे, जबकि एशिया में उन्हें खुला वातावरण मिला था । यही विषय उनके प्रथम उपन्यास की प्रेरणा बना । इस उपन्यास के लेखन-प्रकाशन की कहानी भी बड़ी मार्मिक है । 1926 में उन्होंने इसे लिखना प्रारंभ किया था । मार्च, 1927 में नानकिंग में राष्ट्रीय सैनिकों ने विदेशी परिवारों की लूट-मार शुरू कर दी । श्रीमती पर्ल एस० बक का घर जला दिया गया, जिसमें उनके लगभग सम्पूर्ण उपन्यास की पाण्डुलिपि भी जलकर राख हो गई । आक्रमण से कुछ ही मिनट पूर्व श्रीमती बक अपनी दो अबोध बच्चियों और पति के साथ घर से भाग निकलीं । वे इस तरह बाल-बाल बचकर तेरह घंटों तक एक चीनी बुढ़िया के मकान के तहखाने में छुपी रहीं ।

श्रीमती पर्ल एस० बक मात्र एक उपन्यास लेखिका ही नहीं थीं वे स्वयं में एक संस्था थीं, मानववादी संस्था। चीन-अमेरिका, पूर्व-पश्चिम को जोड़ने वाली एक सांस्कृतिक कड़ी के रूप में उन्हें याद किया जाता है और सदा याद किया जाता रहेगा । वे अपने द्वारा संस्थापित 'पूर्व-पश्चिम संघ' की अध्यक्षा थीं और वृद्धावस्था में भी अपनी कृतियों तथा इस संस्था द्वारा एक सामान्य विश्व-संस्कृति के निर्माण में रत रहीं। इसके बाहर कुछ भी देखने या सोचने की उन्हें फुर्सत नहीं थी । वे एक लम्बे समय तक जान सेजेस के छद्म नाम से अमेरिकी जीवन का भी चित्रण करती रहीं और उन्हें इस चित्रण में भी उतनी ही सफलता मिली है, जितनी कि चीनी जन-जीवन के चित्रण में ।

उन्हें पुरस्कार देते समय स्वीडिश अकादमी ने कहा, "चीन के किसानों के यथार्थ जीवन के महाकाव्य जैसे चित्रण के लिए इन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।"

• •

बांग्ला देश··· (पृष्ठ 8 का शेष)

बारे में उनके संग्रह में बहुत कम पुस्तकें हैं। कोई सज्जन उनकी मदद करें तो बहुत अच्छा हो। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उनकी 'हारामनी' पुस्तक जब छपी थी, स्वयं गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने उनकी प्रशंसा की थी। वह रविबाबू का पत्र उन्होंने जड़ाकर रखा है। कई घंटों के बाउल-गीतों के टेप-रेकार्ड उनके पास हैं।

दूसरे बड़े विद्वान डा० जकारिया (शिक्षा सचिव, बांग्ला देश सरकार, सचिवालय, ढाका) मिले जिन्होंने सात सौ पृष्ठों की पुस्तक पूर्व बंगाल के नाथ सिद्ध जोगी संप्रदायों पर लिखी है। संस्कृत, अरबी, फारसी, हिंदी के विद्वान हैं। पर उन्हें डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'नाथ संप्रदाय' और महापंडित राहुल सांकृत्यायन के 'दोहाकोश' के बारे में पता नहीं था। रा० चि० ढेरे ने मराठी में 'नाथ संप्रदाय' के महाराष्ट्र विषयक एतिह्य पर बड़े काम की किताब लिखी है। पर बांग्ला देश में मराठी जानने वाले इक्का-दुक्का ही कोई होंगे। हमारे दूतावास में एक गुजराती सज्जन मिले थे, जो सेना से संबद्ध थे, मराठी फर्राटे से बोलते थे।

तीसरे अच्छे शोधकर्मी बांग्लादेश के पुरातत्त्व विभाग (वहां 'प्रत्न विभाग' कहते हैं) के संचालक डा० ज़फर मिले। वे भारत में आ चुके हैं और कई ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा कर चुके हैं। वे अल्लाउद्दीन-पद्मिनी के किस्से में रुचि रखते हैं। उन्हें मैंने बताया कि स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की 'पद्मावत' (संजीवनी टीका) और उसकी भूमिका बड़ी महत्त्व की पुस्तक है। तो बोले—"यह पुस्तक मुझे भिजवा दीजिए।"

भारत और बांग्लादेश के बीच ऐसी कितनी ही साहित्यिक-सांस्कृतिक कड़ियां हैं जिनके इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, मानव वंशशास्त्र, कला, साहित्य, भाषा-तत्त्व आदि की खोज में सैकड़ों भारतीयों को जुट जाना चाहिए। बांग्ला देश के विद्वान 1947 से 1971 तक भारत के बारे में पूर्णतः अंधकार में या कहें अज्ञान में रहे। अब भी उनको ज्ञान कलकत्ते से पहुंचने वाली कुछ पत्र-पत्रिकाओं (विशेषतः बांग्ला) से ही मिलता है। क्या हमारे पुस्तक-प्रकाशक, विक्रेता, साहित्य-प्रेमी ऐसा यत्न करेंगे कि अधिकाधिक मात्रा में हमारे उत्तम प्रकाशन (विशेषतः अंग्रेज़ी और बांग्ला, इन दो भाषाओं का ज्ञान उन्हें विशेष है) ढाका तक पहुंचे।

वहां का सबसे अविस्मरणीय अनुभव था मीरपुर मुहम्मदपुर के शहीद-स्मारक के बाद, काजी नज़रुल इस्लाम के दर्शन। वे विस्मृति के कुहरे से लिपटे, जर्जर शरीर हैं। पर उनकी नातिनें मिष्ठि और खिलखिल काजी जब उनके गीत 'बाबा' को सुनाती हैं, तो क्षण में उनका चेहरा रुआंसा हो उठता है, क्षण में मुसकान से उद्दीप्त। 'निराला' कम से कम बोलते थे, नज़रुल बोल भी नहीं पाते।

---

5. **विषाद मठ** (उपन्यास) : रांगेय राघव के इस उपन्यास में बंगला के अकाल का लोमहर्षक चित्रण है। लेखक ने तब बंगाल जाकर जो कुछ देखा उस सबका यथार्थ और सजीव चित्रण किया है।

1. **हाल मुरीदों का** (उपन्यास) : पंजाबी के प्रसिद्ध कथाकार कर्तारसिंह दुग्गल ने इस उपन्यास में एक विशाल कैनवास पर पंजाब की आधी सदी के जीवन का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास वस्तुतः पंजाबी जीवन का महाकाव्य है। 20.00

2. **जोगी मत जा** (उपन्यास) : बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विमल मित्र के इस नये उपन्यास में राजघराने की अभेद्य चारदीवारी में बन्द एक विधवा रानी की कहानी प्रस्तुत की गई है जो पुरुषों से प्रतिकार लेने के लिए हिंसक बन जाती है। शुरू से अन्त तक रोचक। 6.00

3. **नोबल पुरस्कार विजेता महिलाएं** (जीवनी) : सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका आशारानी व्होरा ने शांति, साहित्य, विज्ञान के क्षेत्रों में महान सेवा के उपलक्ष्य में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाली महिलाओं की रोचक जीवन-झांकियां और उनके कार्यों का विवरण दिया है। सभी के लिए उपयोगी और प्रेरणाप्रद। 6.00

4. **मेरी प्रिय कहानियां** (शिवानी) : प्रस्तुत संकलन में लोकप्रिय लेखिका शिवानी ने अपनी मनपसन्द कहानियां एक रोचक भूमिका के साथ प्रस्तुत की हैं। 6.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

मेरी प्रिय कहानियां

(1) शैलेश मटियानी (2) कमलेश्वर

(1) 'मेरी प्रिय कहानियां' सीरीज़ में प्रकाशित शैलेश मटियानी की नौ कहानियों का संग्रह उनके कथा-संसार का अच्छा प्रतिनिधि है। संग्रह की भूमिका में उन्होंने कहानी की रचना-प्रक्रिया के सम्बन्ध में कुछ अनुभूत और सही बातें कही हैं। जैसे, उनके इस कथन से मैं अपने को न केवल सहमत पाता हूं अपितु इसमें हिन्दी की 'नई कहानी' के बाद की पीढ़ी के कहानीकारों के शीघ्र चुक जाने का एक मूलभूत कारण भी पाता हूं। शैलेश मटियानी का कहना है : "इसीलिए तात्कालिक स्तर की जानकारियों और जान चुकने की आत्मप्रतीतियों में से लिखे गए साहित्य की अपेक्षा, जान सकने की आकांक्षाओं में से रचा गया साहित्य हमेशा ज़्यादा मूल्यवान होता है। मात्र अनुभूतिशीलता में से लिखना ही सम्भव हो पाता है—सम्भवतः ज़्यादा आसान भी—मगर रचने की शुरुआत हमेशा अनुभवसम्पन्नता में से ही होती है।" (पृ० 6) तात्कालिक एवं व्यक्तिगत अनुभूतिशीलता के आधार पर लिखने वाले कहानीकार की पूंजी शीघ्र ही चुक जाती है। मटियानी की भूमिका में न तो आत्मश्लाघा की गन्ध है और न कोई फलसफा ही झाड़ा गया है। स्पष्टतः इस प्रश्न का उत्तर मटियानी ने नहीं दिया है कि उन्हें ये कहानियां प्रिय क्यों हैं ? किन्तु यह अवश्य संकेतित है कि इन कहानियों की रचना मुख्यतः उन अनुभवों के आधार पर हुई है जिनके साथ स्वयं कहानीकार संसक्त है और जिन्होंने कहानीकार की चेतना का निर्माण किया है। इसीलिए शैलेश मटियानी की कहानियों का एक विशिष्ट संसार बन सका है।

शैलेश मटियानी की कहानियां उन लोगों का चित्रण करती हैं जो दलित, प्रताड़ित और पीड़ित हैं। उनके प्रायः सभी पात्रों की परिस्थितियां भयंकर हैं। अनेक पात्र तो पशुओं के लिए भी असहनीय स्थितियों में जीवित हैं। किन्तु परिस्थितिगत अमानवीयता में भी मानवीयता जीवित है। अतः शैलेश की कहानियां झकझोरती हैं किन्तु निराश नहीं करतीं। मनुष्य के प्रति मनुष्य की क्रूरता के कारण वे हममें आशंका उत्पन्न करती हैं किन्तु मनुष्यता पर से हमारी आस्था को डिगाती नहीं हैं। उनकी कहानियों की आस्था एवं आशावाद कहीं भी आरोपित होने का आभास नहीं देता।

शैलेश मटियानी की कहानियों में जरायमपेशा स्त्री-पुरुषों, भिखमंगों या उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों के निर्धन ग्रामीण जनों का मार्मिक चित्रण है। उनमें सहज आंचलिकता का रंग है। आंचलिकता कृत्रिम रूप से लोकगीतों, लोककथाओं, निरर्थक ध्वनियों तथा स्थानीय भाषा के शब्दों के अत्यधिक प्रयोग से नहीं रची गई है। इन कहानियों का संसार विशिष्ट है और हिन्दी कहानी के इतिहास को देखते हुए विरल

भी। कारण, लेखक की अपनी स्थिति और अनुभव हैं। शैलेश मटियानी ने समाज के दलित लोगों के जीवन को निकट से भोगा है। यह उनकी कहानियों की विशिष्टता और शक्ति का मुख्य कारण है।

कहा जा सकता है कि शैलेश मटियानी की कहानियों का यह संग्रह उनकी श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है। □

(2) कमलेश्वर ने 'राजा निरबंसिया' से लेकर 'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था' तक की अपनी लम्बी कथायात्रा में से केवल दस प्रिय कहानियां चुनने का जो जोखिम उठाया है उसकी सार्थकता पुनर्मूल्यांकन के लिए आधार प्रस्तुत करने के साहस में तो है ही साथ ही भूमिका में व्यक्त हुए कहानी की सामयिक ज़रूरत के स्वीकार में से उपजे 'नये' के स्वागत के आग्रह की उदारता में भी विद्यमान है।

इन दस कहानियों के नेपथ्य में एक संश्लिष्ट एहसासों की दुनिया है। कालखंड की परिधि में मानसिकता के विकास का एक मर्यादित इतिहास है। यह दुनिया और इतिहास या दुनिया का इतिहास कल्पना के भ्रम को तोड़ने से शुरू होता है और यथार्थ से साक्षात्कार करके भी अन्त की ओर मुड़ना नहीं चाहता। शायद इसका कोई अन्त है ही नहीं। सम्भवत: इसी कारण यहां का इन्सान अपने-आपसे या दूसरों से लड़ नहीं रहा, बचकर निकल जाने की कोशिश में है। 'राजा निरबंसिया' और 'बयान' की आत्महत्याएं इसी कोशिश का नतीजा कही जा सकती हैं।

अपने अन्तरपक्ष को लेकर ये कहानियां दु:ख या यातना की फिलासफी नहीं हैं, एक नैसर्गिक बोध हैं, जो पाठक पर [illegible] निर्णय नहीं लादतीं उसको नई दृष्टि प्रदान करती हैं। यह दृष्टि आम तौर पर पाठक का स्वयं का निर्णय हो जाती है। इस प्रकार स्वयं के निर्णय की रोशनी में ये कहानियां पाठक को, जिसे वह सामान्य समझकर पास से गुज़र जाने दे चुका होता है या पैरों के निशानों की तरह पीठ पीछे छोड़ चुका होता है, उसकी विशिष्टता या शिद्दत का एहसास करवाती हैं।

रचना के अलग प्राणवान व्यक्तितत्व की स्वीकृति के सन्दर्भ में ये कहानियां एक ही परिवार की समस्याएं-सी लगती है। वर्णसंकरता दिखाई देती है तो केवल अन्तिम कहानी—'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था' में। इस कहानी द्वारा कमलेश्वर ने अपने ही परिवार के संस्कारों (जो रूढ़ियों का रूप ले चुके थे) को खंडित करने का सुखद साहस दिखाया है। यही साहस है जो उन्हें '65 के बाद की अमूर्त एहसासों का विश्लेषण करने वाली कहानी का सहयात्री बना देता है।

फिर भी ये कहानियां यत्नसाधित नहीं हैं। हर धड़कन, हर सांस के साथ स्वत: बुन गई-सी लगती हैं। कहानियों में जो यातना का जंगल दिखाई देता है वह उगाया नहीं गया है, उपजा है। अपनत्व के गर्व की धूल इस जंगल में देखी जा सकती है। पर इस अपनत्व या स्वानुभवों में खुशी या मुस्कराहट के लिए कोई जगह क्यों नहीं है? यातनाओं को प्रतिबिम्बित करने के लिए इसे केवल दर्पण के रूप में ही इस्तेमाल क्यों किया गया है?

('समीक्षा')

'आतंक' (नरेन्द्र कोहली) पर 'कृति' की गोष्ठी

25 मार्च, 1973 को नरेन्द्र कोहली के नये उपन्यास 'आतंक' पर विचार करने के लिए 'कृति' नामक संस्था की गोष्ठी नई दिल्ली में हुई।

लिखित समीक्षा में गीता कपूर ने कहा, "वास्तव में उपन्यास के कथ्य की बेलौस सच्चाई और ज़िन्दगी से उसका सीधा संबंध इस उपन्यास की ऐसी शक्ति है जो पाठक और लेखक के बीच के हर औपचारिक छिपाव को हटाती है और पाठक के मन में सुगबुगाते हुए आतंक को उभाड़कर रख देती है।"

डा० सुरेन्द्र सहाय और दिविक रमेश ने भी अपने निबंध पढ़े। दिविक रमेश ने लेखक की इस विश्वास के लिए प्रशंसा की कि वह जन-सामान्य को भ्रष्ट नहीं मानता और उसकी यह निश्चित धारणा है कि जनसाधारण को भ्रष्ट करने वाले इस सुव्यवस्थित षड्यन्त्र के केन्द्र में स्वयं सत्ताधारी राजनीतिक दल है।

गोष्ठी की संयोजिका मीरा सीकरी न तीनों लिखित समीक्षाओं की तुलना करते हुए निष्कर्ष निकाला कि यह उपन्यास बौद्धिक फैशन के रूप में नहीं लिखा गया है; वरन् यह जीवन के वास्तविक एवं यथार्थ खौफ़ को भली भांति अभिव्यक्ति देता है।

हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार मन्मथनाथ गुप्त का मत था कि प्रगतिवाद आज भी साहित्य में जीवित है; और इसका प्रमाण नरेन्द्र कोहली का सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'आतंक' है। इस युग की अनेक मानवीय, राजनैतिक तथा पारिवारिक 'इन फाइट' की समस्याओं का इस उपन्यास में सुन्दर चित्रण हुआ है।

डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने निहायत आत्मीय भाव से कहा कि नरेन्द्र कोहली ने एक सही जमीन की तलाश कर इस उपन्यास में समसामयिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं पारिवारिक. समस्याओं का प्रामाणिक एवं पूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास को पढ़कर लेखक से बहुत सारी आशाएं बंधती हैं।

सत्येन्द्र शरत ने कहा कि सब लोगों का ध्यान आतंक तथा तत्सम्बद्ध घटनाओं एवं समस्याओ की ओर ही अधिक आकर्षित हुआ है जो सर्वथा स्वाभाविक है; किंतु उपन्यास में इसके अतिरिक्त अनेक ऐसी समस्याएं भी हैं जिनका हममें से प्रत्येक चौथे-छठे आदमी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार होता है और जो अब तक हमारे साहित्य में असंस्पर्शित ही हैं। जैसे एक अर्जक (earning) पत्नी कतिपय परिस्थितियों में पति के स्वाभिमान के लिए चुनौती बन जाती है; या बच्चे की शिक्षा को लेकर उसके स्कूल के चुनाव के संबंध में एक द्वन्द्व जन्म लेता है, जो कई बार गंभीर रूप धारण कर लेता है, या अपनी दाम्पत्य सुविधा के लिए अपनी मां, बहन, भाई इत्यादि के प्रति क्रूर प्रवंचना का अवलम्ब ग्रहण करने की विवशता होती है। उन्होंने उपन्यास में यत्र-तत्र बिखरे हुए व्यंग्य-वाक्यों की भी चर्चा की और उन्हें अत्यंत प्रभावकारी बताया।

समाचार

पिकासो का निधन

विश्वविख्यात कलाकार पाब्लो पिकासो का 91 वर्ष की अवस्था में पेरिस में निधन हो गया। वे इस शताब्दी के सबसे महान कलाकार थे। अपनी कृतियों से उन्होंने करोड़ों रुपया कमाया। वे स्पेन में पैदा हुए थे परंतु स्थायी रूप से 1946 में फ्रांस में आकर बस गए थे। उनके बनाए चित्रों की कुल संख्या 14 हज़ार के लगभग है। वे पुस्तकों के लिए भी चित्र बनाते थे जिनकी संख्या 34 हज़ार है।

डा० धीरेन्द्र वर्मा का निधन

हिन्दी के विद्वान तथा भाषा-विज्ञान के प्रखर पंडित डा० धीरेन्द्र वर्मा का इलाहाबाद में स्वर्गवास हो गया। वह 76 वर्ष के थे।

डा० धीरेन्द्र वर्मा 1932 में इलाहाबाद वि० वि० में प्राध्यापक नियुक्त हुए थे तथा 1952 में उन्होंने हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से अवकाश ग्रहण किया।

'हिन्दी भाषा का इतिहास' तथा 'ब्रज भाषा' उनकी मुख्य पुस्तकें थीं। हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के विकास के बारे में उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं, हिन्दी विश्वकोष का सम्पादन किया तथा भारतीय हिन्दी परिषद् की स्थापना भी की।

हिन्दी को आधुनिक रूप देने में डा० धीरेन्द्र वर्मा ने उल्लेखनीय कार्य किया।

दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' को 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। यह पुरस्कार उन्हें उनके महाकाव्य 'उर्वशी' पर प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर राजपाल एण्ड सन्ज़ तथा 'नया साहित्य' उन्हें हार्दिक बधाई देता है।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' को पुरस्कार

राजस्थान के प्रसिद्ध कथाकार श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' को उनके उपन्यास 'हूं गोरी किण पीव री' पर 2100 रुपये का विष्णुहरि डालमिया पुरस्कार तथा राजस्थानी भाषा साहित्य संगम का 1000 रु० का सूर्य्यमल्ल पुरस्कार एक साथ प्राप्त हुआ है।

खलील जिब्रान के प्रेमपत्रों का प्रकाशन

प्रसिद्ध लेखक खलील जिब्रान और उनकी प्रेमिका मेरी हैस्केल के प्रेमपत्रों को 'बिलवेड प्राफेट' नामक पुस्तक में प्रकाशित किया गया है जिसका सम्पादन वर्जीनिया हिल्स ने किया है। मेरी हैस्केल अमेरिका में अध्यापिका थीं और पुस्तक से ज्ञात होता है कि जिब्रान उनसे शादी करना चाहते थे। मेरी भी उन्हें प्यार करती थीं परंतु शादी के लिए वे तैयार नहीं हुईं।

आगामी प्रकाशन

1. **पारसी-हिंदी रंगमंच** : डा० लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार हैं। उनकी अनेक नाट्य रचनाओं का सफल मंचन हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तक में सवाक् फिल्मों के आने से पहले के पारसी-हिन्दी नाटकों का उन्होंने विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया है। पारसी-हिन्दी नाटक एक समय भारतीय जीवन पर छाए हुए थे और उनका आकर्षण आज की फिल्मों से कम नहीं था। पुस्तक में इस सबका रोचक चित्रण है।

2. **भारत के लोकनृत्य** : डा० श्याम परमार की इस पुस्तक में भारत के सभी प्रान्तों के लोकनृत्यों का रोचक वर्णन चित्रों के साथ प्रस्तुत हुआ है। भारत के कुछ प्रमुख नृत्यों को छोड़कर लोक-जीवन में व्याप्त लोकनृत्यों के बारे में अब तक लिखित रूप में कहीं कुछ नहीं मिलता है। लेखक ने पूरे अध्यवसाय से इन नृत्यों का गहरा अध्ययन कर पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया है।

3. **भारत के जंगली जीव** : ब्रिटेन के प्राणी-विशेषज्ञ ई० पी० जी की सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक 'दि वाइल्ड लाइफ आफ इण्डिया' का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें भारत के जंगलों और प्रमुख चिड़ियाघरों में पाए जाने वाले विभिन्न जीव-जन्तुओं के आन्तरिक जीवन की कौतूहल जगाने वाली बातें और लेखक द्वारा लिए उनके फोटोग्राफ हैं। ई० पी० जी ने अपना आधा जीवन भारत में बिताकर अपनी रुचि को तृप्ति देने के लिए इन जंगली जीव-जन्तुओं से जो घनिष्ठ साहचर्य बनाए रखा वह इस पुस्तक क प्रति पृष्ठ पर दिखाई देता है।

4. **भारतीय सेना और युद्ध कला** : प्रस्तुत पुस्तक में ले० कर्नल गौतम शर्मा ने वैदिक काल से आज तक के भारतीय सेना के संगठन और युद्ध-कौशल, भारत की युद्ध-नीति और प्रमुख युद्ध में भारत की हार-जीत का विश्लेषण विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के बाद भारत पर बार-बार आए युद्ध-संकट और उनमें हमारी जीत के क्या रहस्य हैं, हमारी सैनिक शक्ति कितनी है, 'भारतीय सेना और युद्ध-कला' को पढ़कर यह सब समझने में सुविधा मिलती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32

रजिस्टर्ड नं० डी-411

पुस्तकें : शिक्षा और आनन्द का बेजोड़ साधन

—डा० जाकिर हुसेन

पुस्तकें हमें जीवन के नये रूप दिखाती हैं, जीने का ढंग सिखाती हैं। दुखियों को वे तसल्ली देती हैं, ज़िद्दियों को दंड देकर राह पर लाती हैं। मूर्खों की वे लानत-मलामत करती हैं, अक्लमन्दों क. ताकत देती हैं। एकान्त में वे हमें सहारा देती हैं। संसार और मनुष्य की क्षणभंगुरता को भुलाने में हमारी मदद करती हैं, हमारी निराशाओं को थपकियां देकर सुलाती हैं।

पुस्तकें सिखावन देती हैं, सलाह देती हैं, बढ़ावा देती हैं, झिड़की सुनाती हैं, लेकिन जितने की आपको आवश्यकता है, उतना ही उससे एक अक्षर भी ज़्यादा नहीं। कभी-कभी हम जो अटपटे और मूर्खता-भरे सवाल पूछ बैठे हैं, उनसे वे खफा नहीं होतीं। वह मुस्कराकर चुप्पी साध लेती हैं। जो लोग एकाकी हैं, उनके लिए पुस्तक सचमुच बड़ी बेजोड़ साथिन है। जो सीखना-सिखाना चाहते हैं, उनके लिए वह बेजोड़ गुरु हैं, और आनन्द का बेजोड़ साधन है।

जो लोग कुछ सीखना-सिखाना चाहते हैं, उन्हें तो पुस्तकों के साथ ज़िंदगी-भर का रिश्ता जोड़ लेना चाहिए। सीखने का भी कोई अन्त है? हमेशा सीखने के लिए कुछ न कुछ बचा ही रहेगा।

हां, सीखने का कोई अन्त नहीं है, और सीखने के लिए आदमी को पुस्तकों के पास ही जाना पड़ेगा। लेकिन हम सिर्फ सीखने के लिए ही पुस्तकों का साथ नहीं ढूंढ़ते, आनन्द के लिए भी हम उनके पास जा सकते हैं।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित
सम्पादक : विश्वनाथ

नया साहित्य

वर्ष 18
अंक 6
जून, 73
वार्षिक मूल्य 5.00

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार स्व० भगवती प्रसाद वाजपेयी
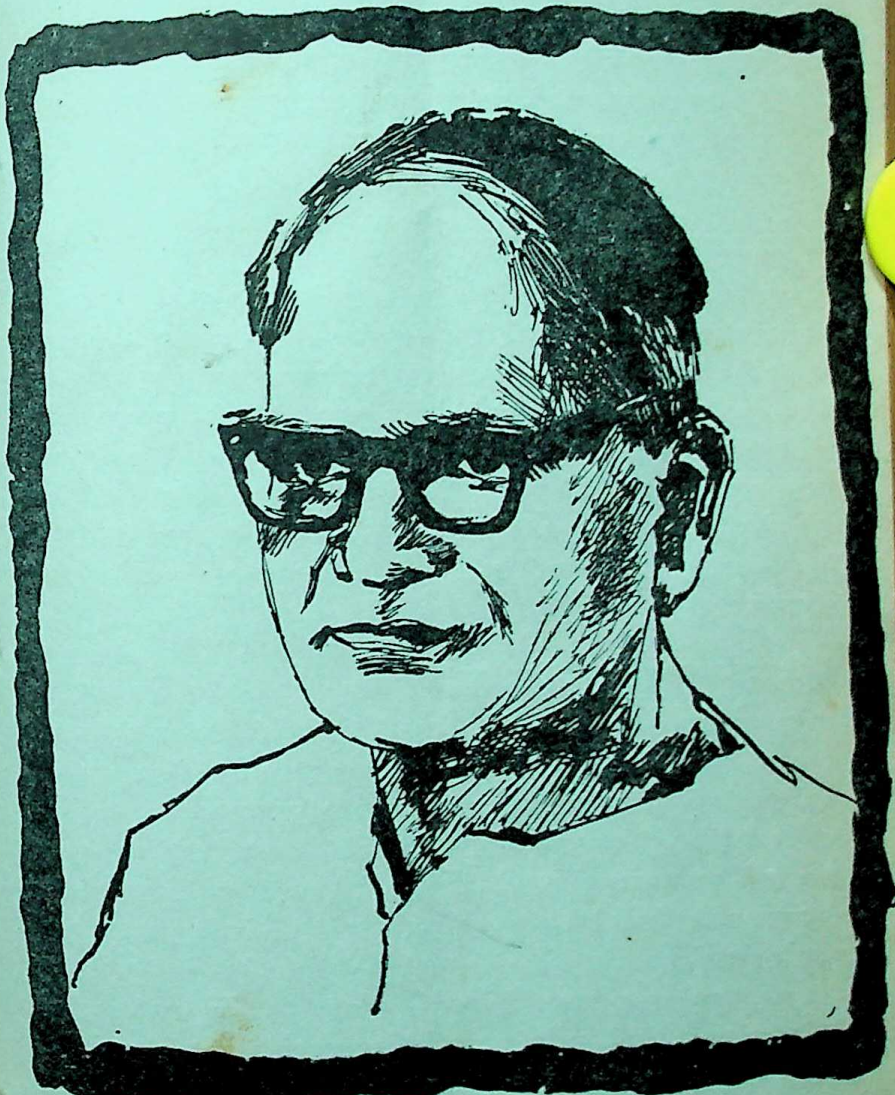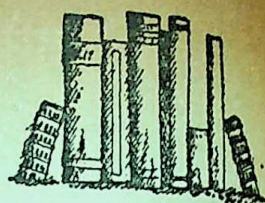
किताबों की दुनिया

नोबेल पुरस्कार की राशि बढ़ी

नोबेल फाउण्डेशन की एक घोषणा के अनुसार इस वर्ष नोबेल पुरस्कार की राशि बढ़कर 9 लाख रुपये के लगभग हो गई है। गत वर्ष यह 8.50 लाख रुपये थी। 1953 से अब तक इस राशि में 200 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसका कारण यह है कि अब नोबेल फाउण्डेशन विभिन्न व्यवसायों में अपना धन लगाने को स्वतंत्र है जिससे उसे आमदनी होती है और यह आमदनी प्रतिवर्ष बढ़ती जाती है।

पांचवीं योजना में साक्षरता-प्रसार

भारत सरकार ने योजना बनाई है कि पांचवीं योजना के अन्तर्गत देश में बड़े पैमाने पर साक्षरता-प्रसार का कार्य किया जाए और प्रतिवर्ष 1 करोड़ के हिसाब से पांच वर्षों में 5 करोड़ व्यक्तियों को साक्षार बना दिया जाए। इसका एक सीधा परिणाम यह भी होगा कि शिक्षक के रूप में लोगों को काम मिलेगा और अनुमान है, प्रतिवर्ष 80 हजार शिक्षकों की आवश्यकता होगी। गत दस वर्षों में देश में यद्यपि साक्षरता-प्रसार का अनुपात 24 से बढ़कर 29 हुआ है परंतु निरक्षर व्यक्तियों की संख्या 33 करोड़ से बढ़कर 38.50 करोड़ हो गई है। 15 से 44 वर्ष के आयुवर्ग में 16 करोड़ लोग निरक्षर हैं। यह आयुवर्ग ही देश के कामकाज में हिस्सा लेता है, इसलिए इसीमें साक्षरता बढ़ाने की योजना है।

हिंदी के विकास के लिए 21 करोड़ रुपये

भारत सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि पांचवीं योजना में हिन्दी के विकास के लिए 21 करोड़ रु० की राशि व्यय की जाएगी। हिन्दी पत्राचार कोर्स चलाने के लिए एक अलग इन्स्टीट्यूट खोला जाएगा। अनुवाद-कार्य को व्यापक पैमाने पर चलाने के लिए भी एक संस्था खोली जाएगी जो विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में तथा हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करेगी। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय को हिन्दी के राष्ट्रीय पुस्तकालय का रूप देने के लिए 20 लाख रु० व्यय किए जाएंगे।

शिक्षा मंत्रालय के महत्त्वपूर्ण कार्यों में एक यह है कि अन्य भारतीय भाषाओं के लिए अतिरिक्त लिपि के रूप में देवनागरी में आवश्यक संशोधन करके पुस्तकें तैयार करवाई गई हैं जो देश-भर में वितरित की जा रही हैं।

हमें कैसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए ?

—सर्वेपल्लि राधाकृष्णन

हम इस बात का पर्याप्त अनुभव नहीं कर पाते कि जो पुस्तकें हम पढ़ते हैं, विशेषत: तरुणाई में, उनका हमारे मानस के निर्माण पर कितनी दूर तक असर पड़ता है। आज हम कई साधनों से ज्ञान प्राप्त करते हैं—रेडियो, सिनेमा, समाचारपत्र और अब तो टेलीविज़न भी इनमें शामिल हो गया है, किन्तु पुस्तक-पठन इन सबसे पुराना और सबसे ज़्यादा प्रभावोत्पादक है। पुस्तक-पठन यान्त्रिक शिक्षण से भिन्न है। इसीलिए स्वाध्याय अथवा अध्ययन हमारे लिए कर्तव्य माना गया है। जब हमारे पास पुस्तकें, साथी के रूप में, होती हैं तब हम कभी अकेले नहीं होते।

एक महान लेखक ने कहा है कि जो कुछ मनुष्य अपने एकान्त के साथ करता है, वही धर्म है। यह केवल धर्म की ही बात नहीं है बल्कि कला, साहित्य, वैज्ञानिक अन्वेषण और औद्योगिकीय आविष्कार भी मानव अपने एकान्त के साथ जो कुछ करता है, उसीके परिणाम हैं। आधुनिक जगत् में हम समूहचारी होते जा रहे हैं। जब हमें ज़रा फ़ुरसत मिलती है तो हम प्रीति-भोजों, क्लबों या दूसरे सामाजिक कार्यों की ओर भागते हैं। हम अपने साथ अकेले रहने में डरते हैं, बैठने और सोचने को कौन कहे, खड़े होकर ताकने में भी डरते हैं। हम दूसरों के साथ रहकर प्रसन्न होते हैं, अपने साथ रहकर नहीं। मैस्कल हमें बताता है कि संसार की समस्त बुराइयां इस तथ्य से पैदा होती हैं कि मनुष्य एक कमरे में शान्त होकर चुपचाप नहीं बैठ सकता। पुस्तक-पठन हममें एकान्त-चिन्तन और वास्तविक सुखोपभोग की आदत डालता है।

यह आम शिकायत है कि सभी क्षेत्रों में जीवन के मानदंड घटिया होते जा रहे हैं। जो नेता अपनी कर्तव्यभावना से च्युत हो जाते हैं वे अपने अनुयायियों को गलत दिशा की ओर ले जाते हैं।

"प्रधाना: धर्मं उत्क्रम्य अधर्मेण प्रसां प्रवर्त्यन्ति:।"

रोग की जड़ मानव व्यक्ति में है। यह हमारी राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रथाओं में है। हमको व्यक्ति का स्वभाव बदलना ही चाहिए। साहित्य मानवात्माओं के गुणों को उठाने का सर्वोच्च कार्य करता है। साहित्य शब्द 'सहित' से बना है और हेलमेल, ऐक्य और सामंजस्य का प्रतिपादन करता है।

जब हम महत् ग्रंथों को पढ़ते हैं तो हमारे मानस उनके विचारों में रंग जाते हैं। महान पुस्तकें पाठक का मानसिक स्वास्थ्य बढ़ाती हैं। वे हममें मन की विशालता और प्रामाणिक दृष्टि पैदा करती हैं। वे हमें नैतिक संतोष देती हैं। आसक्ति या भोग सभ्य मूल्यों के प्रति द्रोह हैं।

संसार विषवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।

काव्यामृत रसास्वाद:, संल्लाप: सज्जनैसह ॥

कुछ पुस्तकें मनोरंजन करती हैं; दूसरी शिक्षण देती हैं; और भी दूसरी हमारी प्रगति को उच्च स्तर पर ले जाती हैं। यह अन्तिम श्रेणी ऐसी पुस्तकों की है जिन्हें हमें पढ़ना और मनन करना चाहिए। हमने मान लिया है कि मानव-जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक निष्पत्ति या उपलब्धि है। आनन्द विजय का लक्षण है। जो पुस्तकें हमें आनन्द देती हैं, वे उन पुस्तकों से भिन्न हैं जो हमें इन्द्रिय-सुख और संतोष देती हैं। आनंद परिपक्वता का चिह्न है। जब हम किसी किताब के पढ़ने से आनंद पाते हैं तो हम जो कुछ पढ़ते हैं उससे अपने ऐक्य का अनुभव करते हैं—वैसे ही जैसे संगीत को सुनते हुए उसमें तन्मय हो जाते हैं। आनंद शरीर-सुख से ज़्यादा स्थायी होता है और वेदना के अंदर भी बना रहता है। जो ग्रंथ आनंद उत्पन्न करते हैं, निर्वैयक्तिक होते हैं और उनसे अहम् या देहाभिमान का क्षय हो जाता है। वे कच्ची भावना अथवा प्राविधिक चतुरता की अभिव्यक्तियां नहीं होते, अपितु विचारों में पिरोये हुए मनोभाव होते हैं जिनका स्मरण शान्ति या निस्तब्धता में किया गया रहता है। जो ऋषि नहीं है वह महत् साहित्य उत्पन्न नहीं कर सकता—न अऋषिः कुरुते काव्यम्। हमारी जाति की कल्पना की सर्वोच्च सर्जनाएं विश्व-साहित्य के श्रेष्ठ गौरव-ग्रंथों में गिनी जाती हैं। वे हमारे अतीत की सर्वोत्तम व्याख्याकार हैं और उनके पढ़ते समय हम सहस्रों वर्ष पूर्व के महामनाओं के संपर्क में होते हैं। यदि हम अपनी परंपरा के प्रति चेतनायुक्त होना चाहते हैं तो हमको उन्हें पढ़ना ही चाहिए।

हम केवल अपने पूर्वजों के शब्दों एवं मूल्यों की पुनरुक्ति करके परंपरा को बनाए नहीं रखते। ऐसा करना तो उनको उनके महत्त्व से वंचित करना है। कोई भी परंपरा समीक्षात्मक एवं रचनात्मक परिवर्तन के बिना, या समझदारी से किए गए-नवीनीकरण के बिना जीवित नहीं रखी जा सकती।

हमारे युग के तीन प्रमुख अंग हैं: वैज्ञानिक एवं औद्योगिकीय क्रांति, एशिया और अफ्रीका के पराधीन देशों की मुक्ति और विश्व की बढ़ती हुई एकता। हमें ऐसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए जो हमें वैज्ञानिक वृत्ति और दृष्टिकोण प्रदान करें। हमें एशियाई और अफ्रीकी देशों के इतिहास पढ़ने और उनकी आशाएं-उच्चाकांक्षाएं जाननी चाहिए। हमें विश्व की बढ़ती हुई एकता के तथ्य पर भी विचार करना चाहिए। यदि हम भाषा की दीवारों को तोड़ दें तो समस्त मानव जाति की बौद्धिक सम्पदा हममें से प्रत्येक की सेवा के लिए उपलब्ध हो जाएगी। समस्त अतीत और समस्त जगत् को व्यक्ति के हृदय में जीवित करना चाहिए। ग्रंथ वे साधन हैं जिनसे हम संस्कृतियों के बीच सेतु का निर्माण करते हैं। संस्कृतियों के विरोध को तोड़ डालने की आवश्यकता है। ऐसे लोगों के बीच पड़े जिनमें प्रेम करने की सामर्थ्य बहुत ही कम है और जो एक-दूसरे से भय तथा घृणा करते हैं, भावुक व्यक्तियों को संशय एवं भय दूर करने में सहायता देनी चाहिए—संशय एवं भय जो हममें समझदारी एवं प्रेम की अपेक्षा बड़ी आसानी से उठ खड़े होते हैं। महत् ग्रंथ ऐसे समय हमारे लिए उपयोगी हैं जब हमारे मूल्यों को भ्रांति में डाल दिया जाता है।

स्व० भगवती प्रसाद वाजपेयी

हिंदी उपन्यासकार भगवती प्रसाद वाजपेयी का निधन 8 मई को दतिया, मध्यप्रदेश में 74 वर्ष की आयु में हो गया। वह इधर अरसे से उच्च रक्तचाप और आंशिक पक्षाघात से पीड़ित थे। उनका जन्म कानपुर जिले के मंगलपुर ग्राम में 1899 में हुआ था। शिक्षा उन्हें मिडिल तक ही मिली। बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु हो गई। आरंभिक जीवन में उन्होंने बहुत संघर्ष झेला। "आवश्यकतावश घर की गाय, भैंस, बकरियां चराईं, खलिहान में दायं और उड़नई का काम किया, पैसों की थैली लादकर गांव की साहूकारी की, फिर गांव के प्राइमरी स्कूल की अध्यापकी की, शहर के पुस्तकालय में 15 रु० मासिक पर लाइब्रेरियन रहे, किताबों का गट्ठर कंधे पर लादकर बेचा, बीवी के गहने बेचकर दुकानदार बने, चोरी हो गई, बैंक की खज़ांचीगीरी के अप्रेंटिस हुए, कंपाउंडर हुए, प्रूफरीडरी की, सहकारी संपादक हुए फिर संपादक बने···" इलाहाबाद में दरियागंज के एक छोटे-से मकान में इस टिप्पणीकार ने उन्हें बहुत दिनों तक देखा है—सांवला रंग, पृथुल शरीर, सहज, सरल, हंसमुख। साहित्यकारों के सारे लटके-खटकों, रोब-दाब से अलग एक साधारण आदमी की तरह वह मिलते थे। साहित्यकार के रूप में उनका कोई आतंक नहीं था न उनके बीच वह शीर्ष पर बैठाए जाते थे, लेकिन हर जगह उन्हें स्नेह-सम्मान दिया जाता था क्योंकि वह हर एक से दिल खोलकर मिलते थे। भावुक आदमी थे। जल्दी खुश और जल्दी नाराज़ हो जाते थे।

उनका लेखन कार्य 1920 के आसपास शुरू हुआ। आरंभ में कविताएं लिखीं 'मैं प्यासा ही रह गया और तुम चटुल गगरियां लिए चलीं', 1922 में जबलपुर की पत्रिका 'श्री शारदा' में उनकी पहली कहानी 'यमुना' छपी। उसके बाद से वह मुख्यतया कथाक्षेत्र में ही जमे रहे। 50 से ऊपर कृतियां उनकी हैं। 27 उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 2 नाटक, 1 कविता-संग्रह और 8 बालोपयोगी पुस्तकें, 3 संपादित ग्रंथ उनके उपलब्ध हैं। 'उर्म्मि' और 'आरती' पत्रिका का संपादन भी उन्होंने किया। 'पिपासा', 'दो बहनें', (1940), 'चलते-चलते' '(1951) 'विश्वास का बल' (1955), 'सूनी राह' (1956) उपन्यास। 'मधुपर्क', 'पुष्करिणी', 'उतार-चढ़ाव', 'अंगारे' कहानी-संग्रह। 'छलना', 'रायपिथौरा' नाटक। 'ओस की बूंद' काव्य-संग्रह। उनकी कुछ उल्लेखनीय कृतियां हैं। कहानियां सीधी सादी घटना-प्रधान कलेवर से निकलकर कालांतर में विश्लेषण और आकलन की ओर बढ़ीं, फिर चिंतन और स्मृति अंशों से उन्हें संवारा जाने लगा। मध्यवर्गीय मन को अपनी कथाओं में गहराई से उकेरने का प्रयत्न उन्होंने किया। उनका विश्लेषण शास्त्रीय कम व्यावहारिक अधिक है। प्रेम, विवाह, यौन-नैतिकता जैसी मध्यवर्ग की आकाक्षांओं-कुंठाओं को उन्होंने तटस्थता के साथ लेकिन शरतचंद्रीय आदर्शवाद के लपेटे में प्रस्तुत किया है। निराश-प्रेम की वेदना उनके कथा-साहित्य मे पग पग पर मिलती है।

('दिनमान')

'जाल समेटा' और कुछ प्रश्न

दिनकर सोनवलकर

'जाल समेटा' डाक्टर हरिवंशराय बच्चन का अन्तिम कविता-संग्रह है। यह अन्तिम विशेषण हमारे मन में कई प्रश्न और जिज्ञासाएं जगाता है। फिर यह घोषणा भी अपने-आप में विलक्षण है कि कोई कवि अपने संग्रह को अन्तिम डिक्लेयर कर दे; और वह भी बच्चन जैसा कवि जिसके कविता-संग्रह पाठकों और समीक्षकों में समान रूप से प्रतिष्ठा पाते रहे हैं, जिसने छायावादोत्तर कविता को नया मोड़ दिया; हिन्दी गीत को नया अन्दाज़े बयां सौंपा; जिसकी कविता मदिरा, अंगारे, प्रणय, व्यंग्य और चिंतन तक फैली हुई है; जिसकी लोकप्रियता-हिन्दी कविता की ऐतिहासिक उपलब्धि है।

बच्चन की 'मधुशाला' सन् 1935 में प्रकाशित हुई थी। और पुरानी शराब की तरह उसका स्वाद और भी मीठा होता गया है। वही बच्चन पूरे 37 वर्ष कविता लिखने के बाद; उमर खैयाम, रूसी कविता जनगीता, शेक्सपियर और डब्लू॰ बी॰ ईट्स को अनुवादित करने के बाद, और दो दर्जन कविता-संग्रह प्रकाशित कराने के बाद अपने आखिरी कविता-संग्रह से यह कहने को विवश होता है—

"जाल समेटा करने में भी
समय लगा करता है माँझी
मोह मछलियों का अब छोड़।"

तब यह प्रश्न उठना सहज स्वाभाविक है कि इसके पीछे कौन-से कारण हैं? इसका उत्तर भी कवि ने भूमिका में इस तरह दिया है:

"मेरी कविता मोह से आरंभ हुई थी और मोह-भंग पर समाप्त होती है।"

शायद कवि जीवन के उस मोड़ पर पहुंच गया है जहां से कविता से भी ऊंचे शिखर दिखाई देने लगते हैं; शायद निर्वेद के, आत्मस्थ होने के, अपरिग्रह के।

एक दृष्टि से देखें तो बच्चन की यह घोषणा भी अद्वितीय है। अब तक किसी कवि ने ऐसा निर्णय नहीं लिया। नेतागिरी और कवि-कर्म ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें रिटायरमेंट की कोई उम्र नहीं होती। नेता कुर्सी नहीं छोड़ता; कवि लेखनी नहीं छोड़ता। क्या हम ऐसे कवियों को नहीं जानते (विथ ड्यू रिसपैक्ट्स), जिन्हें कविता ने कब का छोड़ दिया है; पर वे कविता को नहीं छोड़ते। इन सन्दर्भों में कवि बच्चन ने एक विचारोत्तेजक कदम उठाया है।

बच्चन को कविता से सब कुछ मिला: प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, पुरस्कार, जनता का प्यार, पाठकों का आदर। लेकिन अब वे उस मनस्थिति में पहुंच गए हैं जहां ये बातें अर्थहीन हो जाती हैं और सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता और भी गहरे स्तर पर बेचैन करने लगती है।

उन्हें अपने लिखने पर कोई अफसोस नहीं है और ना ही अपनी कविता से कोई असन्तोष है। बच्चन ने कविता को तपस्या की तरह जिया है। उनका मोह-भंग स्वयं से नहीं; दुनिया की तरफ से हुआ है। यानी मोहभंग की जड़ें दुनियादारी के खट्टे-कड़ए अनुभवों में है।

(नई दुनियां)

मेरी पहली कहानी—'अंगूठी'

यशपाल

कोई व्यक्ति साहित्यिक कैसे बन जाता है, इस संबंध में पाठकों की विशेष रुचि हो सकती है। प्रश्न करने वाले संभवतः लेखक की मानसिक प्रवृत्तियों और विकास का लेखा-जोखा चाहते हैं। शायद साहित्यिक या कलाकार को विशेष प्रकार का मनुष्य समझा जाता है।

मैं साहित्यिकों को प्रकृति की विशेष देन अथवा विशिष्ट प्रकृति नहीं समझता। साहित्य संचित रसात्मक अभिव्यक्ति को कहा जाता है। रसात्मक अभिव्यक्ति की इच्छा सभी में होती है। मैं ऐसे अनेक लोगों को जानता हूं, जिन्होंने अपने संतोष के लिए साहित्य-रचना की है और कर सकते हैं, परन्तु अधिक महत्त्वपूर्ण कामों में व्यस्त रहने के कारण उन्हें इस प्रवृत्ति के लिए समय नहीं मिलता। बहुत-से लोग विद्यार्थी-अवस्था में साहित्यिक बनने की इच्छा करते हैं, परन्तु अधिक आवश्यक कामों के कारण उधर ध्यान नहीं दे सकते। कुछ ऐसे भी निकल आते हैं, जो अपनी भावनाओं या कल्पनाओं की अभिव्यक्ति के शौक में अन्य आवश्यक कार्यों की उपेक्षा करने लगते हैं। बस ऐसे ही लोग यदि सफल हो जाएं तो साहित्यिक बन जाते हैं। साहित्यिक व्यक्ति में विशेषता यही होती है कि अपनी अभिव्यक्ति की कामना को अन्य आवश्यक बातों से अधिक महत्त्व दे बैठता है। यही बात मुझ पर भी लागू होनी चाहिए।

मुझे बचपन से ही साहित्य अर्थात् रोचक पुस्तकें पढ़ने में गहरी रुचि थी। मैं उनमें बिलकुल डूब जाता था। यह रुचि व्यसन की सीमा तक थी। उसके कारण कई बार मार भी खाई। उससे मुझे इतना सन्तोष मिलता था कि सम्भवतः मन में वैसा सन्तोष देनेवाली वस्तु बना सकने की महत्त्वाकांक्षा जाग उठी। बारह-तेरह वर्ष की आयु थी। मैं गुरुकुल कांगड़ी में छठी श्रेणी का विद्यार्थी था। विद्यार्थियों की रुचि साहित्य की ओर बढ़ाने का यत्न किया जाता था। कालेज विभाग के विद्यार्थी अपनी हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित करते थे। हाईस्कूल के विद्यार्थी भी अपनी हस्तलिखित मासिक पत्रिका तैयार करने लगे। उनकी पत्रिका का नाम 'हंस' था। उनके अनुकरण में मिडिल, सातवीं-आठवीं श्रेणियों के विद्यार्थियों ने भी अपनी पत्रिका तैयार कर ली। बचपन की स्पर्धा में हमारी श्रेणी के विद्यार्थियों ने भी अपनी पत्रिका प्रस्तुत करने का निश्चय किया। पत्रिका में कहानियां रहना आवश्यक था। सब ब्योरा मुझे याद नहीं कि लेख और कविता हमने कैसे संचय किए थे। सम्भव है, इधर-उधर से नकल कर लेने की योजना ही हो। कहानी के विषय में याद है।

मेरे एक सहपाठी को रोचक पुस्तकें पढ़ने का शौक मेरी ही तरह या मुझसे भी अधिक था। वह सम्पन्न परिवार का था। उसके पिता उसके लिए अनेक पुस्तकें दे जाते थे। मुझे निर्धन परिवार का होने के कारण ऐसी पुस्तकें नहीं मिल सकती थीं। मैं भी उससे लेकर पढ़ता था। मेरे सहपाठी ने हमारी पत्रिका के लिए कहानी प्रस्तुत

करने का भार ले लिया और एक नई पुस्तक में से कुछ अंश उद्धृत कर दिया। उसने मुझे वह पुस्तक देने से इनकार कर दिया।

पत्रिका में कहानी मैं भी लिखना चाहता था। मैंने बचकानी ईर्ष्या में मौलिक कहानी लिख डाली। उस कहानी का शीर्षक था 'अंगूठी'। कथानक में एक पात्र ने अपने मित्र को आजन्म मित्रता का प्रतीक अंगूठी भेंट की थी। अंगूठी को आजन्म हाथ से दूर न करने का प्रण लिया था। अंगूठी पानेवाले पात्र का अन्य मित्र असह्य आर्थिक कठिनाई में पड़ गया। मित्र ने अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा की अपेक्षा अन्य मित्रों की कठिनाई को अधिक महत्त्व दिया और उसपर विश्वासघात का आरोप लग गया।

हाईस्कूल और मिडिल के विद्यार्थियों ने हम बच्चों की पत्रिका देखी। मेरी कहानी मौलिक थी, यह जानकर उन्हें विस्मय हुआ और उन्होंने बहुत सराहना की। मुझे अपनी कल्पना की क्षमता पर विश्वास हो गया। इस घटना को अपने साहित्यिक जीवन का आरम्भ कह सकता हूं।

पाठकों को मेरे साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में कौतूहल है, तो मेरी इस मौलिक कहानी के सम्बन्ध में कुछ विवेचना धैर्य से सुनें। बारह-तेरह वर्ष की आयु में, नागरिक और पारिवारिक जीवन से दूर गुरुकुल कांगड़ी के आश्रम में पलने वाले बालक को जीवन का क्या अनुभव हो सकता था? इस कहानी को मौलिक इसीलिए कहा जा सकता है कि उसको मैंने कहीं पढ़ा नहीं था। अनेक पढी हुई कहानियों या सुनी हुई घटनाओं से सीख-कर अपनी कल्पना से कथानक संजो लिया था। उस साहित्य या अभिव्यक्ति के लिए मैंने क्या भावना या प्रेरणा अनुभव की होगी? प्रेरणा मुझे किसी घटना से नहीं मिली थी। प्रेरणा थी तो केवल कहानी बना लेने या लिख सकने के कौशल के अभ्यास की थी। मेरे इस अनुभव से स्पष्ट हो सकता है कि साहित्य का कौशल, और शिल्प तथा साहित्य का प्रयोजन, अलग-अलग वस्तुएं हैं। प्रयोजन की चेतना आयु और समझ बढ़ने पर हुई होगी।

साहित्य की पहली नोबेल पुरस्कार-विजेता महिला : सेलमा लागरलोफ

—आशारानी व्होरा

(लेखिका की नव प्रकाशित कृति 'नोबेल पुरस्कार विजेता महिलाएं' से)

साहित्य में सन् 1909 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम लेखिका सेलमा लागर-लोफ स्वीडन की रहने वाली थीं। इसके पूर्व नौ बार यह पुरस्कार दिया जा चुका था, पर राष्ट्रीयता या जातीयता के भेदभाव बिना पुरस्कार दिए जाने की वसीयत के अनुसार अल्फ्रेड नोबेल के देश स्वीडन-निवासियों को सेलमा लागरलोफ ने ही पहली बार इस पुरस्कार से गौरवान्वित किया।

सेलमा का जन्म 20 नवम्बर, 1858 को स्वीडन में वार्मलैंड के मारबाका नामक स्थान पर एक कुलीन घराने में हुआ था। उनके पिता एरिक लागरलोफ फौज में लेफ्टिनेंट थे। माता लोबिसा वालराथ स्वीडन के सचिव परिवार की पुत्री थीं—गृहकार्य और सामाजिक व्यवहार में दक्ष एवं शालीन। सेलमा, जिसका पूरा नाम था सेलमा ओटिलियाना लोविसा लागरलोफ, की शिक्षा-दीक्षा का पिता को विशेष ध्यान रहता। चूंकि सेलमा साढ़े तीन वर्ष की आयु में ही लकवे का शिकार हो हमेशा के लिए लंगड़ी हो गई थी, वह हीनभाव से घिरकर जीवन में पिछड़ न जाए, इसका वे बराबर ध्यान रखते। स्वीडन का प्राचीन इतिहास और अपने वंश की परम्परागत कहानियां वे उसे बड़े चाव से सुनाया करते थे। शिक्षा-दीक्षा की घर पर ही पूर्ण व्यवस्था कर दी गई। घर में एक खासा पुस्तकालय भी था। सेलमा वहां बैठकर पढ़ती रहती, जिससे बचपन में ही उसका सामान्य ज्ञान काफी बढ़ा-चढ़ा था। आगे चलकर 'मारबाका' नामक अपनी रचना में उन्होंने अपनी बाल्यावस्था का अच्छा चित्रण किया है।

अपनी पहली कहानी में गोस्टा बर्लिंग नाम के नायक के चित्रण में भी सेलमा ने बचपन में पिता से सुनी एक कहानी का उपयोग किया है। वह व्यक्ति कवि है, गायक है, नृत्यकला-विशारद है और सामाजिक समारोहों की जान है। ऐसी ही एक अन्य रचना है—दुलहन का मुकुट', जिसमें सेलमा ने राज्यमंत्री परिवार की अपनी ननिहाल के तौर-तरीकों का बड़ा स्वाभाविक चित्र खींचा है। इसी तरह दादी से सुनी लोक-कथाओं तथा अन्य ग्रामीण किंवदंतियों का भी उन्होंने अपनी रचनाओं में खुलकर प्रयोग किया है।

कविता और नाटक लिखने की उनकी इच्छा बचपन में ही जाग गई थी। स्टाकहोम में अपने चाचा के साथ जिस दिन उन्होंने नाटक देखा था, उसी दिन नाटक लिखने का संकल्प मन में कर लिया था। उस रात वे इतनी भावुक हो उठी थीं कि बैठकर एक नाटक और उस नाटक (प्रार्थना)-सम्बन्धी कई पद्य लिख डाले। प्रारम्भिक प्रकाशन कविताओं का ही रहा।

अध्यापन-प्रशिक्षण लेने के बाद बाईस वर्ष की आयु में वे लैण्डक्रोना नामक

नगर में, जो उत्तरी स्वीडन में है, अध्यापिका का काम करने लगीं। साथ ही समय बचाकर कुछ लिखने भी लगीं। वहीं उन्होंने बाल-मनोविज्ञान और बच्चों की कहानी विषयक रुचि का प्रत्यक्ष अध्ययन किया। 'एलिस इन वंडरलैंड' की तरह सेल्मा लागरलोफ की बच्चों के लिए लिखी गई दो पुस्तकें 'दी वंडरफुल एडवेंचर्स आफ नील्स' और 'फर्दर एडवेंचर्स आफ नील्स' भी विद्यार्थियों के लिए बड़ी उपयोगी पुस्तकें हैं और सारे संसार में बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

1890 में अपनी बहन के आग्रह पर उन्होंने 'आइडन' नामक पत्रिका द्वारा आयोजित कहानी-प्रतियोगिता में अपनी कुछ कहानियां भेज दीं। पत्रिका की ओर से विज्ञप्ति निकली कि कई कहानियां अस्पष्ट होने के कारण प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित नहीं की गईं तो सेल्मा को लगा, अवश्य ही ये उनकी कहानियां होंगीं पर बाद में सफलता की सूचना और बधाई का तार पाकर वे हैरान रह गईं। पत्रिका के सम्पादक ने यह भी लिखा कि वे इस कहानी के कथानक पर एक उपन्यास लिख डालें। और सेल्मा स्कूल से छुट्टी ले उपन्यास लेखन में जुट गईं।

1894 में 'गोस्टा बर्लिग' नाम से अपनी पहली पुस्तक के प्रकाशित होते ही सेल्मा लागरलोफ की सर्वत्र चर्चा होने लगी। पियक्कड़ और फक्कड़ कवि 'गोस्टा बर्लिग के मोहक लोक-चित्रण ने सभी का मन मोह लिया। साथ ही उन्हें देशाटन के लिए छात्रवृत्ति मिल गई तो उन्होंने अध्यापिका वे पद से त्यागपत्र दे दिया। छात्रवृत्ति पा वे इटली गईं, फिर समूचे यूरोप का भ्रमण करती हुई फिलिस्तीन तक गईं। फिलिस्तीन में उन्हें सरकार की ओर से एक विशेष उद्देश्य से भेजा गया था कि वे 'नास' में जाकर बसे स्वीडन-निवासियों का अध्ययन कर उनका सही चित्रण करें। इन प्रवासियों की बीमारी और दरिद्रता की अफवाहें तब ज़ोरों पर थीं। कुमारी लागरलोफ ने उन्हें आंशिक रूप में सच बताते हुए उनका सही-सही वर्णन किया। 'जेरूसलम' लिखने का कथानक भी उन्हें यहीं मिला। 'क्राइस्ट दन्तकथाएं' भी इस यात्रा के बाद लिखी गईं।

बाद में 'जेरूसलम' और 'पुर्तगाल का सम्राट' ये दोनों उपन्यास 'लन्दन टाइम्स' में धारावाहिक प्रकाशित हुए और सेल्मा लागरलोफ की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। 'पुर्तगाल के सम्राट' की नायिका 'वेला बजाने वाली लिलिक्रोना' का चरित्र-चित्रण भी 'गोस्टा बर्लिग' की तरह ही बड़ा मोहक है।

उनकी 'गोस्टा बर्लिग' की कहानी तथा एक नाटक 'मार्शक्राफ्ट की लड़की' पर सफल फिल्में भी बनी हैं जो स्वीडन, यूरोप और अमेरिका में अच्छी चलीं। सन् 1939 में वे बीमार पड़ीं और 16 मार्च, 1940 को 81 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

अनेक पुस्तकों, कहानियों और सामाजिक-धार्मिक उपन्यासों की रचयिता कुमारी लागरलोफ की रचनाओं में अत्यधिक सरलता और सादगी है। उनमें लोक-जीवन, लोक-संस्कृति और 'घर' का प्रमुख स्थान है एवं देश के जीवन और साहित्य को एकाकार करने की अद्भुत क्षमता।

मेरी एक कथा-नायिका

—शिवानी

(लेखिका के नव प्रकाशित कहानी-संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियां' की भूमिका से)

जब भी कहानी लिखने बैठती हूं, स्मृतियों के जलप्रपात पर यत्न से धरी गरीयसी शिला कोई अदृश्य शक्ति उठाकर दूर पटक देती है, और वह तीव्र फुहार मेरे कागज-पत्र, मेरी लेखनी और स्वयं मुझे आपादमस्तक सराबोर कर छोड़ जाती है। मेरी अधिकांश कहानियों और उपन्यासों के पात्रों की सृष्टि इसी पावन जलधार से अभिषिक्त हुई है। आज से कोई सत्रह वर्ष पूर्व मैं अल्मोड़ा में थी और हमारे बंगले से कुछ ही दूर पर था, कुष्ठाश्रम। पास ही में एक बहुत बड़ा गिरजाघर था, जिसके पत्थर-पटे, ठेठ पहाड़ी ढंग से बने प्रांगण में मेरे कैशोर्य की कुछ सुखद स्मृतियां भी पटकर दबी थीं। उसी गिरजे से लगी कंकरवाली कोठी में दो वर्षों तक, प्रत्येक ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने गुरुदेव शांतिनिकेतन से चले आते थे। साथ में रहती बोठान (प्रतिमा देवी ठाकुर) उनकी दोनों पौत्रियां, नंदिता और नंदिनी। हमारा सारा दिन उन दिनों वहीं बीतता था। नंदिनी के साथ उसी गिरजे की सीढ़ियों पर हमने न जाने कितनी पिकनिक कीं, कितना होमवर्क एक साथ निबटाया और कितने गाने गाए, रवींद्र-संगीत से गूंजनेवाला वह संभवत: संसार का एकमात्र गिरजाघर था। पास ही में एक चाय की दूकान थी, जहां से एक बार मूंगफली लेकर खाने में नंदिनी की नेपाली आया ने हमें बुरी तरह फटकारा था :

"खबरदार, जो उस दूकान से कुछ लेकर खाया। देखती नहीं, कितने कोढ़ी वहां बैठे चाय पी रहे हैं? कोढ़ियों की दूकान है वह..."

कितने वर्षों पश्चात् भाग्य मुझे एक बार फिर उसी दूकान पर खींच लाया। प्राय: ही मैं उस सड़क पर टहलने निकल जाती। एक तीखा उतार अब भी उसी ढलान में मुक्तेश्वर की ओर उतर गया था और सामने गागर, मुक्तेश्वर वानरी की उत्तुंग श्रेणियां वैसे ही गुलदस्ते-सी बंधी थीं। बाईं ओर था वही चिरपरिचित गिरजाघर और नीचे घाटी में बिखरे कुष्ठाश्रम की टीन की बैरक अब भी वैसी ही थी। दूकान पर कालिख लगी केतली में उबलती चाय की प्रतीक्षा में ठूंठ-से हाथों में मग थामे भाग्यहीन ग्राहकों को पहचानने में भी मुझे विलंब नहीं हुआ।

उसी कुष्ठाश्रम में दाड़िम तरु तले एक सोलह-सत्रह वर्ष की अपरूप सुंदरी किशोरी को मैं प्राय: एक ही भंगिमा में खड़ी नित्य देखती। दोनों हाथ पीछे बांधे वह तन्वंगी पेड़ से पीठ टिकाए अपनी पिंगलवर्णी चमकती आंखों में अपार कौतूहल का

अर्घ्य संजो घड़ी के कांटे के साथ मेरी प्रतीक्षा में खड़ी रहती। मेरा कौतूहल भी उससे कुछ कम नहीं था। वह कौन होगी? क्या इस कच्ची वयस में ही इस महारोग ने इसके जीवन में विष घोल दिया था, या वह किसी कर्मचारी की पुत्री थी? कई बार निकट से देखने पर भी मुझे उसके शरीर में कहीं भी उस रोग का चिह्न नहीं दिखा। आखिर एक दिन मैंने उससे पूछ ही लिया, "क्या तुम यहीं रहती हो?"

मेरा प्रश्न सुनते ही वह मुझे अचरज से देखती रही, भयभीत मृगी-सी उसकी वह विस्फारित दृष्टि मैं आज भी नहीं भूल सकी हूं। शायद उसने नहीं सोचा था कि मैं पहाड़ी हूं···कुछ पल तक मुझे ऐसी ही देखती वह सहसा तेज़ी से भागकर उन्हीं टीन के बैरकों में घुसकर अदृश्य हो गई।

मेरे प्रश्न का उत्तर मिला मुझे तीसरे दिन। किसी दूसरे कुष्ठाश्रम की ही एक विदेशी मिशनरी महिला वहीं बंगला लेकर रहने आई थीं। मेदबहुल शरीर, स्वच्छ सरल हंसी और महाआनंदी स्वभाव की उस महिला से मेरे एक दिन का परिचय शीघ्र ही मैत्री में बदल गया। वे स्वयं क्वेकर थीं। इन्हीं भाग्यहीन रोगियों की निःस्वार्थ सेवा ने उन्हें स्वयं इस भयानक रोग का उपहार दे दिया था, किंतु अपनी ही चिकित्सा से वे अब पूर्ण रूप से स्वस्थ थीं। उन्होंने मुझे सुंदरी किशनुली की करुण कथा सुनाई थी।

उसका श्वसुर एक बार उसकी महीनों से नासूर बन गई पैर की अंगुली दिखाने उसे अल्मोड़ा लाया और डाक्टर ने देखते ही रोग के कुटिल शत्रु को पकड़ इस बंदीगृह में भेज दिया था। उसका बांका जवान पति लाम पर लड़ाई में था। जब लौटा तो सुना—उसकी बालिका वधू को विधि ने ऐसे लौह कपाटों में मूंद दिया है जहां प्रेम का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध है। स्वस्थ होकर लौटने पर भी समाज उसे कभी ग्रहण नहीं कर सकता। परिस्थितियों से समझौताकर वह एक बार फिर नौशा बन सेहरे की झिलमिल संभालता तिब्बती लद्दू घोड़े पर आईना देखता उसी उतार से गुज़रा जहां बारात की तुतुरी रणसींगी सुन भोली किशनुली भागकर दाड़िम तले खड़ी हो गई थी। अपने बूढ़े श्वसुर, बाघ-बकरी खेलनेवाले सखा देवर और लाल झुपुरी अयालवाले ससुराल के लद्दू घोड़े को पहचानने में उसने भूल नहीं की थी। चीखें मारकर वह बारात के पीछे-पीछे भागती दूर तक चली गई थी। स्वयं इसी दयालु डाक्टरनी ने पकड़कर उसे अपनी विराट छाती में भींच लिया था। यही किशनुली मेरी कहानी 'आमीन' की नायिका है और उस अरण्य में मिली और उसी अरण्य में बिछुड़ गई। वह विदेशी डाक्टरनी मेरी 'कृष्णकली' की डाक्टर पैट्रिक है।

'कृष्णकली' की कुछ किस्तों के 'धर्मयुग' में छपते ही पाठकों के रंग-बिरंगी पत्रों के अबीर-गुलाल ने मुझे रंग दिया था। उनमें सचमुच ही फागुनी बयार की-सी मस्ती थी। कृष्णकली कौन है? क्या वह कुंआरी है? क्या वह मेरी कल्पना का ही उपज है? यदि नहीं, तो क्या मैं उसका पता भेज सकती हूं? कभी-कभी पत्र पढ़कर हंसी भी आती थी, किंतु एक दिन एक पत्र ऐसा आया, जिसे पढ़कर मैं हंस नहीं पाई। पत्र आया था गोरखपुर कुष्ठाश्रम से। अक्षर ऐसे थे कि जी में आया चुनकर पिरो लूं। जैसी ही सुघड़ लिखावट वैसी ही भाषा। स्वयं अपने अभिशप्त

शिवानी

अस्तित्व का परिचय देने में लिखनेवाले की कलम ज़रा भी नहीं झिझकी थी।

"शिवानी जी, इसके पूर्व आपकी 'शिवी' पढ़ी, 'अनाथ' पढ़ी और अब 'कृष्णकली' पढ़ रहे हैं। अब तो दोनों हाथों की कुल जमा सात ही अंगुलियां बची हैं और यदि पूरी भी होतीं तो शायद मनचाही प्रशंसा नहीं कर पाता। एक ही प्रश्न पूछना चाहता हूं—आपको इस रोग का ऐसा विशद अनुभव कैसे है? क्या आप स्वयं इस रोग की रोगिणी हैं या आपके परिवार में किसीको यह रोग है?"

तब, मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी थी; क्योंकि न पत्र में उसका नाम था न पता। केवल गोरखपुर कुष्ठाश्रम के पते पर मेरा उत्तर कहां भटकता? इसीसे आज ही उसका उत्तर दे सकी हूं। न मुझे यह रोग है, न मेरे परिवार के किसी सदस्य को, किंतु अचानक मिली उस विदेशी डाक्टरनी की मैत्री ही मुझे इस महारोग के विषय में बहुत कुछ बता गई थी। उसीने कहा था, "हमारी यह भ्रांत धारणा है कि यह एक भयावह रूप से छुतहा रोग है।"

और फिर, कुछ वर्षों पश्चात् मुझे मिली थी मेरी नायिका! खच्चरों पर पत्थर लादनेवाले पठान जनक ने उसकी मां को छोड़ दिया था। दुखिया पति-परित्यक्ता तीन बच्चों को लेकर अपनी बहन की शरण में चली आई थी। वहीं उस मरी को मारने वह महारोग-व्याल उससे लिपट गया। तीनों देवदूत-से बच्चे आए दिन कभी चीनी मांगने, कभी आटा मांगने हमारे आंगन में खड़े हो जाते। उनका मौसा पास ही किसी पादरी साहब के सागरपेशे में रहता था। गौरी बुआ (सुमित्रानंदन पंत जी की बड़ी बहन) नित्य ही अपनी भविष्यवाणी दुहरातीं, "देख लेना, एक न एक दिन यह लड़की राजरानी बनेगी—आहा, कैसा अठ-अंगुलिया कपाल है!"

हमें हंसी आ जाती, "जरूर राजरानी बनेगी, बाप पठान है और मां कोढ़िन! खाने को तो जुटता नहीं बेचारी को..."

किंतु सचमुच ही उनकी भविष्यवाणी खरी उतरी। वह राजरानी ही बनी। मां के रोग ने विकट रूप धर लिया, तो बहन ने बच्चों सहित उसे गांव भेज दिया। वहीं कुछ महीनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। कुछ ही दिनों बाद जब उस अभागी की बिरादरी ने उसके कुख्यात रोग के कारण उसके बच्चों को भी दुत्कार दिया, तो मिशन ने उन्हें शरण दी। राजरानी को गोद लिया एक विदेशी महिला ने, जिनकी सुरुचिपूर्ण संरक्षण उस यवनदुहिता के सौन्दर्य में सुहागा बनकर रिस गया।

पठान जनक का ऊंचा कद, कुमांउनी जननी की अपूर्व देहकांति एवं विदेशी उच्च समाज के सहवास ने उस खान के खरे हीरे को अब कितने कैरट का बना दिया होगा, यह मैं अनुमान लगा सकती हूं। यही कोहनूर मेरी कृष्णकली है।

1. **हाल मुरीदों का** (उपन्यास) : पंजाबी के प्रसिद्ध कथाकार कर्तारसिंह दुग्गल ने इस उपन्यास में एक विशाल कैनवास पर पंजाब की आधी सदी के जीवन का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास वस्तुतः पंजाबी जीवन का महाकाव्य है। 20.00

---

2. **जोगी मत जा** (उपन्यास) : बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विमल मित्र के इस नये उपन्यास में राजघराने की अभेद्य चारदीवारी में बन्द एक विधवा रानी की कहानी प्रस्तुत की गई है जो पुरुषों से प्रतिकार लेने के लिए हिंसक बन जाती है। शुरू से अन्त तक रोचक। 6.00

---

3. **नोबेल पुरस्कार-विजेता महिलाएं** (जीवनी) : सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका आशारानी व्होरा ने शांति, साहित्य, विज्ञान के क्षेत्रों में महान सेवा के उपलक्ष्य में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली महिलाओं की रोचक जीवन-झांकियां और उनके कार्यों का विवरण दिया है। सभी के लिए उपयोगी और प्रेरणाप्रद पुस्तक। 5.75

---

4. **मेरी प्रिय कहानियां** (शिवानी) : प्रस्तुत संकलन में लोकप्रिय लेखिका शिवानी ने अपनी मनपसन्द कहानियां एक रोचक भूमिका के साथ प्रस्तुत की हैं। 5.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

सावित्री : श्री अरविन्द

भावानुवाद : व्योहार राजेन्द्रसिंह

'सावित्री,' भौतिक जगत् के परे किन्तु भौतिक जगत् को भी अपनी परिधि में व्याप्त करनेवाले अनन्त परमात्म जगत् की अनुभूतियों का आलेख है। स्वाभाविक ही है कि वह, आध्यात्मिक जगत् से अपरिचित व्यक्ति के लिए समझ से परे हो। फिर भी, जिस तरह पात्रों के अस्तित्व को स्वीकार कर पाठक किसी कथा का आनन्द लेता है उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत् के क्रियाकलापों का चित्र 'सावित्री' पढ़कर सामान्य मनुष्य अपनी आंखों के समक्ष खड़ाकर उसका आनन्द ले सकता है। व्योहार राजेन्द्रसिंह जी ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक प्रयास किया है कि 'सावित्री' को गद्यरूप में इस तरह प्रस्तुत किया जाए कि अध्यात्म-जिज्ञासु गद्यानुवाद को पढ़कर आध्यात्मिक जगत् का स्वरूप समझ सके।

सामान्य व्यक्ति की बोधगम्यता को आधार मानकर सरलतम भावानुवाद के उपरान्त भी आलोच्य ग्रंथ सहजगम्य नहीं है तथा इसका कारण मूल रचना का मनोवैज्ञानिक, रहस्यमय एवं आध्यात्मिक स्वरूप ही है।

महाभारत के 18 श्लोकों के सावित्री के कथानक पर आधारित श्री अरविन्द के 11 पर्वों व 41 सर्गों के मूल अंग्रेजी महाकाव्य को भावानुवादकार ने, सृष्टि का आरम्भ, विश्वयात्री, दिव्यआद्याशक्ति, जन्म और खोज, प्रेम, विश्वभवन का यात्री, योग, मृत्यु, शाश्वत रात्रि, दुहरा प्रकाश, शाश्वत दिवस और उपसंहार इस तरह के 12 अध्यायों में सार रूप में प्रस्तुत किया है।

सावित्री के सामान्य कथानक को प्रतीकात्मक स्वरूप देकर महर्षि अरविन्द ने आत्मज्ञान व विश्वज्ञान का प्रतीक माना है जो मानवरूप में अवतरित होकर मानवात्मा को अपने दैवी लक्ष्य की ओर ले जाती है। उसी तरह अश्वपति को पृथ्वी पर अवतरित जिज्ञासु आत्मा का प्रतीक माना है तथा सत्यवान के लिए उसकी तपस्या को महर्षि अरविन्द ने आत्मज्ञान व विश्वज्ञान की प्राप्ति के लिए जिज्ञासु मानवात्मा की खोज के रूप में चित्रित किया है। अश्वपति की यात्रा को अचेतन से चेतन के उच्च स्तर पर पहुंचने की यात्रा के रूप में निरूपित किया है।

सावित्री का जन्म, बाल्यकाल, पति के वरण की उसकी यात्रा, सत्यवान से मिलन, वापस आने पर नारद से भेंट आदि कथाएं ज्यों की त्यों ही हैं। अन्तर इतना ही है कि श्री अरविन्द की 'सावित्री' अपनी मनुष्यता के साथ ही अपनी दिव्यता भी अनुभव करती है। नारद-सावित्री-संवाद में महर्षि अरविन्द ने विश्वनियन्ता का उद्देश्य तथा मानव के अदृष्ट कर्म-सिद्धान्त को उच्च शिखर पर पहुंचा दिया है।

आगामी प्रकाशन

1. **पारसी-हिंदी रंगमंच :** डा० लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार हैं। उनकी अनेक नाट्य-रचनाओं का सफल मंचन हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तक में सवाक् फिल्मों के आने से पहले के पारसी-हिन्दी नाटकों का उन्होंने विशद अध्ययन प्रस्तुत किया है। पारसी-हिन्दी नाटक एक समय भारतीय जीवन पर छाए हुए थे और उनका आकर्षण आज की फिल्मों से कम नहीं था। पुस्तक में इस सबका रोचक चित्रण है।

2. **प्रेत :** नई पीढ़ी के अग्रणी लेखक श्रवणकुमार का यह ताजा उपन्यास आधुनिक संघर्षशील जीवन तथा उससे उत्पन्न मानसिक गुत्थियों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है।

3. **भारत के जंगली जीव :** ब्रिटेन के प्राणी-विशेषज्ञ ई० पी० जी की सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक 'दि वाइल्ड लाइफ आफ इण्डिया' का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें भारत के जंगलों और प्रमुख चिड़ियाघरों में पाए जाने वाले विभिन्न जीव-जन्तुओं के आन्तरिक जीवन की कौतूहल जगाने वाली बातें और लेखक द्वारा लिए उनके फोटोग्राफ हैं। ई० पी० जी ने अपना आधा जीवन भारत में बिताकर अपनी रुचि को तृप्ति देने के लिए इन जंगली जीव-जन्तुओं से जो घनिष्ठ साहचर्य बनाए रखा वह इस पुस्तक के प्रति पृष्ठ पर दिखाई देता है।

4. **भारतीय सेना और युद्धकला :** प्रस्तुत पुस्तक में ले० कर्नल गौतम शर्मा ने वैदिक काल से आज तक के भारतीय सेना के संगठन और युद्ध-कौशल, भारत की युद्ध-नीति और प्रमुख युद्ध में भारत की हार-जीत का विश्लेषण विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के बाद भारत पर बार-बार आए युद्ध-संकट और उनमें हमारी जीत के क्या रहस्य हैं, हमारी सैनिक शक्ति कितनी है, 'भारतीय सेना और युद्ध-कला' को पढ़कर यह सब समझने में सुविधा मिलती है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

"मैंने 1-1-53 से 'सावित्री' अध्ययन प्रारंभ किया और 30-4-55 को प्रथमावृत्ति समाप्त की। सन् 1959 में द्वितीय तथा 1963 में तृतीय आवृत्ति समाप्त की। उसके बाद ही 1964 में द्वितीय पर्व का पद्यानुवाद करने का साहस किया।"

विद्वान से विद्वान व्यक्ति के लिए भी मूल सावित्री का आकलन कितना कठिन साध्य है यह समझने के लिए भावानुवादकार श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह की उपर्युक्त स्वीकारोक्ति पर्याप्त हैं।

'सावित्री' के विषय में स्वयं महर्षि अरविन्द ने लिखा है, "सावित्री एक ऐसा दर्शन है, एक ऐसी अनुभूति का निरूपण है, जो साधारण प्रकार का नहीं है। इसलिए लोग इसकी कद्र करेंगे अथवा इसे समझेंगे, ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिए।"

पुस्तक की छपाई-बंधाई सुन्दर है तथा मूल्य भी बहुत अधिक नहीं कहा जा सकता। **(वि. के. भाकरे : युगधर्म)**

लोक-सम्पर्क

—राजेन्द्र

(हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित)

सामाजिक स्तरों में विशेषीकरण या स्पेशिलाइजेशन का महत्त्व जितना अधिक बढ़ता जाएगा, सम्यक ज्ञान की आवश्यकता भी अधिक होगी। विभिन्न सरकारी संगठनों, व्यापारिक संस्थानों तथा अब राजनैतिक स्तर पर भी लोक-सम्पर्क इतना जरूरी विषय बन गया है कि हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी का उसपर एक पुस्तक प्रकाशित करना उचित ही है।

प्रख्यात आंग्ल दैनिक 'ट्रिब्यून' के मुख्य संपादक श्याम सुन्दर चावला के पुन-रीक्षण में तैयार इस किताब में लोक-संपर्क के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है। कुल 257 पृष्ठों की पुस्तक में लोक-संपर्क की कार्य-प्रणाली और कार्यक्षेत्र स्पष्ट किए गए हैं। समाचारपत्रों में 'प्रेस एजेण्ट' की अमेरिकी स्थिति लाए बिना या सरकार में व्यक्ति-प्रशंसा के बजाय काम करने की दिशा इस ढंग से दी है कि संभवत: हिंदी की प्रथम पाठ्यपुस्तक के रूप में इसका लाभ लिया जा सकता है। काफी सरल तरीके से सरकारी प्रचार तंत्र, भारतीय पत्रकारिता के बदलते रंग और पुरानी प्रचारात्मक विधियों की जानकारी दी गई है।

कहीं-कहीं पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग खटकता है, यद्यपि लेखक ने पारि-भाषिक शब्दावली का परिशिष्ट देकर अपनी स्थिति साफ कर दी है। 'सर्कुलेशन' के लिए परिचलन और 'डायरेक्टेड' के लिए दिशापरक के स्थान पर क्रमशः प्रसार और निर्देशित शब्दों को लिया जाता तो उचित रहता।

पुस्तक की एक खासियत यह भी है कि धर्म-प्रचार से लेकर राजनीतिक प्रचार तक कें विभिन्न प्रकारों को विश्लेषित किया गया है, जो नई बात है। भारत सरकार से अनुदान प्राप्त अकादमी इसके प्रसार-प्रचार की दृष्टि से मूल्य कम रख सकती थी। **(नवभारत, नागपुर)**

नार्लीकर व तीन अन्य को नेहरू फैलोशिप

प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो० जयंत विष्णु नार्लीकर तथा तीन अन्य व्यक्तियों को जवाहरलाल नेहरू फैलोशिप देने की घोषणा की गई है।

फेलोशिप के अन्तर्गत 3 हज़ार रुपये मासिक छात्रवृत्ति के अलावा पुस्तकों, यात्रा-व्यय आदि के लिए दस हजार रुपये का वार्षिक अनुदान मिलता है।

इस वर्ष चुने गए तीन व्यक्तियों में बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० श्यामनंदन किशोर, कश्मीर विश्वविद्यालय में उर्दू विभाग के अध्यक्ष डा० मोहम्मद हसन और मद्रास की 'समीक्षा' पत्रिका के संपादक एवं मलयालम के कवि श्री जी० गोविंदन शामिल हैं।

पैंतीस वर्षीय प्रो० नार्लीकर इस समय बम्बई स्थित मौलिक अनुसंधान के टाटा इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर हैं। वे इस फेलोशिप का उपयोग सैद्धांतिक मौलिक शास्त्र और नक्षत्र विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए करेंगे। डा०श्यामनंदन किशोर छायावादी कविता के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए फैलोशिप का उपयोग करेंगे। डा० हसन ने अपने अध्ययन के लिए 19वीं सदी में उत्तर भारत में 'साहित्य और समाज' विषय चुना है। श्री गोविंदन दक्षिण भारत में सृजनात्मक साहित्य का अध्ययन करेंगे।

जैनेन्द्र कुमार, अमृता प्रीतम इत्यादि को मानद डाक्टरेट की उपाधियां

दिल्ली विश्वविद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर इस वर्ष देश के 22 विद्वानों तथा वैज्ञानिकों को मानद डी० लिट० तथा डी० एस-सी० की उपाधियां प्रदान की गईं। इनमें सर्व श्री जैनेन्द्र कुमार,अमृता प्रीतम, आर०के० नारायण, म० म० गोपीनाथ कविराज, श्रीमती सुब्बालक्ष्मी, सत्याजेत रे, हरगोविन्द खुराना, दौलतसिंह कोठारी, तथा सी० डी० देशमुख हैं।

'जाल समेटा' पर गोष्ठी

साहित्यिक संस्था 'कृति' की मई मास की गोष्ठी में बच्चन की अंतिम कविता-पुस्तक 'जाल समेटा' पर विचार किया गया। कई निबंध पढ़े गए और वक्ताओं ने पुस्तक पर अपने विचार प्रकट किए।

'आज के रंग नाटक' की बिक्री पर रोक

इलाहाबाद के ज़िला जज ने 'आज के रंग नाटक' के प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन तथा संपादकों इब्राहीम अलकाज़ी, सुरेश अवस्थी तथा पु० ला० देशपांडे को कापीराइट का हनन करने के आरोप पर पुस्तक का विज्ञापन करने तथा उसे बेचने पर अस्थायी रोक लगा दी है।

श्री महेन्द्र का देहावसान

आगरा के प्रसिद्ध हिन्दीसेवी श्री महेन्द्र का गत दिनों स्वर्गवास हो गया। आपने स्वाधीनता-संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण भाग लिया और कई बार जेल गए। आप साहित्य रत्न भंडार के संस्थापक तथा 'साहित्य संदेश' के संपादक थे। आपका वास्तविक नाम श्री मंगीलाल जैन था।

'जोगी मत जा' की सत्यकथा

विमल मित्र

अक्सर पाठक यह जानना चाहते हैं कि मेरी कहानियों के पीछे भी कोई कहानी है या नहीं। 'जोगी मत जा' के पीछे भी कोई सत्यकथा है या नहीं, इसे जानने की उत्सुकता पाठकों को बहुत है।

आज तक मैंने जितने उपन्यास लिखे हैं, सभी के पीछे कोई न कोई कहानी है ही। बीज तो रहता ही है, केवल समय पाकर उसके वृक्ष बनने और उसकी शाखा-प्रशाखा फैलने के मूल में ही कथा का सत्य छिपा रहता है। ऐसे मेरे सभी उपन्यासों—'साहब, बीवी, गुलाम', 'खरीदी कौड़ियों के मोल', 'बेगम मेरी विश्वास' आदि—के बारे में हैं, किन्तु 'जोगी मत जा' उपन्यास के मूल में सर्वथा एक अलग कहानी है। एक बार एक बंगला पत्रिका के सम्पादक ने मुझसे एक उपन्यास की मांग की थी। मेरे दिमाग में कोई कथानक था ही नहीं। सम्पादक महोदय ने मेरी बड़ी लानत-मलामत की। अचानक मुझे अपने एक बाल-सखा अनिल की याद आ गई। वह बचपन में ही बड़ी गम्भीरता-पूर्वक विवेकानन्द तथा आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन किया करता था। बाद में वह गृहत्यागी बनकर पता नहीं कहां चला गया। बहुत दिनों के बाद मेरी-उसकी मुलाकात रांची में हुई। अनिल संन्यासी-वेश में मुझे मिला, उसका सिर मुंडा हुआ था। गेरुए वस्त्रों से उसका शरीर ढका हुआ था। उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त करने वाले असंख्य नर-नारी भी वहां मौजूद थे। उसके बाद अनिल का कोई सन्धान मुझे वर्षों तक नहीं मिला।

20 वर्षों के बाद मैं कलिंगपोंग (दार्जिलिंग) गया। वहां के एक बौद्ध मठ में मैंने एक व्यक्ति को कम्बल ओढ़े हुए बहुत ही अन्यमनस्क भाव से घूमते पाया। संध्या झुक रही थी। मेरी दृष्टि उसके चेहरे पर जम-जमकर फिसल रही थी। अचानक मेरे मुंह से निकला, "अनिल हो क्या ?" और मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। वह अनिल ही था। उसने हाथ छुड़ाकर भागने की कोशिश की, लेकिन मेरी पकड़ मजबूत थी। वह भाग नहीं सका। उसे पकड़कर मैं अपने होटल में ले आया। सारी रात उसपर पहरेदारी की और उसकी दुरवस्था की कहानी सुनता रहा। सवेरे मेरी आंखें लग गई थीं। उठकर देखता हूं कि अनिल, मेरा बालसखा, वहां से गायब है। इसी अनिल की कथा का बीज 'जोगी मत जा' में दिव्येन्दु के रूप में प्रस्फुटित हुआ है।

मैंने राजस्थान की यात्रा 1954 और 1962 में की थी। न तो बनारसी बाई सत्य है और न छत्रगढ़ ही। सब कुछ अनिल से सुनी कहानी की शाखा-प्रशाखाएं हैं।

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32
रजिस्टर्ड नं० डी-411

मैं पृथ्वी का कवि हूं

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

बहुत दिनों से [illegible] आ रहा हूं—जीवन के अनेक [illegible] में—जीवन की अनेक अवस्थाओं में। शुरू किया था, बड़ी कच्ची उम्र में। उस समय अपने को पहचानता तक न था। बीच में बाहुल्य और वर्जनीय चीज़ें भी ढेर की ढेर इकट्ठी हो गई हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। इस सारे कूड़ा-कर्कट को निकाल देने पर, जो कुछ बाकी बचता है, मुझे आशा है, उसमें यह घोषणा खूब स्पष्ट है कि, मैंने इस ज़गत् को प्यार किया है, महत् को प्रणाम किया है, मुक्ति की कामना की है—उस मुक्ति की, जो परम पुरुष के प्रति आत्मनिवेदन का ही दूसरा नाम है, मैंने विश्वास किया है कि, मनुष्य का सत्य उसी महामानव में निहित है जो सदा—'ज़नानां हृदये सन्निविष्टः' है—सबमें समाए हुए हैं।

मैं पृथ्वी का कवि हूं। पृथ्वी में जहां जो भी ध्वनि उठती है, मेरी बांसुरी के सुर में उसका स्पन्दन जाग उठता है। ऊंचे हिमशिखरों से जो नीरव गीत उठते हैं, उसके स्वर मुझे निमंत्रण देते हैं। दक्षिण मेरु के ऊपर के अज्ञात नक्षत्र ने, जो विराट् जनशून्यता में रात्रि यापन कर रहा है, अर्धरात्रि के समय मेरे अपलक नयनों का अपूर्व आलोक से स्पर्श किया है। अत्यंत दूर पर बहनेवाले महाप्लावनकारी प्रचंड निर्झर ने मेरे मन की गहराई में अपनी आवाज़ भेजी है।

प्रकृति के सम्मिलित गान के स्रोत में नाना दिशाओं से नाना कवि अपने गीत ढालते हैं। उन सबके साथ मेरा इतना-भर योग है कि, मैं उनकी संगति पाता हूं, आनन्द का भोग-लाभ करता हूं, गीत-भारती का प्रसाद और सबके संगीत का स्वाद पाता हूं।

मनुष्य सबसे अधिक दुर्गम अपने अन्तराल में है : बाहर के देश-काल में उसकी कोई माप नहीं है। मनुष्य अन्तर्मय होता है, बड़ा दुर्गम होता है; और अन्तर के साथ घुल-मिल जाने पर ही, उसके अन्तर का परिचय मिलता है।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित सम्पादक : विश्वनाथ

नया साहित्य

वर्ष 18 जुलाई, 73
अंक 7 वार्षिक मूल्य 5.00

'वर्षा काल' : दिलीप चक्रवर्ती का एक रेखाचित्र

किताबों की दुनिया

अनौपचारिक शिक्षा-पद्धति का आरंभ

पांचवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा मंत्रालय ने जो कार्यक्रम बनाया है उसमें स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयों में नियमित अध्ययन करके डिग्री लेने के स्थान पर घर पर अथवा अन्य खुली, अनौपचारिक विधियों से शिक्षा प्राप्त कर डिग्री लेने की योजना बनाई गई है। प्राइमरी, माध्यमिक तथा उच्च सभी स्तरों पर परीक्षाओं में सम्मिलित होने के इच्छुक सभी व्यक्तियों को इसकी सुविधाएं दी जाएंगी और यह प्रयत्न किया जाएगा कि योजना के अंत तक यह पद्धति शिक्षा का अभिन्न अंग बन जाए। इस मद में 22 अरब रुपया व्यय करने की योजना है। इस योजना से काम-धंधे और रोज़गार में लगे बच्चे तथा बड़े सभी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक खुला विश्वविद्यालय आरंभ किया जाएगा और शिक्षा, परीक्षा आदि सभी पद्धतियों में परिवर्तन किया जाएगा।

375 स्कूली किताबों में अहितकर सामग्री

स्कूली किताबों की जांच के लिए सरकार द्वारा नियुक्त एक विशेषज्ञ समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि लगभग 375 किताबों में राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से अहितकर सामग्री प्रकाशित की गई है। इन किताबों में से 25 की पढ़ाई तो एकदम बंद कर देनी चाहिए और शेष 350 में अच्छी तरह संशोधन किए जाने चाहिए। जांच का यह कार्य नेशनल इंस्टीट्यूट आव एजुकेशन द्वारा किया जाता है। अब तक लगभग साढ़े पांच हजार पुस्तकों की जांच की जा चुकी है।

हुसेन की सचित्र कविता-पुस्तक

विख्यात चित्रकार हुसेन की एक कविता-पुस्तक गत मास जेनेवा म प्रकाशित हुई है जिसमें कविताओं के साथ हुसेन के बनाए चित्र भी हैं। पुस्तक का नाम है 'पोयट्री टु बी सीन' और इसे एक नई स्विस संस्था ने प्रकाशित किया है। इसे बहुत अच्छे कागज पर एक स्विस कलाकार ने हाथ से छापा है। मुल्कराज आनंद की भूमिका है। पुस्तक की केवल सवा सौ प्रतियां छापी गई हैं और प्रत्येक पर हुसेन के हस्ताक्षर हैं। पहली प्रति 6 जून को जेनेवा में डॉ० कर्णसिंह को भेंट की गई।

हम कैमरे से वन्य जीवों का शिकार करें

—जवाहर लाल नेहरू

श्री ई० पी० जी भारत के जंगली पशु-पक्षियों के विशेषज्ञ थे। उन्होंने अपनी आधी जिन्दगी भारत में वन्य जीवों का अवलोकन करते और उनके फोटो खींचते हुए बिताई। उनकी पुस्तक 'दि वाइल्ड लाइफ आफ इंडिया' अपने विषय की अधिकारी पुस्तक है। श्री जवाहर लाल नेहरू ने इसकी भूमिका लिखी थी। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद पहली बार राजपाल एण्ड सन्ज़ से प्रकाशित हो रहा है। श्री जी का अब देहांत हो चुका है परंतु पुस्तक की उपादेयता में कमी नहीं हुई है। यहां हम श्री नेहरू की भूमिका प्रस्तुत कर रहे हैं।

वन्य जीव ? इसी रूप में तो हम अपने जंगलों के उन शानदार पशुओं का और उन सुन्दर पक्षियों का उल्लेख करते हैं, जो हमारे जीवन को उल्लासपूर्ण बनाते हैं। कभी-कभी मैं जानना चाहता हूं, कि यदि इन पशुओं और पक्षियों में सोचने और वर्णन करने की क्षमता हो, तो वे मनुष्य के बारे में क्या सोचेंगे और किस रूप में उसका वर्णन करेंगे। मुझे संदेह है कि उनका वह वर्णन मनुष्य के लिए कोई बहुत प्रशंसात्मक होगा। हमारी संस्कृति और सभ्यता के बावजूद अनेक रूपों में मनुष्य अब भी न केवल जंगली है, बल्कि तथाकथित जंगली जानवरों में से किसीकी भी अपेक्षा अधिक खतरनाक है।

कहा जाता है कि जंगल में जीवन अत्यन्त संकटपूर्ण होता है। बलवान दुर्बलों का शिकार करके जीते हैं और दुर्बल अपनी रक्षा के लिए छलों और छद्म आवरणों का विकास करते हैं। परन्तु जंगल की यह शाश्वत रीति मुख्य रूप से भोजन की खोज के कारण है। मनुष्य मनुष्य को खाता नहीं, परन्तु उसे अन्य प्रयोजनों से मारता है, और जहां वह उसके, शरीरको नहीं भी मारता, वहां भी वह उसकी आत्मा को मार देता है। हम अच्छाई और बुराई के, सभ्यता और बर्बरता के, दिव्यता और नीचता के विचित्र मिश्रण हैं। हम कहते कुछ हैं और करते कुछ और ही हैं। हम ऊंचे आदर्शों का ढोल पीटते हैं और अनेक नारे लगाते हैं, परन्तु अपने आचरण में हम उन्हें झुठला देते हैं। हम शान्ति की बातें करते हैं, और उसमें भी हमारा ढंग प्राय: आक्रमणात्मक और लड़ाई का-सा रहता है।

कथनी और करनी के बीच का यह अन्तर अन्य देशों की अपेक्षा भारत में शायद कुछ अधिक ही है। अन्य किसी भी देश में सिद्धांतत: जीवन को उतना मूल्यवान नहीं समझा जाता जितना भारत में, और यहां के बहुत-से लोग तो ऐसे हैं, जो क्षुद्रतम या अत्यन्त हानिकारक प्राणियों को भी मारते हुए हिचकते हैं। परन्तु व्यवहार में हम प्राणि-जगत् की उपेक्षा करते हैं। गोरक्षा के प्रश्न पर हम उत्तेजित हो उठते हैं। गाय भारत की निधियों में से एक है और उसकी रक्षा की जानी चाहिए। परन्तु हम समझ लेते हैं कि इस विषय में कुछ कानून बना देने से हमारा कर्तव्य पूरा हो गया। इससे गाय की रक्षा तो होती नहीं, उससे मनुष्यों के साथ-साथ गाय को भी भारी हानि पहुंचती

है। ढोर खुले छोड़ दिए जाते हैं और वे जंगली बन जाते हैं और वे न केवल फसलों के लिए, बल्कि आदमियों के लिए भी खतरा बन जाते हैं। वे बिगड़ते जाते हैं और जिस प्रयोजन से हम गाय को अच्छा समझते हैं, वही समाप्त हो जाता है।

अन्य अनेक देशों में बच्चों तक को पशुओं और पक्षियों में बड़ी रुचि होती है। वहां प्राणि-जगत् के सम्बन्ध में अनगिनत पुस्तकेंहैंऔर बहुत-से लोग किसी दुर्लभपक्षी के दर्शन के लिए कठिन यात्राएं करते हैं। वहां खग-प्रेक्षकों की मंडलियां बनती हैं— पक्षियों को मारने के लिए नहीं, अपितु उन्हें देखने और अध्ययन के लिए। हमारे यहां कितने लोग हैं, जिन्हें सामान्य पक्षियों के नाम भी मालूम हों? पशुओं और पक्षियों के विषय में हमारे यहां कितनी थोड़ी पुस्तकें हैं!

भारत में वन्य जीवों के रक्षण के लिए इस नई दिलचस्पी का मैं स्वागत करता हूं। यह मैं नहीं कह सकता कि हम उस प्रकार के वन्य जीवों की रक्षा करें, जो हमारे सभ्य निवास-स्थानों में खतरा बनते हैं या जो हमारी फसलों को नष्ट करते हैं, परन्तु यदि हमारे देखने और साथ खेलने के लिए ये शानदार पशु और पक्षी न रहें, तो जीवन बहुत नीरस और रूखा हो जाएगा। इसलिए अब तक जो कुछ हमारे वन्य जीव बचे हुए हैं, उनके रक्षण के लिए हमें यथासंभव अधिकतम अभयारण्यों का विकास करना चाहिए। हमारे जंगल अनेक दृष्टियों से हमारे लिए अत्यावश्यक हैं। हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए। अभी हाल यह है कि हमने उनका अत्यधिक विनाश किया है। यह सही है कि ज्यों-ज्यों जनसंख्या बढ़ती है, त्यों-त्यों अधिकाधिक अन्न उगाने की आवश्यकता बढ़ती है। परन्तु अन्न का अधिक उत्पादन सघन खेती द्वारा होना चाहिए, न कि उन वनों के विनाश द्वारा जो राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग लेते हैं।

इस प्रसंग में मैं श्री ई० पी० जी की, जो इस विषय पर भारत के विख्यात विद्वानों में से एक हैं, इस उत्कृष्ट पुस्तक का स्वागत करता हूं। यद्यपि वह इंगलैंड के नागरिक हैं, फिर भी उन्होंने अपनी आधी ज़िन्दगी भारत में वन्य जीवों का अवलोकन करते और उनके फोटो खींचते बिताई है। जब सन् 1952 में भारतीय वन्य जीव बोर्ड बना, तब से ही वह उसके सदस्य रहे हैं। जब सन् 1956 में मैं असम में काजीरंगा वन्य जीव-अभयारण्य को देखने को गया था, तब मेरी उनसे भेंट भी हुई थी।

मुझे आशा है कि उनकी यह पुस्तक इस आकर्षक विषय में हमारी रुचि बढ़ाने में सहायक होगी। मैं लेखक के इस मंतव्य से सहमत हूं कि बन्दूक की अपेक्षा कैमरे से शिकार करना कहीं अधिक आनन्ददायक और कठिन है और मैं चाहता हूं कि अधिकाधिक संख्या में हमारे साहसी युवक बन्दूक को त्याग कर कैमरा हाथ में लेना शुरू करें।

हमारे जंगलों का जो भाग बचा है, उसे और उसमें रहने वाले जंगली जीवों को बचाए रखने का हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

• • •

एक लड़की खो गई है

कर्तारसिंह दुग्गल

लेखक के नव प्रकाशित उपन्यास 'हाल मुरीदों का' का एक रोचक अंश

अफवाह फैली कि जब लड़कियां सैर करके लौट रही थीं, राजाओं के एक लड़के ने उन-पर आवाज़ें कसी थीं। फिर किसीने कहा, जब लड़कियां गाड़ों के आंचल में एक खाई पार कर रही थीं तो साथ की खाई में से उनपर किसीने ढेले फेंके थे। फिर सुनने में आया, जावा से घर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया था। अंधेरे में कमाल खान का बेटा मुंह लपेटकर लड़कियों के पीछे भागा था। फिर मशहूर हो गया कि उनमें से एक लड़की घर वापस नहीं पहुंची थी, जावा के पार खाई में रोक ली गई थी। पहले लोग प्रीतो का नाम लेते रहे। जब प्रीतो अपने घर में बैठी मिली तो गुड्डी का नाम लेने लगे। गुड्डी भी जब अपने चौके में बर्तन मांजती मिल गई तो परमेशरी का नाम लेने लग पड़े। परमेशरी की मां घर-घर जाकर कहती, उसकी बेटी तो उसके आंगन में बैठी है, पर उसपर कोई एतबार न करता। फिर वह अपनी बेटी को लेकर गली-गली चल पड़ी। परमेशरी का पीछा छोड़ा तो इंदरो का नाम बदनाम होने लगा—"इंदिरो गायब है!" हर कोई कहता और हाथ मलता। बदकिस्मती से उस दिन इंदरो की तबीयत कुछ ढीली-सी थी और वह अंदर कोठरी में रज़ाई ओढ़कर चारपाई पर थोड़ी देर आराम के लिए लेटी थी और वहीं सो गई थी। इंदरो की सास कहती, "उसने बहू को लौटते देखा था।" पर उसकी कोई न सुनता। अगर उसकी बहू कहीं भागी नहीं थी। तो नज़र क्यों नहीं आती थी? इंदरो की सास से कोई जवाब न बन पड़ता, उसका घर-वाला चारा इकट्ठा करने के लिए गया था। इंदिरो का खाविंद बाहर नौकरी पर था। बेचारी सास अजब उलझन में पड़ गई। जब आंगन में बहुत ज़ोर का शोर होने लगा और भीतर कोठरी में सोई इंदरो की आंख खुली तो वह पलकें मलती बाहर पूछने आई कि यह 'कां'-'कां' क्यों मची है—तब जाकर लोगों ने उसकी सास का एतबार किया।

"तो फिर गोमा होगी"—इंदरो के आंगन से निकलते वक्त किसीने कहा। "गोमा ही होगी।" किसी और ने हामी भरी। "गोमा होगी। वह तो पहले ही भागने को फिरती है।"

और फिर गोमा की एक सहेली ने रोना-पीटना शुरू कर दिया। उसके गांव से गोमा ब्याही हुई आई थी। सहेली कहने लगी, वह जाकर अपने गांववालों को क्या मुंह दिखाएगी। उसकी मां तो रो-रोकर जान दे देगी। एक ही एक तो बेचारी की बेटी थी। गोमा की सहेली सोमा को इस तरह रोता देखकर किसीकी आंखों में आंसू आ गए। रोना-पीटना मच गया। चार कदम आगे जाकर क्या देखते हैं कि सामने से गोमा आ रही थी। उसके सिर पर पानी का घड़ा था... सीढ़ेवालों के कुएं से ठंडा पानी

भरकर ला रही थी। उसकी सास हमेशा खाने के साथ ताज़ा पानी पीती थी। गोमा को देखकर हर कोई आगे बढ़कर उसे आंखें फाड़-फाड़कर पहचानने की कोशिश करता। सोमा बार-बार उसके गले से लगकर रोने लगी। इस भीड़-भब्भड़ में गोमा का घड़ा नीचे गिर पड़ा और रोते-रोते लोगों की हंसी छूट गई।

गोमा का पीछा छोड़ा तो सावनी के पीछे पड़ गए। ज़रूर सावनी को उस आदमी ने हाथ डाला होगा। किस तरह बालों में फुलचिड़िया बनाती थी! पिछले हफ्ते गुदना गोदने वाले को उसने ड्योढ़ी में बैठाकर अपनी कलाई पर 'सतनाम सिरी वाहे गुरु' गुदवाया था। अल्ले-मुहल्ले वालियों ने कहा, बस 'सतनाम' ही काफी है, पर नहीं उसने तो पूरा गुरमन्तर ही गुदवाया और सारी दोपहर अपनी गोरी कलाई परले आदमी के हाथ में पकड़ाए रखी। बार-बार उसका दुपट्टा उसके सिर से खिसक जाता। उसके तोता-मैना बने बाल उस आदमी को कत्ल कर डालते। कई कहने लगीं, "इस चुड़ैल ने उसे पैसे भी कम दिए थे। शाम के वक्त जब उसने काम पूरा किया तो बस सावनी उसकी तरफ मुस्करा दी और गुदना गोदने वाला खुश-खुश चला गया।" सावनी ही होगी। चाहे गुदना गोदनेवाला ही कहीं छिपकर उसका इंतज़ार कर रहा हो। आखिर उसने उसकी कलाई पर इतने सारे अक्खर गोदे थे, कोई ऐसे फोकट में काम थोड़े ही करता है!

लोग बातें कर रहे थे कि किसीने आगे जाकर सावनी को खबर दी। इससे पहले कि लोग इस बात की तसदीक करने के लिए पहुंचते कि सावनी लौटी है या नहीं, उल्टे सावनी ही आगे से उन्हें आकर मिली। एक जूती उतारती तो दूसरी पहनती। वह दुर्गत की उन लोगों की कि 'रहे रब्ब का नां।' औरतों के बाल नोच लिए, मर्दों की दाढ़ी नोच ली।

पर गांव वाले अभी भी नहीं माने। सावनी नहीं तो वीरां होगी। एक लड़की कम थी। जितनी गई थीं, एक लड़की कम लौटी थी। गाड़ों में तो भूत-प्रेत रहते हैं। कई बार तो रोशनी दिखाई देती है, सुलफे की लाट जैसी। नई ब्याही बबुआनी वहां लोप हो गई थी।

वीरां अपने मायके आई हुई थी। उसका घरवाला आज ही शाम के वक्त उसे लेने के लिए आया था। खा-पीकर लड़की-दामाद ऊपर चौबारे में सो रहे थे। आंगन में खड़ी खलकत को देखकर वीरां की मां उनके आगे हाथ जोड़ती, "धीरे बोलो, धीरे बोलो।" वीरां का खाविंद पुलिस में नौकर था। पुलसियों का गुस्सा बुरा। अभी-अभी तो वे ऊपर गए थे। अभी तो उसने उनके बर्तन भी नहीं मांजे थे। पर लोगों को यकीन नहीं हो रहा था। एक-दूसरे को चुटकियां काटते और आंखों ही आंखों में कहते, "बुड्ढी खेखन कर रही है। उसकी बेटी कहीं भाग गई है। न किसीने उसके दामाद को आते देखा था, न वे चौबारे में सो रहे थे। वीरां की मां ने कहा, "मैं झूठ क्यों बोलूंगी?" पर लोग अपने-आप सिर हिलाते जाते। उन्हें वीरां की मां पर ज़रा एतबार नहीं आ रहा था। अचानक ऊपर चौबारे में से चारपाई की चरमराहट सुनाई दी। आंगन में खड़ी औरतें और मर्द पानी-पानी हो गए।

'किंग लियर' का बच्चन-कृत श्रेष्ठ अनुवाद

—रामचंद्रप्रसाद

इसमें संदेह नहीं कि 'किंग लियर' शेक्सपियर के नाटकों में सबसे महत्त्वपूर्ण ही नहीं, सबसे उदात्त भी है। इसके काव्य के सम्बन्ध में हैलिडे का मत है कि वह नायक के उच्छल अन्तर्वेगों के तूफान को समेट सकने और वहन करने में असमर्थ प्रतीत होता है और लगता है कि अत्यधिक तनाव के कारण वह भी, लियर के मस्तिष्क की तरह, छिन्न-भिन्न हो जाएगा।

बहो हवाओ, बहो कि थककर चूर-चूर हो!
बहो वेग से! सघन घनो, बरसो, अखंड—
धारा में बरसो, गिरजे की मीनारें भीगें,
गुंबद डूबें। चकाचौंध करनेवाली चपलाओ,
चमको, तड़पो, कड़को, गरजो, तरजो···। (पृ० ८८)

स्पष्ट है कि 'किंग लियर' के काव्य में 'उच्छृंखल' अन्धड़ के अन्ध झकोरे का वेग है और इसके नायक में 'क्रुद्ध प्रकृति का औद्धत्य'। (पृ० ८५) ऐसी उदात्त रचना के अनुवाद से इस बात का पूरा-पूरा एहसास हो जाता है कि हिन्दी भाषा की सम्भावनाएं सचमुच असीम हैं और बच्चन जैसे पारंगत कवि के हाथों में वह उतनी ही नमनीय हो सकती है जितनी शेक्सपियर के हाथों में अंग्रेज़ी थी। वस्तुत: 'किंग लियर' जैसी रचनाओं का अनुवाद कोई सरल कार्य नहीं। एक अन्य सन्दर्भ में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने कहा है कि "अभी हिन्दी में अनुवाद की प्रामाणिकता का विशेष महत्त्व नहीं है और न उसकी कोई परम्परा बनी है। अत: बहुत लोग अनुवाद को बौद्धिक विलासमात्र मानते हैं किन्तु जो भुक्तभोगी हैं उनका कुछ दूसरा ही अनुभव है। उपयुक्त शब्द या अभिव्यंजना को ढूंढ़ने में जिस अनुवादक की कलम की स्याही सूख-सूख जाती है वह उसे विलास मानने को सहसा कैसे तैयार होगा?" (काव्यालंकार, आमुख, पृ० ङ-च) मुझे विश्वास है कि उपयुक्त शब्द या अभिव्यंजना को ढूंढ़ने में कविवर बच्चन की कलम की स्याही सूख-सूख जाती होगी और यह भी कि 'किंग लियर' का सफल अनुवादक वही व्यक्ति हो सकता है जिसमें कारयित्री प्रतिभा हो। बच्चनजी ने हिन्दी भाषा की सम्भावनाओं को ही उद्‌घाटित नहीं किया है, उन्होंने साफ-साफ दिखला दिया है कि आज भी उनके क्रान्तदर्शी कवि की प्रतिभा अक्षुण्ण है।

विवेच्य अनुवाद की सफलता का रहस्य बच्चन की प्रवहमान तथा मूल जैसी प्राणवती भाषा है। उदाहरणार्थ उन स्थलों के अनुवाद देखिए जो (मूल में) बड़े ही मर्मस्पर्शी किन्तु जटिल हैं।

"दुखिया टाम, जो तैरते मेघों को खाता है, डड्डुओं को, मेढकों को, बिस्तुइयों को और पनिहे···जब बदजात शैतान उसके अन्दर दुन्द मचाता है

तो दिल की गर्मी में वह सलाद की जगह गोबर खाता है, बूढ़े चूहों को निगल जाता है, नाली के कुत्तों को भी, और पीता है बजबजाते चहबच्चे का काईदार पानी···।" (पृ० ६६)

अनूदित त्रासदी का नायक लियर उन लोगों में है जो कष्ट तो सहते हैं पर निराश नहीं होते। उसने दुख झेलना सीखा है और उसका टूटा हुआ मन तथा जर्जर शरीर सब्र करने में समर्थ है। अपने पागलपन की तीसरी मंज़िल पर आकर वह शान्तचित्त ही नहीं है वरन् उस अग्निपरीक्षा के लिए भी प्रस्तुत हो जाता है जो अभी होनेवाली है। वही थका-मांदा शेर जो कभी स्वर्ग को भी चुनौती देता था और जिसकी बददुआओं से वनभूमि का कोना-कोना गूंज उठता था, अब एक असहाय वृद्ध व्यक्ति बन जाता है। उसके इस शोकाकुल क्षण में कॉर्डिलिया की करुणा अमृत-धार की तरह फूट पड़ती है और प्रेम का आधिपत्य स्थापित हो जाता है—अहंकार, क्रोध और घृणा तिरोहित हो जाती है। इसलिए कॉर्डिलिया लियर की दृष्टि में प्रेतात्मा-सी लगती है: "ज्ञात मुझे, तुम प्रेतात्मा हो; कहो कब मरी ?"

(पृ० 147)

बच्चन के अनुवाद में 'लियर' की भाषा ही अनूदित नहीं हुई, उसकी आत्मा भी रूपान्तरित हुई है—इसमें 'लियर' का रूप ही अनूदित नहीं हुआ, उसकी वस्तु भी अवितथ अनूदित हुई है। इसकी भाषा में वही प्रवाह है, लियर की अन्तर्वेदना को सम्प्रेषित कर सकने की वही क्षमता है जो मूल में है। कहने की आवश्यकता नहीं कि कविवर बच्चन ने जान-बूझकर, और ठीक ही, चलती-फिरती भाषा में, अत्यन्त सशक्त एवं सटीक शब्दों में 'किंग लियर' का अनुवाद प्रस्तुत किया है और मूल के रूपक एवं काव्यबिम्ब, प्रतीक तथा भाव प्रायः अक्षुण्ण रखे हैं।

(**'समीक्षा', पटना**)

मैं अपनी कहानियों में अपने को ढूंढ़ता फिरता हूं !

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

(लेखक की प्रकाशनाधीन 'मेरी प्रिय कहानियां' की भूमिका)

'मेरी प्रिय कहानियां' पुस्तकमाला के अंतर्गत संकलित इन नौ कहानियों के अलावा मेरी अन्य कहानियां मुझे तनिक भी अप्रिय नहीं। अपनी कोई रचना मुझे कभी अप्रिय नहीं लगी···नहीं लगती। कोई 'प्रियतर' अथवा 'प्रितम/प्रियतमा' भी नहीं। इसका कोई कारण 'शो कॉज (show cause) नहीं बतला सकूंगा। क्योंकि जानता नहीं···।

मेरे अशिक्षित कथाकार के लिए अपनी रचनाओं की लम्बी भूमिका बहुत ही कठिन और अप्रिय लेखन है। ऐसे अवसरों पर व्यर्थ पांडित्य-प्रदर्शन की हास्यास्पद प्रचेष्टा के बदले मैंने सदा साफगोई का सहारा लिया है। कवि शमशेर बहादुर सिंह की इस प्रसिद्ध पंक्ति को दुहराया किया है—'बात बोलेगी, मैं नहीं/राज़ खोलेगी, बात ही···मैं नहीं···'

मेरे साधारण पाठक मेरी ऐसी स्पष्टवादिता अथवा सपाटबयानी से सदा संतुष्ट हुए हैं। और साहित्य के राज़दार पंडित-कथाकार-आलोचकों ने हमेशा नाराज़ होकर मुझे एक जीवनदर्शनहीन-अपदार्थ-अप्रतिबद्ध-व्यर्थ-रोमांटिक प्राणी प्रमाणित किया है।···सारे तालाब को गंदला करने वाला जीव।

इसके बावजूद कभी मुझसे इससे ज़्यादा नहीं बोला गया कि अपनी कहानियों में मैं अपने को ही ढूंढ़ता फिरता हूं, अपने को अर्थात् आदमी को···। बंगला में एक मुहावरा प्रचलित हैं—"पेटे बोमा मारलेऊ मुख दिए 'क' बेरुबे ना"—अर्थात् पेट पर बम मारने पर भी मुंह से 'क' नहीं निकलेगा। हो तब तो निकले। तब भी अपनी कई कहानियों के बारे में मुझे कई प्रतिष्ठित पत्रिका के मित्र-संपादकों को बजाप्ता हलफनामा लिखकर देना पड़ता है (तब समझा कि पेट पर बम कैसे मारा जाता है और अपने को ढूंढ़ना इतना खतरनाक काम है।) ईमान से, धर्म से, जो कह रहा हूं सच कह रहा हूं कि जो लिखा है सो झूठ लिखा है यानी इस कहानी के सभी स्थान-काल-पात्र और घटनाएं सरासर कपोल-कल्पित हैं···कि किसी राष्ट्र, देश, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, समाज, पार्टी, वर्ग या व्यक्ति-विशेष के विरुद्ध घृणा या विद्वेष फैलाने के उद्देश्य से यह कहानी नहीं लिखी गई है।

फिर भी यानी शपथपूर्वक कहने के बाद भी, मित्र संपादकों ने कहानियों की कई पंक्तियों को आपत्तिजनक मानकर काट दिया और कई शब्दों के बदले अपने 'श्लील शब्द' देकर ही छापा···इस संकलन में मैंने उन कटी पंक्तियों को जोड़ दिया है और सही शब्दों को मूल स्थानों पर फिर से स्थापित कर दिया है।

'अब्दुल्ला दीवाना' नाटक के लेखक डा० लक्ष्मी नारायण लाल

अब्दुल्ला की किस

[डा० ... लाल 'अब्दु... पर उसके

जीवन में चुनौती के कई रूप होते हैं। कई स्तरों पर अपने परिवेश को स्वीकार करना जीवन की सार्थकता का पर्याय मानता हूं। गत पंद्रह वर्षों में विभिन्न भूमिकाओं के स्तर पर मैं उन चुनौतियों को स्वीकारता चला आया हूं।

पर डा० लक्ष्मीनारायण लाल के नये नाटक 'अब्दुल्ला दीवाना' की चुनौती एक अजब चुनौती थी, अभूतपूर्व। रंगमंच से जुड़ा हुआ कलाकार, उसकी ईमानदारी और ऐसे निश्छल, सच्चे नाटक का अर्थ, जिसके संदर्भ व्यापक हैं, सबका आमना-सामना कोई आसान बात तो नहीं।

इस नाटक को पढ़कर, सुनकर, न जाने कितनी बार फिर पढ़कर और अपनी बंद आंखों के भीतर इसे देखकर मुझे लगा इस नाटक के चरित्र खुद ही मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं। अभिनेता गवाह हैं। दर्शक अभियोगी हैं।

इसके निर्देशन क्या, इसकी तलाश के दौरान मैंने इस बात को और भी गहराई से महसूस किया है कि दरअसल हमने अब्दुल्ला की हत्या की है। यह हत्या किसी एक व्यक्ति की हत्या नहीं

की किसने की ?

श्याम अरोड़ा

[डा० ... लाल के शीघ्र प्रकाश्य नाटक
'अब्दु...' पर उसके निर्देशक की टिप्पणी]

बल्कि उसके जीवन-मूल्यों की हत्या है। व्यक्ति तो अपने भौतिक स्तर पर खूब फला-फूला है पर उसकी धुरी का उच्छेदन हो गया है। और सबसे बड़ा मज़ाक यह कि यह हत्या, यह उच्छेदन किया है उन्होंने जो किसी नई धुरी के निर्माण में सर्वथा असमर्थ हैं। अब्दुल्ला-विहीन समाज और काल को इतने निकट से देखना और उसे भोगना, फिर उसका प्रहसन करना कोई आसान चुनौती नहीं। और अंत में उन शक्तियों का परिचय पाना जो अब्दुल्ला की हत्या के लिए उत्तरदायी हैं, यह एक ऐसी अनुभूति है जो न जाने कब तक परेशान करने वाली है।

यदि मैं अतिरंजित बात नहीं कह रहा तो स्वीकार करना होगा कि आज हमारे समूचे जीवन-वृत्त को राजनीति के चारों ओर असहाय घूमना पड़ रहा है। इस निरर्थक चक्कर से क्षुब्ध तब होना पड़ता है जब निराशा, हताशा और एक व्यापक अंधकार में भटकती पराजित मनोवृत्ति ही चारों ओर दिखलाई पड़ती है। अनिश्चय और असुरक्षा हमारे अकिंचन स्वरूप को और भी खंडित कर देती हैं। और यदि हम इसके खिलाफ कुछ कहते भी हैं तो प्रतीत होता है कि
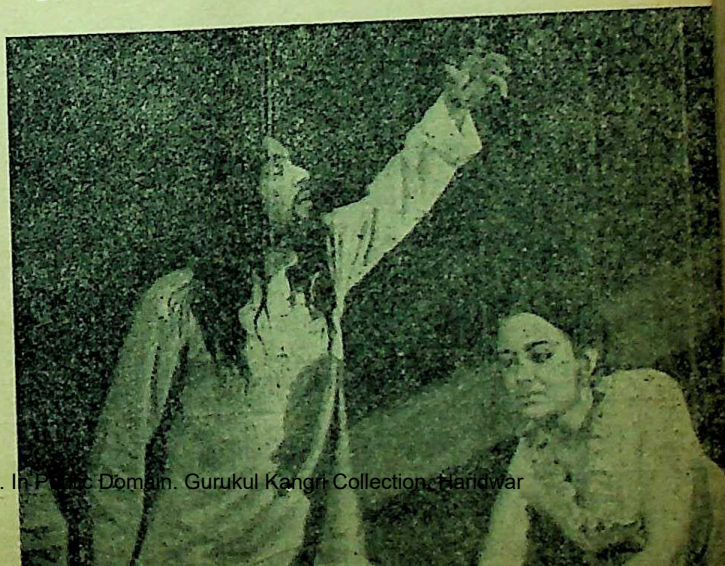
आगामी प्रकाशन

1. **भारतीय सेना और युद्धकला :** ले० कर्नल गौतम शर्मा की इस पुस्तक में वैदिक काल से आज तक की भारतीय सेना का संगठन, युद्ध-कौशल, अस्त्र-शस्त्र, युद्ध-नीति और लड़े गए महत्त्वपूर्ण युद्धों का जीवन्त वर्णन है। भारत-पाक निर्णायक युद्ध में भारतीय पक्ष की विजय के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। दरअस्ल, भारत की सुरक्षा और युद्ध-नीति का प्रस्तुत पुस्तक में सहज शैली में प्रस्तुतीकरण हुआ है।

2. **तीस-चालीस-पचास** (उपन्यास) : डा० प्रभाकर माचवे का यह नवीनतम उपन्यास इस समूचे युग की उथल-पुथल को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त करता है। इसमें तीन पीढ़ियों—कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, हिप्पी—के माध्यम से बीसवीं सदी के तेज़ी से बदलते मानव-जीवन की कथा बड़े रोचक ढंग से कही गई है।

3. **मेरी प्रिय कहानियां :** लोकप्रिय कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अब तक लिखी अपनी कहानियों में से अपनी पसन्द की श्रेष्ठ कहानियां प्रस्तुत पुस्तक में दी हैं। उन्हें ये कहानियां क्यों प्रिय हैं, इसपर प्रकाश डालने की दृष्टि से आरम्भ में भूमिका दी गई है जिससे पुस्तक का महत्त्व और बढ़ जाता है। एक ही जिल्द में कथाकार की प्रतिनिधि कहानियां।

4. **अब्दुल्ला दीवाना** (नाटक) : प्रस्तुत पुस्तक डा० लक्ष्मीनारायण लाल का नवीनतम बहुचर्चित नाटक है। हिन्दी में संभवतः यह पहला नाटक है जिसमें समसामयिक स्थिति और सभी क्षेत्रों में जीवन के विघटन पर चुभता हुआ प्रहार किया गया है। राजधानी दिल्ली में इसका सफलतापूर्वक मंचन किया जा चुका है जिसकी जानकार लोगों ने सराहना की है।

विश्वविख्यात उपन्यास तथा कहानियों के संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर सुलभ कराने वाली सीरीज़ 'किशोर-साहित्य' की नई पुस्तकें।

5. **मोबी डिक** : हरमन मेलविल
6. **जंगल की पुकार** : जैक लंडन

राजपाल एण्ड सन्ज़

उस विरोध का असर और महत्ता कुत्ते के भौंकने के स्तर से भी कम है।

इस हालत में सिर्फ दो स्थितियां हमारे सामने हैं, हमारे चारों ओर हैं—एक, राजनेताओं के खोखले नारे, दूसरे, अंधविश्वास में से पनपता हुआ नया चमत्कारपूर्ण धर्म और नव ईश्वरवाद।

'अब्दुल्ला दीवाना' में यही तस्वीर शुद्ध अभिधा में व्यक्त है। अब्दुल्ला को मारकर नया उच्चवर्ग आया है। उसी वर्ग का खोखलापन, नंगापन और सत्ता तथा व्यवस्था से चंदे के एवज़ में इस नये वर्ग को जो ताकत, स्वरूप, हैसियत मिली है, वही इस नाटक में व्यक्त है।

यह सब कुछ जितना ही हास्यास्पद है, उतना ही करुण है।

मैंने अनुभव किया कि लाल ने अपने इस नाटक में समस्या नहीं उठाई है बल्कि वे सीधे प्रश्न से ही जूझे हैं।

उनका आग्रह प्रश्न की कलात्मकता के प्रति उतना नहीं है जितना अपने कृतित्व के दायित्व के प्रति सचेत रहने का है। इस नाटक पर कहीं से भी, किसी तरह से भी, पूर्णतया महानता का आरोपण नहीं है। शायद तभी ही यह स्थूल किंतु सच्ची, खरी और अपेक्षित बात कहने से कहीं कतराया नहीं है।

मुकदमा चल रहा है कि उस अब्दुल्ला की हत्या किसने की ? जिनपर इस हत्या का आरोप है—वे कोई साधारण आदमी नहीं हैं। वे बड़े ही ताकतवर लोग हैं। बड़ी ही पहुंच के लोग हैं। बड़े ही धर्मात्मा लोग। वे कुछ भी बोल सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं।

पर वे कहीं न कहीं अब्दुल्ला के संपर्क में कभी ज़रूर आए हैं। बहस के दौरान जब प्रत्येक व्यक्ति बयान देता हुआ अन्तर्मुख हो जाता है तो हर कोई स्वीकार करता है कि उसने अब्दुल्ला को देखा है। प्रत्येक बार जब-जब कोई व्यक्ति पथभ्रष्ट होने लगा था, तब-तब वह अदृश्य, अभूर्त दीवाना अब्दुल्ला प्रकट होकर उसकी चेतना को झकझोरता है। पर जब असत्य विजयी हो जाता है तो उसे लगता है कि शायद उसके बाद अब्दुल्ला मर गया। तब लगता है, अब्दुल्ला और कोई नहीं, व्यक्ति के भीतर का एक अत्यंत मानवीय सत्य है जो अलग-अलग व्यक्तियों में परिस्थिति के अनुसार जी उठता है। कभी शिकार करते समय व्यक्ति के आड़े आ जाता है, कभी हत्यारे के सामने खड़ा हो जाता है। कभी लूटते हुए व्यक्ति से पूछ बैठता है—'मनुष्य अर्थ का दास है, पर अर्थ किसका दास है ?'

पर इस हत्या से बचने के अनेक उपाय हैं। सम्मानित, मर्यादित और निर्दोष बने रहने के भी अनेक साधन और तौर-तरीके हैं।

उन साधनों की ड्रिल, पागलपन, चरित्रांकन, प्रहसन, अदृश्य चरित्रों की भीड़, सूक्ष्म दैवी सत्संग चित्र···नाटक इतना गैर जिम्मेदार लगता है कि उसको पकड़ना मुश्किल हो जाता है।

लोक-रंगमंच की तरह इसके चरित्र एकाएक अभिनेता हो जाते हैं, एकाएक दर्शक और समान रूप से वही यथार्थ भोक्ता और रंगनियामक।

• • •

एक बड़ा पुस्तकालय मानवता की डायरी है। —थामस जैफरसन

1. **प्रगति के पथ पर** (उपन्यास) : लोकप्रिय उपन्यासकार गुरुदत्त के इस नवीन उपन्यास में अनेक सामाजिक और मानवीय समस्याओं के साथ एक विस्तृत पटल पर भारत के जन-मानस का रोचक चित्र प्रस्तुत है। जांत-पांत, धर्म-संप्रदायों के झगड़े में फंसी यह जनता स्वतंत्रता की किस हद तक अधिकारी है, यह इस उपन्यास के पढ़ने से स्पष्ट होता है। 8.00

---

2. **कृपया दायें चलिए** (व्यंग्य-रचनाएं) : अमृतलाल नागर की इस पुस्तक में व्यंग्य-रचनाओं का संकलन है। श्री नागर एक सुप्रतिष्ठित कथाकार के साथ ही प्रथम कोटि के व्यंग्य-लेखक हैं। प्रस्तुत संकलन की व्यंग्य-रचनाएं जीवन के विविध पक्षों को रोचक ढंग से उजागर करती हैं। 5.00

---

3. **प्रेत** (उपन्यास) : नई पीढ़ी के अग्रणी लेखक श्रवणकुमार का यह ताज़ा उपन्यास आधुनिक संघर्षशील जीवन तथा उससे उत्पन्न मानसिक गुत्थियों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। 4.00

---

4. **विषाद मठ** (उपन्यास) : रांगेय राघव का प्रस्तुत उपन्यास तत्कालीन अकाल-ग्रस्त बंगाल तथा वहां की जनता की आपबीती का सच्चा इतिहास है। इसमें एक भी अत्युक्ति नहीं, कहीं भी अकाल की भीषणता को गढ़ने के लिए कोई मनगढ़न्त कहानी नहीं। जो कुछ है, यथार्थ का एक जीता-जागता चित्र है। 7.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

मूल्यांकन

उतरती हुई धूप

गोविन्द मिश्र

'उतरती हुई धूप' गोविंद मिश्र का दूसरा उपन्यास है। अपने पहले उपन्यास ('वह/अपना चेहरा') में मिश्र ने तनाव को भिन्न ढंग से उठाया था और उसका परिवेश नौकरशाही की आंतरिक विडंबना थी, किंतु 'उतरती हुई धूप' का कथ्य और परिवेश 'वह/अपना चेहरा' से अलग है।

बाहर से देखें तो यह उपन्यास विश्वविद्यालयी जीवन का रोमांस और अतीत रोदन प्रतीत होता है, किंतु इस उपन्यास की व्याप्तियां इतनी सीमित नहीं हैं। गोविंद मिश्र ने स्थितियों को किंचित् गहराई में उतरकर देखा है। इस उपन्यास में यौन और प्रेम का ट्रीटमेंट एक भिन्न स्तर पर हुआ है। पहले हिस्से में नायक संतुलित, आत्म-केंद्रित और किंचित् जटिल मालूम पड़ता है—लड़की बेहद भावुक, कमज़ोर और स्वत्व-समर्पिता लगती है, किंतु आधी मंज़िल तक पहुंचते हुए दस वर्षों का दांपत्य जीवन नायिका को आश्चर्यजनक रूप से सर्द बना देता है। अपनी समर्पिता प्रेमिका को इस रूप में पाकर नायक अत्यंत निरीह और छोटा बन जाता है।

इन दोनों चरित्रों के पारस्परिक टकराव से एक चीज साफ उभर कर सामने आ जाती है, कि अवांछित स्थितियों और माहौल ने इन दोनों को बाहर-भीतर से बिल्कुल बदल दिया है। अतीत की अदृश्य कोमलता को पुनर्जीवित करने के लिए नायक बराबर जूझता रहता है—संबंधों को पुरानी प्रतीति के बल पर प्रासंगिक बनाने की कोशिश करता है, किंतु प्रेमिका पिघलने की प्रक्रिया के बीच से नहीं गुज़रती। वह निरंतर सख्त और अभेद्य होती चलती है।

भाषा के स्तर पर भी लेखक ने पुराने ढर्रे को काटा है। उपन्यास में बिखरी हुई स्थितियां एक विशेष प्रकार की मानसिकता की ओर संकेत करती हैं और भाषा आंतरिक तनाव और घुटन को केवल स्वगत कथन बनाकर नहीं छोड़ जाती। 'उतरती हुई धूप' के पात्रों का आत्मालाप पाठक के एहसास से जुड़ता हुआ लगता है।

तथाकथित आधुनिकता के कई दावेदार लेखक भिन्न-भिन्न रंग के चश्मों से आक्रांत होकर प्रेम को किसी और ही दुनिया की चीज घोषित करते हैं, क्योंकि यह संवेदना उन्हें एडोलिसेंट लगती है। किंतु रचना के स्तर पर प्रेम और यौन आज भी चुनौती हैं। किसी लेखक की रचनाशीलता ही तय करती है कि उक्त विषय की व्याप्तियां कितनी गहरी और संदर्भों से जुड़ी हुई हैं। 'दूसरी बार' (श्रीकांत वर्मा) और 'एक पति के नोट्स' (महेंद्र भल्ला) से 'उतरती हुई धूप' आगे की स्थितियां और ज़्यादा गहरे रंग से रेखांकित करता है।

कहानियां बहुत लिखी जाती हैं परन्तु उनमें से कुछ ही साहित्य में स्थायी स्थान प्राप्त करती हैं। हिन्दी में अनेक लेखकों ने श्रेष्ठ कथाकार के नाते ख्याति अर्जित की है। उन सभी की चुनी हुई कहानियों को सुनियोजित रूप में सुलभ करना इस माला का उद्देश्य है। इनमें क्रमशः सभी प्रमुख कहानीकार प्रकाशित किए जा रहे हैं और कहानियों का चुनाव भी अपने संपूर्ण लेखन में से उन्होंने स्वयं किया है। इसके अतिरिक्त उनकी शैली, कथ्य, विचारधारा आदि पर प्रकाश डालने की दृष्टि से प्रत्येक में उनकी विशेष रूप से लिखी भूमिकाएं भी हैं।

- कृश्न चन्दर
- यशपाल
- विष्णु प्रभाकर
- अमृतलाल नागर
- कमलेश्वर
- निर्गुण
- निर्मल वर्मा
- बलवन्तसिंह
- राजेन्द्र यादव
- शैलेश मटियानी
- शिवानी
- रेणु
- महीपसिंह
- रांगेय राघव
- अमृतराय
- मोहन राकेश
- मन्नू भंडारी
- भगवतीप्रसाद वाजपेयी
- आचार्य चतुरसेन
- उपेन्द्रनाथ अश्क
- अमृता प्रीतम
- इलाचन्द्र जोशी

राजपाल एण्ड सन्ज कश्मीरी गेट दिल्ली-6

उपन्यास विश्वविद्यालयी माहौल से जुड़ा हुआ है और प्रारंभ में यह बड़कन बहुत साफ है। इलाहाबाद का जिक्र विश्वविद्यालय और उसकी गतिविधियों के बिना प्राय: अधूरा ही कहा जाएगा। गोविंद मिश्र ने विश्वविद्यालय को एक खास वक्त पर शब्द देने का प्रयास किया है। 'इलाहाबाद उन शहरों में से है जहां हर मौसम घड़ी के निशान की तरह उछल आता है। जाड़े की छुट्टियों के बाद से ही यूनिवर्सिटी एरिया का रवैया कितने साफ-साफ अंदाज में बदलना शुरू करता है—होस्टल के कमरे रात को देर-देर तक जिंदा रहने लगते हैं। सड़कों पर घुमक्कड़ों के गिरोह पतले पड़ने लगते हैं। घूमते तब भी हैं लोग पर सिर्फ शाम को और यह भी वे जिन्हें पढ़ाई से कभी सरोकर नहीं था या वे जो टॉप करने वाले हैं। वह पढ़ाई भी क्या जो किसीने देख ली !···दिन में घुमाई, रात नौ बजे के बाद दो बजे तक पढ़ाई।' (पृष्ठ : २१)

'उतरती हुई धूप' एक लघु उपन्यास है और उसमें सामाजिकता के घोर ज्वलंत प्रश्नों की भी गूंज नहीं है, तथापि गोविंद मिश्र ने यौन तथा प्रेम जैसे विषय को लेकर एक साफ-सुथरी रचना प्रस्तुत की है। 'उतरती हुई धूप' का फैलाव कम है, किंतु गहराई का अभाव नहीं है। 'साब, क्या कोई गमी हो गई है?' प्रश्न अतीत को काटने में सांकेतिक ढंग से सहायक हुआ है गोकि लेखक अतीत को कहीं से नहीं काट पाया है। **(से० रा० यात्री : सारिका)**

गले-गले पानी

रामकुमार 'भ्रमर'

कथित माडर्न सोसाइटी की बढ़ती जा रही सीमाओं में घिरते हमारे जीवन के साथ-साथ हमारी सामाजिक मान्यताएं, संस्कार सभी की तोड़फोड़, परिवर्तन के लिए मचल रहे एक परिवार के इर्द-गिर्द भ्रमर का यह कथानक गूंथा गया है।

भ्रमर की सहज और प्रभावी शैली ने कथानक को बहुत उठा दिया है।

अजय स्त्री-पुरुष के बीच विवाह को संस्कार के रूप में न देखकर समझौते के रूप में देखना चाहता है, जो टूट सकता है, बन सकता है और इसी समझौते के पीछे जब अपनी प्रशंसिका एक कुंवारी लड़की को अपनाता है तो परिवार का विभाजन अवश्यंभावी हो जाता है। वह पत्नी को खो बैठता है—किन्तु स्वयं के स्वार्थ के लिए 'समझौते' की भाषा का प्रयोग करने वाला अजय, अपनी पत्नी 'राजी' को दूसरे विवाह के लिए तत्पर देख बौखला उठता है। अपनी प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा की फिक्र उसे धर दबोचती है। पर अपमानित, प्रताड़ित राजी परिस्थितियों के थपेड़े खाकर इतनी निष्ठुर हो जाती है कि, केवल इसी बात का सुख पाकर कि अजय को समझौते की इस भाषा से कितनी पीड़ा होती है, दूसरा विवाह करती है। वह अपने पुत्र के वात्सल्य भाव से क्षण-भर के लिए विचलित अवश्य होती है, पर पुन: स्वयं को सम्भाल लेती है।

कथानक का निर्वाह इस खूबी से किया गया है कि संस्कार और भावों के प्रवाह में परिवार जुड़ता-सा कई बार लगकर भी, राजी की दृढ़ता से, अलग ही रहता है—एक समझौता जो आखिर तक नहीं हो पाता। उपन्यास पठनीय है। कथित बुद्धजीवियों के लिए करारा व्यंग्य है।

('युगधर्म')

समाचार

सोहनलाल द्विवेदी भारतीय साहित्य परिषद् के अध्यक्ष

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी अगले दो वर्ष के लिए भारतीय साहित्य परिषद् के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

स्व० कुमारमंगलम की पुस्तिका प्रकाशित

केन्द्रीय मंत्री श्री मोहन कुमारमंगलम की विमान-दुर्घटना में मृत्यु के पश्चात् 'जुडीशियल एपाइन्टमेंट्स' नामक उनकी पुस्तिका प्रकाशित की गई जिसमें उन्होंने भारत के प्रमुख न्यायाधीश श्री ए० एन० रे की नियुक्ति के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए हैं। पुस्तक का प्रकाशन अनौपचारिक रूप से किया गया और पुस्तिका की पहली प्रति प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी को दी गई।

फ्रेंच उपन्यासकार की मृत्यु

दो महायुद्धों के बीच फ्रांस के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार मारिस डेकोब्रा की 88 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई। श्री डेकोब्रा ने अनेक उपन्यास लिखे और 32 भाषाओं में उनके अनुवाद प्रकाशित हुए। उनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास "ला मेडोने दे स्लीपिंग्स' (गाड़ी में सो रही स्त्री) है जिसकी साढ़े आठ लाख प्रतियां बिकीं।

कृश्न चन्दर का कहानी-संग्रह कज़ाकिस्तान में प्रकाशित

कज़ाकिस्तान में प्रसिद्ध लेखक कृश्न चन्दर की कहानियों का एक संग्रह 'कागज की नाव' नाम से प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक कज़ाक भाषा की अफ्रो-एशियाई साहित्य-माला के अंतर्गत प्रकाशित की गई है।

भारत के राजदूत हिन्दी में प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेंगे

भारत सरकार ने विदेश मंत्रालय से एक आदेश में कहा है कि विदेशों को जाने वाले भारतीय राजदूत राष्ट्राध्यक्षों के समक्ष अपने प्रमाणपत्र हिन्दी में ही प्रस्तुत करें। विदेशों से भारत के जो संधियां और समझौते होते हैं उनका भी अधिकृत हिन्दी अनुवाद साथ ही साथ तैयार करने का यथाशक्य प्रयत्न किया जाएगा।

लैला खालिद की पुस्तक पर प्रतिबंध की मांग

गत मास ब्रिटेन में प्रसिद्ध गुरिल्ला हाइजैकर लैला खालिद की 'माई पीपल शैल लिव', नामक किताब प्रकाशित हुई, जिसमें हाइजैकिंग की विधियों का विस्तृत वर्णन है। ब्रिटेन के पाइलट संघ ने इसपर तुरंत प्रतिबंध लगाने की मांग की है क्योंकि उन्हें भय है कि इसे पढ़कर युवक-युवतियां हाइजैकिंग की ओर आकृष्ट होंगे। लैला खालिद ने कुछ सहयोगियों के साथ 1969 में एक बोइंग विमान की सफल हाइजैकिंग की थी और अंत में उसे उड़ा दिया था। इस सिलसिले में लैला खालिद को सज़ा भी हुई।

अमर संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद

हिन्दी में अपने ढंग की एक अनोखी पुस्तक-माला जिसे अनेक प्रतिष्ठित लेखकों ने प्रस्तुत किया है। सरल भाषा तथा आकर्षक साज-सज्जा से युक्त इस माला की हर पुस्तक आपके पुस्तकालय की शोभा बन सकती है।

वाल्मीकीय रामायण	: अनु० आनन्दकुमार	5.00
कौटिल्य अर्थशास्त्र	: " प्रो० इन्द्र एम० ए०	4.50
हितापदेश	: " आनन्द	4.00
पंचतंत्र	: " सत्यकाम विद्यालंकार	5.00
अभिज्ञानशाकुन्तल	: " विराज एम० ए०	3.00
कुमारसंभव	: " विराज एम० ए०	3.50
कादम्बरी	: " भगवतशरण उपाध्याय	3.50
स्वप्नवासवदत्ता	: " भगवतशरण उपाध्याय	4.00
दशकुमारचरित	: " डा० रांगेय राघव	3.75
मृच्छकटिक	: " डा० रांगेय राघव	4.00
मुद्राराक्षस	: " डा० रांगेय राघव	2.50
रघुवंश	: " इन्द्र विद्यावाचस्पति	3.50

राजपाल एण्ड सन्ज़

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32

रजिस्टर्ड नं० डी-411

560 जासूसी उपन्यासों के लेखक जान क्रीसे की मृत्यु

अपराध, जासूसी और साहसपूर्ण उपन्यासों के लोकप्रिय ब्रिटिश लेखक जान क्रीसे की गत मास 64 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई। चालीस वर्षों के दौरान उन्होंने 560 उपन्यासों की रचना की जिनकी 6 करोड़ से अधिक प्रतियां बिकीं। संसार की 23 भाषाओं में इनके अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। जान क्रीसे अन्य अनेक नामों से भी लिखते थे जिनमें एन्थॉनी मार्टन, माइकेल हैलीडे, नार्मन डीन, जे०जे० मैरिक, गार्डन ऐश, जेरेमी यार्क और पीटर मैंटन प्रमुख हैं।

उनके अनेक नामों से लिखने का कारण यह था कि वे आरंभ में ही जान गए थे कि एक प्रकाशक एक लेखक की एक वर्ष में दो या तीन रचनाओं से ज़्यादा प्रकाशित नहीं कर पाते। वे ज़रूरतमंद थे और उन्हें धन की शीघ्र आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने अनेक नामों से लिखना आरंभ कर दिया। उनकी कृतियां छपना आरंभ होने से पहले 734 बार प्रकाशकों की ओर से वे 'सधन्यवाद वापस' लौटाई गई थीं। जान क्रीसे हाथ से ही लिखते थे और टाइपराइटर का इस्तेमाल नहीं करते थे। प्रतिदिन वे 6 हज़ार शब्द अवश्य लिखते थे।

क्रीसे के पिता मजदूर थे। दो वर्ष की ही आयु में उनको पोलियो की बीमारी हो गई जिसे ठीक होने में चार वर्ष लग गए। जब वे चौदह वर्ष के थे, तभी उन्होंने स्कूल छोड़ दिया, और नौकरी करने लगे। अगले सात साल तक उन्होंने पांच जगह काम किया और छोड़ा। फिर उन्होंने लिखना शुरू किया। आरंभ में उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा परंतु धीरे-धीरे वे जमते चले गए।

अपने जासूसी उपन्यासों में उन्होंने इंस्पेक्टर वेस्ट नामक स्काटलैंड यार्ड के एक जासूस का निर्माण किया जो एक धनी युवक है और बहुत साहसी भी है। गरीब क्रीसे ने उसमें धनिकों के जीवन से संबंधित उन सब कल्पनाओं को साकार किया है जिनका उनके अपने जीवन में अभाव रहा। वे पहले से कहानी सोचकर उपन्यास लिखना नहीं शुरू करते थे। मामूली घटना को आधार बनाकर वे लिखना आरंभ करते थे और धीरे-धीरे कहानी स्वयं विकसित होती चली जाती थी।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा ग्रिट्समैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली–6, द्वारा प्रकाशित

सम्पादक : विश्वनाथ

वर्ष 18 अक्तूबर, 73
अंक 10 वार्षिक मूल्य 5.00

नया साहित्य

किताबों की दुनिया

—डॉ० प्रभाकर माचवे

मरहूम सज्जाद ज़हीर

मुझे याद आता है कि बंबई में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के पहले अधिवेशन में मैंने सज्जाद ज़हीर साहब को सबसे पहले देखा। बाद में प्रगतिशील लेखक संघ के कई अधिवेशनों में वे मिले। उस तहरीक के वे, मुल्कराज आनंद, राजा राव, इकबाल सिंह ये सबसे पहले नींव डालने वालों में से थे। 1943 में जब 'कौमी जंग' (जनयुद्ध) कई भाषाओं में बंबई की कम्युनिस्ट पार्टी से निकलता था, तो सज्जाद ज़हीर, अली सरदार जाफरी आदि उर्दू साप्ताहिक में काम करते थे। 'मुस्लिम वर्ल्ड' नाम का एक कालम अंग्रेज़ी 'पीपुल्स वार' में छपता था, जो सज्जाद ज़हीर लिखते थे। उसमें एक मस्जिद और मीनार का चित्र हर हफ्ते आता। मैंने भोले भाव से ज़हीर साहब से पूछा, "क्यों साहब, साम्यवादी तो धर्म-विरोधी हैं। और ये मस्जिद की तस्वीर फिर क्यों?" उन्होंने अपनी सौम्य मुस्कुराहट से कहा—अभी भी हमारी कौम को अज़ान का आकर्षण ज़्यादा है, क्योंकि उसमें कम पढ़े-लिखे लोग हैं। वे दिन थे जब कम्युनिस्ट पार्टी जिन्ना साहब की पाकिस्तान बनने की मांग का—अल्पसंख्यकों के अल्प-निर्णय के अधिकार के नाते समर्थन करती थी। दिल्ली में एंटी फासिस्ट राइटर्स सम्मेलन शाहिद लतीफ और स० ही० वात्स्यायन ने जून-जुलाई 1943 में बुलाया। तब सज्जाद ज़हीर उसमें थे, मुझे बराबर याद आता है। 'नया साहित्य' (हिंदी द्वैमासिक) में, बंबई से छपनेवाले साहित्यिक मोर्चे के पत्र में 'हिंदी उर्दू हिंदुस्तानी' पर ज़हीर साहब का मज़मून दो अंकों तक छपा। बाद में मोहन कुमारमंगलम् के 'क्वेश्चन आफ लैंग्वेज' में और डा० रामविलास शर्मा के 'भाषा और साहित्य' के अंतिम अंश में वही पक्ष-नीति अपनाई गई।

पर सज्जाद ज़हीर सिर्फ प्रगतिशील लेखकों के और अफ्रो-एशियाई लेखक सम्मेलनों के प्रतिनिधि ही नहीं थे, पहला कहानी संग्रह 'अंगारे' छपा तो मौलवियों ने उसे जला दिया। 'लंदन की एक रात' उर्दू का एक बेहतरीन छोटा उपन्यास है। 'नीलम पिघला' उनका कविता-संग्रह था। हाफिज़ पर उनकी किताब आलोचना के क्षेत्र में एक बड़ी देन मानी जाती है। 18 सितंबर को दिल्ली की गालिब अकादेमी में फैज़ अहमद फैज़ की सदारत में उन्हें श्रद्धांजलियां देनेवाली सभा हुई। रज़िया सज्जाद ज़हीर ने उनका एक खत पढ़कर सुनाया, जो लाहौर जेल से उन्होंने लिखा था—"मुझे भगतसिंह जहां कैद था, वहां रखा गया है, और कागज-कलम सब छीन ली गई है, कुरान मजीद दिया गया है। पर वे नहीं जानते कि इससे भी मुझे अन्याय के खिलाफ बगावत करने की सीख मिलती है।" कज़ाकी कवि सुलेमानोव, भीष्म साहनी, कमर रईस, केशवदेव मालवीय, प्रो० नूरुलहसन, इंद्रकुमार गुजराल आदि ने उन्हें

(शेष पृष्ठ 8 पर)

दिनकर का व्यक्तित्व

बच्चू प्रसाद सिंह

'दिनकर' जी का उदय आज से लगभग 65 साल पहले बिहार के एक साधारण किसान परिवार में हुआ और साहित्यिक क्षेत्र में उनकी किरणें 1928-29 में विकीर्ण होने लगीं और उनकी सबसे पहली रचना 1935 में प्रकाश में आई जिसका नाम था 'रेणुका'। किन्तु उससे पहले भी उनकी कविता 'हिमालय' ने सभी देशप्रेमियों और साहित्य-मर्मज्ञों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया था और तब से लगातार लगभग इन चार दशकों में 'दिनकर' जी ने कई दर्जन रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य की अनुपम श्रीवृद्धि की है।

जैसा कि बिहार के सभी युवक और स्कूल-कालेज के विद्यार्थी पराधीनता के दिनों में 'दिनकर' जी के 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' और 'तुम एक अनल कण हो लेकिन अम्बर तक उड़कर जा सकते' आदि प्रेरणाप्रद रचनाएं गुनगुनाया करते थे, उसी तरह हम लोगों ने भी अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में 'दिनकर' जी के इन गीतों से देशप्रेम की प्रेरणा ग्रहण की और मेरा यह परम सौभाग्य था कि जब मैं अपने कालेज की बी० ए० कक्षा में पहुंचा तो 'दिनकर' जी बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर होकर मुजफ्फरपुर पहुंचे। यह घटना 1950-51 की है और तब से आज तक उन्हें कुछ दूर से कुछ समीप से जानने-सुनने-सीखने और देखने का मौका मुझे मिलता रहा है।

'दिनकर' जी का बाल्याकाल संघर्षों से प्रारम्भ हुआ चूंकि जब वे मात्र दो वर्ष के थे तभी उनके पूज्य पिता इस संसार से विदा हो गए और इनके लालन-पालन का दायित्व इनकी पूजनीया मां पर पड़ा और आप अनुमान लगा सकते हैं कि एक मध्यम वर्गीय परिवार के सामने ऐसी स्थिति में कितनी कठिनाई आई होगी। जीवन के प्रारम्भिक दिनों से आज तक वे ज़िम्मेदारियों से दबे रहे हैं और प्रभु की कुछ ऐसी कृपा रही कि वे इस उम्र में भी उनसे मुक्त नहीं हो सके और उन सबका वहन वे सहर्ष करते जा रहे हैं। उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि लाख उलझनों में भी फंसे रहकर कभी विचलित नहीं होते और अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक और सचेष्ट रहते हैं। मैंने उन्हें सामाजिक, पारिवारिक परिवेश में देखा है और मुझे बराबर ऐसा लगा है कि वे अपने ऊपर लाखों कष्ट उठाकर अपने आश्रितों की सुख-सुविधा का कितना ध्यान रखते हैं। जीवन की कठिन से कठिन विषम परिस्थिति में भी वे कर्त्तव्य पथ से कदापि विचलित नहीं होते।

दिनकर जी 1965 से 1971 तक 6 वर्षों तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे। इस पद पर काम करते हुए उन्हें मुझे बहुत करीब से देखने का सुअवसर

मिला । इस पद पर अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उन्होंने अपने व्यक्तित्व के जिस समन्वयवादी पक्ष का स्वरूप सरकार के सामने, देश के सामने प्रस्तुत किया वह सर्वथा सराहनीय था । 1965 में जब हिंदी का विवाद खड़ा हुआ, उस समय दिनकर जी ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि हिन्दी एकता की भाषा है । देश को एक साथ बांधकर ले चलने का दायित्व हिन्दी का है और यदि हिन्दी के नाम पर ही-देश में फूट पैदा हो तो हिन्दी का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य होगा । अपनी इसी धारणा के कारण दिनकर जी पूरे देश भर में, चाहे वह हिन्दी समर्थक गुट हो या हिन्दी विरोधी, सम्मान के साथ सुने जाते हैं ।

उनके जीवन का यह पक्ष बिलकुल नया था क्योंकि उसके पहले वे राज्य सरकार में सामान्य अधिकारी थे, फिर प्राध्यापक हुए और उसके बाद संसद सदस्य तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति के पद का कार्यभार छोड़कर भारत सरकार की यह सेवा स्वीकार की और इस पद को उनके कारण गरिमा प्राप्त हुई ।

हां, एक और खूबी । पिछले 20-25 वर्षों में मैंने कभी अपना समय नष्ट करते उनको नहीं देखा । जीवन में मुझे भी, बहुत अधिक नहीं तो कुछ थोड़े-से, महत्वपूर्ण व्यक्तियों को जानने का अवसर मिला है और दिनकर जी के व्यक्तित्व के इस पक्ष ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है, वे अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को किसी न किसी अच्छे काम में लगाने को सदैव तत्पर रहते हैं, चाहे तो दिनकर जी अध्ययन-कक्ष में कुछ पढ़ रहे हों या फिर किसी से साहित्यिक-सांस्कृतिक विषय पर चर्चा कर रहे हों, किन्तु कभी मैंने निरर्थक विषयों पर उन्हें गप्प करते नहीं देखा । यात्रा के समय भी ट्रेन में वे अपना अधिकांश समय पढ़ने-लिखने में ही व्यतीत करते हैं और उन्हें भूख रहती है अच्छी से अच्छी पुस्तक खोजकर पढ़ने की और उसके संबंध में अपने घनिष्ठ मित्र वर्ग में चर्चा करने की । इस चर्चा के पीछे भी उनका एक उद्देश्य रहता है । वे कभी किसी नई विचारधारा या अनुसन्धान से तत्काल चमत्कृत होकर भी चिरकाल तक प्रभावित नहीं होना चाहते जब तक कि वे उसके संबंध में पूरी छान-बीन कर पक्ष-विपक्ष के तर्कों को तौलकर और अपनी मित्रमंडली में तथा विषय के अधिकारी विद्वानों से विचार-विमर्श कर अपनी पूरी जिज्ञासा मिटा नहीं लेते ।

दिनकर जी पिछले 10-12 वर्षों से अध्यात्म की ओर अधिक प्रवृत्त हुए हैं और वे लोग जो उनकी पुस्तक 'हारे को हरिनाम' के बारे में यह कहा करते हैं कि यह दिनकर जी की विचार शैली से मेल नहीं खाती, उन्हें यह सोचना चाहिए कि अध्यात्म के क्षेत्र में जो एक चिंतक, विचारक आगे की ओर बढ़ता है उसे एक सहारा चाहिए, और वह सहारा 'हरिनाम' से बढ़कर और कुछ दूसरा नहीं हो सकता । इसलिए मैं तो दिनकर जी की इस रचना को उनकी आध्यात्मिक प्रगति का एक शुभ लक्षण मानता हूं । मुझे ऐसा लगता है कि कविता के क्षेत्र में हिन्दी कवियों में सबसे अधिक प्रिय उन्हें 'तुलसीदास' हैं और फिर यदि इससे बाहर कहीं उन्होंने किसी का प्रभाव स्वीकार किया है तो वे हैं रवीन्द्र नाथ ठाकुर और इकबाल ।

विदेशी कवि की दृष्टि में 'चाँदनी चौक'

डा० प्रभाकर माचवे

त्रैमासिक 'औबजोर' के नये अंक में बलगेरियाई कवि ल्यूबवोमीर लेवचेव की एक कविता 'चांदनी चौक' नाम से छपी है, जिसका पंक्तिशः अनुवाद नीचे दे रहा हूँ।

मैं उड़ रहा हूँ
समय की तरह मैं उड़ रहा हूँ
एक ही दिशा में
लौट न सकने वाला
समस्याओं की निशानी पर
चाँदमारी करता हुआ
कभी—
    पकड़ में न आनेवाले
    झीने धुएं जैसा
मेरे दिन बीत रहे हैं
वे जाते हैं दृश्य देखने
पुराने खंडहर
हिजर के मंदिर (शायद जामा मस्जिद)
ताजमहल के आगे वे फोटो खिचवाते हैं
वे पवित्र यमुना के किनारे भटकते हैं
जहाँ मृत ब्राह्मणों की चिताएँ धुँधुवाती है
उनकी राख हवा ले जाती है···
सहसा मुझे तुम्हारा स्पर्श होता है
प्रिये······
उसी रास्ते पर चाँदनी चौक से (मून मार्केट से)
छोटे-छोटे भिखारी तुम्हारा पीछा करते हैं
तुम्हें छूते हैं
विदेश से आया सैलानी
वे तुम्हें छूते हैं
अपने कोढ़ से ठूँठे हाथों की उंगलियों से,
या शायद क्षय रोग की उंगलियों से,
क्योंकि शायद, तुम नहीं देख पाते
कि वे कैसे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं
माँगते हुए : "दो रुपये !"

"एक ही सही !"
"एक सिगरेट देना जी"
"एक सिगरेट का टुकड़ा ही सही !"
फिरसे मुझे तुम्हारा स्पर्श होता है···
"एक प्यार !"
"बस एक बार !"
"छोटा-सा ही सही !"
"यों ही मत निकल जाओ !"
मेरा सारा तन-मन तुम्हारे लिए है !
मेरे पास अब देने को क्या बचा है ?
पर मैं तुम्हारे लिए एक चाँद चुरा लाऊँगा
उस 'चाँदनी बाजार' से एक चाँद
या जो कुछ तुम चाहो···
यह घनी भीड़ वाली जगह है
केले वेचने वाले
नाक से बीन बजानेवाले फकीर
साँपों के आगे
रिक्शे,
साधु संत, जो भभूत रमाये हुए हैं सिर से पैर तक
मरी हुई मानवता की राख···

चाँदनी चौक पर
'मून मार्केट' में यह पता नहीं चलता
कौन अमीर है कौन गरीब
और आखिर कौन है भिखारी ?
देखो ऐलेन गिन्सबर्ग

इन सड़े हुए गैंग्रीनवाले घावों को चूमता है
बंगाली शरणार्थियों के,
क्यों ?
अपने बहुत ज्यादह अमीर मातृ देश के
पापों का प्रायश्चित करने याचक अमेरिका के···

प्रिये
मैं तुम्हारे लिए चाँदनी चौक से लाऊँगा
एक आह
तीन हजार बरस पुरानी···

बीमार शहर

राजेन्द्र अवस्थी के नये उपन्यास का आरंभिक अंश

हम दोनों उस लम्बे किनारे पर चहलकदमी करने लगे थे। शोभना दोनों हाथों से अपने बाल समेटते हुए कह रही थी, "जीना मैंने तुमसे ही सीखा है, शेखर, वरना जिंदगी कुछ ऐसी हो गई थी कि सब-कुछ बंधा हुआ बोर लगने लगा था। सोचने लगी थी, मुझे भी और लड़कियों की तरह कोई स्थिर आदमी ढूंढ़ लेना चाहिए और विवाह कर लेना चाहिए। मैं जानती हूं, इसके बाद सब-कुछ ऐसा हो जाता, जैसे चारपाई में पड़े एक बीमार आदमी का होता है। उसके पास सांसों के सिवाय और क्या शेष रहता है।···नहीं, शेखर, तुमने मुझे जीना सिखाया है।"

कमरे में बिजली पहले से जल रही थी। भीतर जाते हुए घड़ी को देखा, ढाई बजा था। सहसा शोभना को जम्हाई आ जाती है जैसे घड़ी देखकर उसके भीतर से किसीने एक आवाज लगा दी है।

अचानक शोभना पलंग पर सीधे पड़ जाती है। मेरी ओर देखकर एक चुटकी बजाते हुए कहती है, "घड़ी का डायल दीवार की ओर कर दो और बत्ती बुझा दो।" उसके स्वर में आदेश है। बिना कुछ सोचे मैं दोनों काम कर देता हूं और···।

उस रात मैंने डायरी का एक पृष्ठ और पूरा किया :

"···ज्वार के बाद खिसका हुआ समन्दर, सीपियों और घोंघों के सिवाय वे महीन जैलियां भी छोड़ जाता है, जिनमें मछलियों के अण्डे होते हैं।···ये सब महासागर के पगचिह्न हैं···आदमी का मन भी किसी सागर से कम नहीं है, वह अपने पीछे वे सारी स्मृतियां छोड़ जाता है जिनपर सड़कें बनती हैं, सभाओं का आयोजन होता है और शब्दों को रूप मिलता है।···एक आदमी वह है जो तीन सौ बरस की बरगद की जिंदगी जीता है, दूसरा वह जो कमल के फूल की तरह केवल दिन के प्रकाश में रह पाता है, लेकिन जब बरगद का झाड़ उखड़ता है तो उसके स्थिति-चिन्ह ढूंढना भी मुश्किल होता है, कमल वहां शाश्वत सौन्दर्य छोड़कर जाता है। इसलिए जीने का संबंध आयु से नहीं, भोगे हुए क्षणों से है।··· जैसा हर दिन होता है, आज वैसा नहीं हुआ और आज जो हुआ और पहले नहीं हुआ था।···एक अकेलेपन को कुछ मिला है, वह क्या है समय ही बताएगा।

(पृष्ठ 2 का शेष)

श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। मैंने अपने छोटे-से भाषण में बताया कि पाकिस्तान से लौटने के बाद ज़हीर साहब ने साहित्य अकादेमी के लिए तीन किताबों का उर्दू में तर्जुमा किया : कांदीद (वाल्तेयर), गोरा (टैगोर), आथेल्लो (शेक्सपीयर)। आथेल्लो नेशनल स्कूल आफ ड्रामा ने खेला भी था। सज्जाद ज़हीर व्यक्ति के नाते बड़े ही मिलनसार, कोमल स्वभाव के और उदारचेता व्यक्ति थे। उनके स्मारक के रूप में उनकी किताबों की लाइब्रेरी और उनके कागज़ात जामिया मिलिया में उनकी समाधि के पास एक म्यूज़ियम की शक्ल में रखने का प्रस्ताव है।

एशियाई साहित्य

अब की बार कलकत्ते में 28-29-30 अगस्त को जाना हुआ तो कलकत्ता में एक लाख तमिष्-भाषी हैं इस बात का पता लगा। 93 राशबिहारी एवेन्यू में भारती तमिष् संगम में डा० श्रीनिवास आयंगार और मुझे बुलाकर उन्होंने सम्मान किया। इस लाइब्रेरी ने अंग्रेज़ी में भारती और तमिष् साहित्य पर कई किताबें छापी हैं, वैसे हिंदी में भी भारती की 'कोइलपाट्टु' और शिलप्पधिकारम् की कहानी 'पायल' नाम से छापी है। डा० शंकर राजु नायडू की एक छोटी हिंदी पुस्तक 'तमिष् साहित्य परिचय' भी प्रकाशित की गई है।

यहीं कलकत्ते में एक अध्ययनशील बंगाली लेखक मिले, श्री निखिल सेन। आपने 'एशियार साहित्य' नामक 699 पृष्ठों का बड़ा ग्रंथ लिखा है, जिसे विद्योदय लाइब्रेरी प्राइवेट लिमिटेड ने छापा है। इस किताब में मिर्ज़ा तुरसुनज़ादे की 'एशिया का कंठस्वर' नामक कविता आरंभ में है, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का आशीर्वचन है। चीन, मंगोल, तिब्बती, जापानी, कोरियाई, इंदोनेसी, वियतनामी, थाई, फिलिपीनी, ईरानी, हिब्रू, अरबी, तुर्की, नेपाली, सिंहली, बर्मी, जिप्सी, पश्तो, प्राचीन भारतीय, आदिवासी, पाकिस्तानी साहित्य (उर्दू, बलोच, सिंधी, पंजाबी), मलेशियाई साहित्यों पर विस्तृत परिचय और अंत में प्रसिद्ध लेखकों की 'परिचिति' दी गई है। श्री निखिल सेन 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में कार्य करते हैं। भारतीय भाषाओं में ऐसे ग्रंथ कम हैं। डा० भगवतशरण उपाध्याय के 'विश्व-साहित्य की रूपरेखा' और मेरे 'भारत और एशिया के साहित्य' के बाद मुझे यह किताब देखने को मिली। एशियाई लेखक सम्मेलन को ऐसी पुस्तकों का अनुवाद अनेक भाषाओं में कराना चाहिए। पुस्तक में परिश्रम और तटस्थता दोनों एक विद्वान साहित्य-अध्येता के योग्य हैं।

पोएट्री इंडिया

अंग्रेज़ी में कविता लिखनेवालों की एक मासिक पत्रिका मद्रास से कई वर्षों से निकलती रही है। डा० कृष्ण श्रीनिवास उस 'वर्ल्ड पोएट्री सोसायटी इंटरनेशनल' के अध्यक्ष हैं। 16, 17 जून को उन्होंने एक अखिल भारतीय कविसम्मेलन कविता होटल, मद्रास में बुलाया। वहां कलकत्ता के प्रो० पी० लाल उद्घाटन के लिए गए। उनका परिचय श्रीनिवास साहब ने 'ए कालोसस आफ इंडियन पारनेसस' कह कर दिया। इस सम्मेलन में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री कविजर करुणानिधि को सम्मानित किया गया। इस समय पर

(शेष पृष्ठ 15 पर)

हिन्दी में विचार-साहित्य का अभाव

—डॉ० देवराज

यूरोप का कोई भी सजग साहित्यकार ऐसा नहीं है जो ऊँची श्रेणी का चिन्तक न हो—जो जीवन और सभ्यता के बारे में गहराई से सोचने की क्षमता न रखता हो। यही कारण है कि टामस मान, काफ़का, सार्त्र आदि साहित्यकार अपनी-अपनी कृतियों में सशक्त जीवन-दृष्टि को प्रतिष्ठित और प्रकाशित कर सके हैं। हिन्दी में इस तरह के दृष्टि-सम्पन्न लेखक प्रायः नहीं दिखाई देते। इसके मुख्य कारण दो हैं। पहला यह कि हिन्दी का औसत लेखक, और कभी-कभी महत्त्वपूर्ण कहलाने वाला लेखक भी, यह ज़रूरत महसूस नहीं करता कि वह मनुष्य की जटिल वैज्ञानिक और सांस्कृतिक प्रगति का निजी, गहरा और विस्तृत लेखा-जोखा ले, और उसकी रोशनी में जीवन और संस्कृति के प्रति एक सशक्त परिप्रेक्ष्य विकसित करने की कोशिश करे। इस दृष्टि से हिन्दी के लेखकों में प्रायः तीक्ष्ण-गहरी जिज्ञासा और बड़ी महत्त्वाकांक्षा दोनों का अभाव रहा है। अपनी निजी दृष्टि विकसित करने की लम्बी साधना और प्रयत्न से बचते हुए वे अक्सर यह कोशिश करते हैं कि किसी प्रचलित और प्रचारित नारे को पकड़कर अपने आधुनिक एवं प्रगतिशील होने की घोषणा कर दें, और इस तरह, कम से कम कुछ दिनों के किए, महत्त्वपूर्ण लेखक होने का यश पा लें।

अब हम दृष्टि-सम्पन्न लेखन की कमी के दूसरे कारण पर आते हैं। उच्चकोटि के साहित्य के विकास में जहां लेखकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, वहां प्रबुद्ध आलोचक का योग भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता। संस्कृति के किसी भी पक्ष के विकास के लिए सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक प्रश्न लगभग बराबर महत्त्व रखते हैं। यह देखने की बात है कि पश्चिमी साहित्य ने इधर के सौ वर्षों में जहां अनेक बड़े साहित्यकार पैदा किए हैं, उच्च कोटि के समीक्षा-ग्रंथ भी प्रस्तुत किए हैं। अपने देश में पण्डितराज जगन्नाथ के बाद साहित्य-संबंधी मौलिक चिन्तन बहुत ही कम हुआ है। इस दृष्टि से हिन्दी में ऐसे चिन्तनात्मक और समीक्षात्मक ग्रंथ नहीं के बराबर हैं जिनकी रामचन्द्र शुक्ल की कृतियों से भी तुलना की जा सके। कई बातों में हमारे अनेक नए समीक्षक शुक्ल जी से कहीं ज्यादा आधुनिक और संश्लिष्ट तथा जटिल दृष्टि रकते हैं—किन्तु उनके कृतित्व का धरातल शुक्ल जी के धरातल तक प्रायः नहीं पहुंच पाता।

ज़ाहिर है कि वह लेखक जो मानवीय साहित्य और संस्कृति के बारे में ऊपर के तथ्यों को जानता है, आसानी से किसी नारे को पकड़कर चलना स्वीकार नहीं करेगा। साहित्य का कोई भी आन्दोलन—फिर चाहे वह छायावाद हो या रहस्यवाद, प्रयोगवाद हो या आधुनिकतावाद, अकथावाद हो या अकवितावाद—जिन्दगी, जीवन-मूल्यों अथवा साहित्यिक आस्थाओं और शैलियों के बारे में एकाध नये तथ्य पर गौरव देता है। यदि आन्दोलन के नेताओं में सचाई और सशक्त साधना हुई, तो वह नया तथ्य किसी जाति या साहित्य की चेतना का अंग बनने में सफल होता है। लेकिन जिन्दगी

और साहित्य दोनों ही किसी भी नारे से ज्यादा बड़ी चीजें हैं इसलिए बड़ा साहित्यकार वही बन पाता है जो किसी नारे या आन्दोलन से अपने को बंधने नहीं देता।

हिन्दी में विचारात्मक लेखन की कमी के कई कारण हैं। हिन्दी जगत में नारेबाज़ी (यानी एकांगी आंदोलनों) का इतना मोह और प्रचार है कि अधिकांश लेखक स्वयं चिन्तन करने के श्रम से बचकर किसी प्रसिद्ध, स्वदेशी या विदेशी, लेखक-विचारक या आन्दोलन से जुड़ जाने में गौरव मानते हैं। यह देखने की बात है कि छायावाद युग से लेकर आजतक हिन्दी साहित्य प्रायः अपने नारों और आन्दोलनों को बाहर से जोड़ता चला आया है। छायावाद और रहस्यवाद पर रवीन्द्रनाथ तथा अंग्रेजी रुमानी कवियों का प्रभाव रहा; प्रयोगवाद और आधुनिकतावाद पर टी० एस० इलियट और उसके समसामयिक अंग्रेजी लेखकों का; अस्तित्ववाद का आयात मुख्यतः फ्रांस से होने लगा है। भारतीय विचार-साहित्य के हर क्षेत्र में यूरोप के लेखकों-विचारकों का विशेष उल्लेख रहता है, यह स्थिति सभी तरह के वैज्ञानिक वाङ्मय, दर्शन और साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में पाई जाती है। इसके दो परिणाम देखने में आते हैं। एक यह कि भारतीय लेखक को प्रायः यह साहस नहीं होता कि वह किसी समस्या पर स्वतन्त्र होकर स्वयं चिन्तन करे। वह प्रायः सम्मान सहित पश्चिमी लेखकों का उल्लेख और उनके विचारों का अनुवाद करता है। वैसे ही हमारे समीक्षक प्रायः समय-समय पर पश्चिम में प्रचारित होने वाले साहित्यिक वादों का हिन्दी मुहावरे में अनुवाद और प्रचार करते हैं। हम यह नहीं कह रहे हैं कि पश्चिम के विचारकों को पढ़ाना और जानना गलत या अनावश्यक है, किन्तु यह स्थिति कि हमारे अधिकांश लेखक सिर्फ़ इतने भर से संतुष्ट हो जाएं राष्ट्रीय दृष्टि से असामान्य, शर्मनाक और राष्ट्रीय आत्म-सम्मान के विरुद्ध है। उक्त स्थिति का दूसरा परिणाम यह है कि हमारे बुद्धिजवी जहां एक ओर निजी मौलिक चिन्तन करने का श्रम और साहस नहीं करना चाहते, वहां दूसरी ओर वे स्वदेश के उन लेखकों को जो खुद सोचने की कोशिश करते हैं उपेक्षा करते हुए उन्हें उचित प्रोत्साहन नहीं देते। अन्ततः किसी भी क्षेत्र में ऊंची कोटि के साहित्य का निर्माण जातीय साधना का फल होता है—सिर्फ-एक दो चिन्तकों का नहीं। किसी भी मौलिक लेखक और विचारक के लिए उत्तेजक, उपयुक्त वातावरण की ज़रूरत होती है। हमारे देश में वैसा वातावरण नहीं है, इसलिए भी हम उच्चकोटि के विचारकों और उच्चतम कोटि के साहित्यकारों को पैदा नहीं कर पा रहे हैं। हमारे देश के अधिकांश अच्छे विद्वान अंग्रेजी में लिखना पसन्द करते हैं, इसलिए कि अंग्रेजी लेखन पर देश के श्रेष्ठतम मनीषियों की नज़र पड़ती है। लेकिन अंग्रेज़ी में लिखते हुए भी अधिकांश विद्वान अधिक चिन्ता इस बात की करते है कि वे पश्चिम की नवीनतम कृतियों से अपना परिचय प्रमाणित कर दें। इसीलिए अंग्रेजी के भारतीय लेखक एक-दूसरे की चर्चा करना पसन्द नहीं करते; वे पश्चिमी लेखकों और कृतियों के नाम लेते हुए उनके विचारों का उल्लेख करने में विचित्र गौरव का अनुभव करते हैं।

मानस का हंस

अमृतलाल नागर

गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी और व्यक्तित्व को विषय बनाकर उपन्यास लिखना एक ऐसा दुस्साध्य सृजन-कर्म था जिसे सफलतापूर्वक संपन्न कर अमृतलाल नागर हिन्दी उपन्यासकारों के समाज में अनायास ही विशिष्ट स्थान के अधिकारी बन गए हैं। यह काम दुस्साध्य इसलिए था कि एक ओर गोस्वामी तुलसीदास की कोई प्रामाणिक जीवनी उपलब्ध नहीं है और दूसरी ओर गोस्वामी जी जैसे भक्त और महाकवि से तादात्म्य स्थापित करना, उनकी काया में प्रवेश कर, उनकी आत्मा की ऊंचाई से बोलना किसी साधारण प्रतिभा के बूते की बात नहीं है। अमृतलाल नागर ने इस उपन्यास में अपनी प्रतिभा, अनुभूति-सामर्थ्य, कल्पना-शक्ति और शिल्प-कौशल से इन दोनों ही कठिन समस्याओं पर विजय प्राप्त की है।

उपन्यास की कुछ घटनाएं ऐसी हैं जिनके संबंध में थोड़ी देर के लिए शंका उठ सकती है या तुलसी के अन्य प्रेमियों को किंचित् आपत्ति भी हो सकती है। इनमें सबसे प्रमुख युवक तुलसीदास के काशी की वेश्या मोहिनी बाई के संपर्क में आने का प्रसंग है। इसमें संदेह नहीं कि यह प्रसंग विशुद्ध कल्पना की देन है, यद्यपि नागर जी ने इसके लिए भी तुलसी साहित्य में आधार ढूंढने की कोशिश की है। यह भी कहा जा सकता है कि यह आधार बहुत कमज़ोर है, पर इस प्रसंग को तुलसी के जीवन में असंगत नहीं माना जा सकता। लौकिक प्रेम और आध्यात्मिक प्रेम साथ-साथ चलते हैं, इसकी पुष्टि अनेक संतों के जीवन से होती है। इस घटना की सम्भावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। नागर जी की खूबी इस बात में है कि उन्होंने इस प्रसंग की कल्पना करके भी तुलसी के चरित्र को कहीं गिरने नहीं दिया है। इस प्रसंग के माध्यम से उन्हें तुलसी के मन में रामभक्ति और काम भावना के संघर्ष का चित्रण करने का अवसर मिल गया है।

प्रकाशक ने पुस्तक को खूब मन से प्रकाशित किया है। कागज, जिल्द और आवरण पृष्ठ चित्त को प्रसन्न करनेवाले हैं। ऐसी ही पुस्तकें किसीको उपहार में दी जाती हैं।

(गोपाल राय : समीक्षा)

सबसे बड़ा विवाद इस कृति के संदर्भ में मोहिनी वेश्या वाली प्रसंग-कल्पना को लेकर उठ सकता है। बारहवें से लेकर पंद्रहवें अध्याय तक विस्तृत यह प्रसंग सत्रहवें और बाईसवें अध्याय में भी अपनी छाप छोड़ता है।···तुलसी के काम द्वन्द्व का यह पूरा प्रसंग उपन्यास के भीतर एक और स्वतंत्र उपन्यास है। यद्यपि यह अनुमाना-

तिश्र कल्पना है परंतु है अत्यंत तगड़ी कल्पना।...मानस में एक मात्र राम सत्य है और वही 'मानस का हंस' में भी है किन्तु आधुनिकता के आग्रह पर दो और सत्य, जीवन सत्य तथा मनोवैज्ञानिक सत्य उससे जुड़ गए हैं, फिर उपन्यास-तत्त्व की रक्षा के लिए इतिहास के यथार्थ में रोमांन का यह भोग कल्प दुस्साहस नहीं कहा जा सकता। हां, इसके मूल में नागरजी ने भूमिका में तुलसी द्वारा एक दोहे में 'तरुणी' शब्द के प्रयोग की जो आड़ ली है वह बहुत युक्ति-युक्त और ठोस नहीं है।

(विवेकी राय : समीक्षा)

वास्तव में नागरजी ही ऐसे उपन्यास-कार हैं जो गोस्वामी जी के जीवन पर इतना सुन्दर उपन्यास लिख सके। कथा का मूल केन्द्र है तुलसी की अडिग आस्था का प्रतिपादन, उनके देवत्व नहीं, मानवीय रूप की प्रतिस्थापना। इसमें तुलसी की महानता उभर कर सामने आई है।... पढ़ने पर ऐसा लगता है मानो सारे दृश्य आंखों के सामने घट रहे हैं।

(शुकदेव दुबे : आकाशवाणी, भोपाल)

हमारी संस्कृति : राधाकृष्णन

डॉ० राधाकृष्णन् ने बड़े विद्वत्तापूर्ण ढंग से अध्यात्मवाद की विचारधारा को प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि अध्यात्मवाद में ही ऐसी सामर्थ्य है जिससे मनुष्य आत्मिक पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। कोई भी जाति अथवा संस्कृति तब तक अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकती जब तक उसके मूल में आध्यात्मिक चेतना नहीं रहती। लेखक ने पश्चिम की आधुनिक विचारधाराओं—आदर्शवाद, मार्क्सवादी भौतिकवाद, तर्कसंगत प्रत्यक्ष-वाद, अस्तित्ववाद, प्रत्यक्ष ज्ञानवाद आदि के परिप्रेक्ष्य में अध्यात्मवाद के जिस दर्शन को सामने रखा है उसका आधार भारतीय दर्शन ही है। उनका यह स्पष्ट मत है कि धर्म और विज्ञान से अध्यात्मवाद का कोई विरोध नहीं है और इसे उन्होंने बड़े तर्कपूर्ण ढंग से समझाया है। अन्त में विद्वान लेखक ने विज्ञान और धर्म के स्वरूप को प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण संसार प्रतिदिन बदलता जा रहा है। विज्ञान ने मनुष्य को इतनी शक्ति दे दी है कि वह कर्त्ता और सर्जक बन बैठा है। विज्ञान और धर्म दोनों में समन्वय स्थापित किए बिना विश्वकल्याण और विश्वशांति संभव नहीं है। विज्ञान द्वारा हम भौतिकता एवं भय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और धर्म द्वारा अन्धविश्वास और अज्ञान से मुक्ति प्राप्त कर आगे बढ़ सकते हैं। तभी विश्वमैत्री स्थापित होगी।

आलोच्य कृति की भाषा में सर्वत्र एकरसता और प्रवाह है।...विचारों की व्यंजना मूल की ही भांति सरस एवं स्पष्ट है।

(लक्ष्मी शंकर मिश्र 'निशंक' आकाशवाणी, लखनऊ)

इस वैज्ञानिक युग में हम अविश्वस-नीय एवं निरर्थक रूढ़ियों, सन्देहास्पद घटनाओं को स्वीकार नहीं कर सकते। हम एक ऐसी धार्मिक आस्था की तलाश में हैं जिसको मनुष्य समझ सके, जो तर्क एवं विवेक की कसौटी पर कसी जा सके। विद्वान लेखक ने 'धर्म की आवश्यकता,' 'भारत के धार्मिक विचार और आधुनिक सभ्यता,' 'धर्मों की आपसी एकता,'

'आध्यात्मिक खोज' आदि अध्यायों में धर्म के संबंध में अपने सुलझे हुए विचारों को अभिव्यक्त किया है। लेखक का दृष्टिकोण समन्वयात्मक तो हैं ही, विज्ञान की प्रगतियों से उनकी कहां तक संगति है तथा आधुनिक युग में उनका आचरण कहा तक उचित और कहां तक गलत है, पुस्तक में इसका भी गंभीर विवेचन किया गया है।

(पी० कृष्णन : युगप्रभात)

किंग लियर : अनु० बच्चन

'मैकबेथ', 'ओथेलो' और 'हैमलेट'—जिनमें से प्रथम दो रेडियो और रंगमंच के माध्यम से जनता तक पहुंच कर अपनी सफलता सिद्ध कर चुके हैं—के बाद 'किंग लियर' के अनुवाद के साथ बच्चन जी की शेक्सपियर के सर्वश्रेष्ठ नाट्य चतुष्ट्य को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर देने की चिर संचित अभिलाषा पूर्ण हो जाती है।

'किंग लियर' की गणना शेक्सपियर के सर्वश्रेष्ठ नाटक के रूप में की जाती है। पांच अंकों के इस दु:खांत नाटक का कथ्य मानव-चरित्र के वन्दनीय एवं निन्दनीय दोनों पक्षों से संबद्ध है। ऐसी महान सृजनात्मक प्रतिभा की विशिष्ट नाट्य कृतियों के सफल अनुवाद करके बच्चन जी ने यह साबित कर दिया है कि ऊंचाई पर बैठे हुए रचनाकार की रचनाओं के साथ अनुवादक का रागात्मक संबंध स्थापित होना अत्यन्त आवश्यक है।···प्रस्तुत अनुवाद किसी कदर कम प्रभावपूर्ण नहीं है।

अनुवाद कितना बढ़िया और जोरदार हुआ है, शब्दों के प्रयोग में अनुवादक कितना सावधान रहा है, किस खूबी के साथ मूलकृति में निहित सौंदर्य को उद्घाटित किया गया है—ऐसे सभी प्रश्नों के अत्यन्त समाधान कारक उत्तर प्रस्तुत अनुवाद के जरिये प्राप्त किए जा सकते हैं।

(1) "नभ देवों के लिए धरा के वासी हम सब उसी तरह हैं, नटखट लड़कों की नजरों में जैसे कीड़े—खेलखेल में हम को मार दिया करते वे।"

चौथा अंक, पहला दृश्य

"As flies to wanton boys, we are to the gods. They kill us for their sport."

(2) "न्यायी हैं देवता हमारी दुर्बलताओं का शिकार वे हमें बनाकर दंडित करते हैं।"

पांचवां अंक, तीसरा दृश्य

"The gods are just and of our pleasant vices make instrument to plague us."

उपर्युक्त उदाहरण हिन्दी और अंग्रेजी पर बच्चन जी के समान अधिकार को सिद्ध करते हैं।

(डॉ० शान्ति लाल जैन : प्रकर)

डॉ० बच्चन अंग्रेजी के विद्वान हैं और उसी विषय के प्राध्यापक भी रहे हैं। अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर उन्होंने पुस्तक की प्रवेशिका में स्पष्ट रूप से लिखा है कि "व्यक्तिगत अभिरुचि और अतिशयोक्ति को बाद दे दें तो भी इन कथनों से स्पष्ट है कि 'किंग लियर' का स्थान विश्व के नाटकों में बहुत ऊंचा है।"

बच्चन जी का यह अनुवाद उनकी एक महत्त्वपूर्ण देन कही जाएगी। शेक्सपियर के सर्वोत्तम नाटक का रूपान्तर एक कठिन कार्य है जिसे बच्चनजी ने सफलतापूर्वक करने का प्रयत्न किया है। यह

दुःखान्त नाटक है। अतः अंतिम दृश्य में अनुवादक भी करुण रस की सृष्टि करने में सफल हुआ है। उसमें दुःखान्त नाटक की संपूर्ण मार्मिकता विद्यमान हैं। इस अनुवाद के लिए डॉ० बच्चन बधाई के पात्र हैं।

(लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' : आकाशवाणी, लखनऊ)

मधु : गुरुदत्त

'मधु' उपन्यास गुरुदत्त जी की एक नवीन उपलब्धि है तथा साथ ही साथ दिशा निर्देशित करने वाली कृति भी। यद्यपि उपन्यासकार इस उपन्यास में भी अपनी पूर्ववर्ती मान्यताओं को प्रच्छन्न रूप से समेटे हुए है।···

राजनीतिक चर्चा के पक्ष और विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किए गए हैं जो कि बहुत स्पष्ट और विचारपूर्ण हैं। इसमें उपन्यासकार को अत्यधिक सफलता मिली है। भारतीय राजनीति के घटियापन, छल-प्रपंच और वोटरों का भांग, चरस आदि के ऊपर अपना अस्तित्व गंवा देना बड़ा ही स्वाभाविक और यथार्थ हैं।···जोत की उच्चतम सीमा और समाजवाद के नाम पर किए जा रहे अनाचारों की बड़ी ही पोल खोली गई है। कम्युनिस्ट नेताओं द्वारा साम्यवाद को प्राचीन भारतीय परम्परा, उपनिषदों, वेदों और धर्मशास्त्रों पर आधारित बता देना बड़ा ही व्यंग्यात्मक और यथार्थ है।···

यह उपन्यास आधुनिकतम है। इसमें प्राचीन भारतीय परम्परा से लेकर समाजवाद, आधुनिक राजनीति और उत्तर प्रदेश में संयुक्त मोर्चे की असफलता और सत्तारूढ़ कांग्रेस के पदासीन होने की चर्चा है।

(सर्वजीत राय : कल्पना)

ग्रामीण जनता के पारस्परिक संबंधों, क्लेशों तथा संघर्षों की कहानी प्रस्तुत करते हुए लेखक ने ऊंच-नीच, छुआछूत तथा आपसी द्वेष की भावना पर तीखा व्यंग्य किया है। उपन्यास का घटनाक्रम पाठकों का कुतूहल बनाए रखने में सक्षम है।···माना कि राजनीतिक दलों के नेता स्वार्थी और अधिकार के मोही हुआ करते हैं। लेकिन देश का बुद्धिजीवी वर्ग भी क्या आज कम स्वार्थी रह गया है ? ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्ति पाने के लिए राजनीतिक नेताओं की चाटुकारिता करने के बाद मंच पर से राजनीतिज्ञों की स्वार्थता और भ्रष्टाचार पर भाषण देनेवाले कितने ही बुद्धिजीवी आज देखे जा सकते हैं। अच्छा होता कि इस प्रकार के तथाकथित बुद्धिजीवियों को भी लेखक अपने व्यंग्य-बाण का शिकार बनाते। उपन्यास निस्संदेह रोचक और पठनीय है।

(वी० के० रवीन्द्रनाथ : युगप्रभात)

(पृष्ठ 8 का शेष)

दिए गए भाषणों का और निबंधों का संग्रह 'सिपोज़ियम' नाम से छपा है जिसमें स्वागताध्यक्ष रवींद्रनाथ मेनन का लेख, उनकी कविता पर प्रो० सत्य बाबू का लेख, प्रो० पी० लाल का भाषण, उनकी और अन्य भारतांग्ल कवियों की अंग्रेज़ी कविता पर एच० एच० अन्नय्या गौड़ा का लेख, तेलुगु, तमिल, मलयालम, कोंकणी, उडिया, उर्दू, गुजराती कविता पर विशेष लेख। और कई भारतांग्लों की कविताएं भी दी गई हैं। दिल्ली से मार्गरेट चटर्जी, रोशन अलकाज़ी, सत्यदेव जग्गी की कविताएं-लेख आदि हैं। अधिकतर लेखक दक्षिण भारत से हैं।

पाठकों से कुछ प्रश्न

'नया साहित्य' आपकी सेवा में प्रतिमास निःशुल्क भेजा जाता है। इसकी उपयोगिता और अधिक बढ़ाने की दृष्टि से हम इसमें कुछ परिवर्तन करने जा रहे हैं। इस निमित्त आपके सुझाव आमंत्रित हैं। कृपया निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर यथासंभव शीघ्र भेजें। जो पाठक ये उत्तर नहीं भेजेंगे अथवा विलंब से भेजेंगे, हम समझेंगे कि उनकी रुचि पत्रिका में नहीं है और भविष्य में उनको पत्रिका भेजना बंद कर दिया जाएगा।

नाम ……………………………………………

पता ……………………………………………

……………………………………………

क्या आपको पत्रिका ठीक समय पर प्राप्त हो जाती है ?—हां/नहीं

आपके अतिरिक्त इसे कितने पाठक पढ़ते हैं ? ……………………

आपको इसके कौन-से स्तंभ पसंद आते हैं ? ……………………

……………………………………………

कौन-से स्तंभ पसंद नहीं आते ……………………

……………………………………………

पत्रिका में आप और क्या पढ़ना चाहेंगे ? ……………………

……………………………………………

……………………………………………

हस्ताक्षर ……………

यहां से काटकर भेजें

पुस्तकालयों के लिए

पुस्तकालय का नाम ……………………………………

पता ……………………………………………

……………………………………………

आपके यहां कितनी पुस्तकें हैं ? ……

कितनी पत्रिकाएं आती हैं ? ………

सदस्य-संख्या कितनी है ? ………………

वाचनालय में प्रतिमास कितने पाठक आते हैं ? ……

हस्ताक्षर ……………

आगामी प्रकाशन

द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास : डा॰ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

नई दृष्टि से लिखा गया हिन्दी साहित्य के समकालीन इतिहास का पूरी तरह नवीन और संपूर्ण विवरण और समालोचन—सर्वमान्य साहित्येतिहास-लेखक की कलम से।

दोहरी आग की लपट : डा॰ देवराज

बहुचर्चित उपन्यासकार डा॰ देवराज का नया मौलिक उपन्यास। अत्यन्त रोचक और पठनीय।

भारत के जंगली जीव : ई॰ पी॰ जी

अपने विषय के सर्वमान्य विशेषज्ञ द्वारा लिखित संपूर्ण भारत के सभी प्रकार के जंगली जीव-जन्तुओं तथा उनके जीवन का सचित्र विवरण। भूमिका : श्री जवाहरलाल नेहरू।

प्रसाद के नाटक और रंगमंच : डा॰ सुषमा पाल

मंचन की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों का सर्वपक्षीय विवेचन।

आवारा मसीहा : विष्णु प्रभाकर

अमर कथा-शिल्पी श्री शरतचंद्र चटर्जी के विवादास्पद जीवन का बहु-प्रतीक्षित प्रथम विशद अध्ययन। बीसियों दुर्लभ चित्र। विशिष्ट साज-सज्जा।

हॉकी : योगराज थानी

हॉकी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है। 1973 में हालैण्ड के एमस्टर्डम शहर में विश्व हॉकी कप प्रतियोगिता में भारत की जनता ने जो रुचि ली है उससे यह बात स्पष्ट है। प्रस्तुत पुस्तक में हॉकी खेल के बारे में चित्रों के साथ सारी बातें समझाकर लिखी गई हैं।

मेरी प्रिय कहानियां : रामकुमार

प्रसिद्ध कलाकार और कहानी-लेखक की चुनी हुई कहानियां, भूमिका सहित।

जलतंरग : शैलेश मटियानी

लोकप्रिय उपन्यासकार का सबसे ताज़ा उपन्यास जिसमें नर-नारी के प्रेम को एक नई ही दृष्टि से उठाया गया है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

पाब्लो नेरूदा की मृत्यु

चिली के नोबेल पुरस्कार विजेता कवि पाब्लो नेरूदा का गत दिनों देहांत हो गया। वे कैन्सर के रोगी थे परंतु चिली में शासनयंत्र के परिवर्तन और राष्ट्रपति एलेंडे की मृत्यु से उनके निधन का मानसिक संबंध जोड़ा जा रहा है। वे कम्युनिस्ट थे, राजनीति में क्रियात्मक भाग लेते थे और विदेशों में राजदूत भी रहे थे। मृत्यु के समय उनकी अवस्था 69 वर्ष की थी। दफनाने के समय उनके शव के साथ मीलों लंबा जुलूस था और लोगों ने शासनविरोधी नारे लगाए।

उर्दू शब्द-गणना

श्री हसनुद्दीन अहमद नामक एक आई० ए० एस० अधिकारी ने उर्दू शब्द-गणना पर 720 पृष्ठों की एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसका उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया। इसमें 5 लाख शब्द हैं और दस भागों में उन्हें बांटा गया है। पांच हज़ार के लगभग उर्दू पुस्तकों से इन शब्दों का चयन किया गया है। इस कार्य में श्री अहमद को 14 वर्ष लगे हैं। पुस्तक में शब्दों के उपयोग का अनुमान भी स्पष्ट किया गया है। सामान्यतः कुछ हज़ार शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है।

बिहार के भरतपुर संग्रहालय से गत जनवरी में जो चार पांडुलिपियां चोरी हो गई थीं, उन्हें विदेश भेज दिए जाने के प्रमाण मिले हैं। ये पांडुलिपियां बहुत कीमती हैं और इनके नाम हैं : शाहनामा, सिकन्दरनामा, मुताला-उल-हिन्द और वसलियां। शाहनामा की पांडुलिपि बादशाह जाहजहां को कश्मीर और काबुल के शासक मुराद खां द्वारा भेंट की गई थी। इसमें कई रंगीन चित्र भी हैं और सुनहरे कागज़ पर लिखी गई है। सिकन्दरनामा भी सचित्र पुस्तक है। मुताला-उल-हिन्द में भारत के दर्शन, गणित, भौतिकी, समाजशास्त्र तथा संगीत पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ० राधाकृष्णन का 86वें वर्ष में प्रवेश

प्रसिद्ध दार्शनिक और भूतपूर्व राष्ट्रपति गत मास 85 वर्ष के होकर 86 में प्रवेश कर गए। इसी मास वे कुछ अस्वस्थ भी रहे परंतु उचित उपचार के बाद स्वस्थ हो गए। राजपाल एण्ड सन्ज उनके दीर्घ जीवन की कामना करता है।

रामतीर्थ जन्मशती समारोह

स्वामी रामतीर्थ जन्म शताब्दी समारोह इस वर्ष मनाने की घोषणा की गई है। इस बारे में बनी राष्ट्रीय समिति के महासचिव स्वामी आनंद और श्री भक्तदर्शन ने कहा है कि इस अवसर पर सारे देश में विचारगोष्ठियां, सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। प्रत्येक राज्य में समितियों का गठन किया गया है, जो अपने-अपने राज्यों में राष्ट्रीय समिति के परामर्शानुसार उत्सव आयोजित करेंगी। राष्ट्रीय स्तर पर एक विचार-गोष्ठी एवं वेदांत सम्मेलन नई दिल्ली में अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में दीपावली के बाद आयोजित करने का निश्चय किया गया है।

1. **पारसी-हिन्दी रंगमंच** (निबंध) : हिन्दी के प्रसिद्ध नाट्यकार डा० लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा लिखित हिन्दी में पहली बार प्रस्तुत पारसी रंगमंच का समग्र इतिहास। लेखक के अनेक वर्षों के अध्ययन का परिणाम। उस रंगमंच के अभिनेता, अभिनेत्रियों, निर्देशकों, लेखकों आदि के चित्रों से सज्जित।

2. **टूटी-छूटी कड़ियां** (निबन्ध) : सुविख्यात कवि बच्चन की यह नई पुस्तक है। इसमें गद्य के विभिन्न प्रकारों का संकलन है—भाषण, वार्ताएं, परिचर्चाएं, साक्षात्कार और संस्मरण आदि। आत्मकथा विषयक गद्य लिखकर बच्चन ने गद्य को भी अपनी विशिष्ट शैली और भंगिमा दी है। उनकी इस ताज़ी रचना में विषय की विविधता के साथ रोचकता और नयापन हैं। 15.00

3. **ऊंचे मकान** (उपन्यास) : हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यासकार गुरुदत्त का यह नया उपन्यास है। मनुष्य-मन की लालसा और महत्त्वाकांक्षा के औचित्य और अनौचित्य की ओर संकेत करते हुए लेखक ने इस उपन्यास में एक पूरे युग का चित्र साकार कर दिया है। गुरुदत्त की कलम में एक अद्भुत शक्ति है जो समस्याओं और उलझनों का सामना करते हुए उनका समाधान बहुत दक्षता के साथ पा लेती है। 'ऊंचे मकान' की कथा बहुत रोचक है। 10.00

4. **एक शहर की मौत** (कहानियां) : सुपरिचित लेखिका अमृता प्रीतम की कुछ चुनिन्दा कहानियों का यह नया संकलन है। भारत के विभिन्न प्रान्तों और विश्व के प्रमुख देशों के विशिष्ट पात्रों का इन कहानियों में संयोगवशात् पाठकों से साक्षात्कार हो जाता है। अनायास लिखी इन कहानियों की ऐसी तरतीब प्रकाशन के समय ही दी गई है जो अपने में एक नया प्रयोग है। 7.00

'भारत दर्शन माला' की एक नई पुस्तक।

5. **उड़ीसा** तारिणी चरणदास चिदानन्द 3.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

कविता कैसे पढ़ी जाए ?

—बच्चन

कविता को गाकर पढ़ना चाहिए या साधारण गद्य की तरह ? कविता का संगीत से पृथक् व्यक्तित्व है यह तो मानी हुई बात है। संगीत में ध्वनि ही प्रधान है। कविता अर्थ को नहीं छोड़ सकती। कविता के साथ उतना ही संगीत निभ सकता है जितने से उसका अर्थ स्पष्ट रह सके और उसकी ध्वनियों को पूरा प्रकाश मिल सके। कविता का अपना भी ध्वनि सौंदर्य होता है, और उसके द्वारा वह बिना संगीत की सहायता के भी प्रभावकारी हो सकती है। छंदबद्ध कविताओं, विशेष-कर गीतों में संगीत की सीमित सहायता वर्जित नहीं होनी चाहिए। मेरा ऐसा ध्यान है कि इससे गीत अपना भाव अधिक सफलता से व्यक्त कर सकता है। अच्छा गीत यदि केवल गद्य की तरह पढ़ भी दिया जाए तो अप्रभावकारी नहीं रह सकता। कुछ कविताएं तो लयात्मक ढंग से पढ़ने के लिए ही लिखी जाती जाती हैं। उन्हें गाने का प्रयत्न करना उपहासास्पद होगा। गाने से वे अपनी गतिमयता, तीव्रता, गंभीरता गंवा देंगी।

प्रतिभा कुछ अपवाद भी प्रस्तुत करती है। अंग्रेजी में कविता को गाने की प्रथा नहीं है; कभी थी भी तो अब भुला दी गई है। पर प्रसिद्ध आइरिश कवि विलियम बटलर ईट्स कविताओं को गाने के आग्रही थे। उनका कहना था कि कविता गद्य नहीं है, कविता पढ़ने में उसे गद्य होने का आभास भी नहीं देना चाहिए, वे कविता को incantation —मंत्र—मानते थे। वे अपनी हर कविता को लयात्मक ढंग से गुनगुनाते थे। उनका कहना था कि ऐसी lilt या लय के साथ ही कविता साधारण गद्य के वातावरण से ऊपर उठ जाती है और श्रोता को उसे कविता की तरह, यानी मंत्र की तरह, स्वीकार करने को तैयार करती है। उनकी बात में बहुत कुछ सच्चाई है, पर साथ ही कविता को मंत्र होने की भी ज़रूरत है और ईट्स की कविता अपनी ऊंचाइयों पर मंत्र ही है। इसे सिद्ध करने को विस्तार में जाना पड़ेगा जो यहां अप्रासंगिक होगा।

अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि अपवादों से नियम सिद्ध होते हैं। मैं हर कविता को लय के साथ गुनगुनाने या गाने के पक्ष में नहीं। जहां हमें कवि से ही सहायता न मिलती हो वहां सुरुचिपूर्ण और विवेकवान व्यक्तियों के प्रयोगों से इस बात का पता चल सकता है कि कौन कविता किस प्रकार पढ़ने से अधिक प्रभावकारी होगी। साथ ही यह भी आवश्यक नहीं कि कवि अपनी कविता का सबसे अच्छा पाठक भी हो। यदि कवि का कंठ सधा और स्वर अच्छा हो तो निश्चय ही अपनी कविता को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करना औरों की अपेक्षा उसके लिए अधिक सहज होना चाहिए।

('टूटी-छूटी कड़ियां' से)

Licenced to post without
prepayment Licence No. U-32

रजिस्टर्ड नं० डी-411

मनुष्य थका नहीं है !

हजारी प्रसाद द्विवेदी

मैं अपने पुराने इतिहास की जितनी ऊंचाई पर चढ़ सकता हूं, उतनी ऊंचाई से देखता रहा हूं कि मनुष्य नाना विघ्न-बाधाओं से जूझता हुआ एक महान समन्वय और मैत्रीबंधन की ओर अग्रसर हो रहा है। काल-स्रोत के दोनों तटों पर मनुष्य के उत्थान-पतन के, मिलन-संघर्ष के और शयन-जागरण के शत-शत चिह्न पड़े हुए हैं। जिस प्रकार नदी की प्रत्येक बूंद दूसरे को ठेलकर अविराम प्रवाह पैदा करती है, वैसे ही मनुष्य-जाति के अनेक व्यक्ति और व्यक्ति पुंज इस विराट स्रोत को ठेलते आए हैं। भारतवर्ष का इतिहास हमें बताता है कि विपत्ति और कष्ट आते और चले जाते हैं, सम्पत्ति और विपत्ति काल-स्रोत में बुदबुदे के समान उठती और विलीन होती हैं, साम्राज्य और धर्मराज्य उठते और गिरते रहते हैं, परन्तु 'मनुष्य' फिर भी बचा रह जाता है। शताब्दियों की यात्रा से मनुष्यता क्लांत नहीं हुई। चलना और आगे बढ़ना उसका स्वाभाविक धर्म है। काल-स्रोत की धारा जहां टकरा रही है, वहीं उसका अन्तिम पड़ाव नहीं है।

इतिहास-विधाता की असली योजना तो वे ही जानें, पर इतना स्पष्ट दीख रहा है कि 'मनुष्य' थका नहीं है। न जाने कितने आचार-विचारों के मोह को वह छोड़ चुका है! न जाने धर्म और कर्त्तव्य की कितनी कसौटियों को वह फेंकता आया है! न जाने कितने सौंदर्य और शालीनता की रटी बोलियों को वह भुलाता आया है! न जाने कितने संस्कारों और विश्वासों की चिता रौंदता हुआ वह आगे बढ़ता आया है! युद्ध और विग्रह, दंगे और फसाद, कलह और विवाद उसकी जययात्रा में क्षणिक विक्षोभ भले ही पैदा कर दें, पर वह हार माननेवाला जीव नहीं है—उसकी मंगल-यात्रा को कोई रोक नहीं सकता। इतिहास जहां तक हमें पीछे ठेलकर ले जाता है, महाकाल के उत्ताल नर्तन के भग्नावशेष जितने तथ्य की ओर भी इशारा करते हैं और विविध विज्ञान जहां तक हमारी सहायता कर सकते हैं, उससे एक बात स्पष्ट है—मनुष्य मंगल की ओर ही बढ़ रहा है। इतिहास-विधाता की तर्जनी और भी अधिक मंगल की ओर उठी हुई है।

मेरा विश्वास हैं कि मनुष्य गलती करके भी अन्त तक ठीक रास्ते पर आ जाएगा। लेकिन 'करने' की ओर उसकी प्रवृति अवश्य होनी चाहिए। हाथ पर हाथ धर बैठे रहने से वह अपनी 'मनुष्यता' का ही अधिकारी नहीं रहेगा। गलतियों से मैं नहीं घबराता, पर अकर्मण्यता से मुझे अवश्य ही बहुत डर लगता है।

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, द्वारा प्रकाशित
सम्पादक : विश्वनाथ

वर्ष 18
अंक 12

दिसम्बर, 73
वार्षिक मूल्य 5.00

नया साहित्य
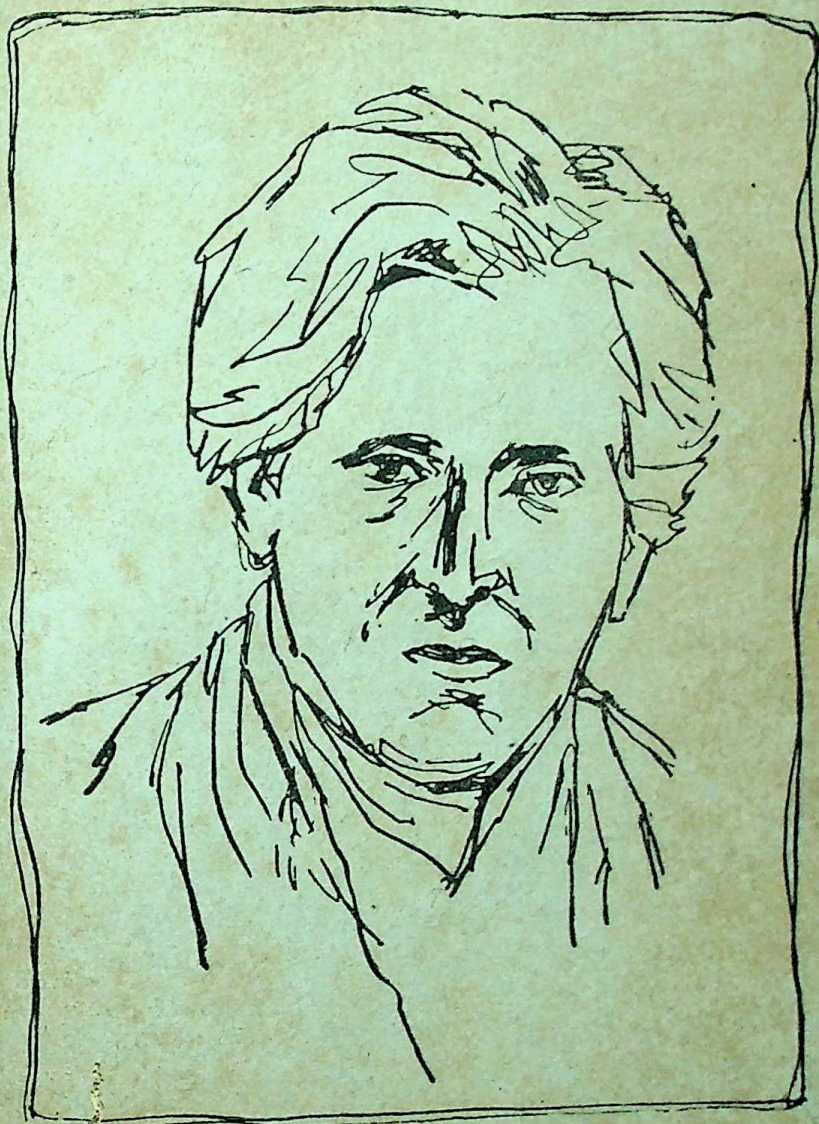
अमर कथाकार शरतचन्द्र चटर्जी, जिनकी श्री विष्णु प्रभाकर लिखित जीवन कथा 'आवारा मसीहा' शीघ्र प्रकाशित हो रही है।
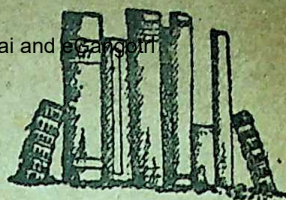
किताबों की दुनिया

—डॉ० प्रभाकर माचवे

पैट्रिशिया ब्रूनेट : स्त्री-स्वतंत्रता

29 अक्टूबर को श्रीमती रजनी पणिक्कर के आग्रह से श्रीमती दिनेशनंदिनी डालमिया के निवास पर हिंदी-लेखिका संघ की बैठक में जाना हुआ। अध्यक्षा थीं श्रीमती लक्ष्मी रघुरामैया, आल इंडिया वीमेन्स कांफरेंस की अध्यक्षा, और तेलगु लेखिका-संपादिका। वक्ता थीं अमरीका की श्रीमती पैट्रिशिया ब्रूनेट, जो रूस से हाल में लौटी थीं। चौदह देशों में वह स्त्रियों की स्वतंत्रता (वीमेन्स 'लिब') का प्रचार और उसके बारे में जानकारी इकट्ठी कर रही थीं। उन्होंने भारतीय संयुक्त परिवार की और विशेषतः स्त्री को मिलनेवाली सुरक्षितता और महत्ता की तारीफ की। अमरीका में स्त्री को राजनैतिक क्षेत्र में, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में, साहित्य में उतनी समानता नहीं है, जितनी कि साधारणतया पायी जाती है। स्त्रियों को उतने ही परिश्रम के लिए कम वेतन मिलते हैं। स्त्रियों की रचनाओं के साथ उलटा पक्षपात किया जाता है। विशेषतः 'काली' या नीग्रो स्त्रियों की और वृद्धाओं की स्थिति बहुत बुरी है। यही कारण है कि पर्लबक जैसी एक स्त्री अपवाद हो पर अधिकतर अमरीकी साहित्य में कोई बड़ी लेखिकाएं, बावजूद वहां की इफरात के और आर्थिक समृद्धि के, नहीं पनपी हैं। स्वयं ब्रूनेट चित्रकार, शिल्पकार, किसी समय सौंदर्य-प्रतियोगिता के लिए चुनी गई बहुधंधी सक्रिय महिला हैं। उन्होंने बताया कि रूस में उनको रानी की तरह आतिथ्य मिला। वहां बच्चों की देख-भाल बहुत अच्छी तरह की जाती है।

स्वामी रामतीर्थ स्मृति-ग्रंथ

'मनन' नामक पत्रिका के वर्ष 14, अंक 10 (अक्टूबर 73) का विशेषांक स्वामी रामतीर्थ के संबंध में है (तुलसी मानस प्रकाशन, रे रोड, बम्बई-10 से प्रकाशित, संपादक हरिकिशनदास अग्रवाल)। डा० उर्वशी सूरती, जिन्होंने स्वामी रामतीर्थ की कविता पर एक स्वतंत्र ग्रंथ हिन्दी में लिखा है, इस अंक की विशेष संपादिका हैं। इस अंक में स्वर्गीय पं० माधवाचार्य जी, डा० उमा शुक्ल, रमाकान्त दीक्षित के कई महत्त्व-पूर्ण लेख हैं। इसके अतिरिक्त कई स्वामियों के लेख स्वामी राम की जीवनी और विचारों पर दिए गए हैं। पंजाब के तरुण गणित के प्रोफेसर ने वेदांत का संदेश देश-विदेश में फैलाया और अल्पायु में गंगा में शरीर त्याग दिया। पूरणसिंह उन्हीं के शिष्य थे। उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी में उनकी रचनाएं मिलती हैं। इस वर्ष उनकी जन्मशताब्दी मनाई गई। इसमें स्वामी रामतीर्थ के कुछ पत्र भी दिए हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

उजला मुखिल लाल : मेरी कविता का रंग

—दिनकर

भारतीय ज्ञानपीठ के पुरस्कार समारोह में दिए गए भाषण के अंश

ज्ञान का साहित्य मनुष्य किसी भी भाषा में लिख सकता है, जिसे उसने भली भांति सीख लिया हो, किन्तु रस का साहित्य वह केवल अपनी भाषा में रच सकता है। प्रत्येक ऐसे देश की आत्मा जिसका कोई इतिहास है, उस देश की अपनी भाषा में बोलती है। भारत की भी आत्मा की भाषा उसकी अपनी भाषा है। भाषा की उन्नति करना और उन्नत देशों की भाषाएं सीखना, ये दोनों परस्पर-विरोधी कार्य नहीं हैं। किन्तु भारत को यदि मौलिक राष्ट्र बनाना है तो उसकी अपनी भाषाओं को सर्वाधिक महत्त्व देना ही पड़ेगा।

लगता है, पृथ्वी पर आने के पूर्व जब भगवान को प्रणाम करने गया वे कलाकारों के बीच छेनी, टांकी, हथौड़ी, कूंची और रंग बांट रहे थे, लेकिन भगवान ने मुझे छेनी, टांकी, और हथौड़ी नहीं दी, जो पच्चीकारी के औज़ार हैं। उनके भंडार में एक हथौड़ा पड़ा हुआ था। भगवान ने वही हथौड़ा उठाकर मुझे दे दिया और कहा कि जा, तू इस हथौड़े से चट्टान का पत्थर तोड़ेगा और तोड़े हुए अनगढ़ पत्थर भी काल के समुद्र में फूल के समान तैरेंगे।

लगता है, जब मैं हथौड़ा लेकर चला, मैं छेनी और टांकी की ओर मुड़-मुड़ कर लोभ से देख रहा था। वह लोभ मुझे जीवन-भर सताता रहा है और जीवन-भर मैं इस विचिकित्सा में पड़ा रहा हूं कि कविता का वास्तविक प्रयोजन क्या है। क्या वह मनुष्य को जगाने, सुधारने और उन्नत बनाने के लिए है या उसका काम आदमी को रिझाना और उसे प्रसन्न करना है? या इनमें से कोई भी ध्येय कविता का ध्येय नहीं है?

जैसा कि एजरा पाउण्ड ने कहा है, कविता केवल कविता है, जैसे वृक्ष केवल वृक्ष है। वृक्ष अपनी जगह पर स्थिर खड़ा है। वह किसीको भी नहीं बुलाता। फिर भी लोग उसकी हरियाली को देखकर खुश होते हैं, उसकी छाया में बैठते हैं और पेड़ अगर फलदार हुआ तो, वे फलों को तोड़कर खा लेते हैं। चेतना के तल में जो घटना घटती है, जो हलचल मचती है, उसे शब्दों में अभिव्यक्ति देकर हम संतोष पाते हैं। यही हमारी उपलब्धि है। यदि देश और समाज को उससे कोई शक्ति प्राप्त होती है, तो यह अतिरिक्त लाभ है।

किन्तु इतना ज़रूर है कि पेड़ मनुष्यों और पक्षियों के नहीं रहने पर भी फूल और फल सकते हैं, किन्तु पाठक और श्रोता न रहें, तो कवि कविता लिखेगा या नहीं इसमें मुझे भारी संदेह है। अगर सारी दुनिया खत्म हो जाए और केवल एक आदमी जीवित खड़ा हो, तो कवि होने पर भी वह कविता शायद ही लिखेगा। मेरी दृढ़ धारणा है कि कविता व्यक्ति द्वारा संपादित सामाजिक कार्य है और शुद्ध कविता भी समाज के लिए ही लिखी जाती है।

अपने निर्माण के दिनों में प्रत्येक नये कवि को उस एक महाकवि का पता लगाना पड़ता है, जिसके समान वह बनना चाहता है। मेरा दुर्भाग्य या सौभाग्य यह रहा है कि मैंने एक के बदले ऐसे दो महाकवियों का पता लगा लिया जिनके समान बनने की मुझमें उमंग थी। इनमें से एक थे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जिनके नाम की सारे संसार में धूम थी और जिनके प्रभाव में आकर भारत की कई भाषाओं में छोटे-छोटे रवीन्द्रनाथ पैदा हो गये थे और दूसरे थे सर मोहम्मद इकबाल, जिन्हें नोबेल पुरस्कार तो नहीं मिला था मगर जिनकी कविताएं पाठकों के रुधिर में आग की तरंगें उठाती थीं, मन के भीतर चिंतन का द्वार खोल देती थीं।

मुझे राष्ट्रीयता, क्रान्ति और गर्जन-तर्जन की कविताएं लिखते देखकर मेरे भीतर बैठे हुए रवीन्द्रनाथ दुःखी होते थे और संकेतों में कहते थे, 'तू जिस भूमि पर काम कर रहा है, वह काव्य के असली स्रोतों के ठीक समीप नहीं है,' तब मैं 'असमय आह्वान' में 'हाहाकार' में तथा अन्य कई कविताओं में अपनी किस्मत पर रोता था कि हाय, काल ने इतना कसकर मुझे ही क्यों पकड़ लिया ? मेरे भीतर जो कोमल स्वप्न हैं, वे क्या भीतर ही भीतर मुझे मुरझाकर मर जायेंगे ? उन्हें क्या शब्द बिलकुल ही नहीं मिलेंगे ?

रवीन्द्र और इकबाल ने मेरे हृदय-सरोवर को खूब हिलकोरा था। जब सरोवर किंचित् जड़ होने लगा, उसे ईलियट और उनके समानधर्मी कवियों ने फिर से हिलकोर दिया। नयी कविता से मेरे घबराने का एक कारण यह था कि वह मेरी समझ में नहीं आती थी, दूसरे, उसने छन्द की राह छोड़ दी थी, किंतु जब मैंने देखा कि चित्रकारी बालू और कोलतार से तथा मूर्तिकारी लोहे के तारों से की जा रही है तब मैंने भी यह मान लिया कि कविता का गद्य में लिखा जाना कोई अनुचित बात नहीं है।

मनुष्य इतनी बार धोखा खा चुका है कि उसे अब किसी भी ज्ञान पर विश्वास नहीं रहा और सत्य को उसने इतनी बार बदलते देखा है कि वह कहीं भी दुराग्रह-पूर्वक अड़ने को तैयार नहीं है। इसका प्रभाव कविता पर पड़ना स्वाभाविक था। कविता अब सत्य का उद्घोष नहीं, उसके अनुसंधान का प्रयास है। मैं भी 'उर्वशी' में सिखाने के बदले अनुसंधान के काम में ज़्यादा लगा रहा हूं। यह ठीक है कि 'उर्वशी' बहुत-से संचित ज्ञान का कथन बड़े ही उत्साह के साथ करती है, किन्तु वह सब का सब सच है या नहीं, यह बात मुझे भी मालूम नहीं है।

जिस सभ्यता में हम जी रहे हैं वह चौकोर व्यक्तित्व की नहीं, विशेषज्ञों की सभ्यता है। ज्ञान के वृक्ष की डालियां अब बढ़कर इतनी स्वतंत्र हो गयी है कि एक डाल पर बसने वाला पक्षी दूसरी डाल के पक्षी की बोली समझने में असमर्थ है। एक समय ऐसा भी था, जब गैलीलियो, वैज्ञानिक होने पर भी, कविता करते थे और लियोनार्डो द विंची को, कलाकार होने पर भी, विज्ञान की सारी बातें मालूम थीं। भारत में तो कवि अकसर ज्योतिषी भी हुआ करते थे। खानखाना अब्दुर रहीम केवल शायर ही नहीं, ज्योतिषी और सिपहसालार भी थे। लेकिन अब समय ऐसा आ गया है कि भौतिकी के सारे

(शेष पृष्ठ 10 पर)

राकेश की प्रारम्भिक कहानियाँ

कमलेश्वर

शीघ्र प्रकाश्य 'मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां' के चौथे भाग 'एक घटना' की भूमिका

किसी भी लेखक की प्रकाशित पहली कहानी मिल जाती है। यदि उसकी प्रति नहीं भी मिलती तो उसका शीर्षक मिल जाता है, क्योंकि उसके जीवित रहते बहुत बार पाठक या शोधक पहली प्रकाशित रचना के बारे में पूछते रहते हैं। लेकिन ज्यादातर लेखकों की पहली रचना नहीं मिलती। हिन्दी लेखकों की सर्वप्रथम रचना गूलर के फूल की तरह होती है··· उसे कोई नहीं देख पाता, यहां तक कि स्वयं लेखक भी उसे खो या भुला बैठता है।

इस संकलन की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नई कहानी के अग्रदूत मोहन राकेश की पहली लिखित कहानी 'नन्ही' और पहली प्रकाशित कहानी 'भिक्षु'—दोनों यहां मौजूद हैं।

और इन दोनों कहानियों में राकेश की ज्वलंत साहित्यिक यात्रा के अग्नि बीज मौजूद हैं। 'नन्हीं' में कहानी-यात्रा के और 'भिक्षु' में रंगमंचीय नाटकों की उस यात्रा के, जो 'अषाढ का एक दिन' के साथ सार्थक रूप से शुरू होकर एक मंज़िल भी बन गई। यथार्थ और क्लासिक चेतना का यह संयुक्त उदय एक विलक्षण शुरुआत है और राकेश की यह खासियत थी कि वह शुरुआत करने में भी विश्वास करता था और जो भी शुरू करता था, उसे विलक्षणता से व्याप्त कर लेता था। यह उसकी ज़िदगी की हकीकत भी थी।

'लड़ाई' कहानी उसकी तीसरी कहानी तो नहीं है, पर शुरुआत करने, विलक्षण व्याप्ति का आयाम देने के साथ-साथ राकेश के जीवन की जो तीसरी खसलत थी, लड़ते रहना, निरंतर सत्य-केन्द्रित निर्णय लेना, उसकी प्रतीति और प्रत्यक्षता का यह रचना-मूलक प्रमाण है।

राकेश में अपनी रचनाओं के लिए अतिरिक्त मोह नहीं था। उन्हें काटना, छांटना, तराशना, संवारना और संतुष्ट न होने पर छोड़ देना – यह प्रक्रिया बराबर चलती रही थी। मुझे कुछ उन कहानियों की याद भी है जो राकेश ने कभी बताई थीं, पर जो फाइलों में उपलब्ध नहीं हैं, लगता है राकेश ने उन्हें नष्ट कर दिया। इस संकलन में वे ही कहानियां जा रही हैं जो राकेश ने नष्ट नहीं कीं। क्यों नष्ट नहीं कीं-–इसकी वजह शायद यही हो सकती है कि ये उन दिनों की रचनाएं हैं, जब उसने लेखन का कफन सर से बांधा होगा। एक निर्णय अपनी ज़िदगी के बारे में लिया होगा।

हिन्दी ही नहीं, सभी भाषाओं के रचना-जगत् में कफन-खसोटों की एक जमात हमेशा रहती है, जो अपने कफन तैयार नहीं करती, बल्कि अपने समकालीनों के सिर से कफन छीनकर अपने लिए जांघिये या चड्डियां सिलवा लेने के लिए चीखती-चिल्लाती

रहती है, कि जब हमारे पास चड्ढी तक के लिए कपड़ा नहीं है तब 'इन्हें' क्या हक है कि ये सर को कफन से सजाएं।

उन कफन-खसोटों ने राकेश के साथ भी अपने दस्तूर के मुताबिक सलूक किया, जो कि उनकी मजबूरी है, और कुछ लोग फिलहाल चड्ढियां और जांघिये पहने नज़र आ रहे हैं।

राकेश ने एक पूरे दौर में कथ्य की आत्मा को निरंतर खोजा था और आत्मिक कथा की खोज को निरंतरता दी थी। इस खोज और निरंतरता की पूरी पहचान इन शुरू की सब कहानियों में कहीं न कहीं विद्यमान है—वह चाहे बहुत साफ न हो, जो कि प्रारंभिक रचनाओं में हो भी नहीं सकती, पर राकेश के साहित्य के गंभीर अध्येयताओं के लिए वह छुपी हुई या अमूर्त भी नहीं रह सकती।

राकेश ने ज़िंदगी, स्थिति, परिस्थिति और माहौल की किन-किन मंज़िलों को कब और कैसे पार किया ? रचना-सीमाओं को कैसे तोड़ा, किस तरह बड़ी तथा और भी व्यापक सीमांतों से राकेश की रचनाएं जुड़ती गईं ? किस मानसिक उथल-पुथल से उसे गुज़रना पड़ा ? ज़िंदगी में किस महत् के लिए उसने लड़ना स्वीकार किया और अपने आसपास की ज़िंदगी में राकेश की संलग्नता और नये मूल्यों के प्रति संबद्धता कितनी गहरी थी ? आज के आदमी की संश्लिष्ट तकलीफों की अमूर्त परतों को पकड़ पाने की क्षमता का रचनात्मक विकास-क्रम क्या था ? इन सब बातों का स्पष्ट संकेत इन प्रारंभिक कहानियों से ही मिलने लगता है। ये कहानियां राकेश की विकास-यात्रा को सही शुरुआत की पहचान देती हैं और इसी कारण इनका महत्व बहुत है।

'अर्द्धविराम' और 'लेकिन इस तरह' —इन दो कहानियों के अंत तथा बीच के कुछ स्थल राकेश के शब्दों-पंक्तियों के सहारे ही संवर्द्धित किए गए हैं, यह कहा जाए कि ये अधूरी थीं, तो गलत होगा—केवल कुछ पंक्तियां या शब्द उसी कहानी में से, कहीं और से उठाकर ज़रूरत की जगह लाकर रख दिए गए हैं, ताकि कथ्य की अन्विति अपना उतना रूप ग्रहण कर सके जो उपलब्ध 'टेक्स्ट' की अर्थ-संभावनाओं में मौजूद था।

(पृ० 2 का शेष)

संत-साहित्य : आधुनिक संदर्भ

28 अक्टूबर को दिल्ली विश्वविद्यालय के टैगोर हाल में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी (उम्र 87 वर्ष, संत-साहित्य पर अनेक कृतियां) के अभिनंदन के उपलक्ष्य में एक गोष्ठी में मराठी संतों पर बोलने के लिए नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जी ने तीन दिन पहले कहा। नाम तो बहुत-से छपे थे, पर अध्यक्ष हजारी प्रसाद जी द्विवेदी से लगाकर सात छपे हुए नाम वहां नहीं थे। और सात बोले। सभासंयोजक थे डा० भोलानाथ तिवारी, वक्ता थे डा० नित्यानंद तिवारी, डा० विश्वनाथ त्रिपाठी। बाद में डा० नगेन्द्र और बौद्ध दर्शन विभाग के डा० पांडेय भी बोले। हिन्दीतर साहित्यों से डा० आबिदी (फारसी), डा० मोती लाल जोतवाणी (सिंधी), डा० महीपसिंह (पंजाबी) भी बोले। डा० भोलानाथ से पता चला कि दिल्ली विश्वविद्यालय में 600 लेक्चरर-प्रोफेसर हैं, 400 एम० ए० के छात्र हैं। वैसे बी० ए० के हज़ारों हैं। पर हाल में उपस्थिति दस वक्ता और पांच-छह आयोजक मिलाकर 43 थी।

सोवियत संघ में हिन्दी साहित्य का अध्ययन

प्रो० येवगेनी चेलिशेव

सोवियत जनता आम तौर पर बहुजातीय भारतीय साहित्य और विशेष रूप में हिन्दी लेखकों में बड़ी दिलचस्पी प्रदर्शित करती है। सोवियत सत्ता की स्थापना के बाद 100 से अधिक भारतीय लेखकों की 670 पुस्तकें सोवियत जनता की 32 भाषाओं में प्रकाशित की जा चुकी हैं, जिनकी लगभग 2 करोड़ 60 लाख प्रतियां छप चुकी हैं। सोवियत पाठक कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा बाई जैसे मध्यकालीन सुप्रसिद्ध हिन्दी कवियों को पसन्द करते हैं। प्रेमचन्द, वृन्दावनलाल वर्मा, यशपाल और अन्य अनेक उदीयमान लेखकों के उपन्यास और कहानियां बहुत लोकप्रिय हैं।

सोवियत विज्ञान अकादमी के प्राच्य अध्ययन संस्थान के प्राच्य साहित्य के विभागाध्यक्ष के रूप में मैं अपने अनुसंधान की कुछ विशिष्टताओं और सिद्धान्तों की रूपरेखा यहां प्रस्तुत करना चाहूंगा। हिन्दी साहित्य के अध्ययन को हम एक सामाजिक वैशिष्ट्य के रूप में लेते हैं, जो जनता के उस इतिहास से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है जिसका उसने सर्जन किया। साहित्यिक तत्वों की व्याख्या करने में हम सिद्धान्तवाद और स्थूलता से अलग हटकर विधाओं को विकसित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम व्यापक सामान्यीकरण की खोज करते हैं, महज तथ्यों का विवरण और संग्रह नहीं। मार्क्सवादी विवेचन-प्रणाली की प्रयुक्ति से हिन्दी साहित्य का मौलिक विवेचन सम्भव होता है। भारतीय साहित्य के समस्त इतिहास के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य के कालों को निर्धारित करने और इसके विकास की सामान्य विधियों को समझने का प्रश्न मौलिक महत्त्व रखता है।

प्रमुख हिन्दी लेखकों की कृतियों में सौन्दर्यपरक आदर्शों के विकास का अध्ययन और सौन्दर्य तथा मानव-जीवन के उद्देश्यों और लक्ष्यों के प्रति उनकी धारणाओं में क्रमिक परिवर्तन और उनके सकारात्मक आचरण में बदलाव का विवेचन एक दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या है। दूसरे शब्दों में, यह मानवतावाद की विशिष्टताओं और तत्त्वों में परिवर्तन के अध्ययन की समस्या है। यहां मैं प्रेमचन्द पर व० बालिन, प्रसाद और जैनेन्द्रकुमार पर न० गार्बुयुशिना, अश्क पर इ० राबिनोविच तथा यशपाल और निराला एवं पंत आदि पर अपने निबंन्धों का उल्लेख कर सकता हूं।

सोवियत भारतविदों की अनेकानेक कृतियों का सम्बन्ध हिन्दी लेखकों द्वारा प्रयुक्त रचनात्मक विधियों की खोज करने की समस्या और यथार्थवादी रुझानों के मार्गों, स्वरूपों और विशिष्टताओं के अभ्युदय और विकास तथा समकालीन हिन्दी साहित्य की रूमानी प्रवृत्ति और आधुनिक रुझानों की विशिष्टताओं के अध्ययन से है। सोवियत भारतविदों में यशपाल पर द० बर्कायेवा, दिनकर पर त्रुन्निकोवा, अज्ञेय पर स०

एमिनोवा और रेणु पर व० चेर्निशेव के निबन्ध उल्लेखनीय हैं।

सोवियत भारतविद् भारतीय साहित्य के अन्तर-सम्बन्धों और परस्पर प्रभावों तथा पश्चिम से उनके सम्बन्धों की दिलचस्पी से खोज करते हैं। हिन्दी साहित्य में जातीय और अन्तरजातीय समस्या और इसकी जातीय विशिष्टताओं और समग्र रूप में देश की बहुजातीय साहित्यिक प्रक्रिया में आम रुझानों का हमारे अनुसंधान में प्रमुख स्थान है। इस समस्या के अध्ययन के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में निम्न संग्रहों का प्रकाशन सम्भव हो सका है: 'व० ई० लेनिन और पूर्व का साहित्य' (लेनिन जन्मशती के लिए), 'महान अक्तूबर क्रांति और पूर्व का साहित्य' (महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की 50वीं वर्षगांठ के लिए), 'मैक्सिम गोर्की और पूर्व का साहित्य' (मैक्सिम गोर्की की जन्मशती के लिए), 'पूर्वी देशों के साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रश्न', 'पूर्व के जनगण के साहित्य में प्रबोधन' और 'पूर्व के साहित्य में मानवतावाद के विचार'।

मैं रूसी क्लासिकी और रूसी साहित्य का भारतीय क्लासिकी और भारतीय साहित्य के परस्पर प्रभाव और अन्तर्-सम्बन्धों के अध्ययन के महत्त्व पर ज़ोर देना चाहूंगा। कारण, आज की हमारी यह प्रमुख समस्या है। मेरा ख्याल है कि सोवियत और भारतीय विद्वानों के संयुक्त प्रयासों पर हमारी सफलता बहुत हद तक निर्भर है। हम नये और आधुनिक भारतीय साहित्य में सौंदर्य विषयक चिंतन के इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं। अभी अधिक दिन नहीं हुए, हमने इसकी शुरुआत की। प्राचीन भारतीय सौंदर्यशास्त्र की श्रेणियों (रस, ध्वनि, अलंकार) की खोज करने में सोवियत भारतविदों को विशेष सफलताएं हासिल करने का श्रेय प्राप्त है। फिलहाल हम समकालीन भारत में, विशेष रूप से हिन्दी साहित्य में, सौंदर्य विषयक चिंतन के विकास पर खोज-कार्य कर रहे हैं।

हमारे अनुसंधान का मुख्य विषय भारतीय जनता के राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम और नव जीवन के निर्माण में भारतीय साहित्य की भूमिका से सम्बन्धित है। उदाहरणार्थ, न० गार्बुयुशिना की कृति 'हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी के विचारों के प्रभाव' का उल्लेख किया जा सकता है।

अन्त में हम अपने कार्य के एक महत्त्वपूर्ण पहलू का उल्लेख करना चाहेंगे। हमने भारतीय विद्वानों और लेखकों के साथ व्यापक सम्बन्ध बनाये रखा है। इसके बिना हम अपने कार्य में प्रगति नहीं कर सकते। हमारा देश सुनीतिकुमार चटर्जी, डा० व० राघवन, नगेन्द्र, अमृतराय, नामवर सिंह, अब्दुल अलीम, प्रभाकर माचवे, एहतिशाम हुसेन, शिवदान सिंह चौहान, के० एम० जार्ज और अन्य हिन्दी साहित्यिक विशेषज्ञों समेत भारतीय साहित्यिक विद्वानों के नामों से सुपरिचित है। भारतीय भाषाओं में सफलता हासिल किए बिना हमारे देश में हिन्दी साहित्य का फलप्रद अध्ययन नामुमकिन होगा। अभी हाल ही में दो खंडों में एक 'हिन्दी-रूसी शब्दकोश' प्रकाशित किया गया है और त० कातेनिना ने एक संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण लिखा है।

शरत की यह जीवनी

विष्णु प्रभाकर

प्रकाशनाधीन शरत की संपूर्ण सचित्र जीवनी 'आवारा मसीहा' की भूमिका से

कभी सोचा भी न था कि एक दिन मुझे अपराजेय कथा-शिल्पी शरतचन्द्र की जीवनी लिखनी पड़ेगी। यह मेरा विषय नहीं था। लेकिन अचानक एक ऐसे क्षेत्र से यह प्रस्ताव मेरे पास आया कि स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा। हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर बंबई के स्वामी श्री नाथूराम प्रेमी ने शरत-साहित्य का प्रामाणिक अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित किया है। उनकी इच्छा थी कि इसी माला में शरतचन्द्र की एक जीवनी भी प्रकाशित की जाय। उन्होंने इसकी चर्चा श्री यशपाल जैन से की और न जाने कैसे लेखक के रूप में मेरा नाम सामने आ गया। यशपालजी के आग्रह पर मैंने एकदम ही यह काम अपने हाथ में ले लिया हो, ऐसा नहीं था, लेकिन अन्ततः लेना पड़ा, यह सच है। इसका मुख्य कारण था शरतचन्द्र के प्रति मेरी अनुरक्ति। उनके साहित्य को पढ़-कर उनके जीवन के बारे में, विशेषकर श्रीकान्त और राजलक्ष्मी के बारे में, जानने की उत्कट इच्छा कई बार हुई है। शायद वह इच्छा पूरी करने का यह अवसर था। सोचा, बांगला साहित्य में निश्चय ही उनकी अनेक प्रामाणिक जीवनियां प्रकाशित हुई होंगी। लेख-संस्मरण तो न जाने कितने लिखे गए होंगे। वहीं से सामग्री लेकर यह छोटी-सी जीवनी लिखी जा सकेगी। लेकिन खोज करने पर पता लगा कि प्रामाणिक तो क्या सही अर्थों में जिसे जीवनी कह सकें वैसी कोई पुस्तक बांगला भाषा में नहीं है। उनके जीवन की कल्पित कहानी को जीवनी का रूप देकर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर उनमें शरत बाबू का वास्तविक रूप तो क्या प्रकट होता, वह और भी जटिल हो उठा है।

अब मैंने इधर-उधर खोज आरंभ की, लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, उलझता ही गया। ढूंढ-ढूंढकर मैं उनके समकालीन व्यक्तियों से मिला। बिहार, बंगाल, बर्मा सभी जगह गया। लेकिन कहीं भी तो कुछ भी उत्साहजनक स्थिति दिखाई नहीं दी।

प्रायः सभी मित्रों ने मुझसे कहा, "तुम शरत की जीवनी नहीं लिख सकते। अपनी भूमिका में यह बात स्पष्ट कर देना कि शरत की जीवनी लिखना असम्भव है।"

ऐसे भी व्यक्ति थे जिन्होंने कहा, "छोड़ो भी, क्या था उनके जीवन में जो तुम पाठकों को देना चाहोगे। नितान्त स्वच्छन्द व्यक्ति का जीवन क्या किसीके लिए अनुकरणीय हो सकता है?"

"उनके बारे में जो कुछ हम जानते हैं वह हमारे ही बीच में रहे। दूसरे लोग उसे जानकर क्या करेंगे? रहने दो, उसे लेकर क्या होगा?"

एक सज्जन तो अत्यन्त उग्र हो उठे। तीव्र स्वर में बोले, "कहे देता हूं, मैं उनके बारे में कुछ नहीं बताऊंगा।"

दूसरे सज्जन की घृणा का पार नहीं था। गांधीजी और शरत के सम्बन्ध में मैंने एक लेख लिखा था। उसीको लेकर उन्होंने कहा, "छि: तुमने उस दुष्ट की गांधीजी से तुलना कर डाली।"

एक बंधु, जो ऊंचे-ऊंचे पदों पर रह चुके थे, मेरी बात सुनकर मुस्कराए, बोले, "क्यों इतना परेशान होते हो, दो-चार गुंडों का जीवन देख लो, शरतचन्द्र की जीवनी तैयार हो जाएगी।"

इन प्रतिक्रियाओं का कोई अंत नहीं था लेकिन ये मुझे मेरे पथ से विरत करने के स्थान पर चुनौती स्वीकार करने की प्रेरणा ही देती रहीं। सन् 1959 में मैंने अपनी यात्रा आरंभ की थी और अब 1973 है—14 वर्ष लगे मुझे 'अवारा मसीहा' लिखने में। समय और धन दोनों मेरे लिए अर्थ रखते थे क्योंकि मैं मसिजीवी लेखक हूं। लेकिन ज्यूं-ज्यूं आगे बढ़ता गया, मुझे अपने काम में रस आता गया और आज मैं साधिकार कह सकता हूं कि मैंने जो कुछ किया है, पूरी आस्था से किया है। और करने में पूरा आनंद भी पाया है। यह आस्था और यह आनंद, यही मेरा सही अर्थों में पारिश्रमिक है।

...मैंने इसे लिखने में इतना समय इसलिए लगाया है कि मैं भ्रान्त और अभ्रान्त घटनाओं के पीछे के सत्य को पहचान सकूं, जिससे घटनाओं-भरे जो वास्तविक शरतचन्द्र है उसका रूप पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा सके। यह सब कैसे और किस प्रकार हुआ, यह मैं नहीं बता सकूंगा। जिसे 'सिक्स्थ सेन्स' कहते हैं शायद वही मेरी सहायक रही। मैं अधिक से अधिक उन व्यक्तियों से मिला जिनका किसी न किसी रूप में शरत से संबंध था। उन सभी स्थानों पर गया जहां वे या उनके उपन्यासों के पात्र रहे थे। उस वातावरण में रमने की कोशिश की जिसमें वे जिए थे। शायद इसी प्रयत्न के फलस्वरूप मैं एक ऐसी तस्वीर बनाने में यत्किंचित सफल हो सका जो शरीर-रचना विज्ञान (एनाटामी) की दृष्टि से भले ही सही न हो पर उसके पीछे जो चेतन तत्त्व होता है उसको समझने में अवश्य ही सहायक हुई है।

(पृष्ठ 4 का शेष)

आविष्कार गणित के फारमूलों में बोले जाते हैं। मगर सभी वैज्ञानिक इतने बड़े गणितज्ञ नहीं होते कि वे इन फारमूलों को समझ सकें। नतीजा यह है कि वैज्ञानिक कीं बातें सभी वैज्ञानिकों की समझ में नहीं आतीं। इसी प्रकार कवियों की कविताएं भी कुछ खास-खास कवि ही समझ पाते हैं। यह स्थिति कविता के लिए सामान्य नहीं, अच्छे-खासे सुधी पाठकों के लिए भी दुखदायी हो रही है। काश, कोई ऐसा कवि पैदा होता, जो इलियट और रिल्के के स्वप्नों को तुलसी की सरलता से लिखने का मार्ग निकाल देता।

जवानी-भर मैं इकबाल और रवीन्द्र के बीच झटके खाता रहा। उसी प्रकार मैं जीवन-भर गांधी और मार्क्स के बीच झटके खाता रहा हूं। इसीलिए उजले को लाल से गुणा करने पर जो रंग बनता है, वही रंग मेरी कविता का रंग है। मेरा विश्वास है कि अंततोगत्वा यही रंग भारतवर्ष के व्यक्तित्व का भी होगा।

मूल्यांकन

जिनके साथ जिया : अमृतलाल नागर

श्री अमृतलाल नागर ने अपने द्वारा लिखे गए संस्करणों के संकलन का नाम 'जिनके साथ जिया' रखा है। इन विशिष्ट व्यक्तियों में या तो लेखक हैं या पत्रकार। लेखकों में कवि, उपन्यासकार, आलोचक, हास्य-व्यंग्यकार, सभी प्रकार के लोग हैं। नागरजी कथाकार भी हैं और पत्रकार भी; अतः जिन लोगों की चर्चा हुई है, वे समकालीन तो हैं ही, समानधर्मा भी हैं।

नागरजी ने ये संस्करण कहीं तो शुद्ध श्रद्धाभाव से प्रेरित होकर लिखे हैं जैसे शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय के, कहीं इनसे लेखकों के प्रति आदर-भाव व्यक्त होता है, जैसे 'प्रसाद' और सुमित्रानंदन पंत के प्रति। कुछ पर एक ही क्षेत्र में कार्य करने के कारण दृष्टि पड़ी है जैसे भगवतीचरण वर्मा और यशपाल पर। किसी-किसीके स्वभाव पर मुग्ध होने के कारण भी लिखा है। इनमें हम 'बेढब' बनारसी को ले सकते हैं, जिन्हें लेखक ने मास्टर साहब के नाम से पुकारा है। कुछ लेखकों की विशेष देन से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा की है जैसे राष्ट्रीय चेतना के प्रसार के क्षेत्र में 'सनेही' जी की, पत्रकारिता के क्षेत्र में पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी की और अनुवाद के क्षेत्र में पं० रूपनारायण पांडेय की। लेकिन कई संस्मरण मित्रता के नाते लिखे गए हैं। इनमें हम डा० रामविलास शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अवधी के किसान कवि 'पढ़ीस' और नरोत्तम नागर के नाम ले सकते हैं। श्रद्धा, आदर और मैत्री आदि की भावनाएं ऐसी हैं, जो एक ओर लेखक के हृदय की निर्मलता को प्रकट करती हैं और दूसरी ओर व्यक्ति के सद्गुणों पर आधारित होती हैं। यह दृष्टि व्यक्ति-विशेष और उसपर प्रकाश डालने वाले संस्मरणकार दोनों को पाठक का प्रिय-भाजन बनाती है। दृष्टि की इस प्रियता के साथ नागरजी ने साहित्यकारों के प्रति जो आत्मीयता व्यक्त की है, वह इनके लेखन को आकर्षण का अतिरिक्त गुण प्रदान करती है।

इन संस्मरणों में अधिकांश लेखकों के व्यक्तित्व की एक झलक मात्र ही हम पाते हैं। नागरजी ने कहीं एक घटना-मात्र और कहीं एक विशेषता-मात्र की चर्चा करके संस्मरण को समाप्त कर दिया है। क्योंकि वे कथाकार हैं; अतः उन्होंने किसी भी लेखक के चरित्र के जिस पहलू को उठाया है, उसे रोचक बनाकर चमका दिया है। नागरजी की किस्सागोई का रस इन अधूरे संस्मरणों में भी छलक-छलक पड़ता है। इस प्रकार के संस्मरणों में 'बेढब' बनारसी के 'हंसमुख स्वभाव को बहुत अच्छी तरह उजागर किया गया है। उनकी हास्य-व्यंग्य की वृत्ति को प्रत्यक्ष करने वाली एक घटना के संबंध में नागरजी ने लिखा है :

"वे इलाहाबाद से कार्यवशात् लखनऊ पधारे थे। उस दिन मास्टर साहब ने लिपि-सुधार-गोष्ठी की ऐसी सुन्दर रिपोर्टिंग की कि हंसते-हंसते हमारे पेट में बल पड़ गए। भदंत आनंद कौसल्यायन 'ख' अक्षर के 'र' वाले भाग की पूंछ खींचकर 'व'

दिसम्बर '73 के प्रकाशन

1. **दोहरी आग की लपट** (उपन्यास) : डॉ० देवराज के इस नये उपन्यास में जीवन के विभिन्न आयामों के नये दृष्टिकोण से रोचक चित्र प्रस्तुत हुए हैं। नारी-पुरुष के संबंधों को सभी दृष्टियों से परखकर लेखक ने मनोविज्ञान और आधुनिकता को सफल रूप से उजागर कर दिया है। इस उपन्यास में पाठकों की नये मनुष्य से मुलाकात होती है जो बाह्य से अधिक अंतर से नवीन है, परन्तु वह हम और आपके बीच में ही है। 10.00

---

2. **संत तुलसीदास** (नाटक) : सुप्रसिद्ध नाटककार डॉ० रामकुमार वर्मा का यह नया नाटक है। अमर कवि तुलसीदास का इसमें मानसिक द्वन्द्व बहुत मार्मिक रूप से प्रस्तुत हुआ है। 5.00

---

3. **इन्नी** (उपन्यास) : हिंदी की सुपरिचित लेखिका मालती परुलकर के इस नये उपन्यास में एक प्रेमिका की आत्मविह्वलता और प्रेम में पराजय के बाद के जीवन की कथा बहुत सशक्त भाषा में प्रस्तुत हुई है। 8.00

---

4. **आधुनिक हिन्दी कविता में उर्दू के तत्त्व** (निबन्ध) : डॉ० नरेश की इस नई पुस्तक में हिन्दी-उर्दू के विशद अध्ययन के आधार पर दोनों भाषाओं के परस्पर प्रभाव-ग्रहण विशेषतः हिन्दी पर उर्दू के प्रभाव को बहुत रोचक और प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 10.00

राजपाल एण्ड सन्ज़

वाली पाई में जोड़ने की जोरदार वकालत कर रहे थे। उनका कहना था कि 'ख' अक्षर 'रव' का धोखा देता है। मास्टर साहब से चुप न रहा गया। बोले : "यदि यह लिखा हो कि 'औरत खड़ी है' तो क्या हमारे मित्र भदंत जी यह पढ़ेंगे कि 'औरत रवड़ी है ?' "

इस ग्रंथ में दो ही संस्मरण ऐसे हैं जिन्हें सभी दृष्टियों से पूर्ण कहा जा सकता है। पहला है 'निराला' जी के प्रति और दूसरा डा० रामविलास शर्मा को लेकर। 'निराला' के गांव और घर की टूटी-फूटी दशा के वर्णन से एक उदासी-सी बरसती है। यह संस्मरण अत्यंत मार्मिक और करुण बन पड़ा है। डा० रामविलास शर्मा को केन्द्र बनाकर लिखा गया संस्मरण गहरी आत्मीयता का परिचायक है। इसकी विशेषता यह है कि डा०रामविलास के स्वभाव में नागरजी को जो बातें खटकी हैं, उनकी आलोचना बिना मुरव्वत और लिहाज के, स्पष्ट और खुली भाषा में की है।

'जिनके साथ जिया' के संस्मरण कोरे संस्मरण नहीं हैं। इन्हें लिखते समय नागरजी ने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना को अंकित करने के साथ लेखकों के जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण तिथियों और अछूती घटनाओं का उल्लेख भी किया है। कहीं-कहीं विशिष्ट ग्रंथों के संबंध में नयी सूचनाएं दी हैं। इनसे शोध करने वालों और इतिहास-ग्रंथ लिखने वालों को कुछ न कुछ सहायता मिलेगी। लेखकों के स्वभाव की विशेषताओं का विवेचन उनकी रचनाओं को समझने में सहायक होगा। इस प्रकार, ये संस्मरण रोचक ही नहीं हैं, उपयोगी, प्रेरणादायक और स्मरणीय भी हैं।

(विश्वंभर मानव : आकाशवाणी, इलाहाबाद, लखनऊ, वाराणसी, रामपुर)

कृपया दायें चलिए

अमृतलाल नागर

'कृपया दायें चलिए' प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर के हास्य-व्यंग्य-प्रधान लघु निबंधों का श्रेष्ठ संग्रह है। इसमें 'कृपया दायें चलिये,' 'मैं ही हूं,' 'अतिशय अहम् में,' 'बाबू पुराण,' 'मेरे आदि-गुरु,' 'पड़ोसिन की चिट्ठियां,' 'जब बात बनाए न बनी !' 'जय बम्भोला' आदि तेरह लेख हैं। कहना चाहिए कि ये निबंध अमृतलाल नागर के आलोचक व्यक्तित्व से रंगीन होकर हास्य-व्यंग्य की चाशनी से सराबोर हो गए हैं। बिज़नेस, राजनीति और नेतागिरी, व्यक्ति का सीमित अहम्, जाति-पांति का भेदभाव, अंग्रेज़ी सभ्यता और भाषा का अंधा भ्रम, समाज की रूढ़िवादिता, प्राचीन शिक्षा-प्रणाली, अश्लील साहित्य-सृष्टि का रहस्य, निष्ठावान साहित्यकार की आर्थिक अवनति, सामाजिक भ्रष्टाचार और धार्मिक अत्याचार, शिवोहं का महत्व आदि कई महत्वपूर्ण बातों को लेखक ने जोरदार व्यंग्यमयी भाषा में प्रस्तुत किया है। निबंधों में स्वानुभूति की झलक है, वर्तमान समाज के रंग-रूप के प्रति आक्रोश है और उसके बदलाव के लिए उदगार भी। शैली की सरसता, विचारों की प्रौढ़ता एवं भावानुगामी भाषा की प्रवाहमयता से संलग्न होने से ये निबंध हिन्दी के उच्च कोटि के निबंधों में स्थान प्राप्त कर सकते हैं

(युगप्रभात)

आगामी प्रकाशन

एक घटना : मोहन राकेश

'मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियां,' नाम से तीन भागों में प्रकाशित पुस्तकों की कड़ी में यह अगली कड़ी है; 'संपूर्ण कहानियां' का चौथा भाग। इसमें मोहन राकेश की सबसे पहली अप्रकाशित कहानी तथा सबसे पहली प्रकाशित कहानी के अतिरिक्त उनकी प्रारंभिक काल की अनुपलब्ध कहानियां हैं, आज जिनका अपना ऐतिहासिक मूल्य है। इसका सम्पादन कमलेश्वर ने किया है।

आवारा मसीहा : विष्णु प्रभाकर

अमर कथा-शिल्पी श्री शरतचंद्र चटर्जी के विवादास्पद जीवन का बहु-प्रतीक्षित प्रथम विशद अध्ययन। बीसियों दुर्लभ चित्र। विशिष्ट साज-सज्जा।

हाकी : योगराज थानी

हाकी भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है। 1973 में हालैण्ड के एम्स्टर्डम शहर में विश्व हाकी कप-प्रतियोगिता में भारत की जनता ने जो रुचि ली है उससे यह बात स्पष्ट है। प्रस्तुत पुस्तक में हाकी खेल के बारे में चित्रों के साथ सारी बातें समझाकर लिखी गई हैं।

मेरी प्रिय कहानियां : रामकुमार

प्रसिद्ध कलाकार और कहानी-लेखक की चुनी हुई कहानियां, भूमिका सहित।

राष्ट्रपति ज़ाकिर हुसेन : ए० जी० नूरानी

श्री नूरानी ने इस पुस्तक में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति तथा शिक्षा-शास्त्री डा० ज़ाकिर हुसेन की अंतरंग जीवनी प्रस्तुत की है।

राजपाल एण्ड सन्ज़

लखनऊ-निवासी साहित्यिक और पत्रकार अमृतलाल नागर अपनी हास्य-व्यंग्य की रचनाओं के लिए विख्यात हैं। इस पुस्तक में उनके इसी प्रकार के तेरह निबंध संकलित हैं जिनमें से कुछ पुराने भी हैं। उदाहरण-स्वरूप 'बाबू पूराण' शीर्षक निबंध स्वतंत्रता-प्राप्ति से पहले लिखा गया था जिसमें हमारे समाज पर पाश्चात्य सभ्यता के बुरे प्रभावों को दर्शाया गया है। 'कृपया दायें चलिए : एक घोषणापत्र' शीर्षक निबंध नया है जिसमें साहित्यिकों की दुर्दशा और राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण है। वास्तव में सभी निबंध बहुत रोचक हैं और विशेष उल्लेखनीय निबंध हैं 'कवि का साथ,' 'पड़ोसिन की चिट्ठियां,' और 'भतीजी की ससुराल में'। पुरानी हानिकारक परंपराओं पर सीधा आक्रमण करके लेखक ने इन कुरीतियों को दूर करने का ईमानदार प्रयत्न किया है। यह पुस्तक सभीको पढ़नी चाहिए।

(नागपुर टाइम्स)

हाल मुरीदों का

करतारसिंह दुग्गल

लगभग ढाई लाख शब्दों का यह बड़ा उपन्यास तीन खंडों में विभक्त है। तीनों खंडों का काल प्रथम महायुद्ध से लेकर भारत की स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद तक है।

खंडों के शीर्षक हिंदी फिल्मों के नामों के समान हैं—'दिल दरिया,' 'एक दिल बिकाऊ है,' और 'मेरा दिल लौटा दे'। पहले खंड की पृष्ठभूमि पोठोहार का क्षेत्र है। दूसरे खंड की पृष्ठभूमि दिल्ली और लाहौर है तथा तीसरे खंड की अमृतसर, कश्मीर, कुल्लू आदि। तीनों खंडों के पात्र भी पृथक-पृथक हैं। पर एक पात्र, उपन्यास का नायक, कंवलजीत इन सबको मिलाने वाली कड़ी है। अन्यथा तीनों खंड तीन छोटे उपन्यासों के समान प्रतीत होते हैं।

पहले अंश में संयुक्त पंजाब के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पोठोहार का जीवन चित्रित किया गया है। यह कंवलजीत के बचपन और किशोरावस्था का काल है। मुसलमान, सिख और हिंदू तत्कालीन पोठोहारी जीवन का अविभाज्य अंग थे। उस सबका खूब अच्छा चित्रण दुग्गल ने किया है। कस्बे के लोगों के रहन-सहन, विश्वास और जीवन-प्रणाली के सजीव वर्णन के साथ विभिन्न पात्रों के व्यक्तित्व का अच्छा उत्थान इस अंश में हुआ है।

कंवलजीत को लेखक ने एक असाधारण व्यक्ति के रूप में उभारा है। बचपन ही से वह असाधारण है। बाकी सब पात्र और घटनाएं जैसे कंवलजीत का व्यक्तित्व उभारने के लिए ही हैं। उस युग की महंगाई और संक्रामक बीमारियों का भी यथेष्ट वर्णन इस अंश में है। गांवों में होने वाले बलात्कारों और स्कूलों के समलिंगी यौन-संबंधों का खासा विशद चित्रण इस पहले खंड में है। भूत-प्रेतों की कहानियां भी।

दूसरा खंड आत्मनेपद में लिखा गया है। दिल्ली की एक अमीर मुसलमान नायिका की हिंदू पिता से उत्पन्न पुत्री सुबीर द्वारा। सुबीरा की मां को चाहने वाले लोग उस युग की दिल्ली में बहुत बड़ी संख्या में हैं। यह भी प्रथम महायुद्ध के आसपास की बात होगी। क्योंकि 1942 में सुबीरा दो बच्चों की मां बन चुकी है। जिस दिल्ली का जिक्र और चित्रण इस खंड के प्रारम्भ

में हुआ है, वह लेखक की कोई खराबी दिल्ली है। सुवीरा की मां की नयी दिल्ली में एक बड़ी कोठी थी (पृष्ठ 224) पर प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में नयी दिल्ली थी ही नहीं। सुवीरा बड़ी होकर शादी करती है और फरहाद के साथ लाहौर चली जाती है, जहां कंवलजीत सुवीरा और उसके पति फरहाद का घनिष्ठ मित्र बन जाता है। सुवीरा कंवलजीत के प्रति आकृष्ट हो जाती है, तो वह लाहौर छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जाता है। यह खंड मेरी राय से उपन्यास का सबसे अधिक कमज़ोर अंश है।

तीसरे खंड में कंवलजीत एक मुसलमान लड़की हुस्ना के पति के रूप में प्रकट होता है। भारत का विभाजन हो चुका है। कंवलजीत अब अमृतसर में नियुक्त है। उसकी पत्नी मुसलमान है, इससे उसे कितनी ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कंवलजीत को छोड़कर इस खंड के सभी पात्र एकदम नये हैं। हुस्ना का परिवार विभाजित है। परिवार के कुछ लोग भारत में हैं और कुछ पाकिस्तान में हैं। हुस्ना पाकिस्तान लौट आए, इस इरादे से उसके पाकिस्तानी सगे-संबंधी ऐसा षडयंत्र रचते हैं कि भारत सरकार हुस्ना पर पाकिस्तानी जासूस होने का शक करने लगती है। मेरी राय से यह खंड समूचे उपन्यास का सबसे अधिक सफल शक्तिशाली अंश है।

'हाल मुरीदों का' की कहानी में पकड़ है। प्रारंभ ही से पाठक में कथानक के प्रति दिलचस्पी ज़रूर उत्पन्न हो जाती है। पर इससे अधिक नहीं। तीसरे खंड को छोड़कर और कहीं लेखक अपने पाठक को पूरी तरह अपने साथ बहा ले जाने में सफल नहीं हुआ। तीसरे खंड में भी कुछ ही स्थलों पर लेखक को यह सफलता मिली है। पृष्ठ 648 पर हुस्ना के कंवल के प्रति आत्मसमर्पण का अत्यंत सजीव चित्रण दुग्गल ने किया है। काश कि इस स्तर का निर्माण वह अधिक मात्रा में कर पाते।

दुग्गल ने यह उपन्यास पंजाबी में लिखा था। इसका हिंदी रूपांतर विजय चौहान ने किया है। साधारणत: अनुवाद की भाषा में प्रवाह है।

(चन्द्रगुप्त विद्यालंकर : नवभारत टाइम्स)

मेरी प्रिय कहानियां

महीपसिंह

नये कहानीकारों में महीपसिंह का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पिछली दशाब्दी में जो प्रतिभाएं सामने आई हैं, उनमें महीपसिंह सबसे अलग और विशिष्ट हैं। इस पुस्तक के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लेखक में अपनी रचनाओं को एक पाठक की दृष्टि से परखने की भी बड़ी समझ है, क्योंकि उन्होंने 'मेरी प्रिय कहानियों' के अन्तर्गत जिन कहानियों को शामिल किया वे पाठकों को भी प्रिय कहानियां होने का श्रेय बहुत पहले प्राप्त कर चुकी हैं। अपने परिवेश की पहचान और अपने पात्रों के प्रति संवेदना उनकी कहानियों की महत्त्वपूर्ण खूबी है जो दिल को कहीं गहरे में छूती है। महीपसिंह को उनके अपने कथनानुसार एक-दो रंगों के थोड़ी-थोड़ी भिन्नता रखने वाले शेड्स ज़्यादा अच्छे लगते हैं और अपनी कहानियों में वह इन्हीं शेड्स को पकड़ने की कोशिश करते हैं—सफल प्रयास।

'मेरी प्रिय कहानियां' संग्रह में 18 कहानियां शामिल हैं। ये सारी कहानियां

काफी लोकप्रियता अर्जित कर चुकी हैं। कल की इन बहुचर्चित कहानियों को एक पुस्तक में एक साथ पढ़ने का अवसर 'मेरी प्रिय कहानियां' संग्रह ही जुटाता है। संग्रह की कहानियों में 'पानी और पुल', 'उलझन', 'ब्लाटिंग पेपर', 'घिराव' और 'शोर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्त में हम इन शब्दों के साथ पुस्तक का स्वागत करते हैं कि 'खुदा को ज़ोरे कलक और ज़्यादा।'

(भारतीय साहित्य)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक
मरुस्थल

ये दोनों पुस्तकें प्रकाशक की 'सरल विज्ञान माला' के अन्तर्गत हैं और अंग्रेजी से अनूदित हैं। इन सचित्र पुस्तकों का उद्देश्य सामान्य पाठक को विशेष रूप से स्कूली छात्र को विषय की जानकारी देना है। सरल भाषा-शैली में लिखी गई ये पुस्तकें रोचक भी हैं। 'प्रसिद्ध वैज्ञानिक' में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि वैज्ञानिक क्या और कैसे करता है। इसी आधार पर चौदह विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। इनमें भारतीय वैज्ञानिक श्री चन्द्रशेखर वेंकटरामन भी हैं। शेष वैज्ञानिक दूसरे देशों के हैं। महिलाओं का प्रतिनिधित्व मैडम मेरी क्यूरी ने किया है। 'मरुस्थल' में तत्संबंधी अनेक प्रश्नों के उत्तर हैं, जैसे मरु कैसे बनते हैं, संसार के बड़े मरु कहां हैं, मरु में जलविवर और नखलिस्तान कैसे बनते हैं, मरु के निवासी कैसे रहते हैं, और मरु के पौधे, जीवजंतु आदि कैसे और क्या होते हैं। बढ़िया छपाई, सफाई पुस्तकों का आकर्षण है।

(समाज कल्याण)

भारतीय चाय
भगवान सिंह

देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करनेवाली वस्तुओं में चाय का स्थान दूसरा है। पर इतने महत्त्वपूर्ण पेय पदार्थ पर भी हिन्दी में कोई प्रामाणिक पुस्तक न होने का अभाव खटकता है।

प्रस्तुत पुस्तक इसी अभाव को पूरा करने की दिशा में एक स्तुत्य प्रयास है। पुस्तक के लेखक श्री भगवान सिंह भारतीय चाय बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं और उन गिने-चुने उच्च सरकारी अधिकारियों में से हैं जो हिन्दी में इस प्रकार के विषयों पर पुस्तकें लिखते हैं। फलतः पुस्तक प्रामाणिक जानकारी तो प्रदान करती ही है, भाषा भी सरल, सहज एवं प्रवाहमयी है। पुस्तक में प्रतिपादित विषय हैं: चाय की कहानी, भारत में चाय उद्योग, चाय की खेती, चाय-उत्पादन प्रक्रम, चाय की किस्में, चाय मशीनरी का विकास, चाय की वर्तमान स्थिति और चाय अन्य देशों में। इस तरह प्रस्तुत पुस्तक में चाय का इतिहास, तकनीकी पक्ष एवं आर्थिक पक्ष, सभी पहलू आ गए हैं। चाय की किस्मों और विभिन्न देशों में चाय पीने की आदतों का भी वर्णन किया गया है। अन्तिम अध्याय में अन्य प्रमुख चाय उत्पादक देशों में चाय की खेती और [illegible] आदि का परिचय दिया गया है। पुस्तक में कई [illegible] भी हैं। छपाई-सफाई, गेट-अप आदि भी आकर्षक हैं।

(आजकल)

समाचार

सेठ गोविन्ददास का अभिनन्दन

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक सेठ गोविंद दास ने इस मास अपने संसदीय जीवन के पचास वर्ष पूर्ण किए। इस उपलक्ष्य में संसद ने उनका विशेष अभिनन्दन किया। उनका लिखा नया नाटक "मृत्यु से मृत्युंजय' भी संसद के ही तत्वावधान में दिल्ली के मावलंकर हाल में खेला गया। सेठजी की अवस्था इस समय 77 वर्ष की है। वे 1923 में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य चुने गए थे और तब से अब तक किसी न किसी रूप में उससे संबद्ध हैं।

'दिनकर' को ज्ञानपीठ पुरस्कार

1 दिसम्बर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' को भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनकी प्रख्यात कवि 'उर्वशी' पर दिया गया है। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन भी आयोजित किया गया जिसमें अनेक कवियों ने भाग लिया।

'दिनकर' का सम्मान

30 नवम्बर को सायंकाल राजपाल एण्ड सन्ज़ के संचालक श्री विश्वनाथ के निवास-स्थान पर इस वर्ष के ज्ञानपीठ पुरस्कार-विजेता कवि दिनकर का सम्मान किया गया। राजधानी के अनेक प्रतिष्ठित लेखक, प्रकाशक, सम्पादक तथा साहित्य-प्रेमी इस अवसर पर उपस्थित थे, जिनमें उल्लेखनीय हैं सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० लक्ष्मी नारायण लाल, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, सुधाकर पांडेय, डा० गोपाल शर्मा, रमाप्रसन्न नायक, रामावतार त्यागी, क्षेमचन्द्र सुमन, मन्मथनाथ गुप्त इत्यादि। जलपान के बाद कविता-पाठ हुआ जिसमें दिनकर जी के अतिरिक्त रामावतार त्यागी, क्षेमचन्द्र सुमन, भारतभूषण अग्रवाल आदि ने अपनी कविताएं पढ़ीं।

'ज्वालामुखी' का रूमानिया में अनुवाद

हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री अनन्त गोपाल शेवड़े की कृति 'ज्वालामुखी' का अनुवाद यूरोप की रूमानियन भाषा में हो रहा है। यह अनुवाद उपन्यास के अमरीका में प्रकाशित अंग्रेजी संस्करण 'द वाल्केनो' के माध्यम से किया जायगा जो स्वयं लेखक ने किया है। 'ज्वालामुखी' सन् बयालीस की अगस्त क्रान्ति की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक सशक्त उपन्यास है। अनुवाद अगले वर्ष के मध्य में प्रकाशित होने की संभावना है।

आडेन के पत्र

प्रसिद्ध कवि डब्ल्यू० एच० आडेन ने, जिनका गत दिनों देहांत हो गया, अपनी वसीयत में अपने मित्रों से कहा है कि वे उनके सब खत नष्ट कर दें। इस संबंध में उनके लेखक मित्र स्टीफेन स्पेंडर ने कहा है कि ऑडेन अपनी जीवनी प्रकाशित नहीं कराना चाहते होंगे इसलिए उन्होंने ऐसा कहा है।

'प्रेत' : एक नई शुरुआत

'प्रेत' एक सार्थक कृति है जिसमें आज के संघर्षरत आदमी का चेहरा बहुत साफ उभरकर आया है—कुछ इस प्रकार के विचार श्रवणकुमार के हाल ही में प्रकाशित लघु उपन्यास 'प्रेत' पर 4 नवंबर को आयोजित एक गोष्ठी में व्यक्त किए गए। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० प्रभाकर माचवे कर रहे थे।

पेशेवर आलोचकों पर फब्ती कसते हुए श्री राजेंद्र अवस्थी ने कहा कि रचनाकार का दर्द एक रचनाकार ही जान सकता है। 'प्रेत' का अति लघुकाय होना अपने-आपमें एक नई शुरुआत है। श्री प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने 'प्रेत' को एक लंबी कहानी बताते हुए इसकी सटीक भाषा एवं इसमें स्थितियों के जीवंत चित्रण की प्रशंसा की। सर्वश्री बलदेव वंशी तथा हिमांशु जोशी का कहना था कि 'प्रेत' एक निहायत ईमानदार तथा प्रामाणिक कृति है और आज की दारुण स्थितियों को सशक्तता से झेलती है। डॉ० श्याम परमार ने इस कृति में 'ग्रामीण ईमानदारी' की ओर इंगित किया, किंतु डॉ० विनय, डॉ० नरेंद्र मोहन तथा ख्वाजा बद्दीउज्जमान ने इसमें तारतम्य के अभाव को दिखाने की कोशिश की।

अपनी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए 'प्रेत' के लेखक श्री श्रवण कुमार ने कहा कि 'प्रेत' के माध्यम से उन्होंने उन सब 'प्रेतों' (ह्रासकारी शक्तियों) से लड़ाई लड़ी है जिन्होंने आज के आम आदमी का जीवन दूभर कर दिया है। उनका कहना था कि लेखक को व्यवस्था के भीतर रहकर ही लड़ना होगा और यह लड़ाई चिरंतन है। डॉ० प्रभाकर माचवे ने श्री श्रवणकुमार की बात की पुष्टि की और 'प्रेत' को हर दृष्टि से एक सफल और सार्थक कृति बताया।

'प्रेम अपवित्र नदी'

2 दिसम्बर को हिन्दी लेखिका संघ ने हिन्दी भवन, नई दिल्ली, में डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल के उपन्यास 'प्रेम अपवित्र नदी' पर विचार-गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री जैनेन्द्र कुमार ने की।

आरंभ में श्रीमती रजनी पणिक्कर ने डॉ० लाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक परिचयात्मक निबंध पढ़ा, फिर डॉ० नीलिमा सिंह ने प्रस्तुत उपन्यास की विवेचना करते हुए एक विस्तृत निबंध का पाठ किया। निबंध में उठाए गए प्रश्नों पर घंटे भर चर्चा हुई जिसमें सर्वश्री हरिदत्त शर्मा, मालती सिंह, डॉ० उषा पांडे, स्नेहलता श्रीवास्तव, महेन्द्र कुलश्रेष्ठ इत्यादि ने भाग लिया। तत्पश्चात डॉ० लाल ने उपन्यास की प्रेरणाओं का संकेत करते हुए गोष्ठी में उठे प्रश्नों का उत्तर दिया। जैनेन्द्र जी ने समापन वक्तव्य में उपन्यास को एक सफल रचना बताया।

Licenced to post without prepayment. Licence No. U-32

रजिस्टर्ड नं० डी-411

ब्रह्मशक्ति से ही सब कुछ बना है

आल्डस हक्सले

जन्म के साथ मुझे भी कुछ कास्मिक तेज मिला है—वह तेज अथवा शक्ति जिससे कि यह समस्त ब्रह्माण्ड बना है। आप जहां देखिए, वहां ही इस कास्मिक या ब्रह्मशक्ति की व्याप्ति है। इस [illegible] कुछ अंश से वनस्पतियां बनीं; कुछ से जल-थल-नभचारी प्राणी बने; कुछ से ईसा बना, बुद्ध बना, शेक्सपियर बना, पास्च्योर बना और गांधी बना। चंगेज़खां, नेपोलियन और हिटलर भी इसी तेज से बने हैं। यह सब प्रकृति की लीला है, जो चलती आई है और चलती रहेगी। इसके दोष निकालना किसी उद्देश्य की सिद्धि नहीं करता। हम प्रकृति की इस स्वच्छंद लीला में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकते। हमारे हक में तो केवल इतना ही आया है कि ब्रह्माण्डनिर्मात्री इस कास्मिक शक्ति का जो थोड़ा-बहुत अंश हमें क्षणिक अमानत के रूप में मिला है, उसका हम सही उपयोग करें।

आप इसे नैराश्यपूर्ण वैराग्य का दर्शन कहेंगे। लेकिन मैं यह नहीं मानता। जीवन में मैंने केवल वहीं विरक्ति दिखलाई है, जहां पहेली अलौकिक थी। मनुष्य के समाधान से परे थी। बताइए ऐसी जगह मनुष्य कर ही क्या सकता है? हां, दार्शनिक और कई तर्कशास्त्री इस पहेली से उलझे हैं। लेकिन पहेली हल करने के बजाय वे आजीवन यही पता लगाते रहे कि वह पहेली आई कहां से और क्यों आई? यह मैं भी कर सकता था; मगर यह तो पहेली के हल का मार्ग नहीं है। मैं समझ गया कि यह पहेली, जैसी भी है, उस शक्ति या तत्त्व से उत्पन्न है, जो मेरे भीतर नहीं है। फिर मैं उसपर अपनी शक्ति क्यों खर्च करूं? इसलिए मैंने अपनी सारी शक्ति उन सम्भावनाओं में ही केंद्रित की जो मानवीय हैं—इस विश्व को, जो अगाध सौंदर्य और सुख का भंडार है, मैंने ऐसा स्थल बनाने का प्रयत्न किया है जिसमें जीवन बिताकर प्रत्येक नर-नारी के मुख से बरबस ये शब्द निकल पड़े—'हम भगवान के बड़े कृतज्ञ हैं कि उसने हमें इतने सुन्दर, इतने मधुर विश्व में जीवन बिताने का अवसर दिया!'

विश्वनाथ, मुद्रक व प्रकाशक, द्वारा प्रिंटसमैन, नई दिल्ली, में मुद्रित तथा 'नया साहित्य' कार्यालय, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, द्वारा प्रकाशित सम्पादक। विश्वनाथ